प्रस्तावना.

भगवानने संसारीजीवोंके उद्धार हेतु अपनी पूर्णकृपासे कितनेही नररत्न निर्माण किये हैं उन्हीं रत्नों में जगत्प्रसिद्ध शुकदेवजी महाराज हुये जिनके शिष्य चरणदासजीने अपने गुरुजीसे प्रश्नोत्तरमें लोकोपकारार्थ यह ग्रंथसंग्रह निर्माण किया है. बहुत समयसे हमारे चित्तमें इन ग्रंथोंके प्रचार करनेका मनोरथ था परन्तु कोई शुद्धप्रति न मिलनेसे नहीं छापसके. एक समय परमहंस चरणदासी पण्डित रामशरण दासजी महाराज कनखल (हरद्वार) धर्मशालाकेमहंत हमारे मुम्बई कार्य्यालयमें पधारे और उनसे इस विषयमें वार्त्तालाप हुवा, उन्होंने हमारे मनोरथकी प्रशंसा कर अपने मित्र मुन्शी शिवदयालजी वकील अदालत जयपुरसे एक प्राचीन ग्रंथ मँगाकर दिया जिससे शुद्धकर यह ग्रंथ प्रकाशित किया-गया है हम अपने मनोरथसिद्धिकर्त्ता उक्त दोनों महाशयोंको हृदयसे धन्यवाद देते हुये यह ग्रंथ प्रकाशित करते हैं.

द० खेमराज श्रीकृष्णदास,

मालिक "श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम् प्रेस-मुम्बई.

पुस्तक मिलनेका ठिकाना—

(१) खेमराज श्रीकृष्णदास. श्रीवेङ्कटेश्वर प्रेस-मुम्बई.

(२) हीरानन्दजी मोतीराम बुकसेलर,
आलूवाला कटरा अमृतसर.

सूचना-वचनिका।
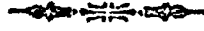
प्रगटहो कि, यह ग्रंथ भक्तिसागर जगत् उजागर श्रीयुत वेदव्यासनंदन जगवंदन श्रीपरमहंसावतंश शुकमुनि महाराजके परमप्रिय शिष्य श्रीस्वामिचरणदासजीका रचित ज्ञान वैराग्यका भंडार प्रेमा पराभक्तिका सार भजनभावनाका आगार संत महंत भक्तजनोंका जीवनाधार मुमुक्षुपुरुषोंके हृदयमें धारणकरनेका मुक्तिस्वरूपी अमूल्य मोतियोंका हार है जो महानुभाव भक्तिभावसहित भक्तिसागरग्रंथको प्रेमपूर्वक पठन श्रवण मनन निदिध्यासन अनुभवसहित इसमें गोता लगावेंगे वो सगुण निर्गुण गूढतत्त्व तथा चतुर्वर्गरूपी अलौकिक रत्न प्राप्तकर जीवनमुक्तिका प्रत्यक्षफल पावेंगे ॥

इति सूचना-वचनिका समाप्त।

अथ ग्रंथपाठविधि प्रारंभ ।

चौ०-संतसुनो विनती चितलाई । कहूं जोरकर शीश नवाई ॥
ग्रंथपाठकी विधि समझाऊं । जैसेकी जैसी पुनि गाऊं ॥
शुचि पवित्र अरु हो निश्चित । स्थिर चितकर बैठ इकंत ॥
ग्रंथराज चौकी पधरावे । चंदन पुष्प सप्रीत चढावे ॥
श्रीशुकचरणदास उर ध्यावे । चरणवंदना कर बलिजावे ॥
प्रथम महात्म्यग्रंथ पढिलीजे । पीछे पाठ ग्रंथको कीजे ॥
सहज सहज मधुरे स्वरवांचे । भावभक्तिके रँगमें राचे ॥
मन एकत्रकर अर्थ विचारै । पढै सुनावे हियमें धारै ॥
ग्रंथपढे पीछे सुन भाई । आरतिपद गावे हुलसाई ॥
नित्यपाठकर हरि गुरुसेवे ।विनापाठ अन जल नहिंलेवे॥
प्राण समान ग्रंथको राषे । इष्टजान मुखस्तुति भाषे ॥
करै ग्रंथकी सेवा पूजा । ग्रंथसमान औरनहिं दूजा ॥
गुरुमुखियनकी संपति येही । ग्रंथ न तजे प्राणतज देही ॥
यथावकाश पाठ नित कीजे । अनाध्याय नहिंहोने दीजे ॥
नेम सहित नित पढै सुनावे । चारों मुक्ति अष्टसिधि पावे ॥
याविधि जो रहनी बनिआवे । पूरा संत महंत कहावे ॥
करनी करै युगल गुणगावे । निश्चयपरमधामपद पावे ॥
गुरुबलदेवदाससमझायो । सरसमाधुरी सोई गायो ॥

इति श्रीयुत स्वामी बलदेवदासजीके चरणसेवक पंडित शिवदयाल वकील अदालत मंत्री श्रीरामसभाराजधानी सवाई जयपुर रचित भक्तिसागरग्रंथकी इति ग्रंथपाठविधि संपूर्ण ।

श्रीनिकुंजविहारिणे नमः ।

स्वामि चरणदासजीका जीवनचरित्र ।

प्रगटहो कि, श्रीयुत स्वामी चरणदासजी महाराजका सुयश तो जगत्में भलीभांति विख्यात है परंतु यहां वर्णन करनेकी आवश्यकता समझकर संक्षेपरीतिसे लिखाजाताहै वह इसरीतिसे है कि, श्रीमान् चरणदासजी संवत १७६० विक्रममें मेवातदेशप्रांत अलवरराजधानीके निकट डहराग्राममें भृगुवंश अर्थात् च्यवनकुलमें श्रीमती कुजोमाताके गर्भसे उत्पन्नहुए श्रीमान्के कुलकी आठवींपीढीमें पूर्वजन्म परमप्रेमी परमभक्त शोभनदासजी हुवेहैं जब उनकी प्रेमभक्तिपूर्णताको पहुँचगई तो उनको श्रीवृंदावन युगलविहारीलालमहाराजने प्रत्यक्ष दरशन देकर वरमांगनेकी आज्ञादी तब शोभनदासजीने यही वरमांगा कि, मेरे कुलमें सदैव आपकी भक्ति बनीरहै इससे बढ़कर और कोई पदार्थ मांगनेके लायक नहीं है तब युगलसरकारने तथास्तु कहकर आज्ञा की कि,तुम्हारे पश्चात्‌आठवींपीढीमें हमारा अंशावतार संतरूप प्रकट होकर जगत्के अनंतजीवोंका उद्धार करैगा इसही अभिप्रायसे श्रीमान् चरणदासजी भगवतके वोही अंशावतार हुएहैं श्रीमान्के पिता श्रीमुरलीधरदासजी बाल्यावस्थासेही भगवत्भक्तिमें लवलीन रहतेथे जैसे जलमें कमल उत्पन्नहोकर जलसे जुदारहताहै इसहीतरह मुरलीधरजीने जगत्व्यवहारोंको स्पर्श नहींकिया और चमत्कार यह कि, सदेह वैकुंठगामीहुए। श्रीचरणदासजी महाराजको पांच वर्षकी अवस्थामें डहरेग्राम नदीके निकट श्रीवेदव्यासनंदन जगवंदन श्रीशुकदेवमुनिराजने दर्शनदिया पश्चात्१९वर्षकी अवस्थामें श्रीगंगातट स्थान शुकतार जहांपर राजा परीक्षितको श्रीमत्भागवतकथा सुनाकर श्रीशुकदेवजी महाराजने कृतार्थकियाथा वहांपर दूसरीवेर श्रीचरणदासजीकोदर्शनदि

ये और विधिवत् दीक्षादेकर चरणदासजीको अपना शिष्य-
कर भक्तियोग,ज्ञान, वैराग्यादिसे पूर्णकर तारनतरन बनाया
इसके पश्चात् श्रीचरणादासजीने इंद्रप्रस्थ अर्थात् दिल्लीस्था-
नमें विराजमान् होकर अष्टांगयोग साधनकर १४ वर्षकी
समाधि लगाकर अष्टसिद्धि प्राप्तकर त्रिकालज्ञ तारनत-
रन महात्मा कहलाए तदनंतर दिल्लीसे चलकर श्रीयुगलबि-
हारीजीके दर्शनाभिलाषी श्रीवृंदावनधाम सेवाकुंजमें पहुँ-
चकर श्रीयुगलबिहारीजीके सह समाज सखी सूमसहित
दरशनपाया श्रीकृष्णचंद्र आनंदकंद परमात्माने श्रीचरण-
दासजीको अपना अनन्य निष्काम प्रेमी समझकर वात्सल्य-
तापूर्वक निजहृदयसे लगाया और रासविलासका आनंद
दिखलाकर प्रेमभक्तिका प्रचार कर जीवोंके उद्धारकरने-
की आज्ञादेकर अंतर्द्धान हुए तिसपीछे श्रीचरणदासजी-
को श्रीयुगल बिहारीजीका वियोग न सहागया और
विरहवियोगकी दशामें वंसीवटके नीचे मूर्च्छित होगये
उसहीसमय श्रीशुकदेवजीने तीसरीबेर वहीं प्रगट होकर
दरशन देकर समाधानकर वंसीवटनीचे श्रीचरणदासजीके
मस्तकपर निजहस्तकमल धर श्रीवृंदावन युगलविहा-
रीजीका प्रगट दरशन कराकर विरहाग्निको शीतलकर इं-
द्रप्रस्थ जाकर जीवोंके उद्धारनिमित्त भक्ति उपदेश करनेकी
आज्ञा देकर अंतर्धान हुए पश्चात् श्रीचरणदासजी दिल्ली
आये परमशोभायमान् श्रीजीका मंदिर सिद्धकर विराजमा-
न हुए और हरिगुरु आज्ञानुसार नवधाभक्तिद्वारा लक्षावधि
जीवोंको भगवत्के सन्मुखकर भगवान्के दरशनोंका साक्षात्
कराया श्रीचरणदासजीके सहस्रों संत विरक्त, नेमी, प्रेमी,
ज्ञानी, ध्यानी, सिद्ध, समाधीहुए और भारतवर्षके उत्तमोत्तम
तीर्थों तथा सप्तपुरी चारोंधामोंमें जाकर विराजमान् हुए
और भगवतभक्तिका विस्तार किया श्रीमान्के संतचरणदा-

सी वैष्णव कहलाए इनकी शुकसंप्रदाय जगत्में विख्यात हुई और उससमयमें दिल्लीमें मुहम्मदशाह बादशाहथे वोभी श्रीमहाराजके परमप्रभाव और अनेकानेक ईश्वरीय चमत्कार देखकर श्रीमहाराजमें भक्तिवश होकर नित्य दर-शन व सत्संगकी अभिलाषासे श्रीमान्के पास आनेलगे य-हांतक कि सहस्रों ग्राम श्रीमहाराज शिष्योंके नाम भगवत् संतसेवानिमित्त भेंट किये वो अबतक चलेआतेहैं और उन ग्रामोंके सहस्रों फरमानशाही अबतक मंदिरोंमें मौजूदहैं मुहम्मदशाह बादशाहके अहदमें एकसमय ईरानसे चढकर दिल्लीपर नादिरशाह और उसके आगमनका वृत्तांत छैमहीने पहले लिखकर श्रीमान्ने मुहम्मदशाहको देदिया उस लेखके अनुसारही नादिरशाहने वर्त्ताव किया इस वृत्तांतको नादि-रशाहने मुहम्मदशाहके मुखसे सुनकर श्रीमान्का दरशनकर और चमत्कार पाकर इनको वलीअल्लाह और मकबूलपाकर पीरमुरशद माना और श्रीमान्के उपदेशसे आपने अपनी तमोगुणीवृत्ति व आसुरीबुद्धिका परित्यागकर ईरानको चला गया श्रीमान्ने अस्सीवर्षतक भूतलपर विराजकर भगवत-भक्ती प्रेम और परोपकारमें कालक्षेपकिया अंतमें भगवतआ-ज्ञानुसार स्वइच्छासे दिल्लीमें योगाभ्याससे संवत्१८३९विक्र ममें दशवेंद्वारको वेधनकर पंचभौतिक शरीरको त्याग परम-धामको पधारे इन स्वामीजीकी सहस्रों वाणी इस श्रीगुरु-भक्तिप्रकाश ग्रंथमें विस्तारपूर्वक वर्णितहैं उसके अवलोकनसे श्रीमान् स्वामी चरणदासजी महाराजका पूर्णप्रभाव मालूम होसकताहै शुभम्।

इति।

श्रीमहाराज स्वामी चरणदासजीकी वाणीका माहात्म्य ।

श्रीमान्मोहनदासकृत ।

दोहा—नमो नमो शुकदेव मुनि, नमो स्वामिचरणदास ।
प्रकटे श्रीमहाराजह्वै, करन भक्ति परकाश ॥ १ ॥
परमसनातन आपनो, धर्मभागवत जाहि ।
आचारज वपुधरवहुरि, प्रकटायो ले ताहि ॥ २ ॥
कलियुगमें सतयुगकियो, लियो संत अवतार ।
निस्तारो सव जगतको, प्रेमभक्ति विस्तार ॥ ३ ॥
तानो सुयश वितान निज, शुकसंप्रदा चलाय ।
वाणीविमल बनाय जग, सोवत दियो जगाय ॥ ४ ॥
जा जाके श्रवणनपरी, सो सो भए निहाल ।
वाणी श्रीमहाराजकी, जीतन जगयमकाल ॥ ५ ॥
अष्टादशषटचारनो, चौदह सबको मूल ।
वाणी श्रीमहाराजकी, हरन भर्म भय मूल ॥ ६ ॥
भारत गीता भागवत, रामायण इतिहास ।
वाणी श्रीमहाराजकी, सब मिल करत प्रकाश ॥ ७ ॥
संस्कृतभाषा जितक, शास्त्ररु वेद पुराण ।
वाणी श्रीमहाराजकी, सबको लिये प्रमाण ॥ ८ ॥
जहँलग युक्त जुमुक्ति लग, अनुभव उक्ति अपार ।
वाणी श्रीमहाराजकी, सवहीके अनुहार ॥ ९ ॥
पराबुद्धि व्यापक सकल, परम सनातन सत्त्व ।
वाणी श्रीमहाराजकी, सब तत्त्वनको तत्त्व ॥ १० ॥

विरलो जन जानत कोऊ, जाके विमल विचार ।
वाणी श्रीमहाराजकी, सब सारनको सार ॥ ११ ॥
अगम अर्थको सुगमकर, ज्योंकी त्यों दरशाय ।
वाणी श्रीमहाराजकी, सबको दे समझाय ॥ १२ ॥
ज्ञानयोग वैरागनिधि, प्रेमभक्ति रसरूप ।
वाणी श्रीमहाराजकी, अद्भुत अधिक अनूप ॥ १३ ॥
निर्गुण सगुण सर्वमय, सर्वोपर पहिंचान ।
वाणी श्रीमहाराजकी, सकलसुखनकी खान ॥ १४ ॥
सबहीके मनभावती, सबहीको जु सुहात ।
वाणी श्रीमहाराजकी, ज्यों बालकको मात ॥ १५ ॥
सबही मतमारग मिली, सबहीके अनुरूप ।
वाणी श्रीमहाराजकी, काढन भवतम कूप ॥ १६ ॥
कोऊ प्रतिवादक नहीं, सबहि प्रशंसत जाह ।
वाणी श्रीमहाराजकी, सबको करत निबाह ॥ १७ ॥
वाणी श्रीमहाराजकी, श्रीमहराजहि जान ।
शब्दब्रह्म परब्रह्ममय, दुबधा दुर्मत भान ॥ १८ ॥
कहलों मैं महिमा कहौं, मोपै कही न जात ।
महिमासिंधु अगाध गति, ममभति सीपनमात ॥ १९ ॥
वाणी श्रीमहाराजकी, श्रीमहाराज स्वरूप ।
दीपहि दीप जगाय ज्यों, लेत सुकर निजरूप ॥ २० ॥
मूरखको पंडित करन, पंडितको साक्षात ।
वाणी श्रीमहाराजकी, दशोदिशाविख्यात ॥ २१ ॥
कोउ पढो सीखो गुणो, सुगम सबहिको सोय ।

वाणी श्रीमहाराजकी, हुई न कोई होय ॥ २२ ॥
वाणी श्रीमहाराजकी, ज्यों पारसको पर्स ।
लोहा कंचन करत ज्यों, त्यों जानो हिय सर्स ॥ २३ ॥
वाणी श्रीमहाराजकी, भृंगीकी ज्यों जान ।
कीट सरिस तनु लेत कर, अपनेही जु समान ॥ २४ ॥
वाणी श्रीमहाराजकी, मलयाचल सम भाय ।
निकट शरन जन तरु सघन, चंदन लेत बनाय ॥ २५ ॥
मनमोहन बिवदासि गुरु, महिमा कही अपार ।
ग्रंथ भक्तिसागर सरस, जीवन प्राण अधार ॥ २६ ॥

इति श्रीदिल्लीनिवासी अमरलोकवासी श्रीबिवदासि-
जीके शिष्य मनमोहनदासजी चरणदासीय वैष्ण-
वकृत श्रीयुत स्वामी चरणदासजीकी
वाणीमाहात्म संपूर्णम् शुभम् ॥

श्रीस्वामी चरणदासजी कृत ग्रंथसंग्रहकी अनुक्रमणिका।

इति

श्रीव्रजविहारिणेनमः ।

अथ श्रीस्वामीचरणदासजीका–ग्रंथसंग्रह ।

व्रजचरित्रवर्णन ।
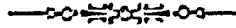
दोहा–दीनानाथ अनाथ की, विनती यह सुनि लेहु ॥
मम हिरदय में आयकै, व्रज कथा कहिदेहु ॥
चारि वेद तुमकूं रटैं, शिव शारदा गणेश ॥
और न शीश नवायहूँ, श्रीकृष्ण करो उपदेश ॥
कै गुरु कै गोविन्द कै, भक्ती कै हरिदास ॥
सबहुँनको एकै गिनौं, जैसे पुहुप अरु वास ॥
नारदमुनि अरुव्यासजू, कृपा करिय दयाल ॥
अक्षर भूलौं जो कहीं, कहौ मोहिं ततकाल ॥
श्रीशुकदेव दयाल गुरु, मम मस्तक पर ईश ॥
व्रजचरित्र मैं कहत हौं, तुमहिं नवाये शीश ॥
सबसाधुन परणामकरि, कर जोरौं शिर नाय ॥

चरण दास विनती करै, वाणी देहु वनाय ॥
सदा शिव ब्रज में रहैं, करि गोपी को रूप ॥
मूरति तौ परगट भई, आप रहत हैं गूप ॥
वंशीवट ढिग रहत है, करत रहत हैं ध्यान ॥
वकता वेद पुराण के, परम पुरातम ज्ञान ॥
ब्रह्मादिक कलपत रहैं, वृन्दावन के हेत ॥
सुधि आये ब्रजभूमिकी, विसरिजाय सव वेत ॥

अव ब्रजकी गति गाय सुनाऊं । वुद्धि शुद्धि हरिभक्ति जु पाऊं ॥
चिन्ता मेटन भूमि वखानी । रणजित मित जहँ दुर्गविनानी ॥
कमलापति को चक्र सुदर्शन । चरणदास ताको करै वन्दन ॥
मथुरा मण्डल तापर रहै । व्यासदेव मुनि ऐसे कहै ॥
वाराह संहिता में गायो । सो मैं भाषा वीच वनायो ॥
गोवर्द्धन महिमा अति भारी । चरणदास ताके वलिहारी ॥
जाकी महिमा सवने गाई । जहाँ कृष्ण नित गऊ चराई ॥
खरक वनाय धेनु जहँ राखी । अजहूं चिह्न देत हैं साखी ॥

दोहा—गोवर्द्धन विनती करूं, मो विनती सुनि लेहु ॥
जगतफांस सों काढ़िकरि, भक्तिदान मोहिंदेहु ॥

हाटकरूप अडोल खरारी । जाकी शरण रही ब्रजसारी ॥
ता दिन इन्द्र सकोप पठायो । सकल मेघ झुकिब्रजपरआयो ॥
करपल्लव पर गिरि हरि धारो । तवहीं शरण रहो ब्रजसारो ॥
दिव्य दृष्टि विन दृष्टि न आवै । कञ्चनरूप पुराण वतावै ॥
मथुरामण्डल में गिरि सोई । मथुरा मण्डल अव सुनिलोई ॥
चौरासी कोशी परमाना । मथुरामण्डल व्यास वखाना ॥

हरि के चरण सदा जो परसै । कृष्णरूप में निशिदिन सरसै ॥
सखा संग लिये हरि डोलैं । सखियनकेसँग करतकलोलैं ॥
दोहा–सदा कृष्ण ब्रजमें रहैं, मोहिं मिलत हैं नाहिं ॥
लहर मेहर कबहूंकरैं, आनि गहैं मोरबाहिं ॥
जामें बारह बन बड़भागी । बारह उपवन हैं अनुरागी ॥
जिनमाहीं हरि वेणु बजावैं । मधुर मधुर बांके सुर गावैं ॥
चौथे पदको है वह स्वामी । सब जीवनको अन्तरयामी ॥
भक्तन हेतु रहैं ब्रजमाहीं । गुप्त रहैं वृन्दावन ठाहीं ॥
फिरत रहैं सबहीं बन सुन्दर । अन्तर बनो रास को मन्दर ॥
जगत दृष्टि सों रहैं अलोपा । मिलिहैं ताहि ध्यान जिनरोपा ॥
मथुरामण्डल परगट नाहीं । परगटहै सो मथुरा नाहीं ॥
मथुरामण्डल यही कहावै । दिव्य दृष्टि बिन दृष्टि न आवै ॥
दोहा–बन उपवन अब कहतहौं, मथुरामण्डल माहिं ॥
बिना भक्ति ब्रजनाथकी, क्योंहू दीखत नाहिं ॥
उपवन कदम मंडतबन दूजा । नंदी सुर रु नंदवन सूजा ॥
मंगल आनँद बन वहि गायो । जहां महर जा गावँ बासायो ॥
संकेत बन सो सब जग जाने । बरसानो सब कोउ पहिचानै ॥
भोजन थाली वही कहायो । जहाँ बैठि भात हरि खायो ॥
सुगन्ध बन अब सोइ कहावै । अखण्ड बन पुस्तक दरशावै ॥
खेलन बन द्रुम खेलत रहैं । मोहन बन केती बन कहैं ॥
दधि ग्राम बन वही कहायो । लूटि लूटि जहँ दधिहरिखायो ॥
वत्सहरन बन वही कहायो । ब्रह्मा माया देखि भुलायो ॥
दोहा–ग्वाल बाल ब्रह्मा हरे, राखे कहूं दुराय ॥
जानि बूझि टारो दियो, लीन्हे और बनाय ॥

जव ब्रह्मा समुझो करि ज्ञाना । कर्त्ताकृष्ण सत्य करिजाना ॥
फिरि चेतन ह्वै शीश नवायो । आदिपुरुष पुरुषोत्तम पायो ॥
द्वादश उपवन गाय सुनाये । मथुरामण्डल मध्य वताये ॥
द्वादश वनकी गति सुनिलीजे । जिन माहीं हरिध्यान करीजे ॥
भद्रा वन अति महा सुहायो । श्री वन लालन के मनभायो ॥
भांडिर वनकी महिमा गाऊं । भिन्न भिन्न कहि तेहिं समझाऊं
लुहवन महिमा कहियत भारी । मह वन सुन्दरता अति धारी॥
तालरवन वहि दृष्टि निहारो । धेनुकदानव जहँ हरिमारो ॥

दोहा—दानव धेनुकमहावलि, भाव भक्ति हरि हेत ॥
मुक्तिकाज सेवनकियो, तालरवन को खेत ॥

खिदरवन जानत सव कोई । फूल माल जहँ लालन पोई ॥
वहुला वन घन दुरमन छायो । कुमुदवन तोहिकहिसमुझायो॥
कामावन लालन सुखदाई । मधुवन लालन भूमि सुहाई ॥
वृन्दावन की शोभा भारी । रास रच्यो जहँ श्रीवनवारी ॥
वन उपवन शोभा गति ईशा । शिव ब्रह्मादिक नायो शीशा ॥
इन्द्र वरुण कुवेर विज्ञानी । इनहू गति मति ब्रजकी जानी॥
वलि रावण जहँ सेवा लाई । ऊंची नवनिधि उनहूं पाई ॥
सप्तऋषिन[1] मिलि सेवनकीन्हो । ऊंचो आसन ध्रुवको दीन्हो ॥

दोहा—वहुतक सुर नर तरिगये, तप करि ब्रजके वीच ॥
जाति पांतिको को गिनै, ऊंचा नीचा नीच ॥
वृन्दावन सवसों वड़ो, जैसे दूधमें घीव ॥

१ नारद वाशिष्ठ रु भृगुमुनि, अंगिरा कश्यप जान । विश्वामित्र रू पुलस्त्यजी, ऋषि सप्त प्रमान ॥

सब धर्मनमें हरिभक्तिज्यों, यथा पिण्ड में जीव ॥
सब तीरथ जगमें बड़े, जिनहूं में हैं ईश ॥
उन तीरथ फल कामना, इहि सेवत जगदीश ॥
बीसकोश के फेरमें, वृन्दावन को जान ॥
कुंजगली अति सोहनी, द्रुमबेलि पहिंचान ॥
कंचनकी जहँ भूमिहै, धरे सतोगुण भेख ॥
चरणदास बलिबलि गयो, दिव्य दृष्टिकरि देख ॥
फूल जु फूले ऋतु बिना, नाना छबि बहुरंग ॥
अलिमलकतगुञ्जत फिरैं, भवँरी सुत लिय संग ॥
ऋतुवसन्त जहँनितरहत, बिहरत नन्दकिशोर ॥
कुहकत कोयल मगनह्वै, बोलत दादुर मोर ॥
तिहिमें वृन्दावन महा, निज वृन्दावन जान ॥
तिरकोणी वर्णन कियो, योजन है प्रमान ॥

जाकी महिमा सबहुन गाई । रासकरैं जहँ कुवँरकन्हाई ॥
यमुना जहँ परिक्रमा दीन्ही । गुप्तपिया की लीला चीन्ही ॥
गोपसुता जहँ नित उठिन्हाई । वर पूरण पायो कुवँर कन्हाई ॥
श्यामरङ्ग निर्मल जल गहरी । वृन्दावन के ढिगढिग लहरी ॥
आशा मंशाकरि कोइ न्हावै । सहस सुरसरी को फलपावै ॥
दिव्यवृन्दावनदिव्यकालिन्द्री । देखै सो जीतै मनइन्द्री ॥
निकट किनार वृक्षकी छाहीं । आयपरी यमुना जल माहीं ॥

दोहा—भक्ति बिना पावै नहीं, वृन्दावन की संध ॥
बिनपाये निन्दा करै, भोंदू मूरख अंध ॥

झिलमिल सुबकी उठत तरंगा । बोलत दादुर अरु सुरभंगा ॥

कालीदह महिमा सुनु भ्राता । सहस गंगके फलकी दाता ॥
विहार घाट बसि भजन करीजै । जेहि सेवन यमज्वाव न दीजै ॥
वंशीबट बसि हठ इमि कीजै । तजै देह जब दर्शन लीजै ॥
अबसुन वृन्दावन की बतियाँ । शीतलकरी हमारी छतियाँ ॥
बनघन कुञ्जलता छविछाई । झूकि टहनी धरणी पर आई ॥
करत मंद समीर पयाना । बसत सुगन्ध सबै अरघाना ॥
बरसत अमृत फुही सुहाई । निकसत कोमल गोभ शुहाई ॥

दोहा—वृन्दावनमें रहत हैं, ज्ञानी गुणी अतीत ॥
वृन्दावन को नामलै, कोऊ लहत जगजीत ॥

नित बसन्त जहँ सुगन्ध सुरारी । चलत मन्द जहँ पवन सुखारी ॥
पुष्प विकसि रहे रङ्ग विरङ्गा । लेतवास गुञ्जत सुरभङ्गा ॥
बोलत भवँर महा ध्वनि गाजैं । मानो अनहदकी गतिसाजैं ॥
जुगुनू दमकि चमकि चकरावैं । समय जानिकरि हर्ष बढ़ावैं ॥
नाचत मोर करत चतुराई । पंख पसारि मुदित मगनाई ॥
केतकउचक बोल निज बोलैं । केइक कुञ्जन ऊपर डोलैं ॥
युगल नामलै कीर पुकारैं । बारबार बन ओर निहारैं ॥
वृन्दावन चारौ युग माहीं । गुप्त रहैं शुकदेव बताहीं ॥

दोहा—वृन्दावनकी साधगति, कापै बरणी जाय ॥
जैसीजाको दृष्टि है, तैसोही दरशाय ॥
जैसे हरि मथुरा गये, सबनविलोक्योआय ॥
काल कंसकी दृष्टिमें, साधुन प्रभू लखाय ॥
मथुरामें योधा बड़े, जिन्हैं मल्ल दरशाय ॥
नारिन दरशै कामसम, प्रीतिरीति अधिकाय ॥

वृन्दावन सोई देखि है, जिन देख्यो हरि रूप ॥
दुर्लभ देवनको भयो, महा गूप[1] सों गूप ॥
वृन्दावन सेवन करै, अमरलोक[2] को जाय ॥
इन्द्रीजीतै हरि भजै, प्रेम प्रीति के भाय ॥

रसिक केलि वृन्दावन माहीं । अमरलोक की भांति कराहीं ॥
अमरलोकतिहुँलोक सों न्यारो । मथुरा मण्डल अंश विचारो ॥
अमरलोक विच है निज धामा । जासु अंश वृन्दावन नामा ॥
पुरुषोत्तम निज धामाँ माई । कारण प्रेम रहे ब्रज आई ॥
पुरुषोत्तम प्रभु लीला धारी । वृन्दावन में सदा विहारी ॥
निजधामाकी कहियत शोभा । वृन्दावन में रहैं अलोभा ॥
दिव्य दृष्टि विन दृष्टि न आवै । सकल पुराण वेद यों गावै ॥
गोल चौतरो निज वृन्दावन । तापरवारौं अपनौं तनमन ॥
रहो चौतरो छिपि वहि ठाहीं । अग्नि जैसे काठके माही ॥
तापर चौंसठि खम्भा सोहैं । कोटिकामको निज मनमोहैं ॥
तापर रंगमहल अधिकाई । कुन्दन रूप स्वरूप सुहाई ॥
रंग महल अरु खम्भनमाई । पन्नालाल वेलि की नाई ॥
पन्ना नग लागे जहँ मोती । झुलकैंजगमगजगमगज्योंती ॥
रंग महल यों छिप्यो गोसाईं । जैसे लाली मेहँदी माई ॥
नित विहार जहँ करैं विहारी । कृष्णकुवँर अरु राधाप्यारी ॥
गोर रूप वृषभान दुलरि । श्यामरूप हैं कृष्ण मुरारी ॥
नीलांवर ओढ़े सँग राधा । दिव्य अभूषण रूप अगाधा ॥
भूषण अँग सँग लाजत ऐसे । चन्द निकट लघु तारे जैसे ॥

---

१ गुप्त. २ मोक्षधाम.

पीत वसन पहिरे नँदलाला । मोर मुकुट माथे गलमाला ॥
जरद वादलेको अँग नीमा । वन्धी गलजिंदे सुख सीमा ॥
मोतिथनकी माला गल सोहै । नाक वुलाक अधरपर जोहै ॥
मकराकृत कुण्डल श्रवननमें । युगल दामिनी मानहुँ घनमें ॥
श्याम भुवंगम जुलफैं प्यारी । वांकीभौहँ कुटिल अनियारी ॥
ललचौहैं अरु नैन ढरारे । रसके माते अरु कजरारे ॥
मोती नासाके विच लटकै । वोलत वोल होठ पर मटकै ॥
मुरली मुख ताको रसपीवे । चाहनवारो देखत जीवे ॥
गले धुकधुकी सुन्दरझमकै । तामधिकौस्तुभमणिअधिचमकै
अधिक सुघर पहिरेहियचौकी । वनमाला कहियत नौनिधिकी
गोल भुजनपर वाजू सोहैं । पहुंची कड़ा कनक करि दोहैं ॥
पहुंचीढिग पहिरे जहँगीरी । रतन चौक छवि लगी जँजीरी॥
रतन चौकहै पीठ हथेली । लगी जँजीर मुंदरियन भेली ॥
सोहैं छाप छला अरु मुँदरी । नुहसत पहिरे सुन्दर अँगुरी ॥
इकिस चिह्न चरणनमें धारे । झुनुक झुनुक पैंजनि झनकारे॥
मन्द मन्द विहँसत मुसकाई । रणजित मित छवि कही न जाई
नितकिशोरअरुनित्तकिशोरी । द्वादश वरष अवस्था भोरी ॥
राधे भूषण छवि कह गाऊं । नाम लेत मनमें शरमाऊं ॥
हूं मैं दास नाम रणजीति । भक्तिदान मोहिं दीजैरीति ॥
वहुत सखी जिनके निजसंगा । रासकेलि खेलैं वहुरंगा ॥
वनके चौंसठि खम्भे माहीं । होत अखण्ड रास वहि ठाहीं॥
झुनुक झुनुक सखियन पगवाजैं। घुंघुरू अधिक महाध्वनि गाजैं

१ चरण दासजीका प्रथमकानाम यहीथा.

दिव्य भूषण पहिरे पियप्यारी । शशिवदनी तिरगुणते न्यारी॥
नवल किशोरी गौरी सारी । सुघर सयानी चातुर नारी ॥
दिव्यवस्त्र अरु मधुर शरीरा । अधिक रूप छवि गहर गँभीरा
कजरारी कच लटकैं बेनी । अंजन नैन सैन पियदेनी ॥
चूड़ामणि गहनो छवि नीको । शीशफूल अरु बेनी टीको ॥
नथ बुलाक अरु बन्दी झलकैं । घूंघर वारी लटकैं अलकैं ॥
मुखऊपर अलकैं छवि ऐसी । चन्दचढ़ी द्वै नागिनि जैसी ॥
करणफूल सँग झुमके मलकैं । सबसखियनके भूषण झलकैं॥
चम्पाकली नौलड़ी माला । चन्दनहार सुपहिरे बाला ॥
कंठुला जैसे गले जनेऊ । अरु हिय चौकी महा अभेऊ॥
फूलमाल सखियां सब पहिरे । गुंजनकी माला हिय लहिरे ॥
बाहन में बाजूबंद बांधे । बंकबला बाहन पर साधे ॥
सदा सुहागिनि पहिरे चूरी । सुबक पछेली बँगली रूरी ॥
कंगनी अरु पहिरे जहँगीरी । रतनन चौक आरसी धीरी ॥
छापछला अरु पहिरे गूंठी । नुहसत पहिरे अजब अंनूठी ॥
पांवनमें शुभ नूपुर बाजैं । नखशिखलौं आभूषण साजैं ॥
झुनुक झुनुक नाचैं अरु गावैं । ठुमुक ठुमुक निरतैं अरु धावैं॥
कबहूं थेइ थेइ थेइ थेइ करैं । कबहूं करऊपर कर धरैं ॥
कबहूं विनन विनन अँग मोरैं । भाव बताय तान बहु तोरैं ॥
कबहूं कर उठाय गतिचालैं । साँगोपांग बतावत हालैं ॥
है अनुराग राग बहु गावैं । घुंघुरूकी गति अधिक बजावैं॥
कोई नाचै कोइ गावै । कोइ मृदंग कोइ ताल बजावै॥

---

१. पूर्ण रीतिसे.

वैन सरू काहू कर राजै । कोउ तँबूरा नारी साजै ॥
उपँग लिये कर कोउ सहेली । अमृत कुण्डली कोउ अलवेली
कोइ वीन कोइ लिय मुरचङ्गा । मगन रूप सवही निज सङ्गा ॥

दोहा--कहा बुद्धि कह कहिसकूं, रासकेलि को साज ॥
वाजे हैं वहुभांति के, वर्णत आवै लाज
कवहूं करसों कर मिले, नृत्यत श्री गोपाल ॥
कवहूं बैठे साँवरो, नृत्तत सुन्दर वाल ॥

कवहूं हँसिकरि निकट वुलावैं । कवहूं फूलमाल पहिरावैं ॥
कवहूं मन्द मन्द मुसकावैं । वैन सैन दै नृत्य वतावैं ॥
वृन्दावन में ऐसी लीला । चरण दासको जहाँ वसीला ॥
जो कोइ इनको ध्यान लगावै । अमरलोक निश्चय करिपावै ॥
सिमिटो मन कवहूं नहिं फूटै । सोवत जागत ध्यान न छूटै ॥
जोकोइ इनको ध्यान न करिहै । भरमि भरमि चौरासी परिहै ॥
सुरनरमुनि सवही मिलिध्यावैं । शिव ब्रह्मादिक अन्त न पावैं ॥
वेद विना यह भेद न पावै । आपुभरमि अरुजग भरमावै ॥
वेदपुराण संहिता गावैं । चारोंयुग हरिभक्त वतावैं ॥

दोहा--इत उत भटको जगफिरै, कीन्हों नाहिं विचारि ॥
सत्य पुरुष जानो नहीं, कैसे उतरै पार ॥

द्वापर वीतो कलियुग आयो । राजाको शुकदेव सुनायो ॥
कलियुगकी दुर्वुद्धि वताऊं । सुनहुपरीक्षित कहिसमुझाऊं ॥
ओछीवुद्धि मनुष्यकी होगी । सकलविकल अरुमनकेरोगी ॥
सूक्षमज्ञान महाअभिमानी । नहीं मानिहैं वेद पुरानी ॥
परमेश्वरकी निन्दा करिहैं । भूतमसानी चित्तमें धरिहैं ॥

खेतरपाल भूमिया मानै। कृतृमको कर्त्ता करि जानै॥
परमेश्वरकी बात न भावै। ऐसो उत्तर तुरत बतावै॥
कहिहैं राम कहां हैं भाई। हमहूंको तुम देहु दिखाई॥

दोहा—चहूंओर हरिको विभव, सातद्वीप नौखण्ड॥
चरणदास सुनु आंधरे, रच्यो कौन ब्रह्मण्ड॥
भक्ति विना दीखै नहीं, इन नयनन हरिरूप॥
साधुनको परगटभयो, विना भक्ति हरि गूप॥

साधुसन्तकी निन्दा करिहैं। भजनकरै ताको बहुअरिहैं॥
करि अभिमान आपमें जरिहैं। गुरुको कहो नेकनहिं करिहैं॥
पंथ खड़े करिहैं छत्तीसा। भरमपूजि तजिहैं हरि ईसा॥
दम्भ झूठकी सेवा करिहैं। झूठे पंथनमें जा लरिहैं॥
गऊ ब्राह्मण भ्रष्ट सु होई। बाप पूतमें परिहै दोई॥
विद्यादान कपट व्यवहारा। राजा दुष्ट दुखित संसारा॥
वेद पढ़े करिहैं अभिमाना। हम पंडित अरु सब अज्ञाना॥
पढ़े पुराण भेद नहिं जानैं। साधुनसों झगड़े बहु ठानैं॥
पंथ पुजाय हरिहिं विसरावैं। झूठ वाद विवाद बढ़ावैं॥
व्यभिचारिणि होइहैं बहुनारी। बोले झूठ बहुत परकारी॥
शुकदेव कह राजासों वैना। सो अब देखे अपने नैना॥
राजा डाँड़ि बाँधि करि लूटैं। पूजैं भूत रामसों छूटैं॥
गौ विष्ठा सो खाती जानी। पंडित देखे बहु अभिमानी॥
दम्भ कपट बहु पूजा दौरी। कलुवा जाहर पूजैं बौरी॥
पण्डित वेद पढ़े विसरावैं। स्याने भोरेको शिरनावैं॥
हरिके साधुनको विसरावैं। तजैं राम औरनको ध्यावैं॥

हरिकी भक्ति सदा चलिआई । वेद पुराणनमें जो गाई ॥
उनको समझि भये जोज्ञानी । नाभाजिनकी भक्ति वखानी ॥
जिनकी महिमा सवजग जानी । सव जानतहैं चतुराज्ञानी ॥
पीपा सदना सैना नाई । धना जाट अरु मीरावाई ॥
नामदेव रैदास चमारा । तुलसी माधो मीर विचारा ॥
कूवा कुम्हरा फत्तू सक्का । सेऊ समरन रंका वंका ॥
करमैंती अरु करमा वाई । दास कवीरा वाणी गाई ॥
जैदेवा अरु नरसी महता । दास मलूक कड़ामें रहता ॥
अनन्तानन्द कील अरु जंगी । देव सुरारि निपट सरवंगी ॥
नरहरि लालदास हरिवंसा । रंगनाथ वनवारी हंसा ॥
नानक सूरदास अरु साधू । सनकसनन्दन कहिये आदू ॥
ध्रुव प्रह्लाद विभीषण शवरी । हनूमान शंकर औ गवरी ॥
वाल्मीकि अम्वरीष सुदामा । मोरध्वज राजा संग्रामा ॥
वहुतक भक्त और जो भये । नाम न जानूं जात न कहे ॥
कई कोटि वैष्णव हैं वांके । सवही गये मुक्तिके नाके ॥
चरणदास हरिभक्ति विचारी । सुमिरिसुमिरि पहुँचोनरनारी ॥

दोहा—लिखिपढ़ि समझि विचार करि, सदाकरौ हरिध्यान ॥
कृष्णभक्ति दृढ़करि गहौ, मिटै सकल अज्ञान ॥

कवित्तसांगीत ।

मुकुटजटित शिर अधिक विराजत, गहे वँसुरिया अधरनधरनम्
शंख चक्र गदा पद्म विराजत, कोटि मदनकी छवि वरनम् ॥
गिरिवर नखधरि असुरन मारे, सन्तनके दुखको हरनम् ॥
जन चरणदास चरणनको चेरो, सदा रहै गिरिधर शरनम् ॥

कुमकुम विन्दी दीपित भालं, उदधि जात द्युतिता हरनम् ॥
मकराकृत कुण्डल अतिराजत, झुमक दामिनी छविधरनम्॥
कटि किंकिणि पैंजनि पग बाजत, मुक्तमाल सुर सुर वरनम् ॥
जन चरणदास चरणनको चेरो, सदा रहै गिरिधर शरनम् ॥
सुन्दर बाल लाल सँगलीन्हे, रासकरत मन अति मगनं ॥
घुमिरि २ झुकि २ कर निर्त्तत, खुटर खुटर नाटक बरनं ॥
मधुरमधुर ध्वनिबजत गजतघन, झनक झनक झंका झरनं ॥
जनचरण दास चरणन को चेरो, सदारहै गिरिधर शरनं ॥
रास रचावैं सब सचुपावैं, सांवरे बदन छबि वर्णनं ॥
धुधक धुधक धूधूकरि नृत्यत, तकृत तकृत ताधिननननं ॥
झुनुक झुनुक नूपुर झुनकारत, झनक झनक झनझननननं॥
जन चरणदास चरणन को चेरो, सदारहै गिरिधर शरनं ॥

क०—नन्दके कुमार हौंतो कहौ बारबार,
मोहिं लीजिये उबारि ओट आपनी में कीजिये ॥
काम अरु क्रोध काटिडारौ यमबेड़ा प्रभु,
माँगौं एकनाम मोहिं भक्तिदान दीजिये ॥
और की छुटायो आश सन्तनको दीजे साथ,
बृन्दाबन निवास मोहिं फेरिहू पतीजिये ॥
कहै चरणदास मेरि होय नाहिं हास,
श्याम कहूं मैं पुकारि मेरी श्रौन सुनि लीजिये ॥
वाही हाथ कुचगहि पूतना के प्राण सोखे,
पाय ऊंचो पद निज धामको सिधारी है ॥
वाही हाथ श्रीधरको मुखमाड़ोदहीसेती,

छातीपर पावँ दै मरोरि जीभ डारी है ॥
वाही हाथ कूबरी के कूबरको सीधौ कियो,
वाही हाथ मत्तगज खैंचि मूढ़ मारी है ॥
वाही हाथ बाँह चरणदास कहै आयगहो,
जाही हाथ यमुनामें नाथ्यो नागकारी है ॥

इति श्रीचरणदासजीकृतव्रजचरित्रसम्पूर्णम् ॥

वैकुण्ठविहारिणेनमः।

अथ अमरलोकअखण्डधामवर्णन।

दोहा—प्रणाम श्री शुकदेव को, सो हैं गुरू दयाल॥
काम क्रोध मद लोभ से, काढ़ै मेरे साल॥
वाणी विमल प्रकाश दी, बुधि निर्मल की तात॥
मोहिं मूरुख अज्ञानको, नहिं आवत है बात॥
अमरलोक वर्णन करौं, वेही करैं सहाय॥
दृष्टि हिये ममखोलिकरि, सबही देहु दिखाय॥
भेद लियो गुरुदेव सों, अद्भुत रचौं सुग्रन्थ॥
साखी वेद पुराण में, जानी सुनियो सन्थ॥

भेद अगोचर कोइ कोइ जानै। गुरू दिखावै तो पहिंचानै॥
पता कहैं कछु वेद पुराना। ज्योंका त्यों उनहूं न बखाना॥
कछु कछु मत मारगहू भाखैं। फिरि भूलै समुझैं नहिं साखैं॥
हरि कृपा मैं प्रकट गाया। किया उजागर खोलि सुनाया॥

दो०—महा कठिन दुर्लभ हुतो, अमरलोक का भेद॥
ताको मैं बीजक कियो, भाख्यो भेद अभेद॥
निराकार तौ ब्रह्म है, माया है आकार॥
दोनों पदवी को लिये, ऐसा पुरुष निहार॥

माया जीव दोउ ते न्यारा। सो निज कहिये पीव हमारा॥

क्षर अक्षर निरअक्षर तीनो । गीता पढ़ि सुनि इनको चीनो ॥
गीता अक्षर जीव बतावै । क्षरमाया सोइ दृष्टि दिखावै ॥
निरअक्षर है पुरुष अपारा । ज्ञानी पण्डित लेहु विचारा ॥
जीवातम परमातम दोऊ । परमातम जानतहै कोऊ ॥
आतम चीन्हि परमातमचीन्हो। गीतामध्य कृष्ण कहिदीन्हो ॥
माया उपजै विनशै अतिही । चेतन ब्रह्म अमरहै नितही ॥
परब्रह्म पुरुषोत्तम जानो । चरणदासके सो मन मानो ॥

दोहा—अमरलोक विच पुरुष है, ब्रह्म जु सवके माहिं ॥
माया दृशरत है सवै, ब्रह्म दीखतहै नाहिं ॥

अब सुन अमरलोककी वानी । त्रैगुण रहित परम सुखदानी ॥
तेज पुंजके ऊपर राजै । अहं विराट सो वाहर गाजै ॥
ताको ज्योति कहंत नरलोई । तेजपुंज कहियत है सोई ॥
सूरज मण्डल ताहि बतावै । योगी योग युक्ति सों पावै ॥
सूरज मण्डल जैहै चीरा । वा लोकै कोइ जैहै वीरा ॥
कोटिभानु को सो उजियारो । तेज पुंजको रूप विचारो ॥
तीनि लोकसों बाहर होई । सात भवन सों वाहर सोई ॥
ताके ऊपर अविचल लोका । पाप पुण्य दुखसुखनहि शोका
काल न ज्वाल अवधिनहिंहोई । रंजितदास जहँ सुरति समोई ॥
महाअगोचर गुप्तसों गुप्ता । जहां विराजतहैं भगवंता ॥
अमरलोक निज लोक कहावै । चौथा पद निर्वान बतावै ॥
अगमपुरी बेगमपुर ठाऊं । कहा बुद्धिजों सव गति गाऊं ॥
कछुइक वरणि बताऊं वाको । ब्रह्मासुत सतयुगमें भाषो ॥
पुष्पद्वीप है श्वेत अकारा । सब ब्रह्मण्डनसों है न्यारा ॥

जो कोउ जाय बहुरि नहिं आवै । आवागमन सकल बिसरावै ॥
जो कोउ गयो बहुरि नहिं आयो । देही दिव्यरूप अति पायो ॥
सोलह वरष उमिरि नित रहै । अजर अमर नित आनँद लहै ॥
बूढ़ा बाला होय न तरुणा । षोड़श भानु रूप जहँ धरणा ॥
तत्त्वस्वरूपी काया पावै । भवसागरमें बहुरि न आवै ॥
पांचतत्त्व विनहै थिरथावो । ना वह बन्यो न कृत्य बनायो ॥
ओर छोर कछु दीखत नाहीं । कबसों है औ कब सों नाहीं ॥
है अडोल मर्याद न ताकी । बपरमान वेद यों भाषी ॥
वेद पुराण पार नहिं पावै । कछू कछू धरिध्यान बतावै ॥
अनन्त भानुको सो उजियारो । पिण्ड ब्रह्मण्ड दोउते न्यारो ॥
लोकमध्यअविचलनिजधामा । श्वेतस्वरूप अगम पुर नामा ॥
अगमपुरी निराधारा सूंची । हंस लहैं जिनकी मति ऊंची ॥
बेहद लोक बन्यो अतिभारी । असंख्य भानुकिसीउजियारी ॥

दोहा—हद्द कहूं तौ है नहीं, बेहद कहूं तौ नाहिं ॥
ध्यान स्वरूपी कहतहौं, बैन सैनके माहिं ॥

अतिउज्ज्वल रवि दृष्टि न ठहरे । मणिहीरा लागे जहँ गहिरे ॥
कई रङ्गके हीरा भाखे । कलश कँगूरा आस्थिरराखे ॥
ता भीतर द्रुम बहुत अशोका । अछयवृक्ष फललगे निरोका ॥
कल्पवृक्ष बहुरङ्ग बिरङ्गा । फल अरु पात फूल इकसङ्गा ॥
कोमलदल शोभा अतिभारी । अजर पुरुषदरतनअधिकारी ॥
चेतनरूप गहर अति छाहीं । साधु रहत तिनकी परछाहीं ॥
षोड़श भानु सम देह स्वरूपा । हरिरस मदमाते निधिरूपा ॥
उन वृक्षनके निंचनिच मंदर । अनगिनमहल महामठसुन्दर ॥

महलमहलपर ध्वजा पताका । पुरुपोतम सो नाम लिखिराखा
ध्वजा पताका लहरत ऐसे । सिमिटि बीजुरी बहुतक जैसे ॥
रतन जटित तिनकी अँगनाई । बैठत उठत चलत हरपाई ॥
काम क्रोध नाहिं लोभ अधीरा । निर्मल दशा शील गुण धीरा॥
जहाँ न आलस नींद जँभाई । भूखप्यास मिलता नाहिं भाई॥
मैल पसीना आँशू नाईं । दिव्य देहधरि रहे गुसाईं ॥
एक रूप एकै गतिपाई । एक वरण एकै सबदाई ॥
संशय शोक रोग नहिं देहै । मगनरूप मन आनँद लेहै ॥
पोड़शवर्ष अवस्था जितही । गुण पौरुप हरिजन के अतिही
दिव्यभूषण दिव्यवस्तर अङ्गा । श्यामगात सुन्दर छवि अंगा॥
जुलफैं लटकि रहीं कजरारी । कुण्डल छवि सोहत अधिकारी
नासा मोती सुवक सुढारा । सुन्दरतिलक लगतअतिप्यारा
दीरघ दृढ कछूक अरुणाई । माथे मुकुट जटित ललिताई॥
घरघर दिव्य आसन सिंहासन । और महासुखहैं हरिदासन ॥

दोहा—भयमेटन औ तिमर हरण, तुमहिं नवाऊं सीस ॥
चरणदास चरणन परो, भक्तिकरो बकसीस ॥
गुरु शुकदेव कृपाकरि, दीन्हो भेद लखाय ॥
साधुनके पग पूजतै,सकलव्याधिमिटिजाय॥
आस पास हरिजन रहैं, मध्य ईश दरबार ॥
रसिक केलि बहु कुंजहैं, ललित द्वारहैं चार ॥
राजमहल जनपति रहैं, कापै बरण्यो जाय ॥
गिनतशारदाछबिअधिक, गौरीसुतछकिजाय ॥

अनन्त भानु को सो उजियारो । वा मणडलको रूप बिचारो ॥

समतुल और कासु को लाउं । वैन सैन दै ताहि बताउं ॥
चन्द सूर वहि ठौर न चीन्हो । हितदृष्टान्तकोपटतरदीन्हो ॥
आदि अनादि पुरातम धामा । जैसे आदिपुरुष घनश्यामा ॥
श्वेतहिरूप स्वरूप सुगन्धा । सहज महकजहँउठतसुवन्धा॥
चार द्वार वहु बाजन बाजैं । अनहद शब्द महाध्वनिगाजैं॥
दिव्यरूप जो लगे किवाँरा । तिनके आगे बाग सुढारा ॥
हरो बाग अद्भुत है भाई । दूजे द्वार महा अरुणाई ॥
तीजे द्वार बाग पियराई । चौथे ऊदो है थिरथाई ॥
उन बागन के आसा पासा । वहुत भवनजहँसाधुनिवासा ॥
मेडी मण्डप वहुत सुढारी । श्वेत वरण सुन्दर अधिकारी॥
साधुसन्त जहँ हरिजन पूरे । दास भाव भावना शूरे ॥
षोड़श भानु की सुन्दरताई । जगत जीति पहुँचै जो जाई ॥
सखाभाव पहुँचत वहि ठाईं । सखीभाव भीतर को जाईं ॥
धरे स्वरूप अनूपम भारी । सदा सुहागिनिहरिप्रियप्यारी॥
परमपुरुष पुरुषोत्तम पावें । निकटरहैं नित केलि वढ़ावें ॥
चारो मुक्ति जहाँ करजोरैं । भाव बताय तान वहु तोरैं ॥
दरशन कारणकी सुखदाई । धरे स्वरूप रहैं हरषाई ॥
रतन जड़ित जहँ भूमिसुहाई । कोटिभानु छवि रहत लजाई ॥
एकसमयनितऋतुछविपावत । शीतऊष्णपावस नहीं आवत ॥
ऋतु वसन्त पीरी छवि सोहै । बनघन कुंज लता मनमोहै ॥
निज वृन्दावन है वहि ठाहीं । सदा वसो मेरे मनमाहीं ॥
दिव्य फूल फूले वहुरंगा । बिन ऋतु फूले रंगविरंगा ॥
सकल सखी विचरत हरि संगा । गोरी सखी श्याम हरिअंगा ॥

दोहा—पुष्प जु फूले नितरहैं, मौरें ना कुम्हिलाय ॥
कई वरण कइ रंगसों, अति सुगन्ध हरपाय ॥

उन पुष्पन को नाम न जानौं । कहा नामलै ताहि वखानौं ॥
वहुत वृक्ष कुंजन घनछाहीं । फल अरु फूल लगे उनमाहीं ॥
काहूद्रुम फलै नहीं फूला । पुष्प ह्वै आपहि भूला ॥
कोउ लाल रूप ह्वै छायो । कोऊ श्वेत रूप मन भाया ॥
रंग रंग के वृक्ष वखाने । से पुरुपोत्तम के मनमाने ॥
बनके माहिं वहुत जहँ क्यारी । पुष्प रंग छवि न्यारी न्यारी ॥
कई भांति की वास तरंगा । मनन रूप वोलत स्वरभंगा ॥
बनविच श्वेतरूप छविनाना । गोले चौतरो रूप निधाना ॥
इकरस चेतन परम संढोला । कोटिभानुछविअमरअडोला ॥
जहँ परिकर्मा सखी सहेली । वारह भानु रूप अलवेली ॥
दिव्य दमक जहँ हीरा लागे । सात रंगके झिलमिल तागे ॥
ऊदा लाल श्वेत अरु पीरा । हरित श्याम लहरी अतिधीरा ॥
तापर चौंसठ खम्भा दमकैं । मानोकोटिभानु छवि झमकैं ॥
खम्भन लगे लाल अरु मुक्ता । पन्नालगे वेलिकी युक्ता ॥
मूंगा लाल फिरोजा भारी । ध्यान धरो ताको नर नारी ॥
इक सवलगे वखानों ऐसे । जैसी युक्ति लगे हैं तैसे ॥
जड़ लालनकी विद्रुम डारी । पन्ना पान वृक्ष गतिधारी ॥
चुन्नी पँचरँग फूल सोहाये । फल मुक्ताहल झुकत झुकाये ॥
और बनी बहु चित्तरकारी । वेलि वङ्क बूटा अधिकारी ॥
हीरा मोती चेतन होई । जानै साधू विरला कोई ॥

दोहा—ताकी छवि अति ललित हैं, शोभा सरस सुजान ॥
लगो चँदोवा दिव्य अति, चेतन करो वखान ॥

लगे चँदोवा झालरि मोती । मानौउडगणझिलमिलज्योती ॥
झालर वनी चँदोवा केरी । दिव्य दृष्टि करि साधुन हेरी ॥
तापर रंगमहलकी शोभा । चेतन आनँद सुखकी गोभा ॥
अस्थिर इकसर भीत सुढारी । वने झरोखा अद्भुत वारी ॥
अजव कँगूरा सुवक सुढारी । चौंसठकलशलगें अतिप्यारी ॥
रतन जटितकी खिड़की सोहैं । ताके आगे दिनकर कोहैं ॥
भीत झरोख कलशन माहीं । नगपन्ना लागे सवठाहीं ॥

दोहा—मणि हीरा माणिक लगे, रंगमहलके माहिं ॥
विन पहुंचे निजधामके, क्याँहू दीखत नाहिं ॥
आसपास वहु कुंज हैं, वीच लालको धाम ॥
चरणदास को दीजिये, सखियन में विश्राम
जैसे चौंसठ खम्भ हैं, तैसे करों वखान ॥
छत्र सिंहासन वर्णहूं, अरु सखियन की आन ॥

तीस खम्भमें खम्भा वीस । तामें चौदह खम्भा ईस ॥
परम विछौनाहै थिरथाये । मानौ सूरज लक्ष विछाये ॥
तापर सिंहासन वड़भागे । श्वेतरूप चेतन अनुरागे ॥
सिंहासन पर कछू विछायो । शोभा ताकाकहत लजायो ॥
धरो गेंद वा तकिया नीके । छत्तर सोहै ऊपर पीके ॥
पियकी शोभा कहा वखानूं । आदि अन्त ताको नहिंजानूं ॥
अजरपुरुष पुरुषोत्तम स्वामी । सव जीवनको अन्तरयामी ॥
पारब्रह्म अविचल अविनाशी । वायें अंग रूपकी राशी ॥

गोरी राधा कृष्ण श्यामघन । सिंहासनपर लसतमुदितमन ॥
आसीन जहँ अखिलजगदीशा । मुकुटचन्द्रिका सोहतशीशा ॥
मकराकृत कुण्डल छवि ऐसी । जगमें कहा वखानूं जैसी ॥
जुल्फैं श्याय भुवंगम कारी । कजरारी अरु घूँघरवारी ॥
सहज सुगन्ध रहै महकाई । लांबीचिकनी अरु बलखाई ॥
बांकी भौंह कुटिल अनियारी । तिरछी पलकैं लागैं प्यारी ॥
रसके माते घूम घुमारे । ललचौंहैं हगहैं कजरारे ॥
बांके दीरघ अरु ललचौंहैं । चितवत सखियनके मनमोहैं ॥
सुबक बुलाक नाकमें सोहै । ध्यान करत मेरो मनमोहै ॥
बिज्जुलिसीमुसकानिपियाकी । मनखैंचनिअरुभालहियाकी ॥
बदन श्यामघन कहा वखानू । कोटिभानु छविसुखपरमानू ॥
दिव्य निमो अँग मांहीं सोहै । सूरज कोटिकला छविमोहै ॥
कंठी कंठ धुकधुकी झमकै । तामधिकौस्तुभमणिअतिदमकै
मोतियनकी माला बनमाला । हुलसैं देखि धामकी बाला ॥
दिव्य बँधी गल जंद जड़ाऊ । नौरतननके बाजू बाऊ ॥
पहुँची कड़ा कहा छवि गाऊं । समतुल ताकी कहा बताऊं ॥
दिव्य जहांगीरी करमाहीं । ताकीसम कछु कलमें नाहीं ॥
रतन चौकमें लाल बिराजैं । शोभा गावत मोमन लाजैं ॥
रतन चौकहै पीठ हथेली । लगी जँजीर मुँदरियन भेली ॥
चौकी सुघर हियेपर राजै । कटिकिंकिणिघुंघुरूध्वनिवाजै
युगल चरण पैंजनि झनकारे । दिव्य टोर तिनमें ठनकारे ॥
कोटि चन्द्र दश नखपर वारूं । तलुअनचिह्न इकीशनिहारूं ॥
वायें अंग राधिका प्यारी । कोटि चंद्रछविसुखपरवारी ॥

युगल सखी लै चवँर ढुरावैं । हिरदय हरषि महा सुखपावैं ॥
खंभ खंभ ढिग सखी सहेली । चौदह खड़ी ईश अलवेली ॥
और सखी वहुतक वहिठाऊं । शोभा जिनकी कहतलजाऊं॥
नित्य किशोरी गौरी सारी । पांच तत्त्व त्रैगुण ते न्यारी ॥
दिव्य वस्त्र आभूपण जाना । अधिकरूप छविवारहभाना ॥
कजरारी कच लटकैं वेनी । मोतियन माँगभरी छवि पैनी॥
चूड़ामणि गहनो अति नीको । शीशफूल अरु वेणी टीको ॥
करणफूल सँग वन्दी लागी । झुमके थिरकैं महा सुभागी ॥
अंजन आँजे नैन ढरारे । तीपे अनियारे पिय प्यारे ॥
घूंघरवारी अलकैं लटकैं । वेसरनासा छविलिये मटकैं ॥
चम्पाकली नौलरी माला । चन्दन हार सु पहिरे वाला ॥
कँठुला जैसे गले जनेऊ । अरु हियचौकी महा अभेऊ ॥
सखी शिंगार हार सव साधैं । वाजूवंद वांहन पर वाँधैं ॥
सदा सुहागिनि पहिरे चूरी । सुवक पछेली वँगली रूरी ॥
कँगनी अरु पहिरे जहँगीरी । रतनचौकछवि लगीजँजीरी ॥
छाप छला अरु पहिरे मुँदरी । नुहसत पहिरे सुन्दर अँगुरी ॥
पावँन में पगनूपुर वाजैं । नख शिखलौंआभूषण साजैं ॥
और सखी विखरी वन माहीं । सोकाहू विधि गिनी न जाहीं॥

दोहा—सुन्दर छवि पियरे वसन, झुण्ड सखिन को जान ॥
कोउ पुञ्ज ऊदे वसन, सुघर सवारी आन ॥
लालवसन बहुतक सखी, श्वेत वसन बहुनार ॥
नील वसन वहुभामिनी, सवको रूप अपार ॥

हरे बसन नारी घनी, घनी गुलाबी वेष ॥
वहुत झुण्ड कइ रंगसो, गायसकैं नहिंशेष ॥

निजबन चौंसठि खंभे माहीं । होत अखण्ड रास वहिठाहीं ॥
झुण्ड सबै यों वनि वनि आवैं । हुलसि हुलसि लालन ढिग धावैं
रासकेलि खेलैं वहु रंगा । सदा विहार करैं पिय संगा ॥
कवहूं घुमरि घुमरि घुमरावैं । नैन सैन दै भाव वतावै ॥
कवहूं थेइ थेइ थेइ थेइ करैं । कवहूं अँगुली नासा धरैं ॥
कवहूं कर उठाय गति चालैं । सांगोपांग वतावत हालै ॥
कवहूं ठुमुक ठुमुक पग धावैं । घुंघुरूकी गति अधिक वजावैं॥
हो अनुराग रागनी गावै । वाजा अद्भुत अधिक वजावै ॥

दोहा—कहा बुद्धि कह कहिसकूं, रासकेलि को साज ॥
अद्भुत लीला ह्वै रही, वर्णत आवै लाज ॥
अखण्ड धामलीला अमर, नित वृन्दावन रास ॥
नित विहार जहँ होतहै, चरण दासको वास ॥
गौरीसुत गाय न सकै, नहीं शारदा वास ॥
चरणदास कह बुद्धिहै, बरणि सकै निजधाम ॥
बड़ी दया मो पै करी, कृष्ण कुवँर सुनु लाल ॥
वाणी आप बनायकै, कीन्हो मोहीं निहाल ॥
मम हिरदय में आयकै, तुमहीं कियो प्रकास ॥
जो कछु कहौ सो तुम कहौ, मेरे मुखसों भास ॥
आदि पुरुष परमातमा, तुमहिं नवाऊं माथ ॥
चरणन पास निवास दे, कीजै मोहिं सनाथ ॥
तुम्हरी भक्ति न छांड़हूं, तनमनशिरक्योंनजाव॥

तुन साहिव मैं दासहूं, भलो वनो है दाव ॥
गुरु शुकदेव कृपाकरी, मूरुख भयो प्रवीन ॥
मम मस्तकपर करधरयो, जानि निपट आधीन ॥
कोटिनामको फल लहै, तिरवेणी अस्नान ॥
शोभा गावै लोक की, मूरुख होय सुजान ॥
पढ़ै सुनै जो प्रीतिसों, पावै भक्ति हुलास ॥
नित उठि तू कर पाठ यह, चरणदास कहिभास ॥
प्रेम बढ़ै अघ सब हरैं, कलह कल्पनाजाय ॥
पाठ करै या लोकको, ध्यानकरत दरशाय ॥

इति श्रीअमरलोकअखण्डधामलीलावर्णन स्वामी-
श्रीचरणदासजीकृत सम्पूर्णम् ॥

श्रीगणेशायनमः ।

अथ धर्म्मजहाजप्रारम्भः ।

श्रीगुरुचेलासम्वाद ।

शिष्यबचन ।

दोहा—ठाढ़ो हो कर जोरिकै, अरज करै चरणदास ॥
एहो श्री शुकदेव जी, कछु पूंछन की आस ॥

गुरुबचन ॥

पूंछो मनको खोल करि, मेटौं सब सन्देह ॥
अरु तुम्हरे हिरदय विषे, सदा हमारो गेह ॥

शिष्यबचन ।

मैंतो चरणहि दासहौं, तुम तौ परम दयाल ॥
एकन पग पनहीं नहीं, एक चढ़ै सुखपाल ॥
यही जु मोहिं बताइये, एक मुक्ति को जाहिं ॥
एक नरकको जाय करि, मार यमोंकी खाहिं ॥
एक दुखी इक अतिसुखी, एकभूप इकरंक ॥
एकन को विद्या बड़ी, एक पढ़ै नहिं अंक ॥
एकन को मेवा मिलै, एकन चनेभी नाहिं ॥
कारण कौन दिखाइये, करि चरणनकी छाहिं ॥
यही मोहिं समझाइये, मनका धोखा जाइ ॥
ह्वै करि निस्संदेह मैं, चरण रहौं लपटाई ॥

गुरूवचन।

जिन जैसी करणी करी, तैसेही फल पाय॥
भुगतत हैं वे जगत में, ताको वदला आय॥

शिष्यवचन।

तुम कही सो हृदय धरी, व्यास पुत्र शुकदेव॥
सुगति कुगति करणीन को, भिन्न भिन्न कहु भेव॥

गुरूवचन।

अव मैं वर्णन करत हौं, ऐ शिष धर्मजहाज॥
तामें वैठे विधि सहित, रहनी गहनी साज॥
जो कोइ करणी ना करै, वहुत करै वकवाद॥
रीता जानौ तासुको, छूटै ना जग व्याध॥
कथनी के पूजी नहीं, करणी है ततसार॥
तामें लाभहि लाभ है, वदला दे कर्तार॥
सूरति कीन्ही साधुकी, तन मन लागी आग॥
विन करणी कैसै वुझे, हरिसों नाहीं लाग॥
कथनी कथि दंभी भये, कहै दूर की वात॥
अन्तरमें करणी नहीं, मनहिं माहिं लजात॥
दंभी उनको जानिये, जगमें सिद्ध देखात॥
तन मन वचन न साधिया, तिहुंविधि रोपीवात॥
तनमन साधै साधुसों, वचन साधि जो लेय॥
उज्ज्वल करणी के सहत, रामभक्ति चितदेय॥
तनसो करणीही करै, मनसों निश्चय लाय॥
वचन ते ऐसा वोलिये, जो सवहिको सुहाय॥

विन करणीथोथी सव वातैं । जैसे विन चंदाकी रातैं ॥
ताते समुझि करो तुम करणी । विन वोयेनहिं उपजै धरणी ॥
जैसा वोवै तैसा लुनिये । जानत ज्ञानी पण्डित गुनिये ॥
कीकर नींव वुवै सोई पावै । अरुमेवा वोवै सोई खावै ॥
पिछिली करणी अवकी पावै । ताहीको नर करम वतावै ॥
होनहार अरु भाग वही है । परालव्ध सोइ वडो कही है ॥
खोटी करणी से दुख भारी । होवै रंक पुरुप अरु नारी ॥
कहैं शुकदेव सांच यह जानौ । चरणदासलै मनमें आनौ ॥

दोहा–कोई कोढ़ी कोइ आंधरा, कोई रोगी निर्धन्न ॥
अंगहीन मांगत फिरै, कोई भूखा विन अन्न ॥
विनावुद्धि कोई वावरे, कोइ छोटेतन हान ॥
कोई कर्मोंसे अति दुखी, जीवै ना सन्तान ॥
कोई जगत अधीन है, कोई विना प्रतीत ॥
कोइ सव वस्तूहीन है, यह पापों की रीत ॥
जन्म मरण वहु भांतिके, नाना भवन निवास ॥
करणीही से होतहै, ऊंच नीच घर वास ॥
पशु पक्षी अरु चर अचर, सोभी छूटै नाहिं ॥
कर्मोंहीं की चाल सों, भुक्तै जग के माहिं ॥

भांति भांतिके कष्ट घनेही । पावत हैं वे कर्म सेनही ॥
इनहीं आखिन सों तुम देखौ । अपने मनमें करि करि लेखौ ॥
तन छूटे नरके जावै हैं । नाना विधि के त्रास सहै हैं ॥
नरकनकी गति परघट जानौं । शास्त्रमाहिं सवकियो वखानौं ॥
अरु इक नरक जगतकेमाहीं । कोतवाल हाकिमके ठाहीं ॥

खोटे कर्म न सूधी जावै । त्रास सहै बहुतै बिललावै ॥
शुभकर्म्मी जो निकसै आगे । उठि हाकिम चरणनसे लागे ॥
कहशुकदेव सांचहै करणी । सुनु रणजीत करै सो भरणी ॥

दोहा—शुभकरणी पिछली करी, उज्ज्वल पाई देह ॥
शोभा जिनके भागकी, चरणदास सुनिलेह ॥

तनसों सुखी और धनधारी । सुतनारी सुन्दर संसारी ॥
नाना विधिके भोग करत हैं । अरु बहुतन के दुःख हरतेहैं ॥
ऊंचे महल महा सुखदाई । जहां विराजत है मनलाई ॥
तीनो ऋतुमें वै सुखपावैं । बहुतक लोग टहलमें आवैं ॥
पिछिली करणी करम जुलाये । जैसे तैसेही सुखपाये ॥
काहू गज पाये बहुतेरे । लाखौं पुरुष रहत हैं घेरे ॥
श्रीशुकदेव कहैं ये वैना । चरणदास लखु अपने नैना ॥

दोहा—लाखौं पगसों लगि रहे, रहैं जियकी आस ॥
ईश्वर तिनके जेइहैं, वेहैं चरणहिं दास ॥

ऐसी ईश्वर पदवी पाई । पुण्य प्रताप कहा नहि जाई ॥
सुनिकै शुभ करमको कीजो । खोटें कर्म्म सभी तजिदीजो ॥
इनही आंखिनसों सबसूझै । बुद्धिमान प्रत्यक्ष जो बूझै ॥
कोई चढ़े जाहिं रथमाहीं । सूरज सुखी तासुकी छाहीं ॥
कोइ किरोड़ पतिलाखनबारा । कोई हजारनको व्यवहारा ॥
कोई थोड़े में सुख पावै । ह्वैकर सुखी बहुत हरषावै ॥
पिछली जैसी करी कमाई । तैसी तैसीही निधि पाई ॥
शुकदेवकहि यों आलसहरियो । चरणदासशुभकरणी करियो ॥

दोहा–देवदानव अरु अप्सरा, मानुष यक्ष गण प्रेत ॥
कर्म्मौंहीं से होतहै, पाप पुण्य का हेत ॥

नाहिंतो हरि द्वैद्रष्टा नाहीं । एक दृष्टि सब ऊपर छाहीं ॥
जोजैसी करणी करि लेवै । हरि तैसाही बदला देवैं ॥
अपना किया आपही पावै । परालब्धि वह नाम कहावै ॥
घटै बढ़ै वह नेकु न क्योंहीं । पावैवही जुकरणी ज्योंहीं ॥
नारि पुरुषमिलिकरिव्यवहारा । करणीसों उपजें संसारा ॥
वही खेतमहँ बवै किसाना । भांतिभांतिके उपजें दाना ॥
बाग लगावै सींचै माली । जब फल लागैं डाली डाली ॥
पक्षी अरु मानुष सुखपावै । चरण दास शुकदेव सुनावै ॥

दोहा–माली करणी जो तजै, सींचै ना षटमास ॥
जब वह बाग उदासहो, दिन दिन वाको नास ॥
दया धर्म पुण्यदानहीं, बड़ करणी है सांच ॥
तीनलोकचौदह भुवन, माहिं न आवै आंच ॥

तीरथ बरत कछू जो कीजै । अरु काहूको दान जु दीजै ॥
याको भी फल नीको पावै । चरणदास शुकदेव दिखावै ॥
शुभकरणी करि भक्ति उपावै । ताते हरिके निकट रहावै ॥
करणी योग महा बदलाई । ईश्वर ह्वै पावै मुक्ताई ॥
चारमुक्ति करणीसों पावै । मन करणीसों ज्ञान जगावै ॥

दोहा–उज्ज्वल कर्म्म सदाकरि, अरपै हित भगवान ॥
लहे मुक्ति सालोक्यही, जन्ममरणकरि हान ॥
सेवाकरि भगवान की, निकट विराजै जाय ॥
सामीप मुक्तिपाइ तिन्ह, इन्द्रहुसे अधिकाय ॥

ध्यानकियाश्रीकृष्णका, भये जु वाके रूप ॥
तिन सारूप मुक्तीलही, तनधरिअधिकअनूप॥
पांचों मुद्रा योगबल, दशवें काढ़ै प्रान ॥
मिलाज्योतिमेंज्योतिही, यहसायुज्यपिछान ॥
सबही करणी है बड़ी, भक्तिसवनशिरमौर ॥
वाहँपकरिहरिहेत करि, राखैं अपनी ठौर ॥
अजामिलसोंभीअधिक, जोकोउ पापी होय ॥
नाम जपै हिय शुद्धसों, पातक जावैं खोय ॥
महिमागुरुके ध्यानकी, कोकांरसक वखान ॥
मेरेमन निश्चय यही, जाय मिलै भगवान ॥
करणी सों सती भवै, करणी सो दातार ॥
करणी सों शूरा भवै, जावै स्वर्ग मँझार ॥
भांति २ के सुख जहां, भोगै भोग अपार ॥
धर्म पन्थ कोई चलै, शूद्रा के नर नार ॥
चारिसमयनितनेमकरि, सदा रहै निष्पाप ॥
गिना जाय हरिजन विषे, होय नहीं जन ताप ॥
जिन जैसी करणी करी, सोनिष्फलनहिंजाय॥
जाका बदला होगया, शुकदेवा कहे गाय ॥

ब्राह्मण करणी ब्राह्मण होई । क्षत्री कर्मसों क्षत्री सोई ॥
वैश्य कर्म्म सों वैश्य कहावै । शूद्र कर्मसों शूद्र दर्सावै ॥
नहीं तो सब की देह बराबर । पांचतत्त्व त्रैगुण सों कर कर॥
कान आंख मुख नासा एकी । शीश हाथ पग कायादेखी ॥
एकबाट है सबही आवै । एकहि भांति सबै वनिधावै ॥

दोहा–जाति वर्ण अरु आश्रम, करणी सों दर्शाय ॥
चरण दास निश्चय करो, मूरुख विरले पाय ॥
धोवी छीपी आदि दै, ये छत्तीसौ पवन ॥
करणी के सव नाम है, जैसी करै सो जवन ॥

कर्म्मौंहीं से जग यह भासै । कर्म्मौंहीं से फिर ह्वै नासै ॥
उत्पत्ति परलय कर्म्म करावै । होनिहु कर्म्म ब्रह्म ह्वै जावै ॥
परलय समय कर्म जा साथा । बुरे भले जो लागै गाथा ॥
संगहि जाय रहै मायामें । माया जाय लगत चरननमें ॥
वासा करि हरि चरनन माहीं । होय लीन वह मिटै जु नाहीं ॥
पूंजी कर्म्म जो माया पासा । फिर उतपतिकी वाको आसा ॥
परलय काल वदी तै जवहीं । उतपति करै जगत हू तवहीं ॥
चरण दास तुम ऐसे जानौ । कहै शुकदेव सांच करिमानौ ॥

दोहा–छः द्रव्य प्रलयमें रहै, इनका नाश न होय ॥
सोमैं वर्णन करतहौं, बुद्धि आंखन सों जोय ॥

काल अकाश जीव अरु माया । पाप पुण्य प्रत्यक्ष वताया ॥
फिर उतपति इनहीं सों होई । जानै पण्डित विरला कोई ॥
काल न एकौ करै पुराना । प्रलय होय सो निश्चय जाना ॥
फिर परलय को लागा रहै । करै समाप्त आपना गहै ॥
उतपति समय और नहिं होई । परलय हुये जो उतपति सोई ॥
कर्म धरे रहै ज्यों के त्योंहीं । उलटे पलटे नाहीं क्योंहीं ॥
जैसे के तैसे तन धारे । कर्म लगे रहै उनके लारे ॥
कह शुकदेव कर्म्मगति भारी । चरणदास कोइ छुटै खिलारी ॥

शिष्यबचन ।

दोहा—चरणदास यों कहत है, सुनो गुरू शुकदेव ॥
ज्यों करि हो निःकर्मही, ताको कहिये भेव ॥

गुरुबचन ।

कहे शुकदेव संदेह मिटाऊं । ज्योंकी त्यों पूरी समुझाउं ॥
खोटी करणी नरकहिं जावे । पाप क्षीण मृतलोकहि आवे ॥
भले कर्म्म जा स्वर्ग मँझारा । पुण्यक्षीणमृतलोकहि डारा ॥
ऐसे लोक लोक फिरि आवै । कर्म न छूटे दुख सुख पावै ॥
जैसे कर्म छुटै सों कहूं । तो पै दया करतही रहूं ॥
खोटे कर्म्म सो सकल निवारै । शुभ करणी को नीके धारे ॥
जाके फलको मन नाहिं लावे । है निष्कर्म्म परमपद पावै ॥
फल त्यागै सोइ चरणनदासा । चरण कमल की राखै आसा ॥

दोहा—सो पावै निर्वान पद, आवागमन मिटाय ॥
जन्म मरण होवैं नहीं, फिरि २ काल न खाय ॥

शिष्यबचन ।

जो जो कहि गुरुदेव जी, सूझ परी प्रत्यक्ष ॥
चरण दास को दीजिये, साधु होन की लक्ष ॥

गुरुवचन ।

वही साधुआ जानिये, निरवारै सब कर्म्म ॥
तन मन वचन साधे रहैं, पालै अपना धर्म्म ॥
पहिले साधै वचनको, दूजे साधै देह ॥
तीजे मनको साधिये, गुरुसों राखै नेह ॥
जिनहींके उपदेशको, राखै अपनो चित्त ॥
ताको मनन सदा करै, भूलै ना नित वृत्त ॥

शिष्यवचन ।

जो जो कही सो जानिया, एहो श्रीशुकदेव ॥
साधन तन मन वचनको, सबही कहिये भेव ॥

गुरुवचन ।

शिष्य सो तोसों कहतहौं, नीके सुन दे कान ॥
ज्योंज्यों कर्म बचैं दशौ, ताकीकरपहिचान ॥

वचनके चार दोष ।

प्रथम वचनके चार सुनाऊं । तेरे चितमें नीके लाऊं ॥
एक यही जो झूंठ न बोलै । सांच कहै तब हिरदय तोलै ॥
झूंठ कहनको पातक भारी । जोजप करै सु देह उजारी ॥
झूंठेका जप लागत नाहीं । सिद्धहोयनहिं निष्फलजाहीं ॥
अरु झूंठेकी नहिं परतीतें । झूंठेकी खोटी सब रीतें ॥
दूजे निन्दा नाहीं करिये । परके औगुण चित्त न धरिये ॥
निन्दाका भारी है पाप । यासों भी निष्फल है जाप ॥
तीजे कड़ुआ वचन न भाषै । सब जीवनसों हितही राषै ॥
खोटा वचन महा दुखदाई । जो साधै सो अति बलदाई ॥
खोटा वचन तपस्या खोवै । नरक माहिं लैजाय समोवै ॥
मीठे वचन बोलि सुख दीजै । उनके मनका शोक हरीजै ॥
कह शुकदेवा चौथा सुनिये । चरणदास लै मनमें गुनिये ॥
दोहा—चौथे मौन गहे रहै, लक्षण अधिक अमोल ॥
कर्म लगै जग बातसों, हरि चरचामें खोल ॥

शरीरके तीन दोष ।

तनसों तीनि कर्म्म जो लागे । सो मैं कहूं तुम्हारे आगे ॥
चोरी जारी अरु हिंसाअहै । इन पापनसों भारी भयेहै ॥

कर्म छूटे जाकी विधि गाऊं। भिन्न भिन्न तोको समझाऊं॥
तनसों चोरी कबहुँ न कीजे। काहूकी नहिं वस्तु हरीजे॥
चोरी त्याग सो सतवादी। तापर रीझे राम अनादी॥
जारीक कर्म ऐसे भानो। परतिरियाको माता जानो॥
तीजो हिंसा त्यागहिं कीजे। दया राखि जीवन सुख दीजे॥
दया बराबर तप नहिं कोई। आतम पूजा तासों होई॥
कर्म छूटनकी भारी गैला। ज्यों साबुन उजला पट मैला॥
शुकदेवा कहे तनके कहे। तीनि कर्म अब मनके रहे॥

मनके तीन दोष।

दोहा—कहों जु मनके तीनि अब, ज्ञानी जिनकी बात॥
गुरू दिखाये दीखई, बिधि और न दिखात॥
खोटी चितवन बरही, अरु तीजा अभिमान॥
इनसों कर्म लगें घने, मेटें सन्त सुजान॥

खोटीचितवनि खोलि दिखाऊं। जासों कहिये सो समुझाऊं॥
कबहूं चितवे पर नारी को। कबहूं चितवे फलबारी को॥
मनहीं मनमें भोगे भोग। हाथ न आवे उपजे शोग॥
कबहूं चितवे वाको मारों। कबहूं चितवे फांसी डारों॥
कबहूं चितवे द्रव्य चुराऊं। वाको धन अपने घरलाऊं॥
कबहूं चितवे ठगई करों। माल बिराना छलकरि हरों॥
भांति भांति चितवनि उपजावे। बुरे मनोरथ कर्म लगावे॥
ताते याको करे उपाऊ। होय जो साधु कर्म छुटाऊ॥
जो चितवे तो हरि गुरु चरना। ब्रह्मविचार सदाही करना॥
खोटी चितवनि चितवे नाहीं। सदा रहे थिरताके माहीं॥
कहि शुकदेव सो हिरदे रहे। इत उतको चित नाहीं बहे॥

दोहा—दूजा कर्म जु वैर है, महा पापकी पोट ॥
सदा हिया जलता रहै, करै खोटही खोट ॥
वैर भावमें औगुण भारी । तन छूटै जा नरक मँझारी ॥
वैरी याद रहै मन माहीं । हरिसों हेत लगन दे नाहीं ॥
ताते वैर भाव नहिं कीजे । याको कर्म्म लाग नाहिं दीजे ॥
अरु तीजा जानौ अभिमाना । गुरू कृपासों ताको जाना ॥
हूं हूं हूं हूं करता रहै । नीची होय तौ अन्तर दहै ॥
कबहूं फूलै मनके माहीं । मो समान कोउ ऊंचा नाहीं ॥
मैंहौं योंकर योंकर करिया । मोविनुकारजकछू न सरिया ॥
अपने को चतुरा बहु जानै । और सबन को मूरुख मानै ॥
अभिमानी ऐसा मन लावै । हरि के गुण किरिया बिसरावै॥
गर्व भरा खोटी वृति धारै । अपने मनमें कबहुँ न हारै ॥
शुकदेव कहै याहि पहिचानो । नरक जायगा निश्चय आनो ॥
रणजित सुनु अभिमाननकीजै । कर्म बचाय परम सुख लीजै ॥
दोहा—कृत्य घनी बेमुख भवै, गुरु सों विद्या पाय ॥
उनको जानै तनकही, आपन को अधिकाय ॥

कृतघ्नीका दृष्टान्त ।

जैसे इक दृष्टान्त सुनाऊं । कथा पुरानी कहि समुझाऊं ॥
महापुरुष इक स्वामी पूरा । ज्ञान ध्यान में था भरपूरा ॥
लक्षण सभी हुते वा माहीं । आठपहर हरिही की चाहीं ॥
उनको शिष्य आन इक भयो । वहि उपदेश जु नीको दयो ॥
करिकै प्यार निकट जोराखै । प्रीतिकरी अरु सबकछुभाखै ॥
फिरि रामतकी आज्ञा लीन्ही । उनहूं करि किरपा तब दीन्ही ॥
पहुंचा एक नगर अस्थाना । ह्वांके मनुषन सिद्ध बड़जाना॥

ठहराया अरु पूजाकीन्ही । बहुत नरनने कण्ठीलीन्ही ॥
बहुतक प्राणी आवैं जावैं । संध्या भोर शीश बहुनावै ॥
महिमा देखि फूलि मनमाहीं । कहाकिहमसमगुरुभानाहीं ॥
दोहा—गद्दी पर बैठा रहै, तकिया बड़ी लगाय ॥
बहुत रहैं आज्ञा विषे, शिरपर चँवर ढुराय ॥
गुरु परताप नहीं वह जानै । अपनीही बुद्धि बड़ी जुठानै ॥
मूरुख आगे क्यों नहिं भया । दीनहोय करि द्वारेगया ॥
थोड़ेहीसे वहु इतराना । गुरुकी कृपा प्यार ना जाना ॥
वार वार शोचै मन सोई । हमरो गुरु क्या ऐसो होई ॥
उनको तो नर कोइ कोइ जानै । हमको सिगरो देश बखानै ॥
दिन दिन बढ़ता दीखै आगे । मेरे भाग बड़ेही जागे ॥
मेरे मनमें ऐसी आवै । उनका शिष्य अब कौन कहावै
कहीं अचानक गुरु ह्वां आया । बैठेही शिर शिष्य नवाया ॥
दोहा—जैसे आते वैष्णव, करता वह दंडौत ॥
ऐसीही गुरुसे किया, आदर किया नबौत ॥
देखि गुरू मन हांसीठानी । वाको जाना बहु अभिमानी ॥
मुखसोंकहिकरिबहु धिरकारा । कहा कि तू अभिमानी भारा ॥
नीकी बुद्धितेरी गइ खोई । बसी मत्सरजा घटमें सोई ॥
मेरा सब उपदेश बिसारा । जग मोहनको मनमें धारा ॥
दश वीसन को शिष्यकै भूला । गद्दीपर बैठो बहु फूला ॥
शिष्यने कहा और क्या कीया । वही किया आज्ञा तुम दीया ॥
तुमनेही सतसंग बताई । कीजो दीजो जित मनलाई ॥
शिष्य सखा करि संगत बढ़ाई । मेरी तुम्हरी भई बड़ाई ॥
देखि ईर्षा तुमको आई । हमरी देखी बहु अधिकाई ॥

फिरिहँसि गुरु कहि तू अज्ञानी । मैं कहि संगति तें नहिं जानी ॥
मैं कही भक्तनका सँग कीजो । सतपुरुपन के चरण गहीजो ॥
दिन दिन ज्ञान होय सरसाई । हरि गुरु सों ह्वै प्रीति सवाई ॥
तेरी तौ गति औरै भई । महा अविद्या में मतिठई ॥

दोहा—झरना मूंदे ज्ञानके, छाय रहा अज्ञान ॥
राम रुठावनहीं किया, भई मुक्ति की हान ॥
कहा बात पूजी कहा, इतने में गयो भूलि ॥
मति ओछी घट थोथरा, तापर बैठा फूलि ॥
सिद्ध प्रात विभवमें, देह विसर्जन होय ॥
वह भी जो गुरु को तजै, जाय नरक को सोय ॥
कछू तपस्या नाकरी, नाहिं किया कछु योग ॥
नातरु लगी समाधिहीं, ले बैठा तू भोग ॥
रजगुणतमगुणलेलिया, तजा सतोगुण अङ्ग ॥
हरि गुरुको दइ पीठहीं, करि विषयिन को सङ्ग॥
भक्ति भावको छोड़ि कै, करी दम्भकी हाट ॥
मुक्तिपन्थकोताजि दिया, लई नरककी वाट ॥
इन बातन सों क्या सरै, बहुत भया विख्यात ॥
तुमसे अधिकी मूढ़ नर, जगके घने दिखात ॥
हुकुम बड़ा माया बड़ी, नामी बड़े जु भूप ॥
नर नारी बहु टहल में, सुन्दर अधिक अनूप ॥
सन्तन की गति और है, हरि गुरुसों सनमुक्ख ॥
मुक्त होय छूटैं सबै, जन्म मरण के दुक्ख ॥
जगत बड़ाई में फँसे, परी अविद्या छाहिं ॥
नरकभुगति यमदण्डही, फिर चौरासी माहिं ॥

हरि औ गुरुको शिरपर धरिये । सत पुरुषनकी सङ्गति करिये ॥
रहिये साधुनके सँग माहीं । ध्यान भजन जहँ छूटै नाहीं ॥
ह्वै परिपक्व जहां मन रहो । गुरु मत दया दीनता गहो ॥
सहज सहज उपदेश लगावो । भूलेको हरि बाट बतावो ॥
तारन तरन बहुत जन भये । क्षमा दीनता धारे गये ॥
पै उनको अभिमान न आया । नेक न पड़ी अविद्या छाया ॥
आपा मेटी गुरूही राखा । जब बोले तब गुरुही भाखा ॥
तू अभिमानी जन्म गँवाया । पाप बोझ शिरबना उठाया ॥

दोहा—बोही नभकी ओरसों, बाणी भई जुआय ॥
किया गुरूसों मानतें, चौरासी को जाय ॥
ह्वां सो गुरु रमते भये, शिष्यहि दे फटकार ॥
कहा कि तेरे तन विषे, हूजो बड़ो विकार ॥
ता पाछे कछु दिननमें, देही भयो विकार ॥
निकट न आवैं तासुके, ह्वांके सब नर नार ॥
कुष्ट भयो अर्द्धंगको, रहो न काहू योग ॥
आठ पहर वाको भयो, निराशागहि शोग ॥
तनतजिके नरके गयो, फिरि चौरासी माहिं ॥
जो गुरु सों मानै करै, ताकी गतिहोय नाहिं ॥
कहै गुरू शुकदेवजी, चरणदास परवीन ॥
मनसोंतजिअभिमानको, गुरुसों रहिये दीन ॥
मान न काहूसों करै, सबही सों आधीन ॥
समगत हरिकी भक्तिमें, जगत काज सों हीन ॥

अगमचेतांदृष्टान्त ।

दुशकर्म्मों को जानिये, महापापकी खानि ॥
तनमन वचन सँभारिये, यही जुअधिकि सयानि ॥

कहूं एक दृष्टान्तही, सो परमारथ भेश ॥
सुनि समुझै हिरदै धरै, तौलागै उपदेश ॥
नगर एक सुहावन, बसैं लोग सुखमान ॥
नर नारी सुन्दर सबै, अरु धनवन्त बखान ॥
नयाकरैं जहँ भूपही, बरष दिनाके माहिं ॥
संवत बीते तासुको, फिर वै राखैं नाहिं ॥

पकड़ डारदैं नदी पारा । जहां भयानकअधिकउजारा ॥
पशू आदि ताको भखिजावैं । स्वपनासा देखैं बिनशावैं ॥
नयाभूप करि आज्ञा मानैं । ताको अपना ईश्वर जानैं ॥
रहैं हुकुम माहीं करजोरैं । वाको वचन न कबहूं मोरैं ॥
छत्तरधारी ह्वाहीं डारैं । जो मैं आगे कही उजारैं ॥
कई सैकड़ों ऐसे भये । चेते नाहीं निष्फल गये ॥
राजा नया और इक किया । सो वह समझा चेता हिया ॥
मनही मनमें कहै बिचारे । बहुत भूप जंगल में डारे ॥

दोहा—बरस दिना जब बीतिहैं, हमहुं को देहैं डारि ॥
सरिताही के पारही, अधिकी जहां उजारि ॥

याकी कछू उपाय बिचारौं । ता सेती यह जन्म न हारौं ॥
एक दिना उन यही बिचारा । देखन गयो नदी के पारा ॥
जहां भूप जाजा करि मरते । तिनके हाड़ वहाँही गिरते ॥
खड़ा जु होय देखि मन आई । नीकी ठौर बनाऊँ ह्यांई ॥
दृष्टिउठाय ऊंचि जो कीन्ही । कामदारको आज्ञादीन्ही ॥
बन काटौ आज्ञा दइ एता । फेरक पांचकोशमें जेता ॥
सुन्दरसा इक कोट बनाओ । तामें सुन्दर बाग रचाओ ॥
करौ हवेलीताके माहीं । जैसी भूपनहुं कै नाहीं ॥

गिलम बिछौने परदे लावो । अरु तय्यारी सबै करावो ॥
होयचुके जब मोहिं सुनावो । बहुतइनाम अधिकतुमपावो ॥
दो०—वैसीही बनने लगी, जैसी आज्ञा दीन ॥
बनते बनते बनचुकी, सुन्दर अधिक नवीन ॥
फिरी राजा को आनि सुनाया । राजा सुनि बहुते सुखपाया ॥
अच्छी चीज वहां पहुंचाई । ह्यां जो रही न सुरति लगाई ॥
कहा कि एक दिना ह्वां जाना । क्षण क्षण होय अवधि की हाना
पांचक गावँ कोट के साथा । किये दियेलिखि अपने हाथा॥
अपना एक हितू मन भाई । भरी कचहरी लिया बुलाई ॥
करि इनाम ताको वह दिया । वाको देखा सांचो हिया ॥
और कही जो राजा होवै । वाहि तलाक याहि जो खोवै ॥
वोही आठ महीने वीते । करणी करि भये मनके चीते ॥
दोहा—ह्वै निश्चित आनँदभये, चिन्ताभय नहिं कोय ॥
अपनाकारज करिचुके, ह्यां ह्वां एकहि होय ॥
सुखही में वह वर्ष विताया । अवधिवीतिफिरिवहदिनआ
सब उमराव जुवेरि कर आये । नया भूप करने को लाये ॥
याहि सिंहासन सों दियोडारी । कहा कि तुम्हारी बीती बारी ॥
ऐसे कहिकर गहि ले चाले । पार नदी के जंगल घाले ॥
शुभकरणी को करि वह राजा । अपने महलन जाय विराजा ॥
इतसे भी उतसुख बहुभारी । ना कोइ वैरी ना जंजारी ॥
अपनी करणीसे सुखपावै । रहै अशोक न चिन्ताआवै ॥
कहि शुकदेव चरणहीं दासा । शुभ करणी करि पाया वासा ॥
दो०—ऐसे मानुष देहको, जानहु नगर समान ॥
राजा यामें जीवहै, शुभकरणी परमान ॥

नाहिं तौ चौरासी जङ्गलहै । भांति भांतिका जितही भयहै ॥
पशू पशूको जित भपिजावै । नित भयमानि नहीं सुखपावै ॥
वहु दुखपावै खोटी करनी । जैसी करनी तैसी भरनी ॥
शुभकरणीको जो नरधावै । वहुतभांति सुख सुरपुरजावै ॥
दोहा—भूप उमरि अपनी किया, अपना पूरण काम ॥
ऐसेही शुभ कर्म्म सों, तुमहूं पावो धाम ॥

दूसरीकथा ॥

अरु इक कथाकहौंअतिनीकी । जा सुनिजाय अविद्या जीकी
इक राजा था वहु परवीना । सो वह पुत्र विनाथा हीना ॥
एक समय वहि रोग जो आया । पुत्र विना वहुतै कलपाया ॥
कौनकाज अव ह्यांको करि है । जो मेरी देही यह मरि है ॥
रामत करत सिद्ध इकआया । राजाने सव वाहि सुनाया ॥
सिद्ध कही वालक गोदघलावो । वेटाकरि तिहि राज विठावो ॥
राजा कही जो ध्यान लगावो । राज भाग में तोहि वतावो ॥
फिरिउनकही जुखोलिदिखाऊं। साहूकारको पुत्र वनाऊं ॥
वाकेभाग्य लिखी यह राजा । ताको सुतकरि कीजै काजा ॥
फिरि उन वाको गोदजुलीन्हा । ह्वांको राज काज सव दीन्हा ॥
काइक दिनमें उन तन त्यागा । पुत्र राज्य करन तव लागा ॥
राज्य पितासों नीकी कीन्हा । प्रजाआदिको सवसुख दीन्हा ॥
दोहा—राज करत वर्षें भई, सुखली अरु सुख दीन ॥
वाके नगरके विषय, द्रव्य विना नहिं हीन ॥
एक दिना ऐसो भो काजा । सोवत चौंकि उठा वह राजा ॥
भोर भये सवफौज वुलाई । हरिकी आज्ञा सो समुझाई ॥
कहा जहांतक परजा मेरी । ताको लूटो जाय सवेरी ॥

आज्ञा ले सब फौज पधारी । प्रजा लूटि लीन्हो तिन सारी ॥
दूजे कहाकि ह्वां तुम जावो । लूटसमेत भवन जलावो ॥
घर परजाके सभी जलाये । नीच ऊंचने बहु दुख पाये ॥
तीजे वचन भूप यों भाखो । कहा फौज सों खोज न राखो ॥
बड़े बड़ो अन्तर मेलो । लड़के बोलें कोल्हू पेलो ॥
यह सुनि सकलप्रजा घिरिआई । राजा पास पुकार सुनाई ॥
बहुतक राजा भये अनूठा । अपनीप्रजा नहीं कोहुं लूटा ॥

दोहा—पहिले सबको सुख दिया, अबभे तुम दुखदाय ॥
कारण यह कहि दीजिये, सबही को समुझाय ॥
यह कहि साहूकार ने, जो था याको बाप ॥
कुयश चला संसार में, बहुत लगाये पाप ॥
साहुकार पण्डित घने, और बड़ेही लोग ॥
कोल्हूकी सुनि कतलकी, बहुतक मानाशोग ॥
आये हैं फरयाद को, सुने बिगड़ते काज ॥
सकल प्रजा को मारिकै, किसका करिहौ राज ॥
सकल प्रजा तुव शरण हैं, बकसि देउ महराज ॥
अपनी अपनी भूमि में, फेरि बसैं सब साज ॥

राजा कही सो मैं नाहिं जानूं । अपने मुखसे कहा बखानूं ॥
कहा पुरुष सो इक तुम आनौ । जिनका कहासांच तुम मानौ ॥
यह सुनि ज्वाब सवालहि वारे । आकरि बैठे सवन मँझारे ॥
सो इक नर बहुतै इतवारी । जिनकी साखि हुती बहु भारी ॥
तिनको लै राजा के पासा । खड़े किये सब चरणन दासा ॥
राजा उठि उनहाक माहीं । मिलि बैठो पुनि वाही ठाहीं ॥

राजा कही जु हरिकी वोरैं । ध्यान लगायो मनको मोरैं ॥
घड़ी चारि जव ध्यान लगाया । नभ से शब्द यही जो आया ॥
दोहा–ढील भूप तैं क्यों करै, इनको कीजै जेल ॥
वड़े कतलही कीजिये, छोटे कोल्हू पेल ॥
तीनहिं वार लगाया ध्यानी । वारम्वार यही भइ वानी ॥
भूप कही कह दोष हमारा ।कोपित भयेजो सिरजन हारा॥
अव तुम परजा सों कहि देवो । कतल पेलना कोल्हू लेवो ॥
आय नरक कहि सवमें खोली । सुनि परजा ऐसे उठि वोली ॥
आपसमें सव कहने लागे । हम हैं मूरख वड़े अभागे ॥
हम शुभकर्म कवहुँ नहिं कीन्हे । तिथि पर्वहि कहुदान न दीन्हे॥
कथा कीर्त्तन में नहिं कहे । कुटुंव जालमें पागे रहे ॥
हरिकी भक्ति नहीं चित लाये । तातें अव होती मुकताये ॥
दोहा–हरिही को विसराइया, पूत महल के काज ॥
नाम रहै गो जगत में, सोभी रहा न आज ॥
चले नरक को निश्चय जैहैं । मार यमोंकी निश्चय खैहैं ॥
कांपत है सव देह हमारी । आपसमें भापैं नर नारी ॥
ऐसे ही सव रो रो वोलैं । व्याकुलभये धरणिमें डोलैं ॥
एकठावँ ह्वै मता उपाया । सोराजा को जाय सुनाया ॥
करजोरे मुख तृण गहिलीन्हे ।नखशिखलौंतनदीनजुकीन्हे॥
इक षटमास जु हमैं वचावो । अपने हरि को अर्ज सुनावो ॥
जामें जप तप धर्म वढ़ावैं । वोलैं सांच झूंठ विसरावैं ॥
चोरी जारी हिंसात्यागैं । रातिदिना हरिही सों लागैं ॥
दोहा–नित प्रति उठि शुभकर्म करि, लहैं धाममें वास ॥
काम क्रोध विसराय करि, होय चरणहीं दास ॥

अब तुमहमैंबेगि बकसावो । मास काटनेकी छूट दिलावो ॥
हमरय्यत हैं सभी तुम्हारी । एकबार करो अरजहमारी ॥
और कहीं तुम्हैं बोझ हमारा । राजा सुनि इनओर निहारा ॥
कहा कि मैं अब कैसे कहूं । आठपहर डरताही रहूं ॥
अरज करत कांपै तन सारा । तेजवंत है वह दरबारा ॥
पै तुम देखि दया उपजाई । मेरे भी मन ऐसी आई ॥
बैठि अकेला ध्यानधरूंही । तुम्हरे कारण अरज करूंही ॥
दिन बीता निशि जब आई । भूपध्यानकरि अरज सुनाई ॥

दोहा—अरज करी उन दीन ह्वै, बार बार यह भाखि ॥
या परजाको मासपट, क्षमा दृष्टि करि राखि ॥
जो जो इनके मन विषे, सो सो करैं अपाय ॥
छटे मासके ऊपरै, एक ग्रास नहिं जाय ॥
देखि भूपकी दीनता, पिघिले दीनदयाल ॥
नभ से बाणी यह भई, वही समय ततकाल ॥
यह परजा तुव कारणै, बकसी है पट मास ॥
ऊपर जा दिन एक जब, कीजो इनका नास ॥

अज्ञा भई भूप की जबहीं । सोयो पलँग निडर ह्वै तबहीं ॥
भोर भये बाहर को आया । सकलप्रजाकोनिकटबुलाया ॥
कहा कि है पट मास बचाया । अपने मनका करिल्यो भाया ॥
यह सुनि परजा सबहरषाई । अपने अपने घरको आई ॥
केहुं सिरकी केहुं छप्पर डारा । पक्का मंदिर नाहिं विचारा ॥
चोरी जारी सबै बिसारी । ढीले भये सभी ब्योहारी ॥
अरु साधुनकीसी बृतधारी । बालक मर्द और सब नारी ॥
रहे नहीं वै खोटे मनके । भये तपस्वीसे सब वनके ॥

दोहा—गडा हता जो द्रव्यही, करी न ताकी आंट ॥
राखि लिया षटमास को, अरु सब दीन्हा बांट ॥
जिनजिनकोरहातिनअसकीन्हा। जिनपैनाथा तिनकादीना ॥
आपसमें कहे धन कह करि हैं। छठे महीना पाछे मरि हैं ॥
यही समुझि उपजा बैरागा। सबहीइन्द्रियनका रसत्यागा
फीकेलगे भोग सब जगके। सहजछूटिगयेकामजोअघके
सबकी दशा एक जो भई। मौत जानि करि चिन्ता ठई॥
दिन दिन दुर्बल होते जावैं। हरिहीका जप ध्यान लगावैं॥
एक एक दिन लागै प्यारा। भजनकरैं जगन्यारा न्यारा॥
जिद्द अरु वाद न कोऊ ठानै। इकइक घरी अमोलक जानै॥
कहैं कि खोवैं तो कितपावैं। कथा कीर्तन सों चित लावैं॥
कथा कीर्तन जित तित होई। साधु समागम ह्वैगये सोई ॥
घरघर शुभ कर्मन ब्योहारा। धर्म पकड़ि अधरम सबडारा॥
ज्यों ज्यों दिवस अवधिके आवैं। घने घने शुभ कर्म कमावैं ॥
दोहा—जाको होवै मौतभय, जगमें लगै न चित्त।
झुकै रामकी ओरही, बहुत लगावै हित्त ॥
उन मनुषनकी यह गति भई। जगकी चाल डारि सबदई ॥
लाड़ चाव ब्योहार न कोई। ब्याह सगाई पुत्र न होई ॥
काम क्रोध नहिं उपजै मोहा। लोभमान नहिंप्रीति न द्रोहा॥
ऐसे रहि शुभ कर्म्म जुकरैं। सदा मौत से डरते रहैं ॥
सहजसहजफिरिवहदिनआया। डरे नहीं शुभ कर्म कमाया ॥
आपसमें कहैं हमको क्याहै। यमकी मार नरक भय ना है ॥
राजा जान्यो वह दिन आया। अपना सेवक त्वरित पठाया ॥
कही कि फौज सबै बनि आवैं। कतल करन परजा को धावैं ॥

फौजें सजिकरि ठाढ़ी भई । आज्ञा ओर दृष्टि जो दई ॥
राजाके मन ऐसी आई । इन सब पुरुषन लेहु बुलाई ॥
सांचे सबही के इतबारी । फेरि बुलावो अबकी बारी ॥
यही शोचि फिरि शीशउठाया । आज्ञाकारी निकट बुलाया ॥

दोहा—कामदार सों यों कही, वैसो पुरुष बुलाय ॥
जिनमें मिलिबैठा प्रथम, हरिसों ध्यान लगाय ॥

फिरि उनहिं को लियो बुलाई । मिलि बैठा सबका सुखदाई ॥
कहीकिसबमिलिसुरतिउठावो । राम ओर को ध्यानलगावो ॥
अज्ञाहोय स्वई तुम मानौ । मेरा दोष कछू मत जानौ ॥
मोको अज्ञाहोय सो करिहौं । अपने हिये नेकनहिं धरिहौं ॥
राजा कहिमिलि ध्यानलगाया । ऐसाशब्द गगनसों आया ॥
राजा मैं अब बकसि दियाहै । सकल प्रजाको शुद्धकिया है ॥
जिन पर मोकहं कोप भयाथा । तिनके कारण खड्ग लियाथा ॥
सर्व प्रजा सों बातें डारी । करिसुकर्महरिभक्तिसँभारी ॥

दोहा—तातें अज्ञा यों दई, रचौ कुटुँब परवार ॥
शुभकर्म्मन को कीजिये, खोटेकर्म्म निवार ॥

राजा कही खोलि दृगदीजै । अज्ञाभई सोई अब कीजै ॥
खोलि आँख करजोरिके भाखे । बकसे गये तुम्हारे राखे ॥
जो तुम कहौ सोई अब करैं । वचन तुम्हारे हिरदय धरैं ॥
राजा कही यही तुम कीजो । रामनामको संगी लीजो ॥
गुरुकाध्यान धरो मनमाहीं । विपति जासुसों आवत नाहीं ॥
अपनी त्रिया त्रियाकै जानो । परतिरियाको मातामानो ॥
परधनको पाहन समदेखो । शुभकर्मनको करो विशेखो ॥

दोहा–कहते श्रीशुकदेवजी, सुनौ चरणही दास ॥
राजाने उपदेश दै, खोई सबकी त्रास ॥

फिरिवै पुरुष विदा ह्वै आये । हरि राजाके वचन सुनाये ॥
जिन चालनसों वकससारे । सो रखियो तुम हिये मँझारे ॥
उज्ज्वल कर्म भूलि मति जैयो । हरिकीभक्ति माहँही रहियो ॥
सुनिकरि आपसमें फैलाई । एक एक ने सुनी सुनाई ॥
सबने मानी निश्चय कीन्हीं । प्रकटसुअपनीआंखिन चीन्ही ॥
हाथ कँगनको दर्पण केहा । जैसीकरणी भुगतै जेहा ॥
खुशीभये लागे व्यवहारा । रामभक्तिको लिये सँभारा ॥
कहि शुकदेव चरण हो दासा । सब प्रजा रहेउ उमगहुलासा ॥

दोहा–चरणदाससुनियोश्रवण, मैं उपदेशूं तोहिं ॥
जो पहिले हरिको भजै, पाछे दुःख न होहिं ॥

दृष्टान्त तीसरा ।

(इन्द्रनाम ब्राह्मणके दश पुत्रोंकी कथा.)

कथाकहौं इक औरपुरानी । करणीकरै सुसमुझै प्रानी ॥
इन्द्रनाम इक ब्राह्मण हुता । जाके दश सुत अरु इकसुता ॥
सुता व्याहि दइ घरकी हुई । जाके पीछे माता मुई ॥
पिता मुवा दश पुत्र रहेथे । आपसमें सबबैठि कहेथे ॥
ऐसी कछू जु करणी कीजै । जगमें ऊंची पदवी लीजै ॥
इकनेकही हूजिये भूपा । सुन्दर देही धरो अनूपा ॥
तेजमुलकमें होवै भारी । हुकम जुमानैं नर अरु नारी ॥
औरएक ऐसे उठिबोला । सावधान ह्वै अन्तरखोला ॥

दोहा–राजाही का हुकम तो, थोरेही में जोय ॥
ऐसी करनी कीजिये, भूप चक्कवै होय ॥

एकद्वीप नौखण्ड में, जाको पूरा राज॥
एकऔरउठि बोलिया, यहभी ओछासाज॥
चक्रवर्त्ति से इन्द्रबड़, देवन हूं को भूप॥
उमर बड़ी आनन्द बड़े, दुखकी लगै न धूप॥

करणी करत इन्द्रही लोगा। होकर राजाकीजै भोगा॥
जहाँ अप्सरा नृत्यकरत हैं। सुन्दर अधिका रूप धरतहैं॥
और बड़ा भाई योंभाखा। सुरपतिहूंको नाहीं राखा॥
कहा कि पदवी ब्रह्माकीसी। और न दीखै काहू हीसी॥
जाके एक दिवसही माहीं। चोदह इन्द्र ह्वै ह्वै जाहीं॥
सब ब्रह्माण्ड आसरे वाके। विनशि जायँ मिटिजावैं ताके॥
तीनि लोकका पितावहीहै। वेद पुराणन माहँ कही है॥
करणी करिकरि ब्रह्मा हूजै। ऐसी पदवी क्यों नहिं लीजै॥

दोहा—सगरे यों उठि बोलिया, सत्य सत्य यह बात॥
ऐसाही अब कीजिये, ठहराई सब भ्रात॥

दशहू करन तपस्या लागे। पारब्रह्मकी ओरी पागे॥
अधिक तपस्या कीन्हीभारी। मास सूखिगा दीखै नारी॥
हाड़ त्वचा चिपटी रहगई। लोहू धातु कछूना ठई॥
सबही चित्रहिसे रहगये। कष्ट तपस्या ऐसेसये॥
फूल पात जलहू नाहिं लीन्हा। ऐसा तप दशहूने कीन्हा॥
तनत्यागे दूजेही जन्मा। दशहू भ्रात हुये जो ब्रह्मा॥
जिनके दश ब्रह्माण्ड बने हैं। एकएक तिनमाहिं ठने हैं॥
करणीकबहुँ न निष्फल जावै। जो मनवारै सोईपावै॥

दोहा—करणी सों भये इन्द्रहू, करणी ब्रह्मा सोय॥
करणी सों ईश्वर भये, शुकदेवा कहे सोय॥

दशहजार कै बीसही, वर्ष तपस्या कीन्ह ॥
हरिजाको बदलोदियो, माँगो सो वर दीन्ह ॥
चारौ युगके माहिं जो, करणीही परधान ॥
गुरु शुकदेवा कहत है, चरणदास उर आन ॥
उज्ज्वल कर्म्मन के किये, दिन२उज्ज्वल होय ॥
मनमें उपजै भक्तिही, प्रेम पदारथ सोय ॥
चरणदास तुमकरणीकीजो । याहीमें मननीके दीजो ॥
ऐसा जन्म बहुरि नहिं पैहो । बीतिजाय पुनि बहु पछितैहो ॥
मनुष देहयादुर्लभ जानौ । वाको पा शुभकरणी ठानौ ॥
यादेहीमें करी कमाई । जाय स्वर्गमें नौनिधि पाई ॥
भक्तिकरी देहीके माहीं । जा वैकुण्ठ सुआये नाहीं ॥
या देही में ज्ञान भया है । जीव ब्रह्म जो होयगयाहै ॥
मूरुखकरणी को नहिंजानै । कथनीकथि २ बहुत बखानै ॥
थोथी कथनी काम न आवै । थोथा फटकै उडि २ जावै ॥
दोहा–कथनीही के बीचमें, लीजो तत्त्व विचार ॥
सार सार गहिलीजियो, दीजो डारि असार ॥
थोथी कथनी वही जु जानौ । बिन करनी जो करै बखानौ ॥
लोक प्रलोक न शोभा पावै । बकिवकिवकिखाली मरिजावै
कथनी के शूरा बहु जानै । करणीमें कायर अरुयानै ॥
शूरा वही जो करणी करै । दया धर्म्मलै सन्मुख अरै ॥
पाँव धरे सों नाहिं उठावै । करणी करता चला जुजावै ॥
फिरै जबहिं फल लैकर आवै । सो वह शूर मल्ल कहावै ॥
कायर बीचहि सों फिरि आवै । सो वह करनी को विसरावै ॥
आपन खोंट न जानै भोंदू । वह तो कथनीही का गोंदू ॥

दोहा—ऐसे जगमें बहुत हैं, वैसे जगमें नाहिं ॥
कोई कोइहि देखिये, सतगुरु के मधि माहिं ॥

होनहार को बहुत बतावै । पै ताको कछु मर्म न पावै ॥
कहैं कि होनी होय सुहोई । ताको मेटिसकै नहिं कोई ॥
याको समझ उपाय न करिया । श्रद्धा तजि कायरह्वै परिया ॥
समझि निखट्टू गृही भये हे । वेष धारि बिन करणी रहे हे ॥
जानत नाहिं जु पिछीली करणी । अब के भई जुहोनी भरणी ॥
परालब्ध अरु भाग्य कहावै । पिछिले कर्म्मनसे उपजावै ॥
अबके करै सु आगे पावै । कछू २ फल अभी दिखावै ॥
कैकाहू गाली दै देखो । कैकाहूको मारि विशेखो ॥
कै काहूको भोजन खवावो । कै काहूको शीश नवावो ॥
कै कोइ चोरी जूआ खेलौ । कै काहूको गुस्सह झेलौ ॥
दोनोंका फल आगे आवै । चरणदास शुकदेव बतावै ॥
प्रकट देखिये यही तमाशा । नीच ऊंच करणी परकाशा ॥

दोहा—कोटि यही उपदेश है, यही जु सगरी बात ॥
करणीही बलवन्त है, यों शुकदेव दिखात ॥
मनकी करणी ज्ञान है, परमातम लखिलेय ॥
ब्रह्म रूप ह्वै जाय जब, छूटै सबही भय ॥
भवसागर में भय वने, ताकी लगै न आंच ॥
झूठको भय बहुत है, भय नहिं व्यापै सांच ॥
करणीही सों पाइये, पारब्रह्म का खोज ॥
सतगुरु पै चलि जाइये, मेटै सबही सोज ॥

इच्छा ब्रह्मकरी सोइ करणी । ईश्वररूप धरालै धरणी ॥
महतत्व कारि अहँकार जुकीये । तीनरूप उनको करिदीये ॥

राजस[1] तामस[2] सात्विक[3] जानौ । यही त्रैगुण मनमें आनौ ॥
राजस सों जनको उपजावै । सात्विक सों पाले सिरजावै ॥
तामस सों बिनशावै तोड़ै । बहुत सृष्टिनाहिं भूपरजोड़ै ॥
जोड़ै तौ वह कहां समावै । धरतीका परमाण कहावै ॥
योजन पचासक्रोड़ बताई । वेद पुराणन माँहि जो गाई ॥
धरती करणीही सों ठाढ़ी । कछुवा शेष भये जो आढ़ी ॥
करणीही सों घन बरसावै । बादल मिलती पवन चलावै ॥

दोहा—करणी सों कर्तारही, धरा ब्रह्मका नावँ ॥
माया भी तौ उन करी, खेली बहुविधि दावँ ॥

कोई निराकार बतलावै । कोई निर्गुण कहि समुझावै ॥
कोइकहै दोनोंसे न्यारा । है जु अकर्त्ता अलख अपारा ॥
कहैं कि माया कियो पसारा । जेता दीखै यह संसारा ॥
तौ कहु माया कितसों आई । अन्त यही हरिने उपजाई ॥
वही सृष्टिका कारण काजा । वाने जगत प्यारकरि साजा ॥
देह देह में वह दरशावै । चातुरहो चतुराई पावै ॥
जैसे बरतन गढ़ै कुम्हारा । सब में दीखै सिरजनहारा ॥
चित्र मध्य चित्रामी[4] सूझै । सुरतिलगाय लगाय उरूझै ॥
जबहीं बनी बनाई नीके । कहि शुकदेवजु अपने जीके ॥

दोहा—बिना किये कछु होय ना, आपहि लेहु विचार ॥
करणी देखी दूरलौं, शोचा बारम्बार ॥
चरणदास तोसों कहौं, उठि उद्यम को लाग ॥
आलस सकल गवांयके, विषयनमें मतिपाग ॥
कारज लोक प्रलोक के, बिन करणी हो नाहिं॥

१ रजोगुण ब्रह्मा । २ तमोगुण शिव । ३ सतोगुण विष्णु । ४ चित्रकार ।

करणीही सों होतहैं, करणी सबके माहिं ॥
खोंटे कर्म्मन सों दुखी, या दुनियाके बीच ॥
करणीही सों होतहै, नर ऊंचा अरु नीच ॥
संगति मिलि करने लगै, ऊंचे नीचे कर्म्म ॥
बुधिमैली जो होतहै, खोवै अपना धर्म्म ॥
सतसंगति धर्म्म रहत है, कुसंगतिसों जाय ॥
चरणदास शुकदेव कहि, दोनों दिया दिखाय ॥
धर्मगया जब सतगया, भ्रष्टभई अतिबुद्धि ॥
तबहीं पाप अरु पुण्यकी, कछू रही ना शुद्धि ॥
पाप पुण्यही सत्यहै, ठहरि रहा ब्रह्मण्ड ॥
इन दोनों के मिटतही, होय खण्डहि खण्ड ॥
पाप पुण्य व्यवहारहै, ताहि देखु प्रत्यक्ष ॥
जाही सेती प्रेत यम, देवत गण अरु यक्ष ॥
चौरासी अरु मनुष सब, चंद सूर लौं जान ॥
पाप पुण्य के फेर में, सबही पड़े पिछान ॥
पाप किये नरकै पडै, पावै दुःख अपार ॥
पुण्य किये सुख बहुतहै, देखो दृष्टि उघार ॥
विरले जनको होतहै, पाप पुण्य की सूझ ॥
सोई छुटै जग जालसों, बहुतै रहै अरूझ ॥
लाख बातकी बातहै, कोटि बातकी जान ॥
पाप पुण्य सों जानिये, लाभ होयकै हान ॥
करणी बिन थोथा रहै, कछू न पावै भेव ॥
विभंव प्राप्त कहुं होयना, कहैं जु यों शुकदेव ॥

होनी कहैं जुवेभी सारे । करणी करते दृष्टि निहारे ॥
बिनकरणी व्यवहार न चालै । नहीं तौ बैठे रह जा ठालै ॥
कृत्य करै सो भी यह करणी । वनिया हाट पंड़िया वरणी ॥
करणीही सों खावै पीवै । योगकरै बहुतै दिन जीवै ॥
मनमांजे सबही परकाशै । करणी विन झूठी सबआशै ॥
करणीही सों सिधि ह्वै जावै । अष्टसिद्धि करणी सों पावै ॥
जीवनमुक्ती करणी हेती । सुनिले सकल शास्त्रसों तेती ॥
गुरुसों निश्चय यहै जुकीनी । रणजीता मै तुमको दीनी ॥

दोहा—यह तौ धर्म्म जहाजहै, मैं तोहिं दई निहार ॥
भवसागर मों डारियो, चढ़ै सो उतरै पार ॥
बादवान पुनि खेइयो, दीजो ताहि चलाय ॥
पानी पाप निकासियो, नेकहु ना भरिजाय ॥
चढ़ि उतरै जो पारही, पावै सुखका धाम ॥
आनँदही आनँदलहै, करै तहाँ विश्राम ॥

शिष्यवचन ॥

दोहा—धन्य श्रीशुकदेव हौ, वचन तुम्हारे धन्य ॥
सब संदेह मिटाय करि, निश्चल कीन्हो मन्य ॥

व्यास पुत्र तुम मम गुरुदेवा । करूं मानसी तुम्हरी सेवा ॥
मन में तुम्हरी पूजा साजू । तुम सों पूंछि करौं सब काजू ॥
मेरे ध्यान शितावी[1] आये । जो थे सो सन्देह मिटाये ॥
मैं तौ ध्यान करतीही रहूं । तुम्हरी मूरति हिरदय गहूं ॥
मेरे जीवन प्राण अधारा । मैं नहिं रहौं चरणसे न्यारा ॥

१ शीघ्र, जल्दी ।

तुम्हरो चरण दास कहाऊं । वारवार तुमपै चलि जाऊं ॥
तुमहीं को ईश्वर करि मानूं । पारब्रह्म तुमहीं को जानूं ॥
और न कोई दूजी आसा । मो हिरदयमें राखौवासा ॥

दोहा—अपने चरणहिंदासको, सब विधि दिया अघाय ॥
अस्तुतिकरूं तौक्याकरूँ, मो पै कही न जाय ॥

इति श्रीस्वामीचरणदासजी कृत गुरुचेलेका
संवाद धर्मजहाजसम्पूर्णम ॥

श्रीशंकरायनमः।
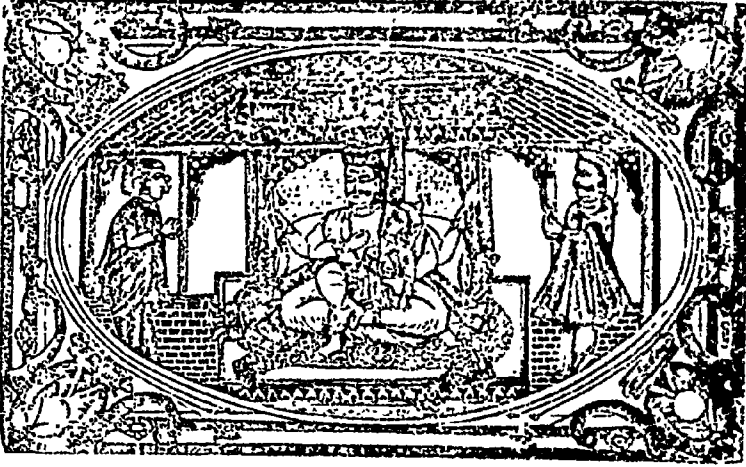
अथ श्रीअष्टांगयोग प्रारम्भः।

गुरु शिष्य संवाद।

शिष्यवचन।

दोहा—व्यासपुत्र धन धन तुम्हीं, धन धन यह अस्थान ॥
ममआशा पूरी करी, धन धन वह भगवान् ॥
तुम दर्शन दुर्लभमहा, भये जु मोको आज ॥
चरण लगो आपादियो, भये जु पूरण काज ॥
चरणदास अपनो कियो, चरणन लियो लगाय ॥
शिरकरधरिसबकुछदियो, भक्तिदई समुझाय ॥
बालपने दरशन दिये, तबहीं सब कछु दीन ॥
बीज जु बोया भक्तिका, अब भा वृक्ष नवीन ॥
दिन दिन बढ़ता जायगा, तुम किरपाके नीर ॥

जब लग माली ना मिला, तबलग हुता अधीर ॥
अरु समुझाये योगही, बहु भाँती बहु अंग ॥
ऊरधरेता ही कही, जीतन विंद अनंग ॥
अरु आसन सिखलाइया, तिनकी सारी विद्धि ॥
तुम्हरी कृपासोंहोहिंगे, सबही साधान सिद्धि ॥
इक अभिलाषा औरहै, कहि न सकूं सकुचाय ॥
हिये उठै मुख आयकरि, फिरि उलटीही जाय ॥

गुरुवचन ।

दोहा—सतगुरु से नहीं सकुचिये, एहो चरणन दास ॥
जो अभिलाषा मनविषे, खोलि कहौ अबतास

शिष्यवचन ।

सतगुरु तुम आज्ञादई, कहूं आपनी बात ॥
अष्टांग[1]योग बुझाइये, जाते हियो सेरात ॥
मोहिं योग बतलाइये, जोहै वह अष्टांग ॥
रहनीगहनी विधिसहित, जाके आठो आंग ॥
मत मारग देखे घने, ह्वांसियरे भये प्रान ॥
जो कुछचाहौ तुमकरो, मैंहौं निपट अयान ॥

गुरुवचन ।

अष्टांगयोग बुझाइहैं, भिन्न भिन्न सब अंग ॥
पहिले संयम सीखिये, जाते होय न भंग ॥

शिष्यवचन ।

संयम काको कहतहैं, कहौ गुरू शुकदेव ॥
सो सबही समुझाइये, ताको पाऊँ भेव ॥

---

१ यम, नियम, आसन, प्राणयाम, प्रत्याहार, ध्यान, धारण, समाधि ये अष्टांगयोग कहलाते हैं ।

गुरुवचन ।

(योगियोंके अवश्यमेव कर्तव्य)

प्रथम सूक्षम भोजन खावै । क्षुधा मिटै नहिं आलस आवै ॥
थोड़ासा जल पीवन लीजै । सूक्षम बोलै वाद न कीजै ॥
बहुत नींदभर सोवै नाहीं । दूजा पुरुष न राखै पाहीं ॥
खट्टा चरफर खार न खावै । बीरज क्षीण होन नहिं पावै ॥
करै न काहू बैरी मीता । राखै नहिं जगवस्तुकी चीता ॥
निश्चलह्वै मनको ठहरावै । इन्द्रिनकेरस सब बिसरावै ॥
त्रिया तेल नहिं देह छुआवै । अष्ट सुगन्ध अंग नहिं लावै ॥
मनुषन की राखै नहिं आसा । गुरु पद केर रहै ह्वै दासा ॥

दोहा—काम क्रोध मद लोभ अरु, राखैना अभिमान ॥
रहै दीनताई लिये, लगै न माया बान ॥

छल नहिं करै न छलमें आवै । दम्भझूठके निकट न जावै ॥
टोना यंत्र भूत नहिं धावै । झूठ जानिके सब बिसरावै ॥
धातु रसायन मन नहिं लीजै । झूठ जानि याहू तजिदीजै ॥
स्वांग तमाशे बाग न जैये । आसन बैठि बिराम बनैये ॥
दृढ़ ह्वै लगै युक्तिके माहीं । ताते बिघ्नहोय कछु नाहीं ॥
रूठा रहै जगत लोगन सों । न्यारोरहै सबी भोगन सों ॥
इन्द्रआदि लौं सुख संसारी । नेक न चाहै चित्त मँझारी ॥
सिमिटि रहै हिय माहिं समावै । ऐसे योग सधै सिधि पावै ॥

दोहा—ऋद्धिसिद्धि अरुकामना, तिनकी रखै न आस ॥
मानबड़ाई चपलता, त्यागै चरणहिं दास ॥

गहि संतोष क्षमा हिय धारै । संयम करिकरि रोग निवारै ॥
अहङ्कारको छोटा करिये । कुटिल मनोरथ मन नहिं धरिये

वसिये जितहि देश सुस्थाना । निरउपाधि धरती अस्थाना ॥
भली भूमि लखि गुफा वनावै । नीची ऊंची रहन न पावै ॥
जमीं वरावर चौरस होई । होय लदाव कि मधरी सोई ॥
सांकर द्वार कपाट लगावै । कहूं छिद्र रहने नहिं पावै ॥
तामहँ वैठि योग तप कीजै । दूजो पुरुप न भीतर लीजै ॥
कहि शुकदेव चरणहीं दासा । जगसों रहिये सदा उदासा ॥

दोहा—यह सव निश्चयही करै, योग युक्तिके आदि ॥
पहिलै ऐसा होय करि, पीछे साधन सादि ॥

योगके आठ अंग ।

आठ अंग कहुं योगके, सुनो चरणहीं दास ॥
मेरे वचनन के विषे, चित दै करौ निवास ॥

यमके अंग प्रथम सुनिलीजै । दूजे नियम कहूं चित दीजै ॥
तीजे आसन हितकरि साधौ । प्राणायाम चौथ अराधौ ॥
प्रत्याहार पांचवां जानौ । छठो धारणा को पहिचानौ ॥
सतवैं ध्यान मिटै सव वाधा । कहूं आठवां अंग समाधा ॥

शिष्यवचन ॥

धन्य धन्य तुम श्री गुरुदेवा । मेरे प्राणनाथ शुकदेवा ॥
व्यास पुत्र तुम दीनदयाला । मम अनाथको कियो निहाला ॥
आठअंग मोहिदियो सुनाई । अवकहु भिन्न भिन्न समुझाई ॥
एक एकको जुदा वखानो । जासों जाय दास पर जानो ॥

गुरुवचन ॥

दोहा—एक एक का कहतहौं, जुदा जुदा विस्तार ॥
श्रवणन सुनौ विचारिकै, लैलै हियमें धार ॥

अथ यमअंग वर्णन ॥

अहिंसा १

प्रथम कहौं यमके दश अंगा । समझै योग न होवै भंगा ॥
प्रथम अहिंसाही सुन लीजै । मनकरि काहू दोप न कीजै ॥
कडुवा वचन कठोर न कहिये । जीवघात तनसों नहिं दहिये ॥
तन मन बचन न कर्म लगावै । यही अहिंसा धर्म कहावै ॥

सत्य २.

दूजेसत्य सत्यही बोलै । हिरदै तौलि वचन मुख खोलै ॥

अस्तय ३.

तीजे असते त्याग सुनीजै । तन मन सों कछु नाहिं हरीजै ॥
तन चोरी के लक्षण नाखै । मनकी चोरी को नहिं राखै ॥

ब्रह्मचर्य ४.

चौथा ब्रह्मचर्य बतलाऊं । भिन्न भिन्न करिताहि सुनाऊं ॥

अष्ट प्रकारका मैथुन ।

दोहा—ब्रह्मचर्य यासों कहैं, सुनहु चरणही दास ॥
आठ अंग सो नारि की, नेक न राखै आस ॥

यती होय दृढ़ कांछ. गहीजै । वीर्य क्षीण नहिं होने दीजै ॥
मैथुन कहूं अष्ट परकारा । ब्रह्मचर्य रहै इनसे न्यारा ॥
सुमिरण त्रियाकेर नहिंकरिये । श्रवणन सुरतिरूप नहिं धरिये ॥
रस शृङ्गार पढ़ै नहिंगावै । नारिनसों नहिं हँसै हँसावै ॥
दृष्टि न देखै विष नहि दौरै । मुख देखै मन होजा औरै ॥
बात इकन्तकरै नहिं कबहीं । मिलन उपाय जु त्यागैसबहीं ॥

१ श्रवण स्मरण कीरतन, चिंतवन बातइकंत । दृढसंकल्प, भयंल तर्न प्राप्ति अष्ट कहंत ॥ १ ॥

अथवा स्पर्श निकट न जावै। कामजीति योगी सुखपावै॥
अष्टप्रकारके मैथुन जानौं। इन तजि ब्रह्मचर्य पहिंचानौं॥
कहैं शुकदेव चरणहीदासा। ब्रह्म सत्य में करै निवासा॥

क्षमा ५.

दोहा—पँचवीं सुखदाई क्षमा, जलन बुझावै सोय॥
जोदुख आवै घटविषे, पातक डारै खोय॥

कोई दुष्टकछू कहिजावो। गाली देकर कोई खिझावो॥
कैकोइ शिरपर कूडा डारो। कैकोइ दुख देवो अरु मारो॥
वाकी कछू न मनमें लावै। उलटा उनको शीश नवावै॥
ऐसी क्षमा हियेमें लावो। बोलौ शीतल अग्नि बुझावो॥

धीरज ६.

छठां अंग धीरज का जानौं। धीरजही हिरदय में आनौं॥
योगयुक्ति धीरज सों कीजै। सब कारज धीरज सों लीजै॥
धीरज सों बैठे अरु डोलै। धीरज राखि समुझिकरबोलै॥
आनि परे दुख ना अकुलावै। धीरज सों दृढ़ता गहिलावै॥

दोहा—धीरज रहा तौ सब रहा, काहूसे न डराय॥
सिंह प्रेत अरु कालका, धीरज सों डरजाय॥

दया ७.

दया सातवीं अब सुनिलीजै। सब जीवन की रक्षा कीजै॥
लख चौरासी का सुखदाई। सबके हित की कहै बनाई॥
रहिये तन मन वचन दयाला। सबही सों निर्वैर कृपाला॥

आर्य्यव ८.

अठवें कहूं आर्य्यव खोलै। कोमलहृदयसों कोमलबोलै॥
सब को कोमल दृष्टि निहारै। कोमलता तन मन में धारै॥

कोमल धरती बीज ववावे । वढ़ै वेगि फूलै फललावै ॥
ऐसे कोमल हिया वनावै । योग सिद्धिकरि पदपहुंचावै ॥
यही आर्य्यव लक्षण जानो । शुकदेवकहैरणजित पहिचानो

मिताहार ९.

दोहा—मिताहार जो नवें की, समझ लेहु मनमाहिं ॥
सतगुन भोजन खाइये, ऐसा वैसा नाहिं ॥
खावै अन्न विचारिकै, खोटाखरा सँभार ॥
तैसाही मन होतहै, जैसा करै अहार ॥

सूक्षम चिकना हलका खावै । चौथाभागछोडिकरि पावै ॥
वानप्रस्थ कै हो संन्यासै । भोजन सोलह ग्रास गिरासै ॥
अरु गृहस्थ बत्तीस गिरासा । आवै नींद न वहुत न श्वासा ॥
ब्रह्मचारी भोजन करै इतना । पठन माहँ वीरजरहैजितना ॥

शौच १०.

दशवां शौच पवित्तर रहिये । कर दातौन हमेश नहइये ॥
जो शरीर में होवै रोगा । रहै न तन जल छूवन योगा ॥
तौ तन माटी संशुधि कीजै । अब अंतरकी शुद्धि न लीजै ॥
राग द्वेष हिरदय सों टारै । मन सों खोटे कर्म निवारै ॥

दोहा—दशप्रकारका कहा यह, पहिल योगकी नीव ॥
नेम कहूं अब दूसरा, सोहै साधन सीव ॥

अथ नियम अङ्गवर्णन ।

इन्द्री वश १.

दूजा अङ्ग नियम का गाऊं । भिन्न भिन्न सब अंग सुनाऊं ॥
पहला तप इन्द्री बश कीजै । इनके स्वाद सभी तजिदीजै ॥

खातें पीतें सोवत जागत। योगी इन्द्रिनकूं वश राखत ॥
तनकूं वश कर मनकूं मारै। ऐसी विधि तपका अंगधारै ॥

संतोष २.

दूजा अंग कहूं संतोषा। हानि भये नहिं मानै शोका ॥
लाभ भये नाहीं हरपावै। ऐसी समुझ हिये में लावै ॥
परारब्ध तन होयसु होई। संकल्प विकलपरखैनकोई ॥

आस्तिकता ३.

दोहा—तीजा अस्तिक अंग है, जाका सुनो विचार ॥
समझ समझ मनमें धरो, ताको गहो संचार ॥

शास्त्र सुनि परतीति जो कीजे। सत्तब्रह्म निश्चय करिलीजै ॥
बुद्धि निश्चय आतम के माहा। जगत सांच करि मानैं नाहीं ॥

दान ४.

चौथा दान अंग विधि होई। पात्र कुपात्र विचारै सोई ॥
एक दान उपदेश जु दीजे। भवसागर सों पार करीजे ॥
दूजा दान अन्न अरु पानी। दीजै कीजे बहु सनमानी ॥
और पराये दुख की बूझै। सुखदानी परमारथ सूझै ॥

ईश्वराराधन ५.

पंचम ईश्वर पूजा करिये। तन मन बुद्धि जहांलै धरिये ॥
है निष्काम तजै सब आसा। सेवा करै होय निजदासा ॥

दोहा—पाती फूल जुभाव सों, सह सुगन्ध करिधूप ॥
शुकदेव कहैं यों कीजिये, पूजा अधिक अनूप ॥

श्रवण ६.

छठें सिद्धांत श्रवण सुनिवानी। करि विचार गहिये मनमानी ॥
सार असार विचार जु कीजे। पानीको तजि पयको पीजे ॥

अरु सतगुरु सों निश्चय करिये । परखि सँभारि हिये में धरिये ॥
करणी करै तिन्हों से मिलना । बंचक अयोगी के नाहिं सुनना॥

लज्या ७.

सतवां वही जु कहिये लाजा । सो वह सकल सँवारे काजा ॥
साध गुरूसे लाज करीजै । तन मन डोलन नाहीं दीजै ॥
करम विपर्यय सब परिहरिये । हिय आँखिनमें लज्जा भरिये ॥
शुकदेवकहसुनिचरणहिंदासा । लज्जा भवन माहिं करिवासा ॥
दोहा—कुटुँब मित्र जग लोगहीं, सबसूं कीजै लाज ॥
बड़ी लाज हरिसूं करो, नीके सुधरै काज ॥

दृढता ८.

अष्टम मति दिढ़ जो कहिये । सो विशेष साधनकूं चहिये ॥
शुभ करमन की इच्छा करनी । हो न सकै तोभी हिय धरनी ॥
बहकै ना काहू बहकाये । कैसेहू नाहिं हलै हलाये ॥
जग सुख देखि न मनमें आनै । स्वर्ग आदिसुखतुच्छहिजानै॥
कोइ अस्तुति आदर करिसेवै । कोई कुभाव करि गाली देवै ॥
दोनों में निश्चय रहै जोई । शुकदेव कहैं दृढ़मति सोई ॥

जाप ९.

नवमें जाप करै गहिमौना । मन जिह्वासूं कीजै जौना ॥
होयसकै मन पवन गहीजै । गुरुमन्तर जप तामें कीजै ॥
दोहा—हरिगुनकी अस्तुति पढ़ै, सोभी कहिये जाप ॥
शुकदेव कहैं रणजीत सुनु, त्रैविधि नाशै ताप ॥
दशवें समझो होमही, कीजै दोय प्रकार ॥
अँगन माहिं साकिल्ल कूं, वेद कहै ज्यों डार ॥

दूजै पावक ज्ञानकी, तामें इन्द्री होम ॥
वाकूं परगट भूमि है, याकूं हिरदा भौम ॥
यमका अंग सभी कह दीन्हा। नेम कहा सोभी तुम चीन्हा ॥
निरे योगहीके मत जानो। सबके कारजको पहिचानो ॥
ओप योग पहलये चहिये। शुभकरमन के मारग गहिये ॥
जोये होय तो होवे योग। नाहीं वहै जगतके भोग ॥
जग रासीकूं पहल सुनीजे। पाछे भेद योगको दीजे ॥
यम अरु नियम दोऊ वतलाये। अच्छी नीकी भाँति सुनाये ॥
अब तीजे आसन समझाऊं। जुदे जुदे कहि सबै सुनाऊं ॥
योग पहिल आसनही साधै। आसनविना योग बरबादै ॥

अथ आसनवर्णन।

दोहा—चरणदास निश्चय करौ, विन आसन नाहिं योग ॥
जो आसन दृढ़ होय तौ, योग सधै भजि रोग ॥

चौरासी लाख आसन जानौ। योनिनकी बैठक पहिचानौ ॥
तिन में चौरासी चुग लीन्हें। ऊरध भेद सुगम सों कीन्हें ॥
सो तुमकूं पहिले वतलाये। जिनकूं साधैगे चितलाये ॥
तिनमें दोय अधिक परधानें। तिनकूं सब योगेश्वर जानें ॥
आसनसिद्ध पदम कहलावे। इनकूं करि निश्चय ठहरावे ॥
अरु आसन सब रोग भजावैं। ये दो आसन योग सधावैं ॥
इनकूं साधै जो जन कोई। ध्यान समाधि लगावै सोई ॥
चरणदास शुकदेव कहैयों। आसन दोनों वरणौं हैं ज्यों ॥

अथ पद्मासनविधि।

पहिले आसन पदम बताऊं। ज्योंकी त्यों मूरति दिखलाऊं ॥
पहिले बावाँ पावँ उठावै। दहिनी जङ्घा ऊपर लावै ॥

दहिना पाँव फेरियों लाके । बाँवीं साथल ऊपर राखै ॥
वावाँ कर पीछेसों लावै । बाम अँगूठा गहि तन लावै ॥
ऐसे हाथ दाहिना लावै । दहिन अँगूठा पकड़ दृढ़ावै ॥
ग्रीवा लटक चिबुकहिये आवै । नासा आगे दीठि लगावै ॥
देवदृष्टिहो कौतुक दरशै । कहै शुकदेव अभैपद परशै ॥
दोहा—कै हिरदै राखै चिवुक, कै सम राखै देह ॥
कै घंटों दोउ हाथ रखि, कै अँगुठा गहिलेह ॥

अथसिद्धासनविधि ।

दूजा आसनसिद्धजु कीजे । वावाँ पाँव गुदाढिग दीजे ॥
दाहिन पांव लिंगपर आवै । दृष्टि सुभृकुटी पै ठहरावै ॥
अचरज जहाँ अधिक दरशावै । खुले कपाट मोक्ष गति पावै ॥
आसन साधि व्याधि परिहरै । भूँख नींद जोपै वश करै ॥
दोहा—एँड़ी बावे पांवकी, सीवन मध्ये राख ॥
लिंग गुदा के मध्य में, मूल वोलिये साख ॥
संयम सूं इन्द्री गहै, राखै सरल शरीर ॥
दृष्टि उठा भृकुटी धरै, मिटै जु दोनों पीर ॥
दहिने लावै लिंगपर, भाग वरावर राखि ॥
वारी बारी कीजिये, शुकदेवा कहै भाखि ॥

अथ प्राणायामअंगवर्णन ।

दोहा—चौथे प्राणायामहीं, कहूं सुनौ चित लाय ॥
जावल जीतै पवनकूं, चढ़ गगनकूं धाय ॥
षटचक्कर कूं छेदि करि, सुखमनहींकी राह ॥
दलसहस्रके कमल में, पहुँचे करै उछाह ॥
हिरदै में अस्थान है, प्राण वायुका जान ॥

वाके रोंके सब रुक, वायुन में परधान ॥
जैसे गंगा एकही, घाट घाट को नावँ ॥
ऐसे प्राणहिं वायुके, नावँ कहे बहु ठावँ ॥
चौरासी अस्थान पर, चौरासीही वाय ॥
तामें दश ये मुख्य हैं, वरणौं सुनिये ताहि ॥
प्राण अपान समानही, और व्यान उद्यान ॥
नाम धनंजय देवदत, कूरम किरकल जान ॥
दशवायू जो एकही, तिनमें दीरघ दोय ॥
सोवे प्राण अपान हैं, तिन्हें छिपाने कोय ॥
अपानजाय प्राणें मिलै, रहै प्राणके प्रान ॥
शुकदेवकहि वर्णनकरूं, अब इनके अस्थान ॥

प्राणवायु हिरदै के ठाहीं । बसै अपान गुदा के माहीं ॥
वायु समान नाभि अस्थाना । कंठ माहिं बाई उद्याना ॥
व्यान जु व्यापक है तन सारे । नामक वायु सों उठै डकारें ॥
पलक उघाड़ै कूरमवाई । देवदत्तसूं होय जँभाई ॥
किरकल वायु जु भूँख लगावै । मुखै धनंजय देह फुलावै ॥
सब में प्राण वायु मुख जानौं । सो हिरदै के मध्य पिछानौं ॥
हिरदाही देही के माहीं । जो कुछ है सों ह्यांही ह्याहीं ॥
योगेश्वर ह्यांई फल पावै । ह्यांसूं अनहद नाद जगावै ॥

अथ चक्रवर्णन ।

दोहा—अब चक्कर वर्णन करूं, पाछे प्राणायाम ॥
वरणूं नारी सुषमना, सुधरैं सबही काम ॥
हैं वै मूरति कमल की, छोटे और विशाल ॥
मूड़सुं लेकर शीशलौं, एकहि जिनकी नाल ॥

लालरंग पहिला कहूं, चक्रअधार तिहिं नावँ ॥
चार पैंखरी तासु की, हैं जु गुदाके ठावँ ॥
हैं जु गुदा के ठावँ, देह ताहीपर साजै ॥
चारौं अक्षर तहाँ, देव गनेश विराजै ॥
पवन सुरत ह्वां लै धरै, खोलि कहैं शुकदेव ॥
दूजा लिंगस्थानहीं, जाको सुन अब भेव ॥
पीतवरण षट पैंखरी, नामजु स्वाधिष्ठान ॥
षट अक्षर जापै दिये, ब्रह्मा दैवत जान ॥
ब्रह्मा दैवत जान, संग सावित्री दासा ॥
इन्द्रसहित सबदेवतहां, सबही का बासा ॥
मणिपूरक चक्कर कहूं, तीजा नाभिस्थान ॥
नीलवरण दश पैंखरी, दश अक्षर परमान ॥

दोहा—विष्णु जहाँका देवता, महालक्षिमी संग ॥
चरणदास अब कहतहूं, चौथे को परसंग ॥
अनहदचक्र हिरदय विषे, द्वादशदल अरु श्वेद ॥
शिवशक्ती जहँ देवता, द्वादश अक्षर भेद ॥
पँचवां चक्कर कंठ में, विशुद्ध नाम जिहिकेर ॥
षोड़श दल जीवदेवता, षोड़श अक्षर हेर ॥
छठयों भौंहन बीच में, अज्ञा चक्कर सोय ॥
ज्योति देवता जानिये, दो दल अक्षर दोय ॥

शिष्यवचन ।

दोहा—कमलौं पर अक्षर कहे, समझ न आई मोहिं ॥
कौन कौन अक्षर तहां, सतगुरु कहिये सोहिं ॥

गुरुवचन।

पहिला कमल अधार सुनाऊं। व श ष स अक्षर वरणवताऊं॥
दूजा कमल जु स्वाधिष्ठाना। ब म भ य र ल जु बखाना॥
तृतीये मणिपूरक जो कहिये। ड ढ ण त थ ही लहिये॥
द ध न प फ जो गाये। ये दश अक्षर वरण वताये॥
चौथे चक्र अनाहद माहीं। द्वादश अक्षर वरण वताहीं॥
क ख ग घ ङ जो जाना। च छ ज झ ञ ट ठ जु माना॥
पँचवां षोड़शविशुद्ध जोआछे। आदिअकार अकार सु पाछे॥
छठाजो अज्ञा चक्कर मानौ। हंस वरण दो अक्षर जानौ॥

दोहा-भवँर गुफामंडल अखँड, तिरवेणी जहँ न्हान॥
नित प्रवीन जहँ होत है, करै पापकी हान॥
उलट पवन वेधै पटन, ऊपर पहुँचै जाय॥
शुकदेवकहैंचरणदासजू, सुषमन सहजसमाय॥
कमल सहसदल सातवाँ, शीश मध्यही वास॥
तहां देवता सत्तगुरु, पूरी करै जु आस॥
ह्यांतक सुषमन कासिरा, सो सातौ की नाल॥
हैं वे उलटे पट कमल, तलै अपान बयाल॥
अपानवायुकूं साधिकरि, ऊपर लावै मोड़॥
जब होवैं उलटे कमल, मुखआकाशकोओड़॥
अपानवायु ज्योंज्यों चढ़ै, चक्र चक्र के पास॥
त्यों त्यों सीधे होय सब, पूराजान अभ्यास॥
अपानवायु आवै जबै, चक्र अनाहद माहिं॥
दश प्रकार के नादही, शनैः शनैः खुलि जाहिं॥

पहिले नाद खुलै जो ऐसा । चिड़ी चीकला बोलै जैसा ॥
एकहि बार कहै यों चिन्न । दूजीवार खुलै चिन चिन्न ॥
क्षुद्रघंट ज्यों तीजी जानौ । चौथीनाद शङ्ख पहिंचानौ ॥
पँचवीं नाद बीन ज्यों गाजै । छठवीं उपज तालज्यों बाजै ॥
सतवीं नाद मुरलिया ऐसी । अठवीं उठै पखावज जैसी ॥
नवैं नफीरी नाद सुनावै । दशवैं सिंह गर्ज उपजावै ॥
नौतजि दशवैं सूं हित लावै । अनहदसुनि अनहदहो जावै ॥
होय जीवसो ब्रह्म अगाधा । जो कोइ सुनै सुअनहदनादा ॥

दोहा—खुलैजो अनहद नादज्यों, सोसाधन सुनि लेहु ॥
जासों पहुँचे सिद्धि को, या करणी चित देहु ॥
चक्रधार सों खैंचिकरि, अपान वायु सजलेइ ॥
स्वाधिष्ठान के पासही, तीन लपेटै देइ ॥

याकीविधि सब तोहिं सुनाऊं । जैसे है तैसे समुझाऊं ॥
पहिले मूल द्वार को शोधै । बंध लगाय अपान निरोधै ॥
पहिले चक्कर में ठहरावै । खैंचि दूसरे के ढिग लावै ॥
वाके आसौ पास फिरावै । दहिने तीनि लपेट लगावै ॥
फिरि मणिपूरक में पहुँचावै । फेरि अनाहद में लैजावै ॥
अनहद खुलै सुनै सुख पावै । फिरि ह्वां प्राण अपान मिलावै ॥
हिरदय कंठ मध्य ठहरावै । संयम सों ताको परचावै ॥
बंध दूसरो तहां लगावै । चरणदास शुकदेव बतावै ॥

अष्टपदी ।

पहिले अनहदनाद खुलैहिय ऊपरै । कंठ सु नीचे रोंकि ध्यान ह्वांई धरै ॥ जहां अपरबल होय जु अनहद दशकही । फिरियों जानो जाय कंठके मध्यही ॥ तहां किये अभ्यास

ध्यान राखैघना । होवै अधिकीनाद सुनै साधूजना ॥ केतक द्योसन माहिं ब्रह्म रन्धरकनै । जाय खुलैं जहँ नाद सुरतिदै हांसुनै ॥ शनै शनैया होय ज्ञानकोइ साधही । हिरदयते अरु ब्रह्मलों एकैनादही ॥ मीठी और सवाद बहुतहीं पाइयो । सतगुरु के परताप जहां मनलाइयो ॥ ब्रह्मलोककी बात सुनै होवैज़ु ह्वां । सबही सूझैं वस्तु जो कछु होवैं तहां ॥

दोहा—अनहद के सम और ना, फल वरणे नहिं जाहिं ॥
पटतर कछू न देसकूं, सब कछु है वा माहिं ॥
पांच थकै आनद बढ़ै, अरु मनुआ वश होय ॥
शुकदेवकहिचरणदाससुनि, आप अपनजा खोय ॥
नाड़िनमें सुषुम्ना बड़ी, सो अनहद की मात ॥
कुम्भक में केवल बड़ा, सो वाही का तात ॥
मुद्रौ बड़ी जु खेचरी, वाकी बहिनी जान ॥
अनहद सा बाजा नहीं, और न या सम ध्यान ॥
सेवकसे स्वामी भवै, सुनै जु अनहद नाद ॥
जीव ब्रह्म ह्वै जात है, पावै अपनी आद ॥
चरणदास अब कहत हूं, वही जु प्राणायाम ॥
शुकदेव कहै ताके किये, पावै मन विश्राम ॥

बहत्तरहजारआठसौचौंसठनारी । सबकी जड़है नाभिमें झारी ॥ तिनमहँ दश नाड़ी शिरमौरी । पँच बायें पँच दहनी ओरी ॥ जिनमें तीनि अधिक परधान । इड़ा पिंगला सुषुम्ना जान ॥ उनमें सुषुम्ना अधिक अनूप । सो वह कहिये अग्निस्वरूप ॥ दश नाड़ी अस्थान बताऊं । ठौरठौर तेहिकहि समुझाऊं ॥

दोहा—नाड़ि शङ्खिनी गुदामें, किरकल लिङ्गस्थान ॥
पूषा सरवन दाहिने, जसनी बायें कान ॥
गंधारी द्दग बामही, हस्तिनि दहिने नैन ॥
नारि लंबका जीभमें, सब सवाद सुखदैन ॥
नासा दहिने अंग है, पिंगल सूरज वास ॥
इड़ा सुबायें और है, जहँ ससियर परकास ॥
दोऊके मध्य सुषमना, अद्भुत वाको भेव ॥
ब्रह्म नाड़िहू कहत हैं, यों कह सो शुकदेव ॥
इड़ा ब्रह्मजमना जहां, सुषमन विष्णु निवास ॥
और सरस्वति जानिये, येहो चरणहिं दास ॥
शिव पिङ्गलगंगा सहित, सो वह दहिने अंग ॥
तिरवेणी याते भई, मिली जु तीनौ संग ॥
कबहुँ इड़ा सर चलतहै, कबहूं पिङ्गल माहिं ॥
मध्य सुषुम्ना वहतहै, गुरु बिन जानै नाहिं ॥
सोवह अग्निस्वरूप है, वड़ी योग सरदार ॥
याहीते कारज सरै, ऐसी सुषुमन नार ॥

इनसों प्राणायाम करीजे । पूरक कुंभक रेचकहीजे ॥
इड़ा पिंगला मारग थाके । उलटि सुषुम्ना चालनलागे ॥
बायें खैंचना पूरक जानो । ठहरावनको कुंभक मानो ॥
फेरि उतारै रेचक वोई । प्राणायाम कहावै सोई ॥

दोहा—इड़ा पवन पूरक करै, कुम्भक राखै रोक ॥
रेचक पिंगल सों करै, मिटैं पापके थोक ॥

पिंगल रोकै पवन न जावै । इड़ा और सो वायु चलावै ॥
कुम्भककरिहियचिबुकलगावै । जितकातित मनको ठहरावै ॥

सोलह मात्रा पूरक लीजै । चौंसठि कुम्भकमें जपकीजै ॥
रेचक फिरि बत्तीस उतारै । धीरेधीरे ताहि निवारै ॥
पहिल पहिलही कीजे आधे । तीनि महीने ऐसे साधे ॥
यासे आगे फेरि बढ़ावै । दोय आठ अरु चारि चढ़ावै ॥
बढ़त बढ़त ऐसेही बढ़ै । योंहीं चौंसठि ताहीं चढ़ै ॥
इड़ा वायुसों पूरक कीजे । पिंगला सों रेचक तजिदीजै ॥
फिरि पिंगलसों पूरक धारै । बहुरि इड़ाहीसों निरवारै ॥
ऐसे वारीवारी करिये । तीजे प्राण वायु अब हरिये ॥
होयसकै कुम्भक सरकावै । चौंसठिमें भी परै बढ़ावै ॥

शिष्यवचन ।

दोहा—चरणदास करजोरि के, सुनौ गुरू शुकदेव ॥
कौन समै याको करै, राति दिना कहिदेव ॥
मात्रा कासों कहत हैं, जो बतलायो जाप ॥
केतौ करै अहारही, जाको कहिये नाप ॥

गुरुवचन ।

दोहा—ॐविन्दीके सहितही, ताही मात्रा जान ॥
बीजमन्त्र तासों कहत, प्रणवआदि पहिचान ॥
कोमल भोजन कीजिये, आधी राखिये भूख ॥
पवन बसै सुखसों जहां, तन नहिं पावै दूख ॥
साठिघरी दिन रातिकी, आठ तासु के याम ॥
लीजै चौथा भागही, कीजै प्राणायाम ॥
चारभाग ताके करै, चार समै ठहराय ॥
चार चार घटिका करै, दृढ़व्रत चित्त लगाय ॥
और दूसरी भाँति सुनीजै । होयसकै तौ याको कीजै ॥

बारहलौं ॐपवन चढ़ावै । कुम्भक माहिं वीस ठहरावै ॥
बारह पिंगल पवन उतारै । राति दिनामें चारहि वारै ॥
फेरि चढ़ावै कुम्भक दुगुनी । केते द्यौसन में फिर तिगुनी ॥
फिर पिङ्गलसो पूरक लीजै । इड़ा वायु रेचकही कीजै ॥
वेरिया एक इडा सो खैंचे । पिंगला दूजी वारजू ऐंचे ॥
कबहूँ मासूँ कबहूँ वासू । रेचक करै सुपूरक जासू ॥
कुम्भक तिगुनी सो अधिका । होयसकै जितनी सरकावै ॥

दोहा—भाँति दूसरी और सुनू, साधन अधिक अनूप ॥
गुरु विन भेद न पाइये, महा गूपसूँ गूप ॥

अष्टपदी ।

प्राणवायुकी युक्ति कहौं जेहि वात है । द्वादश अंगुल नासिका आगे जात है ॥ संयमही सों सहज जु उलट घटाइये । शनैशनैही साधजु ताहि समाइये ॥ अपान वायुको खैंचि प्राण घर लाइये । फिार बाहरसों रोकि जु तिन्हैं मिलाइये ॥ तीनि कर्म पूरकके कुम्भकके कहे । रेचकही के कर्म दोय निश्चयभये ॥ दो रेचकके कर्म पूरकके तीनहीं । ये सवही रहिजायँ होय जब क्षीनहीं ॥ पूरक रेचक छुटै केवल कुम्भक यही । ठौर समैका बंधनराखै नाशही ॥ या किरियाको अन्तजानौ तुम हां तहीं । प्राणवायुको रोकै कायाके महीं ॥

दोहा—साठहजार इकीसलख, सबै श्वास परमान ॥
यह तो रोकै देहमें, जबलग एकहि प्रान ॥
याकेहू ये सो दिना, साधन हुवै जु सिद्धि ॥
केवल कुम्भक जानिये, पूरी हवै जु विद्धि ॥

अष्टपदी।

इतनी होवै शक्ति रुकन जब श्वासकी। रहै नहीं परमाण जु गिनती मासकी॥ द्वादशकै सौ वरप सहसकै लाखही। चाहै जब लग रखै सांच यह साखही॥ गुप्त महा यह जान कठिन है साधना। कोटिनमें कोइ एक करै आराधना॥ देखा देखी बहुत मनुष याकूं लगैं। कोई चढ़ै परमान घने मगमेंथकैं॥ चरणदास यह समुझिक हैं शुकदेवजी। शनैशनै सों करै पाय या भेवही॥

दोहा—मूल बंध अरु खेचरी, मुद्राही को जान॥
दोनोंके साधे विना, अपान न होवे प्राण॥

खेचरि मुद्राकहूं बखानै। जाको कोटिनमें कोइ जानै॥
सकल शिरोमणि योग मँझारी। ज्यों मन खोवै छत्तर धारी॥
शीश फूल ज्यों गहनो माहीं। या विन ताड़ी लागै नाहीं॥
साधन कर कर जीभ बढ़ावै। सो ब्रह्मरंधरताईं लावै॥
उरैताल वा ठौर कहावै। रसना सूं ह्वां बंध लगावै॥
जासूं पवन न सरकन पावै। श्रवण नैनजूं बाट रुकावै॥
प्राणवायु बाहर नहिं जावै। मुख नासाहोइ निकसिन जावै॥
शुकदेव कह चरणदास बताऊं। आगे मूलबंध समुझाऊं॥

दोहा—मूल बन्ध जानो यही, एँडी गुदा लगाव॥
थक दहनी बावीं कभी, सिद्धासन ठहराव॥

मूलबन्ध जा कारण दीजै। सो मैं कहूं सबै सुनि लीजै॥
आधार चक्रसूं पवन उठावै। स्वाधिष्ठानहिं के ढिग लावै॥
दहिनी ओर कूं ताहि फिरावै। ऐसी तीन लपेट लगावै॥
सीधा हो ऊपर कूं धावै। मणिपूरक चक्कर में आवै॥

शनई शनई ताहि चढ़ावै । चक्कर चक्कर में पहुँचावै ॥
भूचक्कर के ऊपर ताई । ब्रह्मरंध्र के लावै ठाई ॥
ऐसे पट चक्कर कूं सोधै । प्राण वायु को यों परबोधै ॥
प्राण वायु जो ह्यांतक आवै । प्राण वायुहै सहज समावै ॥
शुकदेव कह सुन चरणहिं दासा। सहज शून्यमें करै निवासा॥

अथ अष्टप्रकारके कुम्भक वर्ण्यते ।

शिष्यवचन ।

दोहा—प्राणायाम कि विधि सवै, गुरु तुम दई सुनाय ॥
सो लेकरि हिरदै धरी, ताहि न देउँ भुलाय ॥
चरणदासके शीश पर, तुमहीं गुरु शुकदेव ॥
कुम्भक अष्ट प्रकारके, तिनको कहिये भेव ॥
लक्षण नाम स्वभाव गुण, जुदे जुदे समुझाय ॥
चरणदासके मन विषे, सुनवेको अतिचाय ॥

गुरुवचन ।

दोहा—अब आठौ कुम्भक कहूं, नाम भेद गुण रूप ॥
शुकदेवकहैं परसिद्ध हैं, योगहिमाहिं अनूप ॥
प्रथमैं कुम्भकही कहूं, नाव जु सूरज भेद ॥
दूजै ऊजाई सुनो, साधे छूटैं खेद ॥
शीतकार अरु शीतली, पँचवीं वस्त्रिक जान ॥
छठींजु भ्रमरी नामहै, नीके समझि पिछान॥
नाम मूर्च्छा सातवीं, अठवीं केवल होय ॥
रणजीता सवसे वडा, आयु वढ़ावै सोय ॥

पवन पूर पूरकही कीजै । पाछे बन्ध जलन्धर दीजै ॥
कुंभक रेचकके मधि जानौ । ह्याई बन्ध उहां न पिछानौ ॥

पवन जोरही सूं गहि लीजै। अर्ध ऊर्ध्व संकोच न कीजै॥
मध्यम कीजे पश्चिम तानै। ब्रह्म नारिके माहिं समानै॥
बाढ़ी पवन खैंचिये ऐसे। भरिये सब संधान जु जैसे॥
अपानवायु कूं ऊपर लावै। प्राणवायु नीचे लै जावै॥
जोपै यह साधन बनि आवै। योगी बूढ़ा होन न पावै॥
तरुण अवस्था देखै ऐसी। नितही रहै जानिये जैसी॥

अथ सूर्यभेदन।

कुं०—कुम्भक सूरज भेदही, पहिले देहुँ सुनाय॥
सुख आसनके कीजिये, अथवा वज्र लगाय॥
अथवा वज्र लगाय, पूरक दहिनेस्वर कीजे॥
नख शिख सेती रोंकि, वायुकूं बन्ध करीजे॥
बायें सेती रेचिये, हौरे हौरे जान॥
कपाल सोधनी जानिये, चरणदास पहिचान॥
दोहा—वायु किरम पीड़ा हरै, कीजै बारम्बार॥
कुम्भक सूरज भेदनी, शुकदेव कह हियधार॥

अथ ऊजाई।

अब ऊजाई कुम्भक सुनिये। समझ सीख मनमाहीं गुनिये॥
दोउ सुर समकर पवन चढ़ावै। पेट कण्ठ लौं ताहिं भरावै॥
ताको रोंकै दृढ़ करि राखै। सहजइड़ा सों रेचक नाखै॥
ऐसे जो कोइ साधन करै। रोग सलेषम के सब हरै॥
हिरदय कण्ठ माहिं जो होई। कफका रोग रहै नहिं कोई॥
रोग जलन्धरही का भागै। भजै वायु दुख पावक जागै॥
बैठत चलत पवनको भरै। यही उजाई कुम्भक करै॥
चरणदास शुकदेव बतावै। तीजी शीतकार समुझावै॥

अथ शीतकार ।

दोहा—ओढ़ जँभाई नासिका, लीजे खिंचै जु पौन ॥
ताहि कछू ठहरायकै, छोड़ै सुख सों जौन ॥
धीरे धीरे रेचिये, सीसी शब्द उचार ॥
सुन्दर होवै तेजवत, अधिक रूपको धार ॥
भूख प्यास व्यापै नहीं, आलस नींद न होय ॥
तनचेतनही होतहै, रहै उपाधि न कोय ॥
यहि विधि साधतहीरहै, होय योगिन में भूप ॥
चरणदास शुकदेवकहि, कुम्भक यही अनूप ॥

अथ शीतली ।

कहूं शीतला कुम्भक आगे । जो कोइ करै भागतिहिं जागे ॥
तालु मूल जिह्वा वल सेती । प्राणवायु पीवै कर हेती ॥
कुंभकराखै सवतन माहीं । ढीला गात रमावै ह्वाहीं ॥
नासा सेती रेचक कीजे । एकमाससिधि होसुनिलीजै ॥
पीजे पवन जीभको मोड़ । सहजै छोड़ै नासा ओड़ ॥
दोनों रंधरसे तजि दीजै । यों अभ्यास पूर करि लीजै ॥
तापतिली गोला जु रहोई । वाके तनमें रहै न कोई ॥
देह पुरानी नौतन होय । तीनि वरष साधै जो कोय ॥
जैसे सांप केंचुली भौहिं । श्वेत बाल तजि काले होहिं ॥
काहू भाँतिक दुख नहिं व्यापै । भूख प्यास पित भाजै आपै ॥

अथ भस्त्रिका ।

दोहा—अब कहुँ कुम्भक भस्त्रिका, पितकफवायु नशाय ॥
अगिनि बढ़ै अभ्याससों, तीनि गाँठिखुलिजाय ॥
आसनपद्म सुयाविधि करै । वामजंघ दहिनो पग धरै ॥

वावों पग दहनीपर लावै। जाँघनसों दोउ हाथमिलावै ॥
ग्रीवा पेट बराबर राखै। आगे सुनु शुकदेवा भाखै ॥
मुख मूँदै रेचै नासासूं। पूरक चपल करै श्वासासूं ॥
रेचक पूरक ऐसे कीजै। वारम्बार तजै अरु लीजै ॥
जैसे खाल लोहारा भरै। रेचक पूरक आतुर करै ॥
करत करत जवहीं थकिजावै। नेक ठहरि दूजी विधि लावै ॥
फिरि पूरक सूरजसों करै। पवन उदरके माहीं भरै ॥
तर्जनि अँगुली सों दृढ़ रोकै। नासामध्य धारिकरि जोखै ॥

दोहा-कुंभक पिछली भाँतिकरि, रेच इड़ासों वाय ॥
कफपित वायु नशायकै, लेवै अग्नि बढ़ाय ॥
कुण्डलिनी देवैजगाय, यह कुम्भक सुखदाय ॥
करै जुहितव्रत धारिकै, चरणदास चितलाय ॥
कुण्डलिनी सरकायकै, बेधै तीनों गाँठ ॥
ऐसी पँचवीं भस्त्रिका, रहै न कोई आँठ ॥

ब्रह्मनाड़िकाके छिद्रयाहीं। रोकिरही मुखदेरहि ह्वाहीं ॥
लाय लपेटै नाभी ठाहीं। दृढ़ह्वै वैठी सरकै नाहीं ॥
सवा विलस्तकि जाकी देही। तामें प्रस्थित जीव सनेही ॥
शक्ति नागिनी यही जु कहिये। याका भेद गुरूसों लहिये ॥
महा अपरवल जागै नाहीं। ताते नर सव मरि मरि जाहीं ॥
कोइ इक योगी ताहि डुलावै। सुषमन वाट गगन लैजावै ॥
ब्रह्मरंध्र में जाय समावै। लगै समाधि वहुत सुखपावै ॥
जो कछु होय सो कहा न जावै। चरणदास शुकदेव सुनावै ॥

दोहा-शिव शक्ती मे लाभ वै, रहै न दूजो भाव ॥
कुण्डलिनी परवोधका, जो कोइ करै उपाव ॥

शिष्यवचन ।

दोहा—व्यास पुत्र शुकदेवजी, किरपाकरी दयाल ॥
चरणदास आधीनही, समझो भयो निहाल ॥
एकबार फिरि खोलिकै, कुण्डलिनी समुझाव ॥
याके सबके भेद को, सुनबेको अतिचाव ॥

गुरुवचन ।

दोहा—फिरभी तोसों कहतहौं, कुण्डलिनी विस्तार
ताके सगरे भेदही, सुनिकै हियमें धार ॥
नाभिस्थान नागिन रहै, कुण्डल शशीअकार ॥
प्राण पियारा वही है, आगे सुनो विचार ॥
कुंभक कर्म्म कोई करै, देवै शक्ति जगाय ॥
जैसे लागी लष्टिका, नागन शीश उठाय ॥
सीखिगुरूसों कुंभक साधै । नीकी विधि ताको अवराधै ॥
पवन ठवक लग ताहि जगावै । तब ऊरध को शीश उठावै ॥
नाभि ठौर ताका है वासा । पद्मराग मणि ज्यों परकासा ॥
सात लपेटे बाई जानौ । ताते शक्तिकुण्डली मानौ ॥
नाड़ी सहस लगी हैं वाको । सोपर छुटी जानिको ताको ॥
जिनमें तीन नारि अधिकाई । इड़ा पिंगला सुषमन गाई ॥
तिनकेमाहिं शिरोमणिसुषमन । नालकमल जानतयोगीजन ॥
जायपहुँचि ब्रह्मरंधर ताहीं । ऊरध कमल सातवें माहीं ॥
आवन जानि पवन की वाटा । सकत चढ़न ऊरधका घाटा ॥
कह शुकदेव चरणहीं दासा । आगे कहूं जु हो परकासा ॥
दोहा—नागिन सूक्षम जानिये, बाल सहस वा भाग ॥
शुकदेव कहैं अकारही, रक्त वरण ज्यों नाग ॥

कुंभक हो अत्यन्त जब, तब ऊरधको जाय ॥
ब्रह्मरंध्र में आयकरि, घड़ी दोय ठहराय ॥
ईश्वत का करि पानही, पूरण हो अभ्यास ॥
उड़ते देखै सिद्ध तब, वाको माहिं अकास ॥
पै देखतहै नैन विनाहीं। चहै करै लीला उन माहीं ॥
खेचर मिलि खेचर ह्वै जावै। यह भी शक्ति उड़नकी पावै ॥
अधिकी ठहरै लगै समाधी। यह तौ कहिये खेल अगाधी॥
शिव शक्ती जहँ मेला होई। होय लीन मन उनमन सोई ॥
योग युक्ति करि याको पावै। परासक्त अपने वश लावै ॥
चाहै अर्द्ध ठौरलै आवै। जब चाहै ऊरध लैजावै ॥
कबहूँ हिरदयके मधि आनै, याही को आपनपौ जानै ॥
इच्छा करै सिद्धि की जैसी। होय प्राप्तसो वेगिहि तैसी ॥
चहै अस्थूल सूक्ष्म तन धारूं। वैसाही होय जाय सवारूं ॥
कह शुकदेव सुन चरणहिं दासै। जो कुंडलिनी हृदयप्रकासै ॥
दोहा—कुण्डलिनी परकाशही, भौंरा एक अनूप ॥
सोउ प्रकाशत है तहाँ, सुवरणकोसो रूप ॥
हिरदयमें उजियारही, होतचपलयहि भाँति॥
जैसे धूमर मेघमें, बिजलीहीदमकाति ॥
शुकदेव कहै चरणदास बताऊं। और अनूठी सिद्धि सुनाऊं ॥
चाहै पर देही में वरूं। अपनी कायाको परिहरूं ॥
रेचक प्राणायाम प्रतापै। कुण्डलिनी जो अपनी आपै ॥
रेचक किये बाहरे आवै। परकायामें जाय समावै ॥
अस्थित होय जाय यों जानो। सदा विराजत ऐसे मानो ॥
ऐसे पहिली देह गिरावै। ज्यों मणिको डोरा त जिजावै ॥

जब चाहै अपने घट माहीं । परासक्तही आवै ह्वाहीं ॥
काया पलट कहत हैं याको । कोइक योगी जानत ताको ॥
दोहा—चाहै तनको छोड़ करि, देह कलप धरि और ॥
मनमानै जहँ गमनकरि, फिरि आवै अपठौर ॥

अथ भ्रामरीकुंभक ।

दोहा—छठी जु कुम्भक भ्रामरी, सुनियै चरणहिदास ॥
शुकदेवा हौं कहतहूं, तामें करो विलास ॥
जैसे भृंगी धुनिकरै, यों उपजे हिय माहिं ॥
दोनों स्वरसों कीजिये, परगट सुनिये नाहिं ॥
बलसेती पूरक करै, यही शब्द लै साथ ॥
भृंगीकीसी धुनि सहत, रेचै मन्द सुहात ॥
या अभ्यासके कियेसे, चित चंचलरहै नाहिं ॥
योगीश्वर लीलाकरै, चिदानन्द के माहिं ॥

अथ मूर्च्छा ।

सतवीं कुंभक मूरछा, पूरक ऐसे होय ॥
खैंचत होवै सोरसा, मेघधार ज्यों जोय ॥
बन्ध जलन्धर दीजिये, सहज कण्ठ तल जान॥
रेचत वाई मूरछित, होय यही पहिचान ॥
सुखदाई सुखकी करन, कही सोइ शुकदेव ॥
केवल कुम्भक आठवीं, गुरुसों पावै भेव ॥
पूरक रेचकही सहित, येकुम्भककरि लेहि ॥
केवल कुम्भकनामधै, जबलग ह्यांचितदेहि॥
केवलकुम्भकआशधरि, येहू साधत लोग ॥
बलपावै वश पौनहो, और भजें तन रोग ॥

अथ केवलकुम्भक।

आयुवढ़ावै सिद्धिदे, लागै और समाधि ॥
केवल कुम्भक गुणभरी, विन परमाणअगाधि॥
केवल कुम्भक जवसधै, तव ये सव रहिजाहिं ॥
जैसे सूरज उदयते, तारे सव लुकि जाहिं ॥
केवल कुम्भक योग में, ज्यों नगरी में भूप ॥
रेचक पूरकके विना, जैसे वँधा जु कूप ॥
सो तुमसों पहिले कही, विधिगतिसवसमुझाय॥
सो सुनि तुम हिरदयधरी, देहौना विसराय ॥

प्राणायाम वड़ातप सोई। प्राणायाम सों वल नहिं कोई॥
प्राणवायुको यह वश लावै। मनको निश्चल करि ठहरावै॥
आयुर्दाको यही वढ़ावै। तनमें रोग रहन नहिं पावै॥
पाप जलावै निर्मल करै। उपजै ज्ञान तिमिर सव हरै॥
योग युक्तिकी जड़ यह जानो। याहि टेकगहि करना ठानो॥
अड़ि आसनसों याको कीजै। नवो द्वार पट नीके दीजै॥
पाँचौ इन्द्रीके रस पेलौ। इड़ा पिंगला सुषमन खेलौ॥
कह शुकदेव चरणहीं दासा। प्रत्याहार सुनुविषै निरासा॥

इति प्राणायामका अंग सम्पूर्णम्।

अथ पांचवाँ प्रत्याहारअंगवर्णन।

दोहा—प्रत्याहार जो पांचवाँ, समझाऊं चर्णदास ॥
शुकदेव कह कहुँ खोल करि, नीके समझौ तास ॥

प्रत्याहार पांचवां कहिये। सो योगीको निश्चय चहिये॥

विषय ओर इन्द्री जो जावै । अपने स्वादनको ललचावै ॥
तिनकी ओर न जानें देई । प्रत्याहार कहावै एई ॥
रोंकिरोंकि इन्द्रिनको लावै । ध्यान आतमा मांहिं लगावै ॥
जैसे कछुआ अंग समेटै । रंक शीतकाला में लेटै ॥
जैसे माता पूत खिलावै । बालक वस्तुओंको ललचावै ॥
सरप आग अरु शस्तर कोई । कछू और दुखदायी होई ॥
तिनकी बालक नाहीं जांनै । पकड़नको दौड़े मन आनै ॥

दोहा—बालक जानत है नहीं, दुखदायी सब एह ॥
जो पकरूगा हाथसे, दुख पावैगी देह ॥
माता जानत है सबै, खोटी खरी विकार ॥
राखै सुतको खैंचिकरि, वारम्वार निहार ॥
ऐसेही बुधि ज्ञान सों, पांचौ इन्द्री रोग ॥
विषय ओरसों फेरिये, लहै न अपना भोग ॥
ज्यों ज्यों इनको भोगदे, परबल होती जाहिं ॥
विना भोग होनी नहीं, वह बल रहै जुनाहिं ॥
नैन जु भोगैं रूपको, और गन्धको घ्राणं ॥
षटरस भोगै जीवही, शब्दहि भोगै कान ॥
स्पर्श भाग त्वचाको, बाढ़ै अधिक विकार ॥
पांचौ इन्द्री जानिले, इनका यही अहार ॥
इनसे मिलिमिलि मन बिगड़, होयगयाकुछऔर ॥
इन्द्री रोकै मन रुकै, रहै जु अपनी ठौर ॥
ज्यों ज्यों होवै प्राणवश, त्यों त्यों मनवश होय ॥
ज्यों ज्यों इन्द्री थिररहैं, विषय जाय सबखोय ॥

तातै प्राणायाम करि, प्राणायामहिं सार ॥
पहिले प्राणायाम करं, पीछे प्रत्याहार ॥

इति प्रत्याहारअंग सम्पूर्णम् ।

अथ छठवाँ धारणाअंगवर्णन।

दोहा—तत्त्वनकी कहुँ धारणा, तिनमें करै प्रवेश ॥
शनई शनई साधिकरि, पहुँचै निर्भय देश ॥

पहिले भूमि धारणाकीजै। ठौर काल जीमें चितदीजै ॥
पीतवरण चौकोर अकारो। विधि दैवत है तहाँ विचारो ॥
प्राणलीनकरि पांच घड़ीहीं। चितअस्थिर होवैगा जवहीं ॥
यासों पृथिवीको वश करिये। यही धारणा जो नित धरिये ॥
हिरदयसे ऊपर जल जानो। कण्ठतई ताको पहिचानो ॥
चन्द्रफांक अरु श्वेत अकारो। हृषीकेश तहँ देव निहारो ॥
ह्रां हूं पांच घरी अस्थापै। प्राणलीन करि चितदै आपै ॥
व्यापैना विप काहू विधिको। शुकदेवकहैंफलजलकेसिधिको

दोहा—कण्ठसे ऊपर तालुका, लौ पावक अस्थान ॥
लालरंग तिरकोनहै, रुद्र देवता मान ॥
तहां लीन करिप्राणको, पांच घड़ी परमान ॥
भयव्यापैनहिं जालको, अग्निधारणा जान ॥
जाके आगे वायु है, भ्रुकुटीलौं मर्य्याद ॥
मेघ वर्ण पट् कोणहै, ईश्वर दैवत साध ॥
प्राणलीन तहँ कीजिये, पांच घड़ी, रे तात ॥

पै है खेचर सिद्धिही, तत पदही ह्वै जात ॥
ब्रह्मरंध्र आकाश है, वड़ाजुतत्त्वन माहिं ॥
श्याम वरण सुर ब्रह्महै, योगी जहां सिराहिं ॥
प्राणलीनघटिपांचकरि, पावै मुक्ति अनूप ॥
व्योम तत्त्वकी धारणा, जहां छाहँ नहिं धूप ॥
पृथ्वी संग लकारही, जल के संग वकार ॥
पावक संग रकार है, मारुत संग मकार ॥
पंच तत्त्व आकाशही, सब के ऊपर जान ॥
अक्षर जहां हकारही, शुकदेव कहै वखान ॥
पहिलि धारणा थंभनी, दूजी द्रावण होय ॥
तीजी दहनी जानिये, चौथि भ्रामिनी सोय॥
पँचवीं नाम जु शंखिनी, इन को लेवो जान ॥
शुकदेवा अब कहत है, आगे और विधान ॥

प्रथम धारणा गुरुकी लीजै । अपना रूप उन्हींसा कीजै ॥
ऐसे ध्यान सभी सुधि पावै । जैसी धारै सो होयजावै ॥
वेगहि सब साधन सधि आवै । आलस कायरता भजिजावै ॥
लोक प्रलोक सभी सुख लेवै । जो गुरुको ऐसो व्रत सेवै ॥
दूजे परमातमकी धारण । मुक्ति देन अरु बंध निवारण ॥
धारनसों चित घना लगावै । सिमिटि सभी ओरनसों जावै ॥
जो कछु होय सो आगेहि आगै । टेक पकरि मारगमें लागै ॥
चरणदास शुकदेव बतावै । सती शूरिमा ज्यों मन लावै ॥

दोहा—प्राण वायुकी धारणा, परमेश्वर पहिचान ॥
परमातम ह्वै जात है, जोपै रोपै प्रान ॥
वारह मात्रा सों चढ़ै, ह्वां तक पहुँचै जाय ॥

वारहवें अरु छानवे, कुंभकमें ठहराय ॥
यही धारणा अंग है, शनै शनै कर ध्याव ॥
याते दुगुनी ध्यान में, प्राण वायु पहुँचाव ॥
दूजा योनि समाधि लो, ध्यानहिं सेती एहु ॥
पांच सहस औ एकसौ, चौरासी गिनिलेहु ॥

इति धारणाका अंग सम्पूर्णम्।

अथ सातवाँ अंगवर्णन।
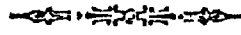
शिष्यवचन।

दोहा—अंग धारणा का कहा, सो धारा चित माहिं ॥
ध्यान अंग वर्णन करौ, मैं रहुँ चरणन छाहिं ॥

गुरुवचन।

दोहा—चरणदास अब ध्यानसुनु, कहूं तोहिं समुझाय ॥
कहशुकदेवसोसुनिसमुझि, करौताहिचितलाय ॥
ध्यानजु चारि प्रकारके, कहूंजु उनकी रीत ॥
पदस्थ पिंडरूपस्थ है, चौथा रूपातीत ॥

अथ पदस्थध्यान।

दोहा—हियपदपंकजध्यान करि, फिरि करि सारीदेह ॥
नखशिखलौंछबिनिरखिकै, चरणनमें चितदेह ॥
कै कुंभकही कीजिये, हुवां प्रणवका जाप ॥
मन निश्चलहो सहजमें, भाजैं त्रैविधि ताप ॥
पदस्थ ध्यान याको कहैं, करै सो जानै भेव ॥
पिंडस्थध्यान वर्णन करैं, खोलि खोलि शुकदेव ॥

अथ पिंडस्थध्यान ।

दोहा—ब्रह्म सोई यह पिंडहै, यामें करि करि वास ॥
कमलन के लखिदेवता, लहै परापत तास ॥
सोधै सगरे पिंडको, षट् चक्रहुको ध्यान ॥
शोधतः शोधत आचढ़ै, भवँर गुफा अस्थान ॥
तिरवेणी संगम वहै, ज्योति जहां दरशाय ॥
सातजन्मसुधिहोयजव, ध्यान करै मनलाय ॥
आगे कमल हजारदल, सद्गुरु ध्यान प्रधान ॥
अमृत दरिया वहिचलै, हंसकरै जहँ न्हान ॥
ऊपर तेजहि पुंज है, कोटिभानु परकास ॥
शून्य शिखर ताऊपरै, योगी करै विलास ॥

अथ रूपस्थध्यान ।

रूपस्थध्यानकोभेदसुनि, कीजै मन ठहराय ॥
देखै त्रिकुटी मध्य है, निश्चल दृष्टि लगाय ॥
ध्यान किये पहिले जहां, अगन फूल दृष्टाय ॥
केते द्योसन माहिंहीं, दीप ज्योति प्रगटाय ॥
शनै शनै आगे जहां, दीपमाल दरशाय ॥
फिरितारोंकी मालसी, दामिनि वहु दमकाय ॥
वहुत चन्द सूरज घने, देखै कोटि अनन्त ॥
अणज्योंकरि सूभरभरे, ध्यानमाहिं दरशन्त ॥
झिलमिल २ तेजमय, भासै सव संसार ॥
तन मन उपजै सुखघना, आनँद अधिक अपार ॥
जल अथाह में डूबिज्यों, देखै दृष्टि उघार ॥
जो दीखै तौ नीरहीं, दश दिशि अपरम्पार ॥

यहौ ध्यान प्रत्यक्ष है, गुरू कृपासों होय ॥
कहशुकदेवचर्णदासकर, तन मन आल सखोय ॥

अथ रूपातीतध्यान ।

रूपातीत शून्यध्यानहिं जानो । शून्यहिको परब्रह्म पिछानो ॥
त्रिकुटी परे शून्य अस्थान । सो वह कहिये पद निर्वान ॥
चिदानन्द ताको हिय आनो । वाही में मनहींको सानो ॥
आठपहर जहँ चित्त लगावो । याके कीन्हे सों लयपावो ॥
ज्यों अकाशमें पक्षी धावै । धावत धावत दृष्टि न आवै ॥
वहुरि अचानक दीखै आई । वह ध्यानी ऐसा ह्वै जाई ॥
इसपर शून्यक अधिकी ध्याना । सव ध्याननमें है परधाना ॥
सो योगी यह लहै ठिकाना । सायुज्यमुक्तिहोइजाय निदाना

दोहा—यासोंलगै समाधिही, निद्रा कहिये योग ॥
ध्याता होवै लीनही, रहै न त्रिकुटी रोग ॥
सतवाँ कहा जु ध्यानहीं, अंठवीं कहूं समाधि ॥
ज्ञान ध्यान जहँ वीसरै, तहां न विद्यावाद ॥

इति ध्यानांग सम्पूर्णम् ।

अथ आठवाँ समाधिअंगवर्णन ।

अष्टपदी ।

अठवीं कहूं समाधि लक्षण वर्णन करूं । तोको सव समुझाय तेरी दुविधा हरूं ॥ जवहीं लगै समाधि योगी आनँद लहै । योग भया सिध जान क्रिया कोइ ना रहै॥ मिलि ध्याता अरु ध्यान एक होवै जहां । दूजारहै न भाव मुक्ति वर्तै जहां ॥

निरउपाधि निर्खंद ऐसा वह देशहै । करम भरम अरु धरम नहीं कोइ लेशहै ॥ आपारहै न कोय सकल आशागरै । चिन्ताका दुख नाहिं वासना सब जरै ॥ पंच विषय जहँ नाहिं नहीं गुणती नहीं । होवै ब्रह्मस्वरूप जीवता क्षीनहीं ॥ जाग्रत स्वप्न सुषुप्ति होवैही नहीं । चौथे पद को पाय होय जहँ लीनहीं ॥ ऐसे कहै शुकदेव सुनौ चरणदासही । यह निर्द्वंद्व समाधि करै जहँ वासही ॥

दोहा—जहां कछू गम्य ना रहै, विद्या वेद न बाध ॥
ऋधिसिधि मिटि आनँदलहै, ऐसी शून्य समाधि ॥

अष्टपदी ।

तहां किये परवेश रहै न अकारही । रूप नाम गुण क्रिया यहीं साकारही ॥ पाप पुण्य सुख दुःख जहां नाहिं पाइये । मतमारग कुल धर्म न देत दिखाइये ॥ भूख प्यास अरु उष्ण जहां नाहिं शीतहै । हर्ष शोक नहिं नेक वैर नहिं प्रीतहै ॥ इन्द्री मन नहिंरहत गलित ह्वै जात है । सिध साधक गुरु शिष्य न भाव रहात है ॥ उडुगन चन्दन सूर न दिवस न रातहै । त्वंपद ईश्वरब्रह्म न जान्यो जातहै ॥ जैसे जल में नीर क्षीरमें क्षीरही । आसि पदमें यों जीव नीर में नीरही ॥ अहं मिटै मिटि जाय जु आपा थोकही । नापरमातम आतम बंध न मोषही ॥ ऐसे कह शुकदेव यों होय समाधि में । वैसाही ह्वै जाय सोई था आदि में ॥

दोहा—हुता आदि परमातमा, विचउठि लगा विकार ॥
मिलि समाधि निर्मल भवै, लहै रूप ततसार ॥

अष्टपदी ।

जहँ आतमदेव अभेव सेवक नाहिं सेव है । स्वामी भी ह्वां नाहिं पूजा नहिं देव है ॥ नौधा नेम न प्रेम ज्ञान नहीं ध्यानहू । जड़ चेतन कछु नाहिं सुरति नाहिं ज्ञान है ॥ विधि निषेध नहिंभेद अन्वय व्यतिरेक ना । निश्चय अरु व्यवहार कछु तामें न ह्वां ॥ उत्तम मध्यम भाव न शुभना अशुभ है । सिंह सर्प डरनाहिं औ शश्तर कोन भै ॥ पावक दग्ध न करै बहावै जल नहीं । ह्वां नाहिं पहुंचै काल न ज्वाला है तहीं ॥ ऐसा भवन समाधि भागि सों पाइये । तजि कै जक्त उपाधि तहां मठ छाइये ॥ यतन करै लख माहिं और सब भेषही । कोटिनमें कोइहोय समाधी एकही ॥ ह्वांतक पहुंचै जाय सोई सिध साध है । कहै शुकदेव पुकारि जु कठिन समाधि है ॥

दो०—भक्ति योग अरु ज्ञानकी, त्रैविधि कहूं समाधि ॥
गुरु मिलै तौ सुगमहै, नाहीं कठिन अगाधि ॥

अथ भक्तिसमाधि ।

दोहा—सब इंद्रिन को रोंकिकै, करि हरि चरणन ध्यान ॥
बुद्धि रहै सुरतिहु रहै, तौ समाधि मत मान ॥
ध्याता बिसरै ध्यान में, ध्यान होय लय ध्येह ॥
बुद्धि लीन सुरति न रहै, पद समाधि लखि लेह ॥

अथ योगसमाधि ।

दोहा—आसन प्राणायाम करि, पवन पंथगहि लेहि ॥
षट चक्कर को छेद करि, ध्यान शून्य मन देहि ॥
आपा बिसरै ध्यान में, रहै सुरति नाहिं नाद ॥
लीन होय किरिया रहित, लागै योग समाध ॥

अथ ज्ञानसमाधि ।

दोहा—जब लग तत्त्वविचारि करि, कहैं एक अरु दोय ॥
ब्रह्मव्रत बांधे रहै, त्यांलग ध्यानहिं होय ॥
मैं तू यह वह भूलि करि, रहै जू सहज स्वभाय ॥
आपादेहि उठाय करि, ज्ञानसमाधि लगाय ॥
ज्ञान रहित ज्ञाता रहित, रहित ज्ञेय अरु जान ॥
लगी कभी छूटै नहीं, यह समाधि विज्ञान ॥
पूछे आठों अंग ते, योग पंथकी बात ॥
शुकदेव कहै तामें चलौ, गुरूकृपा लै साथ ॥

इति अष्टांगयोग सम्पूर्णम् ।

श्रीयोगीजनवल्लभायनमः ।

अथ षट्कर्महठयोगवर्णन ।

शिष्यवचन ।

दोहा—अष्टांग योग वर्णन कियो, मोको भै पहिचान ॥
छहौ कर्म हठयोग के, वरणौ कृपानिधान ॥

गुरुवचन ।

पहिले ये सब साधिये, काया होवै शुद्धि ॥
रोग न लागै देह को, उज्ज्वल होवै बुद्धि ॥

अरु साधै षट्कर्म बताऊं । तिनके तोको नाम सुनाऊं ॥
नेती धोती वसती करिये । कुंजर करम देह सब हरिये ॥
न्योली किये भजे तन बाधा । देखि देखि जिन गुरु सों साधा ॥
त्राटक कर्म दृष्टि ठहरावे । पलक पलक सों लगन न पावै ॥

अथ नेतीकर्म ।

कु०—मिही जु सूत मँगाय के, मोटी बाटै डोर ॥
ऊपर मोम रमाय के, साधै उठि करि भोर ॥
साधै उठि करि भोर, डेढ़ बालिस्त कि कीजै ।
ताको सीधी करै, हाथ अपनेमें लीजै ॥
नासा रंध्र में मेल कर, खींचै अंगुली दोय ॥
फेरि विलोकन कीजिये, नेती कहिये सोय ॥
दोहा—कान नाक अरु दांत को, रोग न व्यापै कोय ॥
उज्ज्वल होवै नैनही, नित नेती करि सोय ॥

अथ धोतीकर्म ।

धोती कर्म यासों कहैं, पट्टी सोलह हाथ ॥
कोट अठारह नाभैवं, करै जु नित परभात ॥
कुं०—चौड़ी अंगुल चारिकी, मिही वस्त्र की होय ॥
जलमें भेइनिचोय करि, निगल कंठ सों सोय ॥
निगल कंठ सों सोय, सिरा बाहर रहिजावै ॥
फेरि निकासै ताहि, पित्त कफ दोऊ लावै ॥
काया होवै शुद्धही, भजै पित्त कफ रोग ॥
शुकदेव कहै धोतीकरम, साधै योगी लोग ॥

अथ वस्तीकर्म ।

कुं०—तीजे वस्ती कर्महीं, कहौं सुनौ चितलाय ।
क्रिया करै गणेशही, कुंजी तहां लगाय ॥
कुंजी तहां लगाय, मूल को धोवन कीजै ।
नाहिं पसार संकोच, सुरतेदै यह करिलीजै ॥

नीर गुदा सों खैंचिकरि, थांभै उदर मँझार ॥
कछू डोल अस वैठकर, फिरि दे ताहि उतार ॥
दोहा—यही जु वस्ती कर्म है, गुरु विन पावै नाहिं ॥
लिंगगुदा के रोग जो, गर्मी के नशिजाहिं ॥

अथ गजकर्म ।

दोहा—गजकर्म याही जानिये, पिये पेट भरि नीर ॥
फेरि युक्ति सों काढ़िये, रोग न होय शरीर ॥

अथ न्योलीकर्म ।

न्योली पद्मासन सों करै । दोनों कर घुटनों पर धरै ॥
पेटरु पीठ बरावर होय । दहने वायें नले विलोय ॥
मैल पेटमें रहन न पावै । अपान वायुतासों वश आवै ॥
तापतिली अरु गोला शूल । होन न पावै नेक न मूल ॥
जोगुरु करिकै ताहि दिखावै । न्योलीकर्म सुगम करि पावै ॥
और उदर के रोग कहावै । सो भी वैरहने नहिं पावै ॥

अथ त्राटककर्म ।

त्राटक कर्म टकटकी लागै । पलकपलक सों मिलै न तागै ॥
नैन उघारेही नितरहै । होय दृष्टि थिर शुकदेव कहै ॥
आँख उलटि त्रिकुटीमें आनो । यहभी त्राटककर्म्म पिछानो ॥
जेते ध्यान नैन के होई । चरणदास पूरण हो सोई ॥

दोहा—कपालभाँतिअरु धौंकनी, बाघी शंख पषाल ॥
चारि कर्म ये औरहैं, इनहिं छहों के नाल ॥

इति त्राटककर्म ।

अथ खेचरीमुद्रा ।
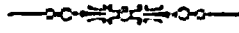
शिष्यवचन ।

दोहा—एकवार फिर भी कहौ, मुद्रा पांच दयाल ॥
मोसे रंक अधीनपर, होकर वहुत कृपाल ॥

गुरुवचन ।

अष्ट०—आगे मुद्रा तोहिं कही समुझाइया । फिरभिकहूं अव खोलि सुनौ चितलाइया ॥ पहिले मुद्राखेचरी को साधन भनूं । जैसे आगे करी सवी ऋषि मुनिजनूं ॥ ताते जलके कुरलेकरि जुवगाइये । तापाछे चौवस्त[1] को चूरणलाइये ॥ जिह्वा हाथमें पकरि मर्दन छीलनकरै । दोहनताननकरै वहुरि दशनन धरै ॥ फिरि करि छीलन ताहि छेद नहिं कीजिये । तातू ज्यों कटि-जाय यत सोइ लीजिये ॥ ब्रह्मरंध्रको धोयकै मैल निवारिये । वायें अङ्कके ऊपर कागको धारिये ॥ सहज सहज सरका-यकै आगे लाइये । यह सव साधन कठिन गुरूसे पाइये ॥ दो अँगुली की कूंचीसूंकारि मेलना । जिह्वा उलटी राख ज्ञ नितप्रति खेलना ॥ यह उपाय षट्‌ मास करै तजि मानही । रसना यों बँधिजाय चढ़ै अस्थानही ॥

दोहा—चार काज यासूं सरैं, फलदायक वहुभाँति ॥
योग माहिं वड़ भूप है, अधिकी जाकी क्रांति ॥

अष्टपदी ।

एक जु प्राणायाम जीभसूं कीजिये । दूजे वन्ध उदान यहीसूं दीजिये ॥ तीजे करि करि ध्यान निरखि जहँ ज्योतही ।

[1] स्याह मिर्च, पीपल, सोंठ और मधु ।

चौथे अमृत पिवे खुलै तहँ सोतही ॥ खैंचै त्रिकुटी पाट सहज अरु फेरिये। द्रवै सुधा रसनीर जहां मन घेरिये ॥ अमृतही के स्वादको कौन वखानई। जो कोई अँचवै सोइ धुन जानई ॥ दिन दिन पलटै देह रक्त दूधाभवै। वीस वरस अरु चार माह ऐसा हवै ॥ इत्याचारी होय वरस छत्तीसमै। सब लोकन में जाय आपनी शक्ति लै ॥

दोहा—जेते विप व्यापै नहीं, रोग न दहै शरीर ॥
जो कोइ पीवै युक्तिसूं, कामधेनु को क्षीर ॥
भूख प्यास अरु नींदके, रहै न तीनौ लेव ॥
नाद विन्द गुटका वँधै, कहै यही शुकदेव ॥
तीन महीने चार का, वालक गोदी माय ॥
नावह पीवै नीरही, अन्न नहीं वह खाय ॥
वह तौ जीवै दूधसूं, वाकूं वही जु काम ॥
लगो रहै माता कुचन, निसरै एक न याम ॥
अमृत पीवै योगिया, ऐसे चरणहिदास ॥
पहरहु यह छाँडै नहीं, कामधेनुको पास ॥
ऐसे धारै तौ बनै, सुधा रसीला संत ॥
दिव्यकाया होजायजव, धनकहै कमलाकंत ॥
आठपहर लागारहै, पीवै कैकै ध्यान ॥
मैं कहा जैसाही वनै, परसै पद निरवान ॥
भेद गुरूसे ये लहै, और छिपावै वाहि ॥
जोजोफलयाकेअधिक, होय परापति ताहि ॥
योगेश्वर अरु देवता, मुनीऋषीश्वरजान ॥
रखवारे वाके वने, करन न देवैं ध्यान ॥

टेक गहै सो जापिये, और करै ह्यां ध्यान ॥
यतीसती अरु गुरमुखी, जाकी ऐसी आन ॥
बड़ी जु मुद्रा खेचरी, मुख में याका वास ॥
जो कहि मैं शुकदेवजी, जानलेहु चरणदास ॥

अथ भूचरीमुद्रा ।

दोहा—दूजी मुद्रा भूचरी, नासा जाको वास ॥
प्राण अपान जुदी जुदी, एक करै चरणदास ॥
जितकीतितरखप्राणको, वा घरलाय अपान ॥
ताहि मिलावै युक्तिसूं, करिकरिसंयमध्यान॥
जब वह जीतै पवनकूं, मन चंचल ठहराय ॥
गगन चढ़नकी आशहो, कहैं शुकदेव सुनाय॥
गुदाधार बंध दीजिये, एँड़ी पांव लगाय ॥
आसन सिद्धजु कीजिये, मनपवनावश लाय ॥
अपानवायुजबवशभवै, ऊरध खैंच चलाय ॥
सनई सनई जाचढ़ै, प्राण वायु ह्वै जाय ॥

अथ चाँचरीमुद्रा ।

दोहा—तीजी मुद्रा चाँचरी, जाको नैनन वास ॥
नासा आगे दृष्टिकूं, राखै मन धर आस ॥
अंगुल चार नासिका आगे । चितअस्थिरकरिदेखनलागे ॥
खुले पांच तत करै जु कोई । मन अरु पवन जहां थिर होई॥
फिर ह्वांसूं नासा परि आवै । अचल टकटकी तहां लगावै ॥
जहँ बहुतक अचरज दरशावै । विभव स्वर्ग के आगे आवै ॥
जितसूं पलट तिरकुटी माहीं । ध्यान करैकहुँ अन्त न जाहीं॥
दरिघ तारासा परकासै । उदय होय सूरज ज्योंभासै ॥

चित चेतन दोउ मेला करै । लै उपजै अरु दुविधा हरै ॥
यही चाचरी मुद्रा जानौ । चरणदास याकूं पहिंचानौ ॥

अथ अगोचरीमुद्रा ।

कहूं अगोचरि चौथी मुद्रा । तामें सुख पावै योगींद्रा ॥
यामुद्राका शरवन वासा । शुकदेवकहैंसुनचरणहिदासा॥
दोहा—ज्ञान सुरति दोउ एक ह्वै, पलट अगोचरजाय ॥
शब्द अनाहदमें रतै, मन इन्द्री थिरपाय ॥

अथ उन्मनीमुद्रा ।

पँचवीं मुद्रा उनमनी, दशवें द्वारे वास ॥
सिद्धसमाधि मिलै जहां, दग्धहोय सब आस ॥
आनंदहि आनँद जहां, तहां न कालकलेश ॥
तीनौंगुन नहिं पाइये, ह्यांनहिं मायालेश ॥
जीवातम परमात्मा, होय जाय वा ठौर ॥
ध्याताध्याननध्येयजहाँ,तहां न किरिया और ॥

अथ बंधवर्णन ।

महाबन्धसाधनविधि ।

महाबन्ध तोहिं पहल बताऊं । पाछे मूलबन्ध समझाऊं ॥
बायांपाँव सिवन गहि दीजे । मूल द्वार एँड़ी बँध कीजे ॥
दहिनी जंघ जंघपरलावै । गउमुख आसन नाम कहावै ॥
राखै चिबुक हृदय परलाय । पवनराह पूरवको जाय ॥
ध्यान त्रिकूटी संयमकरै । प्राणवायु हिरदे में धरै ॥
महाबन्ध ऐसे करि साधै । गुरू प्रताप याहि औराधै ॥
विना पुरुष तिरियाकूं जानौ । बन्ध विना मुद्रा पहिंचानौ ॥
निर्फल जाय पुरुष विननारी । महाबन्ध विन मुद्राधारी ॥
माहिं कण्ठके ध्यान लगावै । सुरत निरत ह्वाईं व हरावै ॥

दोहा–महाबंध अस्थित करै, सो योगी ह्वै जाय ॥
पवन पंथ मुंदित करै, ध्यान कण्ठमें लाय ॥
शशि परकूं सूरज परलावै । रेचक पूरक पवन फिरावै ॥
महाबंध करै अभ्यासा । अमृत अचवै बुझै पियासा ॥
जरा अमृत देही नहिं आवै । महाबंध तीनौ गुनपावै ॥
जठर अग्नि परचै बहुभारी । निशिदिन माहिंवरै अठवारी ॥
पहर पहर भर पवन भरीजै । प्रथम अल्प अभ्यास करीजै ॥
सिय सेवन तापन नहिंकरै । कामअग्नि काया नहिंजरै ॥
दोहा–ऐसी विधि साधै पवन, योग पंथ धरि पाय ॥
पहर पीछला बनत जन, आयुरदा बढ़िजाय ॥

अथ मूलबंध ।

दोहा–मूलबंध अब कहतहूं, अपानवायुवश होय ॥
ऊपरकूं खैंचन करै, मिलै प्राण में सोय ॥
कमल कमल सीधे भवै, नाभि तलेहो राह ॥
आगे मारग सुगमहो, पहुँचै योगीनाह ॥
मूलबंध गुण ऐसाहोई । वायु अधोगति जाय न कोई ॥
रेता ऊरध यासूं सधै । दिन दिन आयुसवाई बधै ॥
यासूं कारज सब बनिआवै । रोगरक्त को सभी नशावै ॥
योगी पहिले या आराधै । अपान वायुकूं नीके साधै ॥
अब मैं मूलबंध बतलाऊं । ज्योंकात्यों साधनदिखलाऊं ॥
गुदा वास याका तुम जानौ । गुदा द्वार बंधनदै ठानौ ॥
बायें पांव कि एँड़ीसेती । मूल द्वार रोकै करिहेती ॥
ऊरधही कूं खैंचन कीजै । शुकदेव कहै नीके सुनलीजै ॥
अरु कबहूं मन ऐसी धरै । आसन पदम करन कूं करै ॥

कपड़ेकी इक गेंद बनावै । गुदा मध्य कसबंध लगावै ॥
यों भी वायु सधै वा भाँती । जोपै लगारहै दिनराती ॥
पवन तत्वके ऊपर जावै । प्राण अपान सहज मिलजावै ॥
नाद बिंद रल मिलजा दोई । एकवर्ण साधै जो कोई ॥
योग माहिं यह भी परधान । बूढ़ी देह पलटहो ज्वान ॥
जठरअग्नि बाढ़े अधिकाय । जो चाहै तौ बहुतै खाय ॥
सुन चरणदास कहै शुकदेव । जो गुरु पूरा देवै भेव ॥

अथ जलधरबंध ।

दोहा—मूलबंध तोसूं कहा, गुण कह सब समुझाय ॥
बंध जलंधर कहतहूं, सुन सरवन करिचाय ॥

तीजा बंध जलंधर जानौ । कंठ वास ताका पहिचानौ ॥
ग्रीवा लटक चिबुकपर लावै । कंठ पवनपर लैपहुँचावै ॥
हिरदै प्राण पूरकरि रहिये । बंध जलंधर यासूं कहिये ॥
उरध पवन नीचे को जाय । अरध पवन ऊरधकूं लाय ॥
उदर मध्य लै ताहि बिलोय । ब्रह्म घरजा पहुँचै सोय ॥
इह विधि ब्रह्मपंथकूं धावै । सहजै सहजै मध्य समावै ॥
जरा मरण जहँ भयनहिं व्यापै । लहै अमरपद होरहआपै ॥
चरणदास शुकदेव बतावै । जो पैबंध उड्यान लगावै ॥

अथ उड्यानबंध ।

दोहा—बंध उड्यान आगे कहा, जिह्वा उलट लगाय ॥
कान आँख मुखनाकके, स्वरसब बंधकराय ॥
इह सुबंध महिमा अधिक, लागै बजरकिवाँर ॥
सातद्वार की बाटहो, निकसै नाहीं बयार ॥

पांचौ मुद्रा बंध सब, दिखलाया यह देश ॥
शुकदेव कहै रणजीत सुन, और कहूँ उपदेश ॥

अष्टपदी ।

चौरासीही जानि जुआसन योगके । सिद्धपद्म तिनमाँहिं बड़ेही थोकके ॥ बहुनारिनके माहिं जु नौनारीभनी । तिनमें सुषमन जानबड़ी गुरुसूंसुनी ॥ तीन बंधके माहिं मूलकूं जानिये । मुद्रौही में बड़ी खेचरी मानिये ॥ वायुनमें परधान प्राणकूं देखिये । सबकुंभकहूं माहिं केवलबड लेखिये ॥ बानीचारौ मध्यपराही गाइये । चार अवस्थामाहिं तुरिया बडपाइये ॥ परमशून्यको ध्यान परसूंहेपरै । याकीसम कोइ नाहिं ध्यान तिनको धरै ॥ अजपाहीके जापबराबर औरना । शीलदयासे मीत न कोई देहमा ॥ पूजन मैं बड़ि जानजु आतमकी करै । ज्ञानसमान न दान सकल विपतहारै ॥ गुरुसा रक्षक और नहीं कोइ लोकमें । योग युक्तिसा स्वादनहीं कोइ भोगमें ॥ कह शुकदेव सुनो रणजीतही । बडी जोगांस खोल तुमकूं जुदी ॥

छन्द–अमरी करतैं बजरी रोंकै बजरी करतैं बाई । रोंकै क्षींक साधना करिकै नासालेहु जँभाई ॥ जल संयमसूं नभकूं देखै संयम नादसुं ज्योती । संयम पवनहोय थिरकाया सो वश राखै मोती ॥ जिया बिछावै मृत्यकवोढै बूढ़ी होय न काया । संयम नींद बिंदनहिं जावै यह शुकदेव बताया ॥ दहिने स्वरमें भोजनकीजै बायें स्वरमें पानी । दहिने स्वरमें अमरीरेचै देह न होय पुरानी ॥ दहिने स्वरमें जलसूं न्हावै बायें स्वरमें लङ्घी । शिव आसनसूं सोवनकीजै नारि न कीजै सङ्गी ॥ पाव-

कसूं तापन नहिं कीजे जो तापै तौ नैना । भोजन गरम न खट्टा खावै फटै झिरैं नहिं मैना ॥

दोहा—गरमीही के रोग में, चन्द चला रवि चन्द ॥
शीत रोग सूरज चला, शशिपर राखै वन्द ॥
तीन रोज कै पांच दिन, कै दिन राखे सात ॥
रोग देखि जैसी करै, होय निरोगा गात ॥
सूरज रात चलाइये, द्योस चलावै चन्द ॥
पवन फिरै ऊपा बधै, श्वास चलै जो मन्द ॥
कान आँख अरु दांतके, सवही रोग भजाहिं ॥
श्यामवालनहिं श्वेतहों, करैजु नीकी दाहिं ॥
रुई पुरानी वहुतही, दिनकूं दाहिने राखि ॥
वायें राखै रैनिकूं, खोली साधन भाखि ॥
शीत उष्ण व्यापै नहीं, विष नहिं व्यापक होय ॥
वीसवरस साधन किये, रहै विकार न कोय ॥
वासी ग्रास न खाइये, छूछै करै अहार ॥
जल वहुतै पीवै नहीं, सपरस करै न नार ॥
तन मन साधै वचनहीं, पाप न लगने देह ॥
शुकदेवकहैचरणदाससुनु, अधकी साधन येह ॥
सव जीवन सुख दीजिये, सव सों मीठा बोल ॥
आतम पूजा कीजिये, पूजा यही अतोल ॥
दया पुष्प चन्दन नवन, धूप दीप दे मन्न ॥
भाँति भाँति नैवेद्य सूं, करै देव परसन्न ॥
जो कोइ आवै राजसी, देहु बड़ाई ताहि ॥
जाकूं देखो तामसी, करो नम्रता वाहि ॥

जो कोई होवै सात्विकी, मिलै ताहि तजिमान ॥
गुढ़ी खोल चर्चाकरो, लीजे ततमत छान ॥
सवहीकूं परसन्न करै, आप रहै परसन्न ॥
वासलहो हरि ध्यानही, ह्यांकहै सव धन धन्न ॥
राजस तामस सात्विकी, क्षेत्तर तीनहिं भाँति ॥
क्षेत्रक आतम देवहै, सवको सहिये क्रांति ॥
सव में देखै आपकूं, सवकूं अपने माहिं ॥
पावै जीवनमुक्ति को, यामें संशय नाहिं ॥
सवमें देखै आतमा, आपनमें करि ध्यान ॥
यही ज्ञान ब्रह्मज्ञान है, यही जु है विज्ञान ॥
अहंकार मिटि ब्रह्महो, परमातम निरवाण ॥
शुकदेवाहो कहतहूं, चरणदास हिय आन ॥
जो तैं पूंछा सो कहा, भेद कहा सव खोल ॥
अरु तेरे हियमें कछू, सकुच खोल कर वोल ॥

शिष्यवचन ।

दोहा—अपनालखि किरपाकरी, समझायो वहुभाँति ॥
योग ओरतैं गुरूजी, हिये में आई शांति ॥
तुम्हरीकहअस्तुति करूं, मोपै कही न जाय ॥
इतनी शक्ति न जीभको, महिमै कहै बनाय ॥
किरपाकरी अनाथ पर, तुमहो दीनानाथ ॥
हाथ जोड़ि मांगौं यही, मम शिर तुम्हरा हाथ ॥
मोसे रंक गरीवकी, तुम गहि पकरी वाहँ ॥
भव बूड़त राखा मुझे, चरण कमलकी छाहँ ॥
आपहि तुम किरपाकरी, मैं कित लहता तोहिं ॥

तुमको पाऊं ढूँढ़िकरि, इतनी शक्ति न मोहिं ॥
व्यासपुत्र शुकदेव तुम, जक्त माहिं विख्यात ॥
तुम दर्शन दुर्लभ महा, पुरुपनको न दिखात ॥
बड़े भाग मेरे जगे, पूरबिले परताप ॥
किरपा श्रीगोपालकी, आय मिले तुम आप ॥
चरणदास अपनो कियो, दियो परम संतोप ॥
बैठिकरूंगो ध्यानही, अबकुछ रह्योन शोक ॥
चलत फिरत ह्यां आइया, तुमभरिदीन्ह्यो मोहिं ॥
नैन प्राण तन मन सभी, देखत अरपे तोहिं ॥
चाहमिटी सबसुख भये, रहा न दुखका मूल ॥
चाहूं तौ चाहूं यही, तुम चरणनकी धूल ॥

गुरुवचन।

दोहा—योग तपस्या कीजियो, सकल कामना त्याग ॥
ताको फलमत चाहियो, तजो दोप अरु राग ॥
अष्टसिद्धि जो पै मिलै, नेक न कीजे नेह ॥
धरि हिरदय परमात्मा, त्यागे रहियो देह ॥
जेती जगकी वस्तुहै, तामें चित्त न लाय ॥
सावधान रहियो सदा, दियो तोहिं समुझाय ॥
बार बार तोसे कहूं, ह्यां मत दीजो चित्त ॥
सिद्ध स्वर्गफलकामना, तजि कीजो हरिमित्त ॥
जो कीजै हरि हेतही, एहो चरणहिदास ॥
भक्तियोग अरुशुभकरम, नीकी ठौर निवास ॥

शिष्यवचन।

दोहा—ऐसेही सब करूंगा, तुम चरणनपरताप ॥
अष्टसिद्धि समझौ चहो, वर्णन कीजे आप ॥

समझौं तौ त्यागूं उन्हैं, करवायो पहिंचान ॥
कहानाम लक्षण कहा, कौन रहै अस्थान ॥

गुरुवचन ।

दोहा—कह शुकदेव वर्णन करूं, अष्ट सिद्धि के नाउ ॥
लक्षणगुण सबही सहित, नीके तोहिं समझाउ ॥

अथ अष्टसिद्धिके नाम ।

प्रथमै अणिमा सिद्धि कहावै । चाहै तौ छोटा ह्वै जावै ॥
अणु समान छिपि जावै सोई । ऐसी कला जु पावै कोई ॥
दूजी महिमा लक्षण एता । चाहै बड़ा होय वह जेता ॥
तीजी लघिमा वह कहवावै । पुष्प तुल्य हलका ह्वै जावै ॥
चौथी गरिमा कहूं विचारी । चाहै जितना होवै भारी ॥
पंचवीं प्रापति सिद्धि कहावै । जित चाहै तितही ह्वै आवै ॥
छठवीं पराकाम्य गुण धरै । शक्ति पाय चाहै सो करै ॥
सतवीं सिद्धि ईशिता रानी । सबको अज्ञा माहिं चलानी ॥

दोहा—वशीकरणसिद्धिआठवीं, कहैंजु श्रीशुकदेव ॥
चाहै जिसको वशकरै, अपनाही करि लेव ॥
चरणदास सिद्धैं कही, समझलेहिमनमाहिं ॥
जो हैं जनवे रामके, इनमें उरझैं नाहिं ॥

योगकिये आठोसिधि पावै । कै भोगै कै चित न लगावै ॥
योग किये मन जीताजावै । पलटै जीव ब्रह्मगति पावै ॥
योगेश्वर चाहै सो करै । भरी रितावै रीती भरै ॥
योगेश्वर ईश्वर ह्वै जाई । दिन दिन बाढ़ै कला सवाई ॥
तजिये भोग योगही करिये । तिरगुणपरै ध्यानहीं धरिये ॥

चौथेपद में करै निवासा। काहुविधिका रहै न श्वासा॥
योग करै सोई परवीना। शुकदेवकहैंप्रकट कहिदीना॥

दोहा—पोथी माहीं देखि करि, करै जु कोई योग॥
तनछीजै सिधि ना भवै, देही आवै रोग॥
देखि देखि गुरुसों करै, लै अज्ञा रहु संग॥
सिद्धि होय साधन सवै, कछू न आवै भंग॥
योग तपस्या में बड़ा, पहुँचावै हरिपास॥
जन्ममरण विपता मिटै, रहै न कोई आस॥

शिष्यवचन।

दोहा—मैं समझी जानी सभी, सूझभई हिय माहिं॥
किरपाकरि जोजोकहा, ताको विसरूं नाहिं॥
व्यासदेव श्री जनक जै, जै जै श्री शुकदेव॥
जैजै यह सुकतारहै, समुझायो करि हेव॥
हियहुलसोआनँदभयो, रोम रोम भयो चैन॥
भये पवित्तर कानये, सुनिसुनितुम्हरे बैन॥

छप्पय।

गुरु ब्रह्मा गुरु विष्णु, गुरु देवनके देवा॥
सर्व सिद्धि फल देनगुरु, तुमही मुक्ति करेवा॥
गुरु केवट तुम होयकरि, करौभवसागर पारी॥
जीव ब्रह्म करिदेत हरो, तुम व्याधा सारी॥
श्रीशुकदेव दयाल गुरु, चरणदासकेशीशपर॥
किरपाकरि अपनोकियो, सवहीविधिसोंहाथधर॥

इति श्रीस्वामी चरणदासकृत षट्कर्महठयोगवर्णन सम्पूर्णम्।

कैलासविहारिणेनमः ।
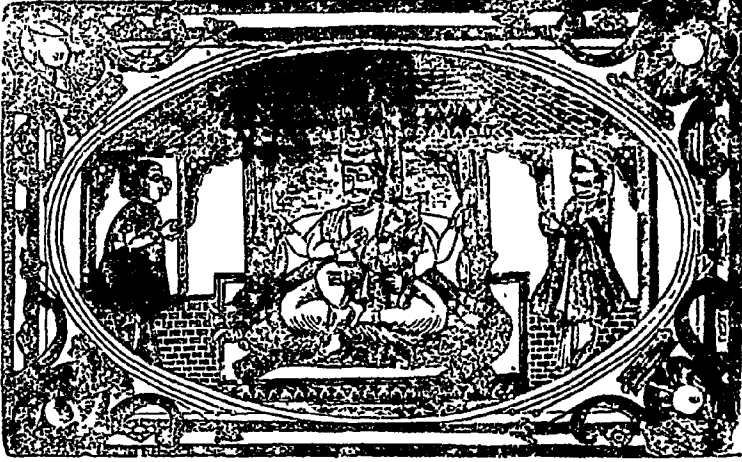
अथ योगसन्देहसागरप्रारम्भः ।

दोहा—अर्थ बतावो पण्डिता, ज्ञानी गुणी महन्त ॥
जो तुम पूरे साधुहौ, भक्ता हरिके सन्त ॥
चरणदास पूछै अरथ, भेदी होय कहो ॥
समझो तो चर्चा करो, नाहीं मौन गहो ॥

ब्रह्मण्डे सों पिण्डे जानो । ठौर ठौर घटमें पहिंचानो ॥
सात समुंदर घटमें कहां । कछुवा रहै बतावो जहां ॥
शेषनाग केहि ठौर विराजे । रूपवराह कौन छवि छाजे ॥
कहा चार कायामें खान । चौरासी लख योनि बखान ॥
षट चक्कर को जो तुम जानो । नाम सहित सब भेद बखानो ॥
नाभि कुण्डलीका परमान । कैसे जागै कहो बखान ॥
सहज सहज वह कहां समावै । योगी होय सो भेद बतावै ॥
चरणदासका गुरु शुकदेव । सोतौ जानै सबही भेव ॥

दोहा—कहां जु वासा पवनका, मन कौनी अस्थान ॥
कहां हियेकी आँखिहै, कैसे करै पिछान ॥
प्राण पुरुप अन्तर्गत कैसे। क्योंकरि भेद बतावो जैसे ॥
इड़ा पिंगला सुषुम्ना नारी। कैसे पलटैं वारी वारी ॥
आठ प्रकारके कुम्भक जानै। सो युक्ती मेरे मनमानै ॥
चार अवस्था[1] चार शरीरा[2]। वाणीचारि[3] नाम कह वीरा ॥
कै प्रकार अजपाका जाप। कै अंगुल श्वासाका नाप ॥
क्यों आवै अरु क्यों वह जाय। याका ज्ञानी करौ लखाय ॥
परापश्यंती मध्यमा कहा। कहा वैखरी देहु वता ॥
रणजीताका गुरु शुकदेव। सोतौ जानै सवही भेव ॥
दोहा—पद तीनौ कहुँ विष्णुके, स्वप्न जाग्रत् भेद ॥
बावन अक्षर देह में, पुष्पद्वीप कह स्वेद ॥
कहँ इकीस काया में लोग। इन्द्र करैं कहँ नित्तहि भोग॥
ब्रह्मादिक शिव कहां त्रिदेवा। काविधि उनको पावै भेवा॥
षोडश चन्द्र कहां परकाशा। बारह सूर्य्यनका कित बाशा॥
तारामण्डल कैसें दरशैं। त्रिकुटी संयम कैसे परशैं ॥
त्रैवेणी को कैसे पावै। रं रकार कह शब्द जगावै॥
वरणोंअक्षर ओंकार। तासेभयो सकल संसार ॥
जाका कीजै जैसे ध्यान। कौन दिशा अरु को अस्थान॥
चरणदासका गुरु शुकदेव। सोतौ जानै सवही भेव ॥
दोहा—निर्गम सुर्गम भेदकहु, श्वास उसाँस बताव ॥
कायामें विष कहां है, विन्दु कुण्ड दर्शाव ॥

---

१ जाग्रत, स्वप्न, सुषुप्ति, तुरिया। २ स्थूल, सूक्ष्म, कारण। ३ परा, पश्यन्ति, मध्यमा, वैखरी, महा कारण।

जीव ब्रह्ममें केता बीच । कौन कौन कायामें नीच ॥
अमृतकुण्ड कौन अस्थान । बङ्क नालकी कहु पहिचान ॥
ब्रह्मरन्ध्रका भेद लखाव । कामधेनुका वरण बताव ॥
मानसरोवर ताल बताय । तामें हंसा कैसे न्हाय ॥
विना सीप कहँ उपजै मोती । विना घीवकहँ जगमग ज्योती ॥
विनसूरज कहँ नितही धूप । भवँरगुफाका कैसा रूप ॥
शून्य शिखरका कीधरद्वारा । कै खिरकी अरु कहा अकारा ॥
चरणदासका गुरु शुकदेव । सोतौ जानै सबही भेव ॥

दोहा–कहां दशौ दिगपालहैं, कहँ इन्द्रिन के देव ॥
अहार वास पँचतत्त्वको, वरणि बतावो भेव ॥

काशी अरु मथुरा है दोय । कहां देहमें कहिये सोय ॥
अरसठि तीरथ घटमें ज्योंकर । सबका गुरु पुष्करहै क्योंकर ॥
कहांबसै वाई उद्यान । कहां बन्ध लागै उद्यान ॥
कहँ कपाटका कुञ्जी ताला । द्वादश कला कौन मतवाला ॥
कण्ठ कूप उलटाहै कौन । नेजू कहा बतावो जौन ॥
पनिहारी कहो कैसे भरैं । घड़िया कहां कहां भरि धरैं ॥
कै प्रकार अमृत का स्वाद । कौन ठौर सों अनहद नाद ॥
अग्र डोर कैसे करि पावै । मकर तारका भेद बतावै ॥
चरणदासका गुरु शुकदेव । सो तौ जानै सबही भेव ॥

दोहा–घण्ट ताल का लम्बका, और अम्ब का बोल ॥
चारि वस्तु ये कौन हैं, इन्हैं बतावो खोल ॥

कौन कमलपर गुरू विराजै । कै प्रकार अनहद धुनि बाजै ॥
कै वानी हैं अनहद तूरा । जानैगा कोइ साधूपूरा ॥
तेजपुञ्जकै योजन आगे । अमरलोक कवि सूजनलागे ॥

तीन शून्यकहँ चौथा शून्य। जितही भूले पढ़ि अरु शून्य॥
कै कहिये कायाके द्वारे। भिन्न भिन्न कहु मेरेप्यारे॥
वहतरहजारआठसैचौंसठिनारी। इनको भेद बहुत है भारी॥
बहत्तरि कोठे कहां कहां। नाम बतावो जहां जहां॥
चरणदासका गुरु शुकदेव। सोतो जानै सबही भेव॥

दोहा—सात द्वीप नौ खण्डको, भिन्न भिन्न कहु भेद॥
काया में केहि ठौर हैं, कहा नाम किसहेत॥

चौरासी वाई का नावँ। कहां कहां है कैसीदावँ॥
जलका कोठा कीधर होय। कहां अग्नि का कहिये सोय॥
ब्रह्मज्वाल कहु कैसे जागै। किस आसनसे निद्रा भागै॥
किस आसनसे वीरज जीतै। दशमुद्रा कैसे कर नीतै॥
नामरूप मुद्रों का जान। तीन बंध का नाम बखान॥
चौरासी आसनका नावँ। और बतावो मन के पावँ॥
स्वर्ग मृत्यु अरु कहां पताल। कहां सत्य अरु कहां तिताल॥
चरणदास का गुरु शुकदेव। सोतो जानै सबही भेव॥

दोहा—कै प्रकारका योग है, कै प्रकारकी भक्ति॥
पांच भूमिका ज्ञानकी, सातकलाकी शक्ति॥

को नगरी का राज करै। को जीवै अरु कौन मरै॥
पेट बड़ा किसका है जान। पूजा बड़ी ताहि पहिचान॥
सब में बड़ा कौन आहार। ताको सुरता लेहु निहार॥
ताबिन एक छड़ी नहिं रहै। भेदी होय सो भेदै कहै॥
सबमें बड़ी कहा जो पूजा। जाकी सम दीखै नहिं दूजा॥
कहा सो सबको लगमलगा। कौनपुरुष सो भगमभगा॥
कहा घंटै सो घटैईघटै। कहा बढ़ै सो बढ़ैई बढ़ै॥

ताहि बतावो गुरु शुकदेव । सोतौ जानै सबही भेव ॥

दोहा–क्षरके कहा जु अर्थ है, अक्षरदेहु दिखाय ॥
निर्अक्षर के रूपको, भिन्न भिन्न दरशाय ॥

ओंकारका अर्थ बतावो । महत्तत्त्व का रूप दिखावो ॥
मन चक्कर का कैसा रंग । मन मनसा दोउ कैसे संग ॥
कौन घाटहो लहो समाध । कित जा देखे खेल अगाध ॥
चौविस शून्य हैं जहां जहां । वज्जर ताला लागै कहां ॥
वज्रद्वार बिन पावै कहां । बिन पाये उरले घर रहा ॥
आठ महलका करौ बखान । कासों कहिये पद निर्वाण ॥
जो तुम जानौ ऊरधरेता । तौ तुम भेद कहौ अब केता ॥
दीय मुद्रा अरु मुद्रा राज । जासों सुधरैं काया काज ॥
काया महलके जो तुम भेदी । ठौर ठौर कहु घटमें जेती ॥
पांचतत्त्वकी इन्द्री दश । यही बतावो आगे वश ॥
चरणदासका गुरु शुकदेव । सोतौ जानै सबही भेव ॥

दोहा–चारभेद चौदह चौबारे, भेदी होय सो जानै ॥
चरणदासशुकदेवबालक, सो यह भेद बखानै ॥

छप्पय–चन्द कला कित छिपै बढ़ै जब कितसों आवै । बादर कित सों होय फटै जब कहां समावै ॥ दीपलोय बुझिजाय जाय कित मोहिं बतावो । राति दिना कित जाय ध्रुवा केहि ठौर लखावो ॥ चरणदास शुकदेव सों पूंछतहौं शिरनायके । तन छूटै जीजाय कित आवत है किहि ठाँयते ॥

क०–देखो है तमाशादेह समुझिकै विचारिलेहु, मूरुखनरहोय जोया बातमें हँसैगो । चीतेको मारि मृग नखशिख सुखाय गयो, बाघनीको मारिबोक सिंहको ग्रसैगो ॥ बिल्लीको मारि चूहे

प्रेमको नगारोदियो, दादुरहू पांच सर्प मारिकै वसैगो । कहै चरणदास ऐसे खेलसों लगाई आस चिरियाके शीश टोटो वाजको लसैगो ॥

दोहा—पगलागूं शुकदेवके, और वार न जावँ ॥
गुप्तभेद मोसों कह्यो, सबै नावँ अरु ठावँ ॥
सो तुमसों पूँछन करौं, हौं पुरुपनके दाय ॥
यासागर संदेहको, दीजै अर्थ वताय ॥

इति श्रीस्वामीचरणदासजीकृत योगसंदेहसागरसंपूर्णम् ॥

अथ ज्ञानस्वरोदयप्रारम्भः ।

दोहा—नमो नमो शुकदेवजी, परणाम करौं अनन्त ॥
तुम प्रसाद स्वरभेदको, चरणदास वर्णन्त ॥
पुरुपोत्तम परमातमा, पूरण विस्वा वीश ॥
आदिपुरुपअविचलतुहीं, तोहिं नवाऊं शीश ॥

कुं०—क्षर ॐ सो कहत हैं, अक्षर सोहं जान ॥
निरक्षर श्वासा रहत, ताहीको मन आन ॥
ताहीको मन आन, रातदिन सुरतिलगावो ॥
आपा आप विचारि, औरना शीश नवावो ॥
चरणदास मथि कहत हैं, अगमनिगमकी सीख ॥

यही वचन ब्रह्मज्ञानका, मानो बिस्वा बीस ॥
ॐ सो काया भई, सोहं सो मन होय ॥
निर्अक्षर श्वासा भई, चरणदास भल जोय ॥
चरणदास भल जोय, खैंचि मनवां तहं राखो ॥
क्षर अक्षर निर्अक्षर, एकै दुविधा नाखो ॥
जब दरशै यक एकही, वेष यह सभी तिहारो ॥
डांर पात फल फूल, मूल सो सभी निहारो ॥
श्वासा सों सोहं भयो, सोहं सों ॐकार ॥
ॐ सों रा भयो, साधो करो विचार ॥
साधो करो विचार, उलटि घर अपने आवो ॥
घट घट ब्रह्म अनूप, समिटिकरितहांसमावो ॥
चारि वेदका भेद है, गीताका है जीव ॥
चरणदास लखि आपको, तो मैं तेरापीव ॥
दोहा—सब योगनको योग है, सब ज्ञाननको ज्ञान ॥
सर्व सिद्धिको सिद्धि है, तत्त्व स्वरनको ध्यान ॥
ब्रह्मज्ञानको जाप है, अजपा सोहं साध ॥
परमहंस कोइ जानि है, ताको मतो अगाध ॥
भेद स्वरोदय सो लहै, समझै श्वास उसाँस ॥
बुरी भली तामें लखै, पवन सुरति मन गाँस ॥
शुकदेव गुरू कृपाकरी, दियो स्वरोदय ज्ञान ॥
जब सों यह जानी परी, लाभ होय कै हान ॥
इड़ा पिंगला सुषमना, नाड़ी तीन विचार ॥
दहिने बायें स्वरचलैं, लखै धारणा धार ॥
पिंगल दाहिने अंग है, इड़ा सो बायें होय ॥
सुषमन इनक बीच है, जब स्वर चालैं दोय ॥

जब स्वर चालैं पिंगला, तेहि मधि सूरजवास॥
इड़ा सो बायें अंग है, चन्द्र करत परकास॥
उदय अस्त तिनकीलखै, निर्गम सुगम विद्धि॥
अरु पावै तत वरणको, जब वह होवे सिद्धि॥
शुकदेवकहिचरणदाससों, थिरचरस्वरपहिचान॥
थिरकारजको चन्द्रमा, चर कारजको भान॥
कृष्णपक्ष जबहीं लगै, जाय मिलत है भानं॥
शुक्लपक्ष है चन्द्रको, यह निश्चय करिजान॥
मंगल अरु इतवार दिन, और शनीचर लीन॥
शुभकारजकोमिलत हैं, सूरजके दिन तीन॥
सोमवार शुक्करभलो, दिनबृहस्पतिकोदेखि॥
चंदयोगमें सुफल हैं, चरणदास बीशेखि॥
तिथिअरुवारविचारकरि, दहिनो बाओं अंग॥
चरणदास स्वरजो मिलै, शुभकारज परसंग॥
कृष्णपक्षके आदिही, तीनि तिथींतक भान॥
फिरिचंदा फिरिमान है, फिरिचंदा फिरिभान॥
शुक्लपक्षके आदिही, तीनि तिथी लग चन्द॥
फिरिसूरज फिरिचन्दहै, फिरिसूरजफिरिचन्द॥
सूरजकी तिथिमें चलै, जो सूरज परकास॥
सुखदेहीको करत हैं, लाभालभ हुलास॥
शुक्लपक्ष चन्दा चलै, परिवा लेहि निकार॥
फल आनँद मंगल करै, देहीको सुखसार॥
शुक्लपक्ष तिथि में चलै, जो परिवाको भान॥
होय क्लेश पीड़ा कछू, कै दुखकै कछु हान॥
शुक्लपक्ष तिथिमें चलै, जो परिवाको चन्द॥

कलहू करै पीड़ा करै, हानि तापके द्वन्द ॥
ऊपर बायें सामने, स्वर बायेंके संग ॥
जो पूंछे शशि योगमें, तौ नीको परसंग ॥
नीचे पीछे दाहिने, स्वर सूरजको राज ॥
जो कोइ पूछै आयकरि, तौ समझौ शुभकाज ॥
दहिनोस्वरजवचलतहै, पूंछे बायें अंग ॥
शुक्लपक्ष नहिं वार है, तौ निर्फल परसंग ॥
जो कोइ पूंछैआयकारि, बैठि दाहिनी ओर ॥
चन्द चलै सूरज नहीं, नहिं कारज वृधिकोर ॥
जो सूरजमें स्वर चलै, कहै दाहिने आय ॥
लग्नवारअरुतिथिमिलै, कहुकारज होइ जाय ॥
जो चन्दामें स्वर चलै, बायें पूंछै काज ॥
तिथिअरुअक्षरवारमिलि, शुभकारजको साज ॥
सात पांच नव तीनगिन, पन्द्रह अरु पचीश ॥
काज वचन अक्षर गिनै, भानु योगको ईश ॥
चार आठ द्वादश गिनै, चौदह सोलह मीत ॥
चन्दयोग के संग हैं, चरणदास रणजीत ॥
कर्क मेष तुला मकर, चारौ चरती राश ॥
सूरज सों चारौ मिलत, चरकारज परकाश ॥
मीन मिथुन कन्याकही, चौथी अरु धन सीत ॥
द्विस्सुभावकी सुषमना, मुरलीसुत रणजीत ॥
वृश्चिकहरिवृषकुम्भपुनि, बायें स्वरके संग ॥
चन्द योगको मिलतहैं, थिरकारज परसंग ॥
चिंतंअपनोअसथिरकरै, नासा आगे नैन ॥

श्वासा देखै दृष्टि सों, जब पावै स्वर बैन ॥
पांचघड़ी पांचौ चलैं, फिरि वा चारहि वार ॥
पांच तत्त्व चालै मिलै, स्वरविच लेह निहार ॥
धरती अरु आकाश है, और तीसरी पौन ॥
पानी पावक पांचवों, करत श्वासमें गौन ॥
धरती तौ सोहीं चलै, अरु पीरो रँग देख ॥
बारह अंगुल श्वासमें, सुरत निरतकर पेख ॥
ऊपरको पावक चलै, लाल वरण है भेष ॥
चारि सु अंगुलश्वासमें, चरणदास औ रेष ॥
नीचेको पानी चलै, श्वेत रंग है तासु ॥
सोलह अंगुल श्वासमें, चरणदास कहै भासु ॥
हरो रंग है वायुको, तिरछी चालै सोय ॥
आठसु अंगुल श्वासमें, रणजीत मीतकरि जोय ॥
स्वर दोनों पूरण चलैं, बाहर ना परकाश ॥
श्याम रंग है तासुको, सोई तत्त्व अकाश ॥
जल पृथ्वीके योगमें, जो कोई पूछै बात ॥
शशिपरमें जोस्वरचलै, कहु कारज ह्वैजात ॥
पावक अरु आकाश पुनि, वायु कभी जो होय ॥
जो कोइ पूंछै आयकरि, शुभकारज नहिं होय ॥
जल पृथ्वी थिर काजको, चरकारजको नाहिं ॥
अग्नि वायु चरकाजको, दहिने स्वरके माहिं ॥
रोगीको पूंछै कोऊ, बैठि चन्द्रकी ओर ॥
धरती बायें स्वर चलै, मरै नहीं विधि कोर ॥
रोगीको परसंग जो, बायें पूँछै आन ॥

चंद बंध सूरज चलै, जीवै ना वह जान ॥
बहते स्वर सों आयकरि, पूंछे बहते श्वास ॥
यह निश्चय करि जानिये, रोगीको नहिं नास ॥
शून्य ओर सों आय कै, पूंछे बहते पक्ष ॥
जेते कारज जगतके, सुफल होयँ यों सच्च ॥
बहते स्वरसों आयकरि, शून्य ओर जो जाय ॥
जो पूंछे परसंग वह, रोगी ना ठहराय ॥
बहते स्वरसे आयकरि, जो पूंछे सुन ओर ॥
जेते कारज जगतके, उलटे हों विधि क्रोर ॥
कै बायें कै दाहिने, जो कोइ पूरण होय ॥
पूंछे पूरण होरही, कारज पूरण सोय ॥
बरस एक को फल कहै, तत मत जानै सोय ॥
काल समौ सोई लखै, बुरो भलो जग होय ॥

संक्रायत पुनि मेप विचारै । तादिन लगै सु घड़ी निहारै ॥
तबहीं स्वरमें करै विचारा । चलै कौन सो तत्व नियारा ॥
जो बायें स्वर पिरथी होई । नीको तत्व कहावै सोई ॥
देश वृद्धि अरु समै बतावै । परजा सुखी मेह बरसावै ॥
चारा बहुत ढौरको उपजै । नरदेहीको अन्न बहु निपजै ॥
जल चालै बायें स्वर माहीं । धरती फलै मेह बरसाहीं ॥
आनँद मंगल सों जगरहै । आपतत्त्व चन्दामें बहै ॥
जल धरती दोनों शुभ भाई । चरणदास शुकदेव बताई ॥
तीन तत्त्वका कहौं विचारा । स्वरमें जाको भेद निहारा ॥
लगै मेष संक्रायत तबहीं । लगती घडी विचारै जबहीं ॥
अग्नि तत्त्व स्वरमें जब चालै । रोग दोषमें परजा हालै ॥

काल पड़ै थोड़ोसो बरसै। देश भंग जो पावक दरसै॥
वायु तत्त्व चालै स्वर संगा। जग भयमान होय कछु दंगा॥
वायु तत्त्व चालै स्वर दोई। मेह न बरसै अन्न न होई॥
काल पड़ै तृण उपजै नाहीं। तत अकाश जोहो स्वरमाहीं॥

दोहा—चैत महीना मध्यमें, जबहीं परिवा होय॥
शुक्लपक्ष तादिन लगै, प्रात श्वासमें जोय॥
भोरहि परिवाको लखै, पृथ्वी होय सुथान॥
होय समौ परजासुखी, राजा सुखी निदान॥
नीर चलै जो चन्दमें, यही समैकी जीत॥
घन बरसैं परजा सुखी, संवत् नीको मीत॥
पृथ्वी पानी समौ जो, बहै चन्द अस्थान॥
दहिने स्वरमें जो बहै, समौ सुमध्यम जान॥
भोरहि जो सुषमन चलै, राज होय उतपात॥
देखनवारो विनश है, और काल पड़िजात॥
राज होय उत्पात पुनि, पड़ै काल विसवास॥
मेह नहीं परजा दुखी, जो हो तत्त्व अकास॥
श्वासामें पावक चलै, परै काल जब जान॥
रोगहोय परजा दुखी, घटै राजको मान॥
भय कलेश हो देशमें, विग्रह फैलै अत्त॥
परै काल परजा दुखी, चलै वायुको तत्त॥
संक्रायत अरु चैतको, दीन्हों भेद लखाय॥
जगतकाज अब कहत हूं, चन्द सूरको न्याय॥

ब्याहदान तीरथ जो करै। वस्तर भूषण घर पद धरै॥
बायें स्वर में ये सब कीजै। पोथीपुस्तक जो लिखिलीजै॥

योगाभ्यासरु कीजै प्रीत । औषधि बाड़ी कीजै मीत ॥
दीक्षा मंतर बोवै नाज । चन्द्र योग थिर बैठे राज ॥
चन्द्र योगमें अस्थिर जानौ । थिरकारज सबही पहिंचानौ ॥
करै हवेली छप्पर छावै । बाग बगीचा गुफा बनावै ॥
हाकिम जाय कोटमें बरै । चन्द्र योग आसन पग धरै ॥
चरणदास शुकदेव बतावै । चन्द्र योग थिरकाज कहावै ॥

दोहा—बायें स्वरके काज ये, सो मैं दिये बताय ॥
दहिने स्वरके कहतहौं, ज्ञानस्वरोदय गाय ॥

जो खांड़ो कर लीयो चाहै । जाकर बैरी ऊपर बाहै ॥
युद्ध वाद रण जीतै सोई । दहिने स्वरमें चालै कोई ॥
भोजन करै करै असनाना । मैथुन कर्म ध्यान परधाना ॥
वही लिखै कीजै व्योहारा । गज घोड़ा वाहन हथियारा ॥
विद्या पढ़ै नई जो साधै । मंतर सिद्धि ध्यान आराधै ॥
वैरीभवन गवन जो कीजै । अरु काहूको ऋण जो दीजै ॥
ऋण काहूपै जो तू मांगै । विष अरु भूत उतारन लागै ॥
चरणदास शुकदेव विचारी । येचर कर्म भानुकी नारी ॥

दोहा—चरकारजको भानु है, थिर कारजको चंद ॥
सुषमनचलतनचालिये, तहां होय कुछ दंद ॥
गावँ परगने खेत पुनि, ईधर ऊधर मीत ॥
सुषमनचलतनचालिये, बरजत है रणजीत ॥
क्षण बायें क्षणदाहिने, सोई सुषमन जानि ॥
ढील लगै कै ना मिलै, कै कारजकी हानि ॥
होय क्लेश पीड़ा कछू, जो कोई कहिं जाय ॥
सुषमनचलतनचालिये, दीन्हों तोहिं बताय ॥

योग करौ सुषमन चलै, कै आतमको ज्ञान ॥
और काज कोई करै, तौ कुछ आवै हान ॥
पूरव उत्तर मत चलै, वायें स्वर परकाश ॥
हानि होय वहुरै नहीं, आवनकी नाह आश ॥
दहिने चलत न चालिये, दक्षिण पश्चिमजानि ॥
जोर जाय वहुरै नहीं, तहां होय कछु हानि ॥
दहिने स्वरमें जाइये, पूरव उत्तर राज ॥
सुख संपति आनँद करै, सभी होय सुखकाज ॥
वायें स्वरमें जाइये, दक्षिण पश्चिम देश ॥
सुख आनँद मंगल करै, जोर जाइ परदेश ॥
दहिने सेती आय करि, दहिने पूछे धाय ॥
जो दहिनो स्वरवंध है, कारज अफल वताय ॥
दहिने सेती आय करि, वायें पूछे कोय ॥
जो वावों स्वर वंध है, सुफल काज नहिं होय ॥
जब स्वर भीतरको चलै, कारज पूछे कोय ॥
पैज वांधि वासों कहौ, मनसा पूरण होय ॥
जब स्वर वाहरको चलै, तब कोइ पूछै तोर ॥
वाको ऐसे भाषिये, विधि नहिं काज करोर ॥
वाईं करवँट सोइये, जल वायें स्वर पीव ॥
दहिने स्वर भोजन करै, तौ सुख पावै जीव ॥
वायें स्वर भोजन करै, दहिने पीवै नीर ॥
दश दिन भूलो यों करै, आवै रोग शरीर ॥
दहिने स्वर झाड़े फिरै, वायें लघुशंकाय ॥
युक्ती ऐसी साधिये, दीन्हों भेद वताय ॥

चन्द चलावै द्योसको, रैनि चलावै सूर ॥
नित साधन ऐसे करै, होय उमर भरपूर ॥
जितनोहीं वावों चलै, सोई दहिनो होय ॥
दशश्वासासुषमन चलै, ताहि विचारौ लोय ॥
आठ पहर दहिनो चलै, वदलै नहींजु पौन ॥
तीन वरस काया रहै, जीव करै फिरिगौन ॥
सोलह पहर चलै जभी, श्वास पिंगला माहिं ॥
युगल वरष काया रहै, पीछे रहनो नाहिं ॥
तीन रात अरु तीन दिन, चलै दाहिनो श्वास ॥
संवत भर काया रहै, पाछे होवै नास ॥
सोलहदिननिशिदिनचलै, श्वास भानुकी ओर ॥
आयु जान इकमासकी, जीव जायतन छोर ॥
नौ भृकुटी सप्ते श्रवण, पांच तारका जान ॥
तीन नाक जिह्वा इकै, काल भेद पहिंचान ॥
भेद गुरू सों पाइये, गुरु विन लहै न ज्ञान ॥
चरणदास यों कहत है, गुरुपर वारौं प्रान ॥
एक मास जो रैनि दिन, भानु दाहिनो होय ॥
चरणदास यों कहत है, नर जीवै दिन दोय ॥
नाड़ी जो सुषमन चलै, पांच घड़ी ठहराय ॥
पांच घड़ी सुषमन वहै, तवहीं नर मरिजाय ॥
नहीं चन्द्र नहिं सूर है, नहीं सुषुम्ना वाल ॥
मुख सेती श्वासा चलै, घड़ी चारमें काल ॥
चारि दिनाकै आठ दिन, वारह कै दिन वीश ॥
ऐसे जो चंदा चलै, आंव जान वड़ ईश ॥

तीन रात अरु तीन दिन, चालै तत्त्व अकाश ॥
एक वरस काया रहै, फेर काल विसवाश ॥
दिनको तौ चन्दा चलै, चलै रातको सूर ॥
यहनिश्चय करिजानिये, प्राण गमन वहुदूर ॥
रात चलै स्वर चन्दमें, दिन को सूरज वाल ॥
एक महीना यों चलै, छठे महीने काल ॥
जव साधू ऐसी लखै, छठे महीने काल ॥
आगेही साधन करै, वैठि गुफा ततकाल ॥
ऊपर खैंचि अपानको, प्राण अपान मिलाय ॥
उत्तम करै समाधिको, ताको काल न खाय ॥
पवन पियै ज्वाला पचै, नाभितले करि राह ॥
मेरुडंडको फोरिकै, वसै अमरपुर जाह ॥
जहां काल पहुँचै नहीं, यमकी होय न त्रास ॥
नभमण्डलकोजायकरि, करै उनमुनी वास ॥
जहां काल नाहिं ज्वालहै, छुटै सकल सन्ताप ॥
होय उनमनी लीन मन, विसरै आपाआप ॥
तीनों वन्ध लगायकै, पञ्चवायुको साध ॥
सुषमन मारग ह्वै चलै, देखै खेल अगाध ॥
शक्ति जायशिवमेंमिलै, जहां होय मन लीन ॥
महा खेचरी जो लगै, जानै ज्ञान प्रवीन ॥
आसनपद्मलगायकरि, मूलवन्धको वाँधि ॥
मेरुडण्ड सीधो करै, सुरति गगनको साधि ॥
चन्द सूर दोउ सम करै, ठोढ़ी हिये लगाय ॥
षट चक्करको वेधिकरि, शून्य शिखरकोजाय ॥

इड़ा पिंगला साधिकरि, सुषमनमें करिवास ॥
परम ज्योति झिलमिल तहां, पूजैमनविश्वास ॥
जिन साधन आगे करी, तासों सब कुछ होय ॥
जब चाहै जबहीं तभी, काल बचावै सोय ॥
तरुणअवस्थायोगकरि, बैठि रहै मन जीत ॥
काल बचावै साध वह, अन्तसमय रणजीत ॥
सदा आपमें लीन रहु, करिकै योगाभ्यास ॥
आवत देखै काल जब, नभमण्डलकर वास ॥
शनै शनै सों साधि करि, राखै प्राण चढ़ाय ॥
पूरो योगी जानिये, ताको काल न खाय ॥
पहिले साधन ना कियो, नभमण्डलको जान ॥
आवत जानै काल जब, कहा करै अज्ञान ॥
योग ध्यान कीन्हों नहीं, ज्वान अवस्था सीत ॥
आगम देखै कालको, कहा सकै वह जीत ॥
कालजीत हरिसों मिलै, शून्य महल अस्थान ॥
आगे जिन साधन करी, तरुण अवस्था जान ॥
काल अवधि बीतै तभी, जबै बीति सब जाय ॥
योगी प्राण उतारिये, लेहि समाधि लगाय ॥
काल जीति जगमें रहै, मौत न व्यापै ताहि ॥
दशौंद्वारको फोरिकै, जब चाहै तब जांहि ॥
सूरजमण्डल चीरिकै, योगी त्यागै प्राण ॥
सायुजमुक्ति सोई लहै, पावै पद निर्वाण ॥
कृष्णपक्षके मध्यमें, दक्षिण होय जु भान ॥
योगीवपु नहिं छाँड़िये, राज होय फिरि आन ॥

राजपाय हरि भक्तिकर, पूरबली पहिंचान ॥
योग युक्ति पावै वहुरि, दूसर मुक्ति निदान ॥
उतरायण सूरज लखै, शुक्लपक्षके माहिं ॥
योगी काया त्यागिये, यामें संशय नाहिं ॥
मुक्ति होय वहुरै नहीं, जीव खोज मिटिजाय॥
वुन्द समुन्दर मिलि रहै, दुतिया ना ठहराय ॥
दक्षिणायन सूरज रहै, रहै मास षट जानि ॥
फिरिउतरायणजायकरि, रहै मास षट मानि ॥
दोनों स्वरको शुद्ध करि, श्वासामें मन राखि ॥
भेद स्वरोदय पायकरि, तव काहू सों भाखि ॥
जो रण ऊपर जाइये, दहिने स्वर परकाश ॥
जीति होय हारै नहीं, करै शत्रुको नाश ॥
दुर्जनको स्वर दाहिनो, तेरो दहिनो होय ॥
जो कोई पहिले चढ़ै, खेत जीति है सोय ॥
सुषमन चलतन चाहिये, युद्ध करनको मीत ॥
शीश कटावैके फँसै, दुर्जन होवै जीत ॥
जो बायें पृथ्वी चलै, चढ़ि आवै कोइ भूप ॥
आप वैठि दल पेलिये, बात कहत हौं गूप ॥
जल पृथ्वी स्वरमें चलै, सुनै कान दै बीर ॥
सुफलकाज दोनों करै, कै धरती कै नीर ॥
पावक अरु आकाशतत, वायु तत्त्व जो होहिं ॥
कछू काज नहिं कीजिये, इनमें वरजौं तोहिं ॥
दहिनो स्वर जब चलतहै, कहीं जाय जो कोय ॥
तीन पाँव आगे धरै, सूरजको दिन होय ॥

वायें स्वरमें जाइये, वायें पग धरि चार ॥
वावों डग पहिले धरै, होय चन्द्रको वार ॥
दहिने स्वरमें जाइये, दहिने डग धरि तीन ॥
वायें स्वरसे चारि डग, वावों कर परवीन ॥
गर्भवतीके गर्भको, जो कोइ पूंछै आय ॥
बाल होय कै बालकी, जीवै कै मरिजाय ॥
परिक्षा बालक होनकी, जो कोउ पूंछै तोहिं ॥
वायें कहिये छोकरी, दहिने बेटा होहिं ॥
दहिने स्वरके चलतही, जो वह पूंछै आय ॥
वाको वावों स्वर चलै, बालकहो मरिजाय ॥
दहिने स्वरके चलतही, जो वह पूंछै वैन ॥
वाहूको दहिना चलै, लरिका हो सुख चैन ॥
वायें स्वरके चलतही, आय कहै जो कोय ॥
बटा ह्वै जीवै नहीं, वाको दहिनो होय ॥
वायें स्वरके चलतही, जो वह पूंछै बात ॥
वाहूको वावों चलै, पुत्रि होय कुशलात ॥
तत अकाशके चलतही, कहै गर्भकी आय ॥
होय नपुंसक हीजड़ा, कै सतवाँसो जाय ॥
लेन परीक्षा गर्भकी, जो कोइ पूंछै आय ॥
अग्नि होय जो तासमै, ओछाही गिरिजाय ॥
क्षण वायें क्षण दाहिने, दो स्वर सुषमन होय ॥
पूंछन वारे सों कहौ, बालक उपजैं दोय ॥
वायु तत्त्वके चलतही, जो कोउ पूंछै आय ॥
छाया हो बाढ़ै नहीं, पेटै माहिं विलाय ॥

जो कोइ पूंछै आयकै, याको गर्भ कि नाहिं ॥
दहिनो वावों स्वरलखै, साधि श्वासके माहिं ॥
बन्ध ओर जो आयकरि, है पूंछै जो कोय ॥
बन्ध ओर तौ गर्भ है, बहते स्वर नहिं होय ॥
इड़ा पिंगला सुषमना, नाड़ी कहिये तीन ॥
सूरज चन्द विचारिकै, रहै श्वास लवलीन ॥
जैसेकछुआसिमिटिकरि, आपी माहिं समाय ॥
ऐसे ज्ञानी श्वासमें, रहै सुरति लवलाय ॥
श्वास बाण बैकोड़की, आव जान नरलोय ॥
बीतजाय श्वासा जबै, तबहीं मृत्युके होय ॥
इकइस सहस छसै चलै, रात दिना जो श्वास ॥
बीसा सौ जीवै बरप, होय अवनको नास ॥
अकाल मृत्यु कोई मरै, होय करि भुक्ति भूत ॥
श्वास जहां बीतै सभी, जब आवै यमदूत ॥
चारौं संयम साधिकरि, श्वासा युक्ति चलाय ॥
अकाल मृत्यु आवै नहीं, जीवै पूरी आय ॥
सूक्षम भोजन कीजिये, रहिये ना पड़ि सोय ॥
जल थोरो सो पीजिये, बहुत बोल मत खोय ॥

कुण्डलिया ।

मोक्षमुक्तितुमसोचहतहौ, तजौ कामना काम ॥
मनकी इच्छा मेटिकरि, भजो निरञ्जन नाम ॥
भजो निरञ्जन नाम, तत्त्वदेहअभ्यासमिटावो ॥
पञ्चनके तजि स्वाद, आप में आप समावो ॥

जब छूटै झूठी देह, जैसे के तैसे रहिया ॥
चरणदास यहि मुक्ति, गुरूने हमसों कहिया ॥
दोहा—देह मरै तू है अमर, पारब्रह्म है सोय ॥
अज्ञानी भटकत फिरैं, लखै सो ज्ञानी होय ॥
देह नहीं तू ब्रह्म है, अविनासी विर्वान ॥
नित न्यारो तू देहसों, देह कर्म सब जान ॥
डोलन बोलन सो बनो, भक्षण करन अहार ॥
दुखसुख मैथुनरोगसव, गरमी शीत निहार ॥
जाति वरण कुल देहकी, सूरति मूरति नाम ॥
उपजै विनशै देहसो, पांच तत्त्व को गाम ॥
पावक पानी वायुहै, धरती और अकास ॥
पांच तत्त्वके कोटमें, आय कियो तैं वास ॥
पांच पचीसो देह सँग, गुण तीनों हैं साथ ॥
घट उपाधि सों जानिये, करत रहैं उतपात ॥
जिह्वा इन्द्री नीरकी, नभकी इन्द्री कान ॥
नासा इन्द्री धरणिकी, करि विचार पहिंचान॥
त्वचा सुइन्द्री वायुकी, पावक इन्द्री नैन ॥
इनको साधै साधु जो, पद पावै सुख चैन ॥
निद्रा संगम आलकस, भूख प्यास जो होय ॥
चरणदास पाचौं कही, अग्नि तत्त्व सों जोय॥
रक्त बिन्दु कफ तीसरो, मेद मूत्रको ज़ान ॥
चरणदास पराकिरत ये, पानी सों पहिंचान ॥
चाम हाड़ नाड़ी कहूं, रोम जान अरु मास ॥
पृथ्वीकी पराकिरति ये, अन्त सबन को नास ॥

बल करना अरु धावना, उठना अरु संकोच ॥
देह बढ़ै सो जानिये, वायु तत्त्व है शोच ॥
काम क्रोध मोह लोभ भै, तत अकाश को भाग ॥
नभकी पांचौ जानिये, नित न्यारो जू जाग ॥
पांच पचीसो एकही, इनके सकल स्वभाव ॥
निर्विकार तू ब्रह्महै, आप आपको पाव ॥
निराकार निर्लिप्त तू, देही जान अकार ॥
आपनि देही मान मत, यही ज्ञान ततसार ॥
शस्तर छेदिसकै नहीं, पावक सकै न जारि ॥
मरै मिटै सोतू नहीं, गुरुगम भेद निहारि ॥
जलै कटै काया यही, बनै मिटै फिरि होय ॥
जीवऽविनाशी नित्य है, जानै विरला कोय ॥
आँख नाक जिह्वा कहूं, त्वचा जान अरु कान ॥
पांचौ इन्द्री ज्ञानये, जानै जान सुजान ॥
गुदा लिंग मुख तीसरो, हाथ पाँव लखि लेह ॥
पांचौ इन्द्री कर्म हैं, यह भी कहिये देह ॥
पृथ्वी काल जे ठौर है, मुखै जानिये द्वार ॥
पीलो रँग पहिचानिये, पीवन खान अहार ॥
पित्ते में पावक रहै, नैन जानिये द्वार ॥
लालरंग है अग्नि को, मोह लोभ आहार ॥
जलको वासा भाल है, लिंग जानिये द्वार ॥
मैथुन कर्म अहार है, धौलो रंग निहार ॥
पवन नाभिमें रहतहै, नासा जानि दुआर ॥
हरो रंगहै वायुको, गन्ध सुगन्ध अहार ॥

अकाश शीश में वासहै, श्रवण दुआरो जान ॥
शब्द कुशब्द अहारहै, ताको श्याम पिछान ॥
कारण सूक्षम लिंगहै, अरु कहियत अस्थूल ॥
शरीर तीनसों जानिये, मैं मेरी जड़ मूल ॥
चितबुधिमनअहँकारजो, अन्तःकरण सुधार ॥
ज्ञान अग्निसों जारिये, करि करि मीत विचार ॥
शब्द स्पर्शरुगन्ध है, अरु कहियत रस रूप ॥
देह कर्म्म तनमात्रा, तू कहियत निहरूप ॥
निराकार अद्वै अचल, निरवासी तू जीव ॥
निरालम्ब निर्वैरसो, अज अविनाशी सीव ॥
बाएँ कोठा अग्निको, दहिने जल परकास ॥
मन हिरदय अस्थानहै, पवन नाभिमें वास ॥
मूल कमलदल चारको, लाल पैंखरी रंग ॥
गौरीसुत वासो कियो, छस्यै जाप इकंग ॥
षट्दलकमलपियरे वरण, नाभी तल संभाल ॥
षट् सहस्र जपि जापले, ब्रह्म सावित्री नाल ॥
दश पैंखरी कमलहै, नील वरण सो नाभ ॥
विष्णूलक्ष्मीवास कियो, षट् सहस्र पर जाप ॥
अनहद चक्र हृदय रहै, द्वादश दल अरु श्वेत ॥
षट् सहस्र जपि जापले, शिव शक्ती तहँ हेत ॥
षोडशदलको कमल है, कण्ठ वास शशिरूप ॥
जाप सहस्र जहां जपै, भेद लहै अति गूप ॥
अग्नि चक्र दोदल कमल, त्रिकुटी धाम अनूप ॥
जाप सहस्र जहां जपै, पावै ज्योति स्वरूप ॥

दल हजारको कमल है, नभ मण्डल में वास ॥
जाप सहस्र जहां जपै, तेज पुंज परकास ॥
योग युक्तिकरि खोजिले, सुरत निरत करचीन ॥
दशप्रकार अनहद वजै, होय जहां लवलीन ॥

कुण्डलिया।

एक भँवर गुंजारसी, दूजै घुँघुरू होय ॥
तीजे शब्द जु शंखका, चौथे घण्टा सोय ॥
चौथे घण्टा सोय, पांचवें ताल जु बाजै ॥
छठे सुमुरली नाद, सातवें भेरि जुगाजै ॥
अठवें शब्द मृदंगका, नाद नफीरी नोय ॥
दशवें गरजनि सिंहसी, चरणदास सुनिलोय ॥

दोहा—दशप्रकार अनहद घुरै, जित योगी होयलीन ॥
इन्द्री थकि मनुआँ थके, चरणदास कहि दीन ॥
तीन वन्ध नौनाटिका, दशवाई को जान ॥
प्राण अपान समान है, अरु कहिदेत उदान ॥
व्यान वायु अरु किरकिरा, कूरम वाई जीत ॥
नाग धनंजय देवदत, दश वाई रणजीत ॥
नवों द्वारको वन्ध करि, उत्तम नाड़ी तीन ॥
इड़ा पिंगला सुषमना, केलिकरैं परवीन ॥
करते प्राणायाम के, तरि गये पतित अनेक ॥
अनहद ध्वनिके वीचमें, देखै शब्द अलेख ॥
पूरक करि कुम्भक करै, रेचक पवन उतार ॥
ऐसे प्राणायाम करि, सूक्ष्म करै आहार ॥
धरती वन्ध लगायकै, दशौ वन्ध को रोक ॥

मस्तक प्राण चढ़ायकरि, करै अमरपुर भोग ॥
पांचो मुद्रा साधि करि, पावै घट को भेद ॥
नाड़ी शक्ति चढ़ाइये, षट चक्रको छेद ॥
योग युक्ति कै कीजिये, कै अजपा को ध्यान ॥
आपा आप विचारिये, परम तत्त्वको ज्ञान ॥
शूद्ररु वैश्य शरीर है, ब्राह्मण औ रजपूत ॥
बूढ़ा बाला तू नहीं, चरणदास अवधूत ॥
काया माया जानिये, जीव ब्रह्म है मित्त ॥
काया छुटि सूरत मिटै, तू परमातम नित्त ॥
पाप पुण्य आशा तजौ, तजौ मान अरु थाप ॥
काया मोह विकार तजि, जपै सु अजपा जाप ॥
आप भुलानो आपमें, बँधो आपही आप ॥
जाको ढूँढ़त फिरत है, सो तू आपहि आप ॥
इच्छा देइ विसारिकै, होय क्यों न निर्वास ॥
तूतौ जीवन्मुक्त है, तजो मुक्तिकी आस ॥
पवन भई आकाश सों, अग्नि वायु सों होय ॥
पावक सों पानी भयो, पानी धरती सोय ॥
धरती मीठे स्वाद है, खारी स्वाद सुनीर ॥
अग्नि चरफरो स्वादहै, खट्टो स्वाद समीर ॥
खट्टा मीठा चरफरा, खारी पर मन होय ॥
जबहीं तत्त्व विचारिये, पांच तत्त्वमें कोय ॥
स्वाद नाय अरु रंग है, और बताई चाल ॥
पांच तत्त्वकी परख यह, साधि पाव ततकाल ॥
तिरकोनी पावक चलै, धरती तौ चौकोन ॥

शून्यस्वभावअकाशको, पानी लांबो गोल ॥
अग्नि तत्त्व गुण तामसी, कहो रजोगुण वाय ॥
पृथ्वी नीर सतोगुणी, नभहै अस्थिर भाय ॥
नीर चले जब श्वासमें, रण ऊपर चढ़िमीत ॥
वैरीको शिर काटकरि, घर आवै रणजीत ॥
पृथ्वीके परकासमें, युद्ध करै जो कोय ॥
दोउ दल रहैं बगबगी, हारि वायुमें होय ॥
अग्नि तत्त्वके बहतही, युद्ध करन मति जाव ॥
हारिहोय जीतै नहीं, अरु आवै तनघाव ॥
तत अकाशमें जो चलै, तौ हाई रहिजाय ॥
रणमाहीं कायाछुटै, घरनाहिं देखै आय ॥
जल पृथ्वीके योगमें, गर्भ रहै सो पूत ॥
वायु तत्त्वमें छोकरी, आँबर मृतक सूत ॥
पृथ्वी तत्त्वमें गर्भ जो, बालक होवै भूप ॥
धनवन्ता सोइ जानिये, सुन्दर होय स्वरूप ॥
अग्नि तत्त्वजब चलत है, कभी गर्भ रहिजाय ॥
गर्भ गिरै माता दुखी, हो माता मरिजाय ॥
वायु तत्त्व स्वर दाहिने, करै पुरुप जब भोग ॥
गर्भ रहै जो तासमें, देही आवै रोग ॥
आसनसंयमसाधिकरि, दृष्टि श्वासके माहिं ॥
तत्त्वभेद यों पाइये, बिन साधे कुछ नाहिं ॥
आसन पद्म लगायकै, एक वस्त नित साध ॥
बैठे लेटे डोलते, श्वासाही आराध ॥
नाभिनासिकामाहिंकरि, सोहं सोहं जाप ॥

सोई अजपा जाप है, छुटै पुण्य अरु पाप ॥
भेद स्वरोदय बहुत है, सूक्षम कह्यो बनाय ॥
ताकोसमझि विचारिले, अपनो चित मनलाय ॥
धरणि टरै गिरिवर टरै, ध्रूव टरै सुन मीत ॥
वचन स्वरोदय ना टरै, कहै दास रणजीत ॥
शुकदेवगुरुकी दयासों, साधु दयासों जान ॥
चरणदास रणजीतने, कह्यो स्वरोदय ज्ञान ॥

छप्पै ।

डहरे में मेरो जनम नाम रणजीत पिछानो ॥
मुरली को सुत जान जात दूसरि पहिंचानो ॥
बाल अवस्था माहिं बहुरि दिल्लीमें आयो ॥
रमत मिले शुकदेव नाम चरणदास बतायो ॥
योगयुक्तिहरिभक्तिकरि ब्रह्मज्ञानदृढ़करिगह्यो ॥
आतमतत्त्वविचारिकै अजपा में संनिमन रह्यो ॥

इति श्रीस्वामीचरणदासजीकृतज्ञानस्वरोदयसंपूर्णम् ।

श्रीहंसावताराय नमः ।

श्रीस्वामिचरणदासकृतपंचउपनिषद्

अथ अथर्वणवेदीय हंसनादप्रारंभः ।

(उपनिषद्-भाषा.)

दोहा—वन्दन श्रीशुकदेव को, उन को हिय में लाय ॥
छिप्योभेद परगटकियो, परमारथके दाय ॥
सहंसकृत भाषा करी, ताको यह दृष्टान्त ॥
खोलि खोलि सबही कही, समझे छूटै भ्रान्त ॥
ज्यों कूये सों नीर लै, बाहर दियो भराय ॥
विना यतन कोई पियो, तिरषावन्त अघाय ॥
पौदीन्ही शुकदेवने, मैं जल काढ़नहार ॥
प्यासा कोइ न जाइयो, टेरों वारम्वार ॥
ब्राह्मण क्षत्री वैश्य जो, अरु शूद्रहु जो होय ॥
वह पीवैगा हेत करि, बहु प्यासा जो कोय ॥
मुक्तिनीरकी प्यास जो, काहूहीको होय ॥

और मनुष जग प्यासमें, रहे ज्ञु मृत्युक होय ॥
यह जग ऐसो जानिये, मृगतृष्णाको नीर ॥
निकट जाय प्यासा कोई, कभी न भागै पीर ॥
उनकी प्यास बुझै नहीं, होय नहीं हिय चैन ॥
ज्ञान सुधा तजि जातहै, धोखेको जल लैन ॥
ज्ञान नीर तिरपत भये, निश्चल बैठे दास ॥
संसारी प्यासे गये, पूरी भई न आस ॥
सहंसकृत या कूपसम, भाषा नीर निकास ॥
प्याऊं जिज्ञासूनको, तिनकी भगै पियास ॥

अष्टपदी ।

वेदहीकी उपनिषद जुमैं भाषाकरी । जो कुछ था वहि माहिं सोई जैसे धरी ॥ सुनि समझै मन माहिं और करनी करै । आवागमन मिटजाय नहीं देही धरै ॥ जगकी बाधा छूटि मुक्ति पदपावई । जाग्रत पहुँचे ठौर स्वप्न बिसरावई ॥ तिमिर सभी भजिजाय उजारा होयहै । सूझै आतमरूप द्वैतता खोयहै ॥ उपजै अतिआनन्द द्वन्द्व दुखजायहै । तिरपति निर्मलज्ञान विज्ञान अघायहै ॥ जोपै करै विचार और गुरुसों लहै । वाकी गहनीगहै और रहनीरहै ॥ गुरु शुकदेव प्रताप सो चितते गाइया । चरणनदासा होय सबनशिर नाइया ॥ ११ ॥

दोहा—पूजे ऋषि मुनि देवता, पूजे इन्द्रहु भूप ॥
पूजा सबही सृष्टिको, देखा हरिके रूप ॥
सर्वत्रहि प्रभु देखिकरि, सबको शीश नवाय ॥
उपनिषदें जो वेदकी, परगट कहीं बनाय ॥

अष्टपदी।

प्रथम प्रगट करि दई छिपेही भेदकी। हंसनाद अहि नाम अथर्वणवेदकी॥ गौतम ऋषिकरि चाव ऋषीश्वरपै गये। संत सुजानजु नाम वहुत आदरकिये॥ गौतम स्तुतिकरी वहुतही प्रीतिसों। फिरि पूंछी यह बातजु लघुता रीतिसों॥ परमेश्वर पहिंचान मोहिं समुझाइये। मुक्तहोनके पन्थ सवै जु दिखाइये॥ ह्वैकर वहुत प्रसन्न ऋषीश्वर वोलिया। गौरा अरु महदेवकी चरचा खोलिया॥ सव देवनके देव महादेवहैं सही। उपनिषदैं जो वेद कि गौरासों कही॥ सो मैं तुमसों कहौं प्रीतिके भावसों। तुमहूं नीके सुनौ अधिकही चावसों॥ गुप्त महा यह भेद हियेमें राखिये। जो जड़ मूरख होय तासु नहिं भाखिये॥

दोहा—हरिभक्ता अरु गुरुमुखी, तप करनेकी आस॥
सत्संगी सांचायती, तो देहु चरणदास॥

अष्टपदी।

अव मैं कहौं सँभाल सुरतह्यां दीजिये। यह तौ अचरज कथा श्रवण सुनि लीजिये॥ वही श्वास कहि हंस आय अरु जाय है। पूरा सतगुरु मिलै तौ भेद लखायहै॥ जो कोउ याको समझिकरै अरु ध्यानहीं। ऋद्धि सिद्धि सुख होंहिं जु उपजै ज्ञानहीं॥ अन्त मुक्तिही होय अभैपदमें रहै। वहुरो जन्म न होय परम आनँदलहै॥ अव मैं वरणौं हंस और परमहंसही। जो समझै ह्वै ब्रह्म जाय सव संशही॥ हंस हंस जो मन्त्र अर्थ पहिंचानिये। वह मैं हूं यों कहै निश्चय करि जानिये॥ यह मंतर सव माहिं सदाही भरि रह्यो। कोटिन-

में कोइ जानि धान सोइ धरि रह्यो ॥ जैसे काठमें आगि तिलेंमें तेलहै । तैसे सब घटमाहिं इसीका मेल है ॥

दोहा—दूध मध्यज्यों घी वहै, मेहँदी माहीं रंग ॥
यतन विना निकसै नहीं, चरणदास सो ढंग ॥
जो जानै या भेदको, और करै परवेश ॥
सो अविनाशी होतहै, छूटै सकल कलेश ॥

अष्टपदी ।

तन मथनेको यतन कहूं अब जानिये । ज्यों निकसै ततसार बिलावन ठानिये ॥ पहिले चक्कर[1] जानि मूल द्वारे विषे । जितही पावँकी एँड़ीसूं वन्ध देरखे ॥ मूल चक्रसों खैंचि अपान चलाइये । दूजे[2] चक्कर पासजु आनि फिराइये ॥ दहिनी ओरसों तीनि लपेटे दीजिये । तीजे[3] चक्कर माहिं गमन फिरि कीजिये ॥ चौथे[4] चक्कर माहिं पवन जो लाइये । बहुरौ पँचवे[5] चक्रमें जू पहुँचाइये ॥ छटवें[6] चक्कर माहिं जु ताहि चढ़ाइये । सो त्रिकुटीके मध्य तहां ठहराइये ॥ रोंकै त्रिकुटी माहिं आनिके वायुको । षटचक्करको छेदिचढ़ै जब धायको ॥ अपान वायु चढ़िजाय वही अस्थान है । प्राणवायु ह्वै जाय साधु कोइ जानहै ॥ रोंकै प्राणहिं वाय त्रिकुटी मध्यही । ओंकार करै ध्यान शीशमें गध्यही ॥ यह तौ ऊंचा ध्यान जु अधिक अनूपही । चरणहिं दासा होय जु ब्रह्मस्वरूपही ॥

दोहा—नाम ब्रह्मका है नहीं, है तो वह ओंकार ॥
जानै आपनको वही, मैं हौं तत्त्व अपार ॥

---

१ मूलाधारचक्र । २ स्वाधिष्ठान । ३ मणिपूरक । ४ अनाहत । ५ विशुद्ध । ६ सहस्त्रदल पद्म ।

अष्टपदी।

अनहद शब्द अपार दूरसों दूर है। चेतन निर्मल शुद्धदेह भरपूरहै ॥ ताहि निअक्षर जान और निष्कर्म है। परमातम तेहि मानि वही परब्रह्म है ॥ हृदय कमलके माहिं ध्यान सोहं- करै। वाहिको अजपा जान सुरति मन लै धरै ॥ विनाहिं जपे जप होय सुसाँची बातही। सहस इकीस अरु छस्सै जहां दिनरातही ॥ याको कीजे ध्यान होतहै ब्रह्महो। धारै तेज अपार जाहि सब भर्मही ॥ वा पटतर कोइ नाहिं जु योंही जानिये। चन्द सूर्य अरु सृष्टिके माहिं पिछानिये ॥ सो वह तेज अपार आपको मानिये। निश्चय अरु वहि साँच जु मनमें आनिये ॥ जबलग वाही भेद जो जानाथा नहीं। जीवातम अरु हंस होरहाथा तहीं ॥ जभी अगोचर भेद जु मनमाहीं लहा। परमातम परमहंसरूप निश्चय भया ॥

दोहा—जो जीवातम सो भया, परमातम अरु ब्रह्म ॥
वाकी सरवरिको करै, पाई परै न गम्य ॥
पहुँचै ना वा तेजको, कोटि कोटिही भान ॥
चरणदास कोइ जानहिं, ताको निर्मलज्ञान ॥

अष्टपदी।

परम ज्योतिको प्रापत सो नर होतहै। जिनमन जीता होय लगाया गोतहै ॥ जिनमन जीतानाहिं विषय आशावहै। हृदय कमलदल आठ हुई फिरतार है ॥ अष्ट पैंखरी जान जु आठौ अंगही। वही दिशाहैं आठ करै मनभंगही ॥ पँखरी पूरब दिशा जवै मनजात है। तब इच्छा हिय पुण्य करनकी आत है ॥ अग्नेय दिशा है पैखरी जब जावै

मना । ऊंव नींद अरु आलस जित अवैघना ॥ दक्षिणहिंजु दिशा पैंखरी परमन राजई । उपजै वहुत किरोध कठोरता साजई ॥ दिशाजु नैर्ऋत पैंखरी पैमन रंगही । पापकरनकी उपजै हिये तरंगही ॥ पश्चिमदिशा जु पैंखरी पैमन आरहै । होय-खुशी परफुल्ल जु लीलाको चहै ॥

दोहा—वायव दिशा जु पैंखरी, जव मन पहुँचै जाय ॥
हलन चलन उपजै हिये, वैठे देहि उठाय ॥

मनकी गति-(अष्टपंखुरीकमलपर.)

अष्टपदी ॥ उत्तरदिशा जु पैंखरी पैमनआवई । मैथुनकर-नकि चाहहिये उपजावई ॥ ईशानदिशा पैंखरी परमन आवै जभी । दान करनकी चाह अधिक उपजै तभी ॥ हृदयकम-लके बीच जवै मन जारहै । उपजे त्याग वैराग तजन जगको कहै ॥ हृदयकमलको छेदि वाहर मन फिरतही । आंसेपांसे जानि होय जाग्रतही ॥ हृदयकमलके घेरके मध्यम जातही । जव आवते है स्वप्नजहां वहु भाँतिही ॥ धान वरावर छेदि तहां मनजातहै । होहिं सवै गुण लीन सुषुप्ति आतहै ॥ हृदयकमलको छोंड़ि होय जवन्यारही । तुरियामें मनजात जु तत्त्व अपारही ॥ यों जीवातम जानजु अनहदलीनहो । सो परमातमहोय जीवता जायखो ॥

दोहा—अजपाही के जापको, सिद्ध भयो जवजान ॥
पहुँचै या अस्थानहीं, रहै न दूजा ज्ञान ॥
यह जो सव कुछ मैं कहो, हिरदै जानाजाय ॥
ताहीको पहिचानिये, चरणदास चितलाय ॥

दशप्रकार अनाहतशब्द ।

अष्टपदी ॥ कैसे अनहद उठैहिये अस्थानसों । यह जीवातमसुनै हृदय बल ध्यानसों ॥ दशप्रकारके नादकहूं भिन्न भिन्नही । सो उपनिषदहि माहिं कहे सब चिह्नही ॥ पहली ऐसे होय चिड़िया ज्यों चीकला । एकबार कहै चिह्नसुनौ सोईसुरंतला ॥ ऐसही दोबारजु दूजी जानिये । चिह्न चिह्नही होत ताहि पहिचानिये ॥ क्षुद्रघंटिका तीसरि चौथी शंखज्यों । पंचम एसी जान बजतहै बीनत्यों ॥ छटीं बजै ज्योंताल सातवीं बाँसुरी । अठवें शब्द मृदङ्गलगै मनगाँसुरी ॥ नवें नफीरी नादजु दशवें सिद्धिहै । बादर कीसी गरज दहु दंहंदहै ॥ करतेमें अभ्यास जुनादैं सबखुलैं ॥ जैसेबटाऊ चलतनगर नौमग मिलैं ॥ दशवें पहुँचै जाय नवें बिसराइया । रहन किया बादेश जहां घर छाइया ॥ ऐसेही नौछोंड़ नाद दशवाँ गहै । बादलकीसीगर्जै जहां मन देरहै ॥ वाको छोड़ै नाहिं सदारहै लीनहीं । यही जुअनहदसार जानिपरबीनहीं ॥ याको प्रापतकहूं जो मनमें आनियो । गौरासों शिव कह्यो साँच करि जानियो ॥

दोहा—चरणदासनें अब कही, जुदी जुदी दशनाद ॥
वही परापत को लहै, जो कोइ साधै साध ॥

अनहदनादकी परीक्षा ।

अष्टपदी ॥ पहिलि परीक्षा जानजु अनहद नादकी । सबै रोमावलि उठै जु वाके गातकी ॥ अरु दूजी जब सुनै नाद चितलावई । सब तन अंगन माहिं आलकस छावई ॥ तीजी अनहद नाद सुनै जितही जुटै । सब अङ्गन हियमाहिं प्रेम

पीड़ा उठै ॥ चौथि सुनै जवनाद परीक्षा पावई । तव शिर घूमनलगै अमल ज्यों खावई ॥ पँचवीं उठै जो नाद सुनै तामें पगै । वाके शीश सों जानि अमी उतरन लगै ॥ छठीं उठै जब नाद सुरति वामें धरै । कण्ठसों नीचे उतरि अमी पीवनकरै ॥ सतवीं खुलै जो नादविना श्रवणन सुनै । अन्तर्य्यामी होय लखै सवके मनै ॥ दूर दूरके वचन सुनै कोई कहै । होय परेकी दृष्टि छिप्यो कछुनारहै ॥ अठवें परीक्षा जानि परापत जो वनै । सवमाहीं सव ठौर नाद अनहद सुनै ॥ है सवहीके मांझ वैन समझै सुनै । यह समझै अरु सुनै ताहि नीकेगुनै ॥

दोहा—खुलै नवीं जव नादही, लक्षण यह पहिंचान ॥
सूक्ष्महोयजिततितगमन, करै धरै जो ध्यान ॥
काहू हीकी दृष्टिसों, चहै अगोचर होन ॥
होय सकै दीखै नहीं, वह सव देखै जौन ॥
जैसे सुर सवको लखैं, उन्हैं न देखै कोय ॥
रणजित कहै अस्थूलहो, चाहै सूक्षम होय ॥

अष्टपदी ॥ दशवीं खुलै जो नाद परे सोहंपरे । पारब्रह्म होइ जाय ध्यान ताको करे ॥ ध्यानीको मन लीन होय अनहद सुनै । आप अनाहद होय वासना सव भुनै ॥ पाप पुण्य छुटिजाय दोऊफल ना रहैं । होय परमकल्याण जुत्रैगुण नाग हैं ॥ होवै वोध स्वरूप तेज ह्वैजातहै । अटकरहै नहिंकोय सवैठां समात है ॥ अज अविनाशी शुद्ध पवित्तर सत्तही । होवै आनँदरूप परम जो तत्रही ॥ निर्विकार निर्लेप और निर्वानहीं । आनँद सवको देत आप को जानहीं ॥

या ध्यानी को नाम जु ॐ कार है । सब नामन में बड़ा-
किया जु विचार है ॥ याको ऐसे मानै कि वह जो मैहीं हूं ।
रूपनाम गुणजान कि यह सब वाहीसूं ॥

दोहा—करतै अनहद ध्यानही, ब्रह्मरूप ह्वै जाय ॥
चरणदास यो कहतहै, बाधा सब मिटिजाय ॥

इति अथर्वणवेदीय हंसनादोपनिषद् भाषा सम्पूर्णम् ।

अथ द्वितीय सर्वोपनिषद्प्रारम्भः ।

दोहा—दूसरि जो उपनिषद है, ताको कहौं बनाय ॥
सर्व नाम तिहि जानिये, ताहि देहुँ प्रकटाय ॥

अष्टपदी ॥ परजापति के शिष्य जो पूंछो आयकै । बन्ध-मुक्तिका भेद देहु समुझायकै ॥ काहि कहत हैं बन्ध मोक्ष कासों कहैं । विद्याऽविद्या भेद कहौ कैसे लहैं ॥ जाग्रत स्वप्न सुषुप्ति मोहिं बतलाइये । अरु तुरिया को भेद सभी जु समाइये ॥ कोठे पांचको[1] भेद गुरू वर्णनकरो । जुदाजुदा समझाय तिमिर दुविधा हरो ॥ पहिलै[2] अन्नसों भरा दुजो[3] भरा प्रानसों । तीजो[4] मन सों भरा चौथै[5] बुधि ज्ञानिसों ॥ पँचवाँ[6] आनँद भरा मोहिं कहि दीजिये । हौं तो चरणहिदास कृपा जो कीजिये ॥ आतमको जो कर्ता कैसे कैकहैं । किन अनर्थ सों जीव जु याही कोठ हैं ॥ अरु कहैं याको देहका जाननहार है । देहको साक्षी कहै सो कौन विचार है ॥

---

१ पांचकोष । २ अन्नमयकोष । ३ प्राणमयकोष । ४ मनोमयकोष । ५ ज्ञानमयकोष । ६ आनन्दमयकोष ।

दोहा—ऐसो यह बन्धन बँधो, कहैं तज्ञ निर्बन्ध ॥
अन्तर्यामी क्यों कहैं, मोंहिं बतावो सन्ध ॥
आतमहींको क्यों कहैं, जीव आतमा मान ॥
माया यासों कहत हैं, दूरिकरो अज्ञान ॥

अष्टपदी ॥ परजापति सब सुनिकै यह उत्तर दिया । आतमहींका ज्ञान सभी परगट किया ॥ जीव आतमा देह मानिकै मैं कहैं । ताते परो अज्ञान सबै दुख सुखसहैं ॥ आपको लम्बा जान कि ठिंगना जानई। कबहूं दुबला जान कि मोटा मानई॥ आपको जानै वृद्ध कि बालक तरुण है । जानत नारी पुरुषजु मानत बरन है ॥ देह संगह्वै देहकरै जु विहार है । आपनको गयो भूलिरहै न विचार है ॥ वाको बन्धन यही सुनो चितमें धरो। देहभाव छुटिजाय मुक्ति निश्चय करो ॥ जाही वस्तुसों उपजै तन अभिमान है । वही अविद्या जान वही अज्ञान है ॥ यही भरम उठिजाय जिसीजु विचारसों । वाही विद्या जानि वहीको ज्ञानहूं ॥

दोहा—चौदहै[1] इन्द्री देवता मिलि, जो करै व्योहार ॥
चरणदास यों कहत है, जाग्रत यही निहार॥
जीव जु अन्तःकरण के, चारौ देवत संग ॥
सूक्षम देही साथहीं, देखै स्वपना रंग ॥
चौदहही सब लीनह्वै, जीव आतमामाहिं॥
यही सुखोपति जानिये, कछुभी सूझै नाहिं ॥

---

१ पांच कर्मेन्द्री, पांच ज्ञानेन्द्री, चार अन्तःकरण यही चौदह इन्द्री और इनके देवता ।

अष्टपदी ।

तीन[1] अवस्था मिटैं मिटैऽहंकार है। तुरियाही रहिजाय जु तत्त्व अपार है ॥ परमातम जो पुरुप सदा निर्लेपहै। केवल ज्ञान स्वरूप जु ब्रह्म अभेव है ॥

पंचकोषवर्णन ।

अब कोठौंकी बातकहूं चित दीजिये । जुदा जुदा विस्तार सबै सुनिलीजिये ॥ पहला कोठा कहूं अन्नसेती भरो। छह कोठे तेहिमाहिं सोई श्रवणन धरो ॥ तीन पिताकी ओर सो लाया संगही । वीरजमींगी हाड़ सफ़ेदजु रंगही ॥ अब माताके अंश तीनिहीं जानिये। लोह त्वचा अरु मांस अरुण पहिंचानिये ॥ प्रानसे कोठाभरा दशौं जहां वायु है। अगलेभी छः कहे जु रहे समाय है ॥ तीजा कोठा जानि धरो तहँ शुद्धिही। मन चित अरु अहंकार भरीजहँ बुद्धिही ॥ चौथा कोठा देख इन्हींका जानना । तामें भरोहै ज्ञान सभीको पिछानना ॥ पँचवाँ कोठा जानि जो आनँदसों भरा। जैसे सगरो वृक्ष बीजमाहीं धरा ॥

दोहा—चारौ कोठे जो कहे, अरु कारणको देखि ॥
जहाँ सभी ये रहत हैं, वा ठौरीको पेखि ॥
वा ठौरीको जानिये, ज्यों तरुवरको बीज ॥
डाल पात फल फूलही, रहै जुवाके बीच ॥
ऐसे वाको समझिकै, रहै जु आनँद आहिं ॥
आनँदही आनँद भरा, पँचवें कोठे माहिं ॥

अष्टपदी ॥ आतम करता जानु जु जामें बुधिर है। दुखसुख वाहीं माहिं सभी आशाग है ॥ इच्छा पूरी भये होतमन मोद है।

१ जाग्रत, स्वप्न, सुषुप्ति ।

जब पूरी नाहिं होय घना दुख होत है ॥ दुखसुख दोनों होत जो पंचमके विषे । सोवे इन्द्री जान विना इनके कसे ॥ सरवन सों सुनि शब्द बुराभलको यही । और त्वचासों जान स्पर्श कि होयही ॥ आँखनसों लखिहोय सुरूपकुरूपसों । अरु जिह्वा सों होय जु षटरस स्वादसों ॥ नासासेती होय बुरीभलि गंधले । इनसे उतपति होय जु दुखसुख भै अभै ॥ आतमको जीवातम इसकारण कहैं । सूक्षम अरु अस्थूल देह सँगही रहै ॥ बुरेभले जो करमनके फलमें बँधा । बीचहि लिया लगाय नहीं धुरसों फँधा ॥ ज्यों कञ्चनके संग जुटाँका जानिये । धौले वस्तर साथ जु मैल पिछानिये ॥ सोधेसे हैदूर शुद्ध ह्वै जात है । अपनेहिं अङ्गन आप जुश्वेत दिखात है ॥ जीवातम इहि भाँति फलन त्यागन करै । आतमहीं रहिजाय जीवता ना रहै ॥ खोटे कर्मजु त्यागि भले सहजै करै । तिनका फल जो होय नहीं आशा धरै ॥ १२ ॥

दोहा—जीव ब्रह्म यों होत है, रहै न कछू लगाव ॥
चरणदास यों कहत हैं, ऐसा किये उपाव ॥

अष्टपदी ॥ देहको जाननहारा ऐसे मानई । सूक्ष्म अरु अस्थूलको अपनी जानई ॥ कबहुँ कहै ममशीश आँखमुख हाथ है । कभी बतावै पांव कहै मेरागात है ॥ मनबुधि चितऽहङ्कार समझ ये चार हैं । अरु पांचों है वायुजु कोइ निहार है ॥ प्राण अपान व्यान उदान समान हैं । सात्विक राजस तामस तीनौ जानि हैं ॥ वैरप्रीति अरु तीसारि इनकी हूँढ़ है । चौथ मनोरथ तीनिक सब मिलि झुंड है ॥ भले बुरे जो कर्म और मन आनिये । सूक्ष्म शरीरको मूल ये सब

पहिंचानिये ॥ अरु यह सूक्ष्म शरीर आतमा साथ जो । ताते भासत सत्य सत्यहै वातसो ॥ जब आतम पहिंचान हियेमें आवई । तब सूक्षमको साँच सबै उठि जावई ॥

दोहा—सूक्ष्म शरीररु आतमा, भिन्न लखै नाहिं कोय ॥
यही भ्रमनकी गाँठहै, खुले मुक्तिही होय ॥
जानी जाननहारही, और तीसरी जान ॥
इन तीनौको जो लखै, सो साक्षी परधान ॥
उपजें तीनौ द्वैतसों, मिटै एकता होय ॥
उपजन मिटना तीनका, जानै न्यारा सोय ॥
अपनेहीं परकाशमें, आप रहा परकास ॥
सोई साक्षी जानिये, कहै चरणहीं दास ॥
यद्यपि बन्धनमें बँधा, कहै जुनिर्बंध दूर ॥
चींटी ब्रह्मा आदिलौं, हिरदयमें भरपूर ॥
सबही हिरदयके मिटे, वही एक ठहराय ॥
ना कुछ आया ना गया, ज्योंका त्यों रहिजाय ॥
बन्धनमें आवै सही, लीला करन दयाल ॥
निरबँधका निरबंध रहै, अजअविनाशिअकाल॥
अंतर्यामीके अरथ, सब घट रहो समाय ॥
जैसे डोरेके विषे, भाँतिभाँति मणिकाय ॥
सबहीके भीतर बसै, सबका जाननहार ॥
वाहीते परगट भई, नाना वस्तु अपार ॥
घनेरूप किरिया घनी, घनेनाम दृष्टान्त ॥
सूझै ज्ञानप्रकाश सूं, जब गुरु मेटै भ्रान्त ॥
रूपनाम किरिया लगी, जबलग याके साथ ॥

याहीते जी आतमा, कहलावै यह बात ॥
जैसे कञ्चन मृत्तिका, भांड़े किये सँचार ॥
नामरूप किरिया भई, देखो दृष्टि निहार ॥
रूपनाम किरिया मिटै, रहै न कछू विचार ॥
जो था सोई रहगया, परमातम ततसार ॥
आतम अरु जीवातमा, देह धरेसे दोय ॥
ताते बंढ़ो उपाधही, मैंतू तूमैं होय ॥
तत्त्वमसी जो यह कहा, ताको याही अर्थ ॥
वह तूही है जानले, परम तत्त्व है सत्य ॥

अष्टपदी ।

अरु वह ज्ञान स्वरूप अनन्द अनन्त हैं । उपजावन सब सृष्टिको जीवन कन्त है ॥ वस्तुकाल अस्थान तीनौ मिटि जात हैं । वह इकरस सतरूप ब्रह्म रहिजातु है ॥ सबको जाननहार मिटै उपजै नहीं । तासूं कहैं वहि ज्ञान अर्थ जानो तहीं ॥ और कहैं जु अनन्तसो यासूं जानिये । सब भांड़ेमें इक माटी जु पिछानिये ॥ कनकके वर्तन बहुत जु सोना एकिये । सब वसननके माहिं जु सूतहि देखिये ॥ ऐसेहि आदिरु अन्त ब्रह्म सब माहिं है । कहिये याहि अनन्त भेद कछु नाहिं है ॥ अरु जो आनँद कहै समुझ लीजो वही । वाहीको अंश पिछान जु आनँदहो कही ॥ ऐसेही मोहिं समझायो गुरु शुकदेवने ॥ चरणहिंदासा होय लखो या भेवने ॥

ब्रह्मका स्वरूप ।

दोहा—चार पताका ब्रह्मके, सत आनन्द अनन्त ॥
चौथा ज्ञान स्वरूप है, कहैं वेद अरु सन्त ॥

अष्टपदी ।

सर्वस मैं सवठौर जुइकरस नित्त है । तत्त्वमसीके अर्थ वही तू सत्य है ॥ जव तू करिकै ज्ञान होय परब्रह्महीं । आप नहीं कूं पाय जाय सव भर्महीं ॥ मैं तू वह उठिजाय दूसरी वासही । आपकु व्यापक जान ज्यों शुद्ध अकाशही ॥ अरु जानै निर्लेप सत्त अरु एकही । जव परमातम होय रूप नहिं रेखही ॥ माया याते कहैं भरम अरु अन्त है । ज्ञानभये उठि जाय कछू न रहन्त है ॥ ज्यों रसरीको साँप भरमसूं मानिये । राम लखा जव झूठी माया जानिये ॥ सांच सो लागै झूठ झूठ सच जान है । माया यही सुभाव भरम अज्ञान है ॥ रस रीकूं कहैं सर्प्प जु अपने भरमसूं । ऐसेही जड़ कहत सनातन ब्रह्मकूं ॥

दोहा—झूठ जगत दीखत रहै, दीखै ना सतब्रह्म ॥
यही जु माया जानिये, यही तिमिर यहि भर्म ॥
गुरु शुकदेव प्रतापसूं, कही चरणहीं दास ॥
यहजु अथर्वण वेदकी, सर्व उपनिषद भास ॥

इति द्वितीय सर्वोपनिषत्सम्पूर्णम् ।

अथ तृतीय तत्त्वयोगोपनिषद्प्रारम्भः ।

अष्टपदी ।

तीजी अरु जो कहूं अथर्वण वेदकी । तत्त्वयोग जिहि नाम गुपतही भेदकी ॥ अपने शिपसूं कहाजु परजापतिने । योगसारमें कहूं जुपावै तत्त्वने ॥ योगेश्वरकूं लाभ होय जाके

किये। पढ़े पाप भजिजाय सुने राखे हिये ॥ निश्चय होवे मुक्त यही तू जानियो । चौथे पदलहै वास सांच करि मानियो ॥ बड़ा योगेश्वर विष्णु अधिक तपज्ञान है । जाकी मायागद्ध वही परमान है ॥ योगी करिकै योग सुज्योति निहारही । दीपककीसी लोय लखै होय पारही ॥ सो वह विष्णु सरूप सबनके माहिं हैं । घट घटमें भरपूर खाली कोई नाहिं है ॥ ऐसी ज्योति कूं छोड़ि और मन लावई । वैनर भोंदू जान जुकूर कहावई ॥

दोहा—दूध पिया जिन कुचनसूं, उनकूं मल सुख लेत ॥
जन्म खोय खाली चलै, नारिनसूं करि हेत ॥

अष्टपदी ॥ जिस द्वारेसूं निकस जन्म जगमें लिया । ताहीमें परवेश करन फिर मन किया ॥ वही नारिको रूप जु तासूं माकही । लगे भार्य्या कहन जु अपने सँगलई ॥ जाही पुरुष स्वरूपकूं कहते बापही । फिर लगे पुत्तर कहन वाहीकूं आपही ॥ वही पुत्र जो जगतमें पिता कहावई । सोई पुत्तर भया वड़ो अति चावई ॥ जैसे कूपका रहँट लोटरीते भरे । वस्तु एकही जान कभी ऊपर तरे ॥ याही भरम अज्ञानसूं आशाही दहै । बहुलो कनके माहिं सदा भरमत रहै ॥ अब मैं कहूं उपाय जगतसूं ज्यों छुटै । आवागमनका फंद सिता¹वही कटै ॥ जासूं भरमें नाहिं रहै थिर होयकै । पावै निज अस्थान विपति सब खोयकै ॥

ओंकार वर्णन ।

दोहा—ओंकार बड़ नाम है, हिरदै ध्यान करै ॥
शुकदेव कहै चरणदाससूं, सबही व्याधि टरै ॥

---

१ शीघ्रही ।

अष्टपदी ॥ ओंकारके अक्षर कहिये तीन हैं। अकार उकार मकार जानै परवीन हैं ॥ तीनौ अक्षरमाहँ तीनौ हैं थोकही। पहले अक्षरमें ज्ञुरहै भलो कही ॥ दूजे अक्षर बीचजानौ आकाशही। तीजे अक्षर माहिं वैकुंठ निवासही ॥ तीनौ अक्षर माहिं जो तीनौ वेद हैं। ऋग्यजुवेदरु साम तिहूं जो भेद हैं ॥ तीनौ अक्षर माहिं तिहूं जो देव हैं। ब्रह्मा विष्णु महेश तिहूं जो अभेव हैं ॥ तीनप्रकार कि अग्नि तीन अक्षर महीं। एक अग्नि यह जानदिखै प्रत्यक्षहीं ॥ दूजी अग्नि प्रचंड सूर्यकी भासई। तृतिय अग्नि सब माहिं जठर परकासई ॥ तीनौ गुण तिनमाहिं समझ जानो यही। रजगुण सत्वगुण और तमोगुण है सही ॥

दोहा—यह अक्षर ओंकारके, जिनका चौथा भाग ॥
अर्द्धमात्रा बोलिये, ऊपर बिन्दी लाग ॥

अष्टपदी ॥ जो कोउ याकोजपै समझ अरु ध्याय है। ऊपरकही जो वस्तु सबनको पाय है ॥ अक्षर साढ़ेतीन प्रणवके माहिं है। सब वस्तू वामाहिं वाह्य कछु नाहिं है ॥ ऐसे रहत वामाहिं पुहुपमें गंध ज्यों। जैसे तिलमें तेल दूधमें घीवत्यों ॥ जैसे पाहन माहिं जु कनक बताइये। ऐसेही ओंकारमें सबको पाइये ॥ वाहीको किये ध्यान परमपदको लहै। वेदपुराणन माहिं साखयोंही कहै ॥

प्रणवका ध्यान।

अब परणवका ध्यान जुदेहुँ बतायकै। सबहीयाकी सूझ कहूं समझायकै ॥ हिरदयहीके माहिं जुकमल पिछानिये। ऊपरको है नाल नीच मुख जानिये ॥ वाहीके छिद्र बीच रहत मनभूप है। कहैं चरणही दास जु भेद अनूप है ॥

दोहा–अक्षरमें ओंकारके, पहिला है जु अकार ॥
ताहि कहेसों होत है, हिरदा शुद्ध विचार ॥

अष्टपदी ॥ दूजा जपै उकार कमल विकसैं कली । शनै-शनै खुलिजाय बसै तामें अली ॥ तीजा जपै मकार प्रकटहो नादही । सुनि सुनि आनँद होहि जु परम अगाधही ॥ अर्द्ध-मात्रा विन्दु सदा थिर जानिये । हलन चलन कछु नाहिं यही चित आनिये ॥ वामें मनह्वै लीन ज्योति ह्वैजाति है । निर्म्म-लसो अरु शुद्ध विलौरकी भाँति है ॥ सूरजकीसी किरण महाउज्ज्वल वही । जोई करै वह ध्यान पुरुष पावै सही ॥ सवमें ज्योति स्वरूप सकल भरपूर है । निकट निकट सों निकट दूरसों दूर है ॥ जो इसकाही ध्यान हृदय किया जा-पना । तौ करै मस्तक माहिं होय पारायना ॥ शीशमें जब सिद्ध होयरोकै नौ द्वारही । निकसन देवै वायु न काहूवारही ॥

दोहा–दोय पगडी बाँधिये, नीचेके दो द्वार ॥
दोउ अँगूठ हाथके, रोको शरवन वार ॥

अष्टपदी ।

तर्जनि अँगुली दोउ दृगनपर दीजिये । मध्यमसे दोउ नाक छेद बँद कीजिये ॥ अनामिका दोउ हाथकि और कनिष्ठिका । होंठनको बँद करै जुनीके पुष्टका । नासाके दोउ छेद एकही जित भये । दोउ भौंहनके बीच चरणदासा कहे ॥ निश्चय ताहि बनारस देहको जानिये । वाहीकी तौ ओर दृष्टिको तानिये ॥ महाकुम्भक इहि नाम इसी विधि साधिये । ध्यान किये होय मुक्ति यही अवराधिये ॥ इन्द्रिनहूंके मारगको जो बंद करै । वायु विना घट माहिं यथा दीपक बरै ॥ होय घना परकाश

इसी जो देहमें। इसही ध्यान प्रताप मिलै जा गेहमें ॥ पावै चेतन शुद्धि किये इस योगही। कर्मनको ह्वै नाश मिटै मन रोगही ॥

दोहा—उपनिषद पूरी भई, नाम योगही तत्व ॥
अंग अथर्वण वेदका, चरणदास कहिसत्त ॥

इति अथर्वणवेदीय तृतीय तत्त्वयोगोपनिषत्सम्पूर्णम्।

अथ चतुर्थ योगशिखोपनिषत्प्रारम्भः।

दोहा—योगशिखा चौथी कहूं, तामें अद्भुत ध्यान ॥
परजापति ऐसे कही, शिष्य सुनौ दैकान ॥

अष्टपदी।

यामें अद्भुत राह बड़ेही ज्ञानकी। काँपन लागै देह कठिन सुनि ध्यानकी ॥ जब आवै मनमाहिं मोहतन ना रहै। पांचनहीं की आग नहीं हियमें दहै॥ वाकी विधि मैं कहूं सभी सुनि लीजिये। बैठि इकांतहि ठौर जु आसन कीजिये॥ आसन पद्म लगाय के सुख आसन करौ। सीधो राखै मेर नैन नासा धरौ ॥ दोउ हाथनेक साथ जु हाथ मिलाइये। सब स्वादनको रोकि जो मनको लाइये॥ प्रणवहीका जाप जु मनमें राखिये । इस विन और उपाय सबनको नाखिये॥ जाका है ओं नाम ध्यान ताका करै। आठपहर संग्राम विना खांड़े लरै। देह यही अस्थूल बड़ा घर जानिये। तामें दीरघ थंभ एक पहिचानिये॥

दोहा—अरु यामें नौ द्वार हैं, छोठ थंभ हैं तीन ॥
पांचदेवता तेहि विषे, लहैं साध परवीन ॥

यह घर जो मैंने कहा, सोइ मनुषनकी देह ॥
कहैं गुरू शुकदेवजी, चरणदास सुनि लेह ॥

अष्टपदी ।

एक बड़ा जो थंभ मेरकी डंड है । सोइ पीठका हाड़ जासु सब मंड है ॥ अरु वाहीके बीच नाड़ि सुषमन भली । सब नाडिन शिरमौर योगी मानैं रली ॥ नौ द्वारे अब कहूं तिन्हैं पहिचानिये । दो स्रवन दो आँख भली विधि जानिये ॥ नासा छिद्दर दोय जु मुखका एक है । लिंग गुदा दो जान नवोंका लेख है ॥ तीन जु छोटे थंभ तीन गुणहीं कहे । सतगुण तमगुण और रजोगुणहीं लहे ॥ पांच देवता कहे सो पांचो प्रान हैं । प्राणापानरु व्यान उदानसमान हैं ॥ ऐसे मंदिर माहिं हृदयमें छेद है । तामें सूरजमण्डल अचरज भेद है ॥ ताकी बड़िही ज्योति किरण उजियारहै । पूरा योगीहोय सो ताहि निहार है ॥

दोहा—ज्योतिमयी मंडल लखै, हृदयकमलमें होय ॥
तामें दीखै और इक, दीवे कीसी लोय ॥

अष्टपदी ।

दीपककीसी ज्योति मानु ऊपर चलै । रहै अपनिहीं ठौर भाँति ऐसे हिलै ॥ वाही ज्योति को जानै ब्रह्म स्वरूपही । यही समझिक ध्यान करै जु अनूपही ॥ योगी करै जो ध्यान यही हिय माँहिहीं । अंतसमै तन छूटि उपरको जाहिहीं ॥ सूरजहूका मण्डल जावै वेधही । सुषमन मारग जाय शीशको छेदही ॥ सायुज मुक्तिको जाय परापत होय ही । कोटिन माहींलहै जु विरला कोयही ॥ सब ज्योतिनकी ज्योति बड़ी जो ज्योति है ॥ ताको पाये होय एकही गोत है ॥

आलस सों दुर्भाग्य ध्यान करिनासकै। तौ दिनमें तिरकाल पाठकरने लगै॥

दोहा—प्रातकाल अरु मध्यमें, संध्याहीकी वार॥
उपनिपदन तीनों समै, पढ़ै विचार विचार॥
करम करै यमही डरै, चौरासी हरजाय॥
देही पावै मनुपकी, पूरा गुरु मिलजाय॥
फिर पावै यह ध्यानहीं, पीछे कहा जुखोल॥
जावै परमहिं धामकूं, छोड़ै सव झकझोल॥
थोड़ासा यह ध्यानही, मैं समझायों तोहिं॥
परजापतिशिष्यसोंकहै, वड़ा जो निश्चयमोहिं॥
यह पदवी मोकूं मिली, इसी ध्यान परताप॥
जीवन्मुक्ताही रहूं, छुटै आप अरु थाप॥
निश्चल होया ध्यानकूं, करै जो कोई और॥
जगत छुटै आपामिटै, पावै निर्भय ठौर॥
आनन्दहि आनन्दजहँ, अवधिन कालकलेश॥
चरणदास या ध्यानसों, पावै ऐसा देश॥
वहुलोकनमें जन्मधारि, पाप मिटा नहिं भूर॥
चरणदास इस ध्यानसों, सवै होत है दूर॥
दूरकरन दुख जगतके, आन उपाय न होय॥
योगीकूं या ध्यानसम, और वस्तु नहिं कोय॥
उपनिषद चौथी यही, भई समापत येहु॥
चरणदास कहैं पांचवीं, हितचितदै सुनिलेहु॥

इति अथर्वणवेदीय योगशिखोपनिषत्सम्पूर्णम्।

अथ पञ्चमतेजविंशतोपनिषत्प्रारम्भः ।

दोहा—उपनिषदा जो पांचवीं, वेद अथर्वण माहिं ॥
तेज विंद जिहिनाम है, समझ मुक्ति होजाहिं ॥

अष्टपदी ॥ तेज विन्दके अर्थ यही हिय गूँध है । बड़े ध्यानके तेजहिकी यह बूँद है ॥ उसका है यह ध्यान जो सबसे ऊंच है । सबसूं पर निहरूप शुद्ध अरु सूच है ॥ हिरदयहीके मध्य और सूक्षम महा । अरु केवल आनंद किन्हीं ज्ञानीलहा ॥ अनंतशक्ति जिहिमाहिं निराअस्थूल है । बहुत पिण्ड ब्रह्मांड सबनका मूल है ॥ बड़ा विना परमान गहानहिं जात है । वाकि तपस्या ध्यान कउन जु दिखात है ॥ वाका देखब दुलभ सुलभनहिं जानना । वह तौ सिन्धु अथाह कछू परमानना ॥ ज्ञानी पण्डित और सबै बुधिवानही । पावैं आदि न अन्त और मध्यानहीं ॥ केबांधे ब्रह्मव्रतकरै कै ध्यानहीं । वाहीकेहो रूपपावै तब जानहीं ॥ २ ॥

दोहा—जीते पहिल अहारही, दूजे और करोध ॥
बहुमनुषोंका संग तजि, छाँड़े प्रीति विरोध ॥

अष्टपदी ॥ परबल इन्द्री जान सबनकूं वश करै । शीत उष्ण दुख सुख अस्तुति निन्दा हरै ॥ छोड़ेही अहंकार वासना आसही । अपने कारण वस्तु रखै नहिं पासही ॥ पूरी राखै पैज धारणा धारिकै । गुरुआज्ञा गुरु सेव करै जु विचारिकै ॥ सकल मनोरथ कामनाकूं करै क्षीणहीं । ऐसे जिज्ञासूकूं चाहिये द्वारे तीनहीं ॥ एकजो द्वारा त्याग दुजा जो

उपावही । तीजा गुरुकी निश्चय ऐसा सुभावही ॥ इनद्वारों में राह जु आगे की खुलै । लुटैथकै वह नाहिं सुखालाही चलै ॥ जीवातम जो हंस कहावत है यही । याकेहैं अस्थान जो तीनोंही सही ॥ जाग्रत् स्वप्न सुषुप्ति परगट जानिये । तुरिया निज अस्थान गुप्त पहिचानिये ॥ ४ ॥

दोहा—इन तीनोंसे वड़ाहै, तुरियाकूं नितजान ॥
चरणदास पोषण जगत, वाके ना अस्थान ॥

अष्टपदी ।

जैसे भूत अकाशयों व्यापक ह्वै रहो । सब इन्द्रिनके माहिं जो सूक्षम जो रहो ॥ वाकी सत्तासेती चेत नहीं रही । वही वड़ापद जान विष्णुका है सही ॥ वाके नेत्र हैं तीन जो तीनौ वेदही । अरु वाके गुण तीन जो किया निपेदही ॥ है सबका आधार त्रिलोकी धारई । आप रहै निरधार जो अपरमपारई ॥ है निहरूप अडोल अखंड अगाधही । हैतौ निस्सन्देह पहुँचे न उपाधही ॥ कारिनसकै परवेश वरणगुणरूपही । अरु सब गुण वामाहिं जु अधिक अनूपही ॥ पावै केवल ज्ञानसुं आपमें आपही । बावन अक्षर माहिं नाम नहिं थापही ॥ वह तौ निर आनन्द काहुसे है नहीं । कठिन परातम होय दुलभ देखै नहीं ॥

दोहा—वह उपजै विनशै नहीं, अज अविनाशी सोय ॥
विन इच्छा थिरही रहै, चरणदास नित जोय ॥

अष्टपदी ।

वह सबही को राउ पिण्ड अरु जीवहै । नाना कौतुक होय अन्तवहि सीव है ॥ ज्ञानसे ज़ुदा न जान निरावह ज्ञान

है । वही महा आकाश नहीं परमान है ॥ सबमाहीं परवेश जो आतम सत्त है । आपमें पूरण आप परमही तत्तहै ॥ अ-ज्ञानी जानै झूठ झूठ पहुँचै नहीं । वह तौ सदा नितजान कभी विनशै नहीं ॥ वाकूं कहा नहिंजाय जाप जापक कभी । अरु सारे हैं जाप उसी माहीं सभी ॥ और जपाभी गया जाप जापक वही । सबकुछ उसकूं जान गुप्तपरगट सही ॥ वह निर्गुण निर्लिप्त कोई गुणनाहिंनै । परेसूं परेतापरै जानिले वाहिनै ॥ वासूंपर नहिं और विचारा जायना । कहैं चरणहीं दास कछू वा माहिंना ॥

दोहा—वाकूं जाग्रत् है नहीं, वाकूं स्वप्न न कोय ॥
सोवन स्वप्ना है नहीं, जाग्रत् कैसे होय ॥

अष्टपदी ।

दुओं से न्याग जान जाग्रत् अरु स्वपनसूं । ऐसा कोई नाहिं न जानै सत्तहूं ॥ सबका जानत मूल जु ज्ञानी लोयही । दीरघ अरु परकाशी जानै सबको यही ॥ जाकूं लोभ न होय अविद्या होयना । भै अभिमानकुकर्म वासना कोयना ॥ गरमी जाड़ा भूखप्यास व्यापै नहीं । पइये क्रोधनमोह नेक वामें कहीं ॥ वाहिन इच्छा होय न पूरी चाहहीं । कुल विद्या अभिमान न उनके माहिहीं ॥ माननहीं अपमान न मनमें लावई । सबसूं होय निवृत्त ब्रह्मकूं पावई ॥ तेज बिन्द उप-निषद सँपूरणहीं भई । गुरु शुकदेवके दास चरणदासा कही ॥ ताहिसुनै मनराखि विचाराही करै । निश्चय होवै मुक्त जगतमें नापरै ॥

दोहा—कही गुरू शुकदेव ने, मेरी कछू न बुद्धि ॥
पढ़ो नहीं मूरखमहा, मोकूं नेक न शुद्धि ॥
मेरे हिरदय के विषे, भवन कियो गुरु आय ॥
वेइ विराजतहैं सदा, मेरी देह दिखाय ॥
जबसूं गुरु किरपाकरी, दर्शन दीन्हों मोय ॥
रोम रोममें वै रमे, चरणदास नाहिं कोय ॥
जातिवरणकुलमनगया, गया देह अभिमान ॥
अपने मुखसों कह कहौं, जगही करै बखान ॥
रहे गुरू शुकदेवजी, मैं मैं गई नशाय ॥
मैं तैं तैं मैं वही है, नखशिख रहो समाय ॥

इति श्रीस्वामीचरणदासकृत तेजविंशोपनिषद्भाषा सम्पूर्णम् ।

इति पंचोपनिषद् ॥

वैकुंठविहारिणेनमः ।

अथ भक्तिपदार्थप्रारम्भः ।

गुरुमहिमा ।

दोहा–प्रणवों श्रीमुनि व्यासजी, मम हिरदयमें आय ॥
भक्ति पदारथ कहत हूं, तुमहीं करो सहाय ॥
प्रेम पगावन ज्ञान दे, योग जितावन हार ॥
चरणदास की विनती, सुनियो वारम्वार ॥
तुम दाता हम माँगता, श्री शुकदेव दयाल ॥
भक्तिदई व्याधागई, मेटे जग जंजाल ॥
किसू कामके थे नहीं, कोऊ न कौड़ी देह ॥
गुरु शुकदेव कृपाकरि, भई अमोलक देह ॥
कोहै कोई न जानता, गिनती में नहिं नावँ ॥
गुरु शुकदेव कृपाकरी, पूजन लागे पावँ ॥
सीधी पलक न देखते, छूते नाहीं छाहिं ॥
गुरु शुकदेव कृपाकरी, वरणो दिव्य लजाहिं ॥
दुसरे के वालकहुते, भक्ति विना कंगाल ॥
गुरु शुकदेव दयाकरि, हरिधन किये निहाल॥
जा धनकूं ठग ना लगै, धारी सकै न लूट ॥
चोर चुरायसकै नहीं, गाँठ गिरै नहीं खूट ॥
वलिहारी गुरु आपने, तन मन सदकै जावँ ॥

जीव ब्रह्म क्षणमें कियो, पाई भूली बाँव ॥
हरिसेवासों कृत वरस, गुरु सेवा पलचार ॥
तौभी नहीं वरावरी, वेदन कियो विचार ॥
गुरुकी सेवा साधू जानै । गुरुसेवा कह मूढ़ पिछानै ॥
गुरु सेवा सवहुन पर भारी । समझ करो सोई नर नारी ॥
गुरु सेवासों विघन विनाशै । दुरमति भाजै पातक नाशै ॥
गुरु सेवा चौरासी छूटै । आवागमनक डोरा टूटै ॥
गुरु सेवा यमदण्ड न लागै । ममता मरै भक्तमें जागै ॥
गुरु सेवासूं प्रेम प्रकाशै । उनमत होय मिटै जग आशै ॥
गुरु सेवा परमातम दरशै । त्रैगुण तजि चौथापन परशै ॥
श्रीशुकदेव बतायो भेवा । चरणदास कर गुरुकी सेवा ॥
दोहा—गुरु सेवा जानै नहीं, पाँय न पूजै धाय ॥
योगदान जप तप कियो, सभी अफल है जाय ॥
योग दान जप तीरथ न्हाना । गुरु सेवा विन निर्फल जाना ॥
गुरु सेवा विन वहु पछितैहो । फिर फिर यमके द्वारे जैहो ॥
गुरु सेवा विन अति दुखपैहो । जग में पशु दारिद्री ह्वैहो ॥
गुरु सेवा विन कौन उतारै । भवसागर सूं बाहर डारै ॥
गुरु सेवा विन जड़ कह करिहै । काकीनाव बैठि करि तरि हैं ॥
गुरु सेवा विन कछु नाहिं सरिहै । महाअंध कूपनमें परि है ॥
गुरु सेवा विन घट अँधियारा । कैसे प्रकटै ज्ञान उजियारा ॥
नरक निवारण गुरु शुकदेवा । चरणदास करि तिनकी सेवा ॥
दोहा—इन्द्रीजित निरवैरता, निरमोही निरद्वन्द्व ॥
ऐसे गुरुकी शरणसूं, मिटै सकल दुखद्वन्द ॥
राग द्वेष दोनोंसे न्यारे । ऐसे गुरू शिष्यकूं तारे ॥
आशा तृष्णा कुबुधि जलाई । तनमन वचन सबन सुखदाई ॥

निरालम्ब निर्भरम उदासी । निर्विकार जानौ निरवासी ॥
निर्मोहत निर्बन्ध निशंका । सावधान निर्वाण अशंका ॥
सारग्रही और सरवंगी । संतोषी ज्ञानी सतसंगी ॥
अयाचीक जत निरअभिमानी । पक्ष रहित स्थिर शुध वानी ॥
निहतरंग नाहीं परपंचा । निहकरम निरलिप्तजो संचा ॥
शीतल तासु मती शुकदेवा । चरणदास कियोसो गुरुदेवा ॥

दोहा—सतवादी अरु शीलवंत, सुह्दै अरु योगीश ॥
निश्चल ध्यान समाधिमें, सो गुरु विस्वेवीश ॥
भरमनिवारणभय हरण, दूरकरन सन्देह ॥
मुठिया खोलै ज्ञानकी, सो सद्गुरु करलेह ॥
सद्गुरु के लक्षण कहे; ताकूं ले पहिचान ॥
निरखपरख करदीजिये, तनमन धन अरु प्रान ॥
ऐसा सद्गुरु कीजिये, जीवत डारै मारि ॥
जनम जनमकी वासना, ताकूं देवै जारि ॥
सद्गुरु के ढिग जाइकै, सन्मुख खावै चोट ॥
चकमक लगपथरीझरै, सकल जरावै खोट ॥
सद्गुरु मेरा शूरमा, करै शब्द की चोट ॥
मारै गोला प्रेम का, ढहै भरमका कोट ॥
मुखसेती बोलनथका; सुने न थकाजू कान ॥
पावनसूं फिरवाथका, सद्गुरु मारा बान ॥
मैं मिरगा गुरु पारधी, शब्द लगायो बाण ॥
चरणदास घायल गिरे, तब मन बींधे प्राण ॥
शब्दबाण मोहिमारियो, लगी कलेजे माहिं ॥
मारहँसे शुकदेवजी, बाकी छोड़ी नाहिं ॥

सद्गुरु शब्दी तेग है, लागत दो कर देहि ॥
पीठि फेरि कायर भजै, शूरा सम्मुख लेहि ॥
सद्गुरु शब्दी सेल है, सहै धमूका साध ॥
कायर ऊपर जो चलै, तौ जावै बरवाद ॥
सद्गुरु शब्दी तीर है, तनमन कीयो छेद ॥
बेदरदी समझै नहीं, विरही पावै भेद ॥
सद्गुरु शब्दी लागिया, नावककासा तीर ॥
कसकतहै निकसत नहीं, होत प्रेमकी पीर ॥
सद्गुरु शब्दी बाण है, अँग अँग डारै तोड़ ॥
प्रेम खेत घायल गिरे, टाँका लगै न जोड़ ॥
सद्गुरु शब्दे मारिया, पूरा आया वार ॥
प्रेमी जूझे खेतमें, लगा न राखा तार ॥
ऐसी मारी खैंचकर, लगी वार गइ पार ॥
जिनका आपा ना रहा, भये रूप ततसार ॥
सद्गुरु के मारे मुये, बहुरि न उपजै आय ॥
चौरासी बन्धन छुटै, हरिपद पहुँचे जाय ॥
सद्गुरु के वचनौं मुये, धन्य जिन्होंके भाग ॥
त्रैगुणते ऊपर गये, जहां दोष नहिं राग ॥
वचन लगा गुरुदेवका, छुटे राजके ताज ॥
हीरा मोती नारि सुत, गज घोड़ा अरु बाज ॥
वचनलगा गुरु ज्ञानका, रूखे लागे भोग ॥
इन्द्रावि पदवी लौ उन्हैं, चरणदास सबरोग ॥
सद्गुरु ढूँढ़ा पाइये, नहीं सुहेला होय ॥
शिष्य भी पूरा कोइहै, सानी माटी जोय ॥

जातिवरणकुल आश्रम, मान बड़ाई खोय ॥
जब सद्गुरु के पगलगैं, सांच शिष्य है सोय ॥
गुरु के आगे राखै माथा । कहै पाप दुख मेटो नाथा ॥
मैं आधीन तुम्हारो दासा । देहु आपने चरणन वासा ॥
यह तन मन ले भेंट चढायो । अपनी इच्छा कुछ न रहायो ॥
जो चाहे सो तुमहीं करो । या भाड़ में जो कुछ भरो ॥
भावै धूप छाँह में डारो । भावै वोरो भावै तारो ॥
गुण पौरुष कुछ बुधि नहिं मेरी । सब विधिसरसगही प्रभु तेरी ॥
मैं चकई अरु तुम किय डोरा । मैं जो फिरूं सब तुम्हरे जोरा ॥
मैं अब वैठा नाव तुम्हारी । आशा नदीसुं करिये पारी ॥
भ्रमर जालजगसूं मोहिं काढ़ो । हाथ जोरि चरणदासा ठाढ़ो ॥
दोहा—गुरुके आगे जाय करि, ऐसे बोलै बोल ॥
कछू कपट राखै नहीं, अर्ज करै मन खोल ॥
यह आपा तुमकूं दिया, जित चाहौ तितराखि ॥
चरणदास द्वारे परो, भावै झिडको लाख ॥
ऋद्धि सिद्धिफल कछू न चाऊं । जगतकामना को नाहिं लाऊं ॥
और कामना मैं नहिं राखूं । रसनानाम तुम्हारो भाखूं ॥
राज भोगका मोहिं न सांसा । नहीं इन्द्र पदवी लौ आसा ॥
चौरासी में वहु दुख पायो । तातै शरण तिहारी आयो ॥
मुक्त होनकी मनमें आवै । आवागमन सों जीव डरावै ॥
रामभक्तिकी चाह हमारे । यातै पकड़े चरण तुम्हारे ॥
प्रेम प्रीतिमें हिरदा भीजै । यही दान दाता मोहिं दीजै ॥
अपना कीजे गहियेवाहीं । धरिये शिरपर हाथ गोसाईं ॥
चरणदासको लेहु उबारे । मैं अण्डा तुम सेवनवारे ॥

दोहा—अंडा ज्यों आगे गिरै, जब गुरु लवै सेइ ॥
करै बराबर आपनी, शिष्य को निस्सन्देह ॥
अपना करि सेवन करै, तीनि भाँति गुरुदेव ॥
पंजा पक्षी कुंजमन, कछुवा दृष्टि जु भेव ॥
जो वै बिछुरैं घड़ीभी, तो गंदा होइ जाय ॥
चरणदास यों कहत है, गुरु को राखु रिझाय ॥
पितु सों माता सौ गुणा, सुत को राखै प्यार ॥
मनसती सेवन करै, तन सों डाटरुगार ॥
जो देवें दुरशीश भी, होहो लगै अशीश ॥
सेवन करिसमरथकियो, उनपर वारौं शीश ॥
माता सों हरि सौगुना, जिनसे सौ गुरुदेव ॥
प्यार करैं औगुण हरैं, चरणदास शुकदेव ॥
काचे भांड़े सों रहै, ज्यों कुम्हार को नेह ॥
भीतर सों रक्षा करै, बाहर चोटैं देह ॥
दृष्टि पड़ै गुरुदेवकी, देखत करैं निहाल ॥
औरे मति पलटैं तबै, कागा होत मराल ॥
दया होय गुरुदेव की, भजै मान अरु मैन ॥
भोग वासना सब छुटै, पावै अतिही चैन ॥
जब सद्गुरु किरपा करैं, खोलि दिखावैं नैन ॥
जग झूठा दीखन लगै, देह परे की सैन ॥

अष्टपदी ।

गुरु बिन और न जाम मान मेरो कह्यो । चरणदास उपदेश विचारतही रह्यो ॥ वेदरूप गुरु होयके कथा सुनावई ।

---

१. श्राप.

पंडितको धरिरूप कि अरथ बतावई ॥ गुरुहै शेशमहेश तोहिं चेतनकरै । गुरुब्रह्मा गुरुविष्णु होय खाली भरै ॥ कल्प वृक्ष गुरुदेव मनोरथ सब सरै । कामधेनु गुरुदेव क्षुधा तृष्णा हरै ॥ गंगासम गुरुहोय पाप सब धोवई । शशिवर सम गुरु होय तपन सब खोवई ॥ सूरजसम गुरुहोय तिमिर सब लेवई । पारब्रह्म गुरु होय मुक्तिपद देवई ॥ गुरुहीको करेध्यान नाम गुरुको जपौ । आपा दीजे भेंट पूजन गुरुही थपौ ॥ समरथ श्रीशुकदेव कहा महिमाकरौं । अस्तुति कहीन जाय शीश चरणन धरौं ॥

दोहा—हरि रूठें कुछ डर नहीं, तूभी दे छिटकाय ॥
गुरु को राखौ शीशपर, सब विधि करें सहाय ॥

अष्टपदी ।

गुरुको तजि हरिसेव कभी नाहिं कीजिये । बेमुखको नाहिं ठौर नरकमें दीजिये ॥ गुरुनिंदक नाहिं मुक्त गर्भ फिरि आवई । चौरासी लख भुक्ति महादुख पावई ॥ प्रथम करै गुरु देखि परखि चरणौं परै । उनकी धारण ध्यानटेक उरमें धरै ॥ गुरुको रामहिं जान कृष्ण सम जानिये । गुरु नृसिंह अवतार जु वामन मानिये ॥ गुरुको पूरणजान जु ईश्वर रूपही । सब कुछ गुरुको जान यहबात अनूपही ॥ हरि गुरु एकहि जान यह निश्चय लाइये । दुबिधाही को बोझ जु वेग बगाइये ॥ धर्म्म पिता गुरुजान जु दृढ़ता राखिये । लाज सकुच करिकान ढीठता नाखिये ॥ मेरा यह उपदेश हिये में धारियो । गुरु चरणन मनराखि सेवतन गारियो ॥ जो गुरु

१ निगुरा.

झिरकै लाख तौ मुख नहिं मोड़ियो । गुरुसों नेह लगाय सब-नसों तोड़ियो ॥ जो शिष सांचा होय तो आपा दीजियो । चरणदासकी सीख समझकर लीजियो ॥ मोको श्रीशुकदेव यही समझाइया । वेद पुराणन माहिं जु योंहीं गाइया ॥

दोहा—गुरु अस्तुति कह कहिसकै, चरणदास कहँ बुद्धि ॥
भक्तौं की अब कहत हौं, जोवै देवैं शुद्धि ॥

भक्तमाहिमा ।

भक्तनकी अस्तुति किये, तन मन हियो सिराय ।
कलिका मैल रहै नहीं, बुधि उज्ज्वल ह्वै जाय ॥
साधन की सेवा करौ, चरणदास चितलाय ।
जनम मरण बंधन कटैं, जगतव्याधि छुटिजाय ॥

जो भक्तोंकी सेवा करै । यमके फन्दे नाहीं परै ॥
जिन साधौं का दर्शन देखा । तिनका यमसों रहा न लेखा ॥
जो भक्तनको शीश नवावै । तन छूटै जब दुख नहिं पावै ॥
जो कोइ साध संगमें रलै । जठर अग्निमें नाहीं जलै ॥
जो साधौंकी अस्तुति भाखै । भावै भक्ति प्रेम रसचाखै ॥
जो भक्तन सों प्रीति लगावै । वह निश्चय हरिको अपनावै ॥
जो भक्तों की वाणी गावै । समझै अर्थ परमपद पावै ॥
साधुसंग विन गति नहिं होनी । क्यातपसीअरुक्याभयोमौनी ॥
चरणदास भक्तौंकी शरना । ह्वाई जीवन ह्वाई मरना ॥

भक्तलक्षण ।

दोहा—भक्तिवान निर्मल दिशा, संतोषी निर्वास ॥
मनराखै नवधा विषे, और न दूजी आस ॥

दयावान दाता गुण पूरे । पैज धारणा वचनौं शूरे ॥

मुक्ति कामना फल नहिं चाहैं । ऋद्धिसिद्धिअरुत्यागै लौहैं ॥
हानि लाभ जिनकें नहिं टोटा । वैरी मित्र खरा नहिं खोटा ॥
मानपमान कछू नहिं तिनके । दुखसुख एक बराबर जिनके ॥
शुभअरुअशुभ कछू नहिंजानैं । रावरंक को ना पहिंचानै ॥
कंचन कांच बराबर देखै । जग व्योहार कछू नहिं लेखै ॥
हार जीत नाहिं वाद विवादा । सदा पवित्र समझ अगाधा ॥
हर्षशोक जिनके नहिं कबहीं । लख चौरासी प्यारे सबहीं ॥
हिंसा अकस भाव नहिं दूजा । सब जीवनकी राखै पूजा ॥
चरणदास शुकदेव बतावै । ऐसे लक्षण साधु कहावै ॥

दोहा—भक्तन की पदवी बड़ी, इन्द्रहुसे अधिकाय ॥
तीन लोक के सुखतजे, लीन्ह्यो हरि अपनाय ॥
अनन्य भक्तनिष्काम जो, करै सोइ चरणदास ॥
चार मुक्ति वैकुण्ठ लौ, सबसे रहै निरास ॥

साधुमाहात्म्य ।

प्रभु अपने मुखसे कह्यो, साधू मेरी देह ॥
उनके चरणनकी मुझे, प्यारी लागै खेह ॥
आठ सिद्धि वै लें नहीं, कनक कामिनी नाहिं ॥
मेरे सँग लागे रहैं, कभी न छोड़ैं बाहिं ॥
सब तजि करमोंको भजै, मोहीं सेती प्रीति ॥
मैं भी उनके कर बिक्यो, यही जु मेरी रीति ॥
साधु हमारी आतमा, सबसे प्यारे मोहिं ॥
नारद निश्चय कीजिये, सांच कहत हौं तोहिं ॥
जिनके कारण मैं रचौं, अद्भुत यह संसार ॥
उनहीकी इच्छा धरूं, हर युगमें अवतार ॥

प्रेमी को ऋणियां रहौं, यही हमारो मूल॥
चारि मुक्त दइ व्याजमें, दे न सकौं अवमूल॥
सर्वस दीन्हों भक्तको, देख हमारो नेह॥
निर्गुण सों सगुण भयो, धरी पशूकी देह॥
मेरे जन मोमें रहें, मैं भक्तनके माहिं॥
मेरे अरु मम सन्तके, कछु भी अन्तर नाहिं॥
साध सोवै तहँ सोय रहुं, भोजन सँगही जेवँ॥
जो वह गावै प्रेम सों, मैंहूं ताली देवँ॥
मम भक्ता जितजितफिरैं, गवनै लागा जावँ॥
जहां तहां रक्षा करौं, भक्तवछल मेरो नावँ॥
भक्त हमारो पग धरै, जहां धरूं मैं हाथ॥
लारे लागोही फिरौं, कबहु न छोडूं साथ॥
मोको वशकियो जो चहै, भक्तनकी करि सेव॥
उनमें ह्वै कर मैं मिलौं, करौं बहुतही हेव॥
पृथ्वी पावन होत है, सबही तीरथ आदि॥
चरणदास हरि यों कहैं, चरण धरैं जब साधि॥
जिनकी महिमा प्रभु करैं, अपने मुख सों भाखि॥
तिनकी कौन बराबरी, वेद भरत है साखि॥
जिनकी आसा करत हैं, स्वर्ग माहिं सब देव॥
कबहूँ दर्शन पाय हैं, चरणकमलकी सेव॥
अपने अपने लोकमें, सभी करैं उत्साह॥
साधूकाया छोड़करि, गमन करै किसराह॥
धन नगरी धन देशहै, धन पुर पट्टन गावँ॥
जहँ साधूजन उपजियो, ताके बलि बलि जावँ॥

भगत जु आवैं जगतमें, परमारथके हेत ॥
आप तरैं तारैं परा, मँडैं भजनके खेत ॥
भवसागर सों तारि करि, लै जावैं बहु जीव ॥
साधू केवट रामके, पार मिलावैं पीव ॥
काम क्रोधमद्लोभहनि, गर्भ तजै जो साध ॥
राम नाम हिरदै धरै, रोम रोम आराध ॥
साधू महिमाको कहै, शोभा अधिक अपार ॥
रसना दोय हजार सों, शेषहु जावैं हार ॥
अनन्यभक्तिकरिप्रेमसों, जीति लिये गोविन्द ॥
चरणदास हो वश किये, पूरण परमानन्द ॥

सत्संगतिमहिमा ।

तपके वर्ष हजारहू, सत्संगति घड़ि एक ॥
तौभी सरवर ना करै, शुकदेव किया विवेक ॥
सत्संगति महिमा बड़भाई । स्मृति वेद पुराणन गाई ॥
मुनि वसिष्ठ कहो याही भेवा । साधु संगको तरसैं देवा ॥
साधु संगको नारद जानै । सो वह पिछलौ जन्म पिछानै ॥
देखो संगतिकी अधिकाई । वालमीकि अरु शवरी गाई ॥
अजामील सत्संगति परिया । अनगिनपाप किये सवजरिया ॥
सत्संगति वहु पतित उधारे । अधम सरीखे मुक्ति पधारे ॥
जाट जुलाहा अरु रैदासा । संगति साधु हुआ परकासा ॥
साधुनकी संगति मुकताई । चरणदास शुकदेव बताई ॥
दोहा—जब जब दर्शन राम दें, तव माँगों सत्संग ॥
चाहौं पदवी भक्तिकी, चढ़ै सुनवधा रंग ॥
कूवा सैना सदना नाई । बहुतक नीच भये उँचपाई ॥

जैसे ठौर ठौरको पानी। सुरसरि मिलि भो गंगारानी॥
तैसे काठ लोहको तारै। ऐसे संगति मिलि भय पारै॥
जैसे पारस लोहा लागा। सो वह कंचन भयो सुभागा॥
देवल तीरथ वहु मग धावै। साधुसंग विन गति नहिं पावै॥
ढाकापात पानके साथा। संगति मिलिगयोभूपन हाथा॥
त्यों गोविन्द सँग गाई कुवरी। सूवाके सँग गणिका उवरी॥
हरिभगतनमें दीजे वासा। जन्म जन्म माँगे चरणदासा॥

दोहा—ऊंची पदवी साधुकी, महिमा कही न जाय॥
सुरनर मुनि जग भूपही, देखतरहे लजाय॥

रागसारंग—करो नर हरि भक्तनको संग। दुखविसरै सुख होय घनेरो तन मन पलटै अंग॥ ह्वै निष्काम मिलौ सन्तनसों नाम पदारथ मंग। जिहि पाये सव पातक नाशैं उपजै ज्ञानतरंग॥ जो वे दया करैं तेरे पर प्रेम पिलावैं भंग। जाके अमल दरश ह्वै हरिको नैनन आवै रंग॥ उनके चरण शरणहीं लागो सेवा करो उमंग। चरणदास तिनके पग परशन आश करत है गंग॥ ८६॥

ईश्वरमहिमा।

दोहा—विनहोनीहरि करिसकैं, होनी देहिं मिटाय॥
चरणदास करु भक्तिही, आपादेहु उठाय॥

हरि चितवै सो सांची वाता। औरनसौं नहिं टूटै पाता॥
जो कछु चाहा सोउन करई। अव चाहै सोभी सव सरई॥
अग्नि माहिं तृण वास बचावै। घटमें सिगरी सिद्धि समावै॥
पावक राखै पानी माहीं। जल राखै जहँ धरती नाहीं॥
गिरिवर सागर माहिं तरावै। चाहै हलका काठ डुवावै॥

सुईके नाके हस्ती काढ़ै। मूल पात विन लकड़ी वाढ़ै॥
नरकी छाती दूध निकासै। उपजावै वह खेत अकासै॥
चाहै गूँगे वेद पढ़ावै। अँधरे आँखैं खोलि दिखावै॥
सबलायक सामरथ गुसाँई। चरणदास शुकदेव वताई॥
दोहा—प्रभुचाहै सोई करै, ताकूं टोकै कौन॥
देखि देखि अचरज रहा, चरणदास गहि मौन॥
महल पवनपर रचै मुरारी। अग्निके माहिं करै फुलवारी॥
चाहै विन वादल वरसावै। विनसूरजादिनकरिदिखलावै॥
खाली भरै भरे निघटावै। जो चाहै सोई प्रगटावै॥
पाथर पानी करै वहावै। छिनमें सगरो सिंधु सुखावै॥
चाहै जलका थल करिडारै। राईकूं परवत करै भारै॥
रंकन कूं करै छत्तर धारी। चाहै भूपन देह उजारी॥
जो चाहै सो आपहि करै। औरनके शिर झूठे धरै॥
चरणदास शुकदेव जनावै। सांचे गुणावाद जो गावै॥
दोहा—यहअस्तुतिकरतारकी, जिन रचिया संसार॥
अद्भुतकौतुककरिरह्यो, लीला अगम अपार॥
उपजावै पालै विनशावै। अनगिन चन्द सूर दरशावै॥
कोटिक अंड पलकमें करै। जब चाहै तब कुछ ना रहै॥
जब फैलै तब रूप अनेका। जब समिटै तब एकहि एका॥
वटक बीजका खेलनहारा। एक बीजका सकल पसारा॥
तामें बीज अनंतहि देखा। गिनूं कहांलौं रंग न रेखा॥
ऐसे हरि आपा विस्तारा। कहत सुनत देखतहूं हारा॥
अपरंपार पार नहिं पाऊं। अस्तुति करता मैं सकुचाऊं॥
समझि समझि मनमें रहिजाऊं। चरणदास हो शीश नवाऊं॥

दोहा—लीलासिंधुअगाध गति, मोपै कही न जाय ॥
चरणदास यों कहत है, शोचत गयो हिराय ॥
कोटिक ब्रह्मा अस्तुति करहीं । वेद कहत प्रभुपरे परेहीं ॥
कोटिक शम्भू करैं समाधा । जानि परै नहिं रूप अगाधा ॥
कोटिक नारदसे यश गावैं । गुण अगाध कछु अंत न पावैं ॥
कोटिक ध्यानी ध्यान लगावैं । हरिके सो कछु रूप न पावैं ॥
कोटिक ज्ञानी कथैं वह ज्ञाना । समझथकी उनहूं नहिंजाना ॥
कोटिक शारद करैं विचारा । बुद्धिथकी जब कहा अपारा ॥
सुर नर मुनि वाभेदनलहिया।शोचिशोचिबकिवाकिथकिरहिया
निरगुण सरगुण कहा न जावै । चरणदास शुकदेव सुनावै ॥
दोहा—चरणदास वा रूप की, पटतर दई न जाइ ॥
राम सरीखे राम हैं, और बतावों काइ ॥
वाकी अस्तुति कहां बखानूं । जैसा वह तैसा नहिं जानूं ॥
बुधि विचार करि हारा ज्ञाना । अनभै थकी नाहिं पहिचाना ॥
आदि न अंत मध्य नहिं जाका । दहिना बायाँ पीठ न आका ॥
हरापीत श्वेता नाहिं काला । नारी पुरुष न बूढ़ा बाला ॥
रूप न रंग मिहीं नाहिं मोटा । नया पुराना बड़ा न छोटा ॥
नाम रूप किरियासूं न्यारा । नहिंहलका नहिंकहियेभारा ॥
बानी चार परै निरवाना । काहू विधि वहजाय न जाना ॥
पुष्प गंध नादनतैं झीना । गुरु शुकदेव सुनाय जु दीना ॥
दोहा—कौन लखैको कहिसकै, अचरज अलख अभेव ॥
ज्ञान ध्यान पहुँचै नहीं, निर्विकार निर्लेव ॥
सुनत अचम्भा मोकूं आया । जाके वचन रूप नहिं काया ॥
निराकार नाहिं ना आकारा । नहिंअडोलनहिंडोलनहारा ॥

पांचतत्त्व त्रैगुण ते आगे । अद्भुत अचरज ध्याननलागे ॥
नहिं परगट नहिं गूपन ठाऊं । समझसकौंनाहिंथकिथकिजाऊं
जैसो आगे मैं कहि आयो । फिर समझो वैसो नहिं पायो ॥
जो कुछ कहिया नाहीं नाहीं । सो सब देखा वाके माहीं ॥
सकल सर्वदा ह्वां पहिंचानी । चरणदास शुकदेव बखानी ॥

दोहा—वामें गुण अनगिनत हैं, अपरंपार अगाध ॥
देखौ परगटही भये, रूप नाम अरु नाद ॥

वृक्ष बीजका भेद बताऊं । भिन्न भिन्न परगट दिखलाऊं॥
जो कोइ निराबीज कूं बूझै । ताकूं वह निर्गुणहीं सूझै ॥
जब समझै तब सब गुण माहीं । तामें डाल मूलफल छाहीं ॥
ऐसे पूरण ब्रह्म पिछानौ । निराकार निर्गुण मतजानौ ॥
वे निरगुण सरगुण ते न्यारे । निरगुण सरगुण नाम विचारे ॥
अकथकथाकछुकथियन जाई । जो भाषूं सोई मुरखाई ॥
कोई क़हो सुनौ मन आनौ । वैसा नाहिं निश्चय करिजानौ ॥
बड़बड़ ऋषिमुनिपण्डितभारे । चरणदास सब खोजत हारे ॥

दोहा—वहि निरगुणसरगुणवही, वहि दोनोंसे न्यार ॥
जोथा सो जाना नहीं, शोचा वारम्वार ॥
अनंतसकललीलाअनंत, गुण अनंत बहुभाव ॥
कौतुक रूप अनंत हैं, चरणदास बलिजाव ॥
नामभेद किरिया अनंत, अनंत धर अवतार ॥
वीस चार तिनमेंअधिक, कहै शुकदेव विचार ॥
राम कृष्ण पूरण कला, चौवीसौ में दोय ॥
निरगुण से सरगुण वही, भक्तौं कारण होय ॥

रागविलावल ॥ अलख निरंजन अगम अपार । एक अनेक भेष वहु कीन्हे सुन्दर रचना रची सँवार ॥ निरगुन ह्वरि सरगुण हो खेलौ अचरज लीला करि विस्तार । अपनो चरित आपही देखे ऐसो अद्भुत कौतुकधार ॥ रूप वराह पकरि हिरण्याक्षहि धरती लाये ताहि सिधार । यज्ञपुरुष अरु दत्तात्रेयी अरु श्रीवद्रीपतिहि विचार ॥ सनत्कुमार ऋषभदेव वधू ग्रह पृथू मच्छ कूर्म उदार । हयग्रीव अरु हंस रूपही महावली नरसिंह वलधार ॥ हरि परगट ह्वै गजै छुटायो वामन कपिल सरस गुणसार । मन्वन्तर धन्वन्तर प्रगटे परशुराम रामचन्द्र मुरार ॥ पूरण कला ईश तिहुँ पुरको कृष्ण प्रगटहो कंस पछार । वेदव्यास अरु वोध कलंकी ये भये सव चौवीस अवतार ॥ युग युग माँहि आप परगट ह्वै दुष्ट दलन सन्तन रखवार ॥ चरणदास शुकदेव श्यामकी बाँकी गतिको वार न पार ॥

दोहा—एक एकसों आगरो, महिमा कही न जाय ॥
अनंत रँगीले महलमें, आपहि वैठे आय ॥

अनन्त रँगिले महल वनाये । तामें आप रामहीं आये ॥
राम रूप गुण न्यारे न्यारे । गिनत शारदा गणपति हारे ॥
मन्दिर रूप वहुत छविसोहै । जहाँ तहाँ मेरो मन मोहै ॥
हरे श्वेत पीत अरु लाले । पिसता की ऊदे अरु काले ॥
वेलदार लहरा छवि बूटे । चीतमताले और तिखूंटे ॥
बूँद बूँद अव गंडे दारे । जानौ चित्तर हाथ सँवारे ॥
रँगा रंग वहु चित्तरकारी । कहूं कहाँलौं मों बुधिहारी ॥
दो पाये अरु पुनि चौपाये । वहु पाये कछु कहे न जाये ॥

वृक्षरूप अरु पक्षीनाना । कीट पतंगा थिर चर जाना ॥
जलमें मीन बहुत परकारे । चरणदास शुकदेव विचारे ॥

दोहा—थावर जंगम चर अचर, बहुत छबीली भाँति ॥
राजसतामस सात्विकी, बहु अधीन बहु क्रांति ॥
वानर नर असुरा सुरा, यक्षगण गन्धर्व प्रेत ॥
सबही महल बराबरी, सबही सेती हेत ॥

खिरकी नैन चावसों खोलै । मुख द्वारे नाना विधिबोलै ॥
बहुत भाँति की नाना वानी । चतुर कूट भोली अरु यानी ॥
काहिं अबोल काहिं बोलनआवै । पै सब महलन वह दरशावै ॥
साक्षात हरिही कूं जानै । भवन भवनमें ताहि पिछानै ॥
काया क्षेतर ज्ञानी जानै । क्षेत्रज्ञ आतम रूप बखानै ॥
देही क्षर गीतामें गायो । अक्षर जीव खोल दिखलायो ॥
काया मन्दिर आप रमायो । ताते राम नाम धरवायो ॥
देह सँयोग राम कहलायो । चरणदास शुकदेव बतायो ॥

दोहा—सूरज चींटी आदि दै, लघु दीरघके माहिं ॥
सब में पोई आतमा, बाहर कोई नाहिं ॥
छोटे भांडे में करै, छोटाही परकाश ॥
बड़े जु भाँड़े में करै, ज्यादा होय उकाश ॥
ज्ञानवन्त कूं मैं दियो, दीपक को दृष्टान्त ॥
जो वह समझै चावसूं, मिटै तिमिर अरु भ्रान्त ॥
जैसेही है पिण्ड में, तैसेही ब्रह्मण्ड ॥
भीतर बाहर रमिरह्यो, सातद्वीप नवखण्ड ॥

आप लखेते वाकूं पावै । जो पै सद्गुरु भेद बतावै ॥
ज्ञान दृष्टि सेती दरशावै । आपामिटै ब्रह्मठहरावै ॥

ज्ञाता ज्ञान ज्ञेय जहँ नाहीं। ध्याताध्यानध्येयमिटि जाहीं ॥
जबहो एक दूसरा नासे। बन्ध मुकत के रहैं न सांसे ॥
मृतक अवस्था जीवत आवै। करमरहित अस्थिर गतिपावै ॥
तब कोइ मिन्तर वैरी नाहीं। पाप पुण्यकी परै न छाहीं ॥
हर्ष शोक सम होजा दोऊ। रक्षा करो कि मारो कोऊ ॥
कोऊ हाथमें भोजन देजा। कोऊ छीनकर योंहीं लेजा ॥
दोनों एकबराबर वाके। जग व्योहार कछूनाहिं जाके ॥
हरि विन और पिछान न कोई। तिनके इच्छा रही न दोई ॥
ज्ञान दिशा ऐसे करि गाई। चरणदास शुकदेव बताई ॥
दोहा—ज्ञान दिशा आवन कठिन, विरला जानै कोय ॥
ज्ञानदिशा जब जानिये, जीवत मृत्यक होय ॥

वाचक ज्ञानी।

वाचक ज्ञानी बहुतक देखे। लक्ष ज्ञानी कोइ लेखे लेखे ॥
ज्ञानी विगडे विषयी होई। कथै एक अरु चालै दोई ॥
बुरे करम औगुण चितलावै। भले करम गुण सब बिसरावै ॥
विषय वासना के रँगराता। झूँठ कपट छलबल मदमाता ॥
इन्द्री वश मन हाथ न आवै। पाप करनसों नाहिं डरावै ॥
ज्ञान कथै अरु वाद बढ़ावै। रहन गहनका भेद न पावै ॥
ब्रह्मवृत्तका आवन भारी। चरणदास शुकदेव विचारी ॥
दोहा—उनतीसौ लक्षण लिये, भक्त सहतहो ज्ञान ॥
ज्ञानदिशाअबआयहै, करै आतमाध्यान ॥

नवधाभक्ति।

भक्तिदिशाअबकहतहैं, विसरे आपाआप ॥
चरणदास यों कहतहैं, छूटै तीनों ताप ॥

अष्टपदी ।

नवधाभक्ति सँभारि अंग नौ जानिले । श्रवण चिंतन और कीर्त्तन मानिले ॥ सुमिरण वन्दन ध्यान और पूजा-करो । प्रभुसों प्रीति लगाय सुरति चरणन धरो ॥ होकरि दासहिभाव साध संगति रलो । भक्तनकी करे सेव यही मत है भलो ॥ आपा अर्पण देय धीर्य्य दृढ़ता गहौ । क्षमाशील सन्तोष दया धारेरहौ ॥ यह जो मैंने कहा वेदका फूल है । योग ज्ञान वैराग्य सवनका मूल है ॥ प्रेमाभक्तिका तात पात तीनौं नसैं । धर्म अर्थ काम मोक्ष सकल तामें वसैं ॥ जो राखै मनमाहिं विवेक विचारसों ॥ पावै पद निर्वाण वचै जग भारसों ॥ कहैं गुरु शुकदेव मयाके भावसों । चरणहिंदासा होय सुनौ वहुचावसों ॥ १२३ ॥

राग सोरठ वा गौरी वा आसावरी।

साधो नवधाभक्ति करोरे । कलियुगमें यह बड़ो पदारथ गहि गहि ताहि तरोरे ॥ जे जे यासों भये शिरोमणि तिनको नाम सुनाऊं । बढ़ै कथा विस्तार कहूँ तो याते सूक्षम गाऊं ॥ जन प्रहलाद तरो सुमिरणते वन्दनसोंअक्रूर । चरण कमलकी सेवासेती लक्ष्मी रहत हजूर ॥ चन्दन चर्चतहूं पृथुराजा उतरो भवजलपार । वलिराजा तन अर्पणकी न्हो सदा रहैं हरिद्वार ॥ परम दास हनुमतहू उवरो उत्तम पदवीपाई । सखा सुभाव तरो है अर्जुन ताकी महिमा गाई ॥ मुक्त भयो है परीक्षित राजा सुनि भागवत पुराना । श्रीशुकदेव मुनीसे वक्ता हुयेरूप भगवाना ॥ ज्ञान योग वैराग्य सवन सों प्रेम प्रीति है न्यारी । चरणदासने गुरुकिरपासों सांची वात विचारी ॥

प्रेमाभक्ति ।

दोहा—नवो अंगके साधतै, उपजै प्रेम अनूप ॥
रणजीता यों जानिये, सब धर्मनका भूप ॥

चौपाई ।

सब मत अधिकी प्रेम बतावैं । योग युगतसूं बडा दिखावैं ॥
प्रेमहिंसूं उपजै वैराग । प्रेमहिंसूं उपजै मन त्याग ॥
प्रेम भक्तिसूं उपजे ज्ञाना । होय चांदना मिटै अज्ञाना ॥
दुर्लभ प्रेमजु हाथ न आवै । हरि किरपा करि दे तौ पावे ॥
प्रेम प्रीतिके वश भगवाना । सकल शास्त्रकियेबखाना ॥
किसी भक्ति हिये प्रेमजुजागे । तो हरि दरशत रहै जु आगे ॥
प्रेमहिंसूं जगकूं उपजावे । निर्गुन सगुन होहो आवै ॥
सकल शिरोमणि प्रेमहि जानौ । चरणदास निहचै मन आनौ ॥

दोहा—प्रेम बराबर योग ना, प्रेम बराबर ज्ञान ॥
प्रेमभक्तिबिन साधिबो, सबही थोथाध्यान ॥
प्रेम छुटावै जगतकूं, प्रेम मिलावै राम ॥
प्रेम करै गति औरही, लैपहुँचै हरिधाम ॥

अष्टपदी ।

वह करै काग सूं हंसा । एकरहै पिया का संसा ॥
वह जात बरन कुलखोवै । अरु बीज बिरहका बोवै ॥
जो प्रेम तनक चित आवै । वह औगुण सबै नशावै ॥
प्रेमलता जब लहरै । मन बिना योगही बहरै ॥
कोई चतुर खिलारी खेलै । वह प्रेम पियाला झेलै ॥
जो धड़पै शीश न राखै । सोई प्रेम पियाला चाखै ॥
तन मन सूंजा बौराई । वह रहै ध्यान लौलाई ॥
वह पहुँचै हरिके पासा । यों कहै चरणही दासा ॥

दोहा–प्रेमीजन हरि आप हो, आपा निकसै नाहिं ॥
गुरु शुकदेव दिखावई, समझ देखि मनमाहिं ॥
हिरदे माहीं प्रेम जो, नैनों झलकै आय ॥
सोइ छका हरिरसपगा, वा पग परसो धाय ॥
गद्गद वाणी कंठमें, आंशू टपकैं नैन ॥
वहतौ विरहिनिरामकी, तलफत है दिनरैन ॥
हायहाय हरि कब मिलैं, छाती फाटीजाय ॥
ऐसा दिन कब होयगा, दर्शन करैं अघाय ॥
विनदर्शन कलनापड़ै, मनुआँ धरै न धीर ॥
चरणदासकीश्यामविन, कौन मिटावै पीर ॥
पीवविना तो जीवना, जगमें भारीजान ॥
पिया मिलै तौ जीवना, नहीं तौ छूटै प्रान ॥
मुख पियरो सूखै अधर, आँखैं खरी उदास ॥
आहजु निकसै दुखभरी, गहिरे लेत उसाँस ॥
वह विरहिनि बौरी भई, जानत ना कोइ भेद ॥
अगिनि बरै हियरा जरै, भये कलेजे छेद ॥
अपने वश वह नारही, फँसी विरह के जाल ॥
चरणदास रोवत रहै, सुमिरिसुमिरिगुणख्याल ॥
बातनको विरहा लगो, ज्यों घुन लागो दार ॥
दिनादिन पीरी होतहै, पिया न बूझै सार ॥
वैनाहिं बूझैं सारही, विरहिनि कौन हवाल ॥
जब सुधि आवै लालकी, चुभत कलेजे भाल ॥
पीव चहौ कै मत चहौ, वहतौ पीकीदास ॥
पियके रँग रातीरहै, जग सो होय उदास ॥

पीपीकरते दिन गया, रैनि गई पिय ध्यान ॥
विरहिनिके सहजै सधै, भक्तियोग अरु ज्ञान ॥
विरहिनि एकै रामविन, और न कोई मीत ॥
आठपहर साठौ घड़ी, पियामिलनकी चीत ॥
जापकरै तौ पीवका, ध्यान करै तौ पीव ॥
पीव विरहिका जीवहै, जी विरहिनिका पीव ॥

इति भक्तिपदार्थ सम्पूर्णम् ।

अथ चारौयुगवर्णन ।

सतयुग ।

कुंडलिया ॥ सतयुग सांचा बोलते, परमहंस को ध्यान । सतवादी सत राखते, सतनहिं देते जान ॥ सतनहिं देतेजान प्रान जोपै तजि देही । निश्चय होती मुक्ति दरशते राम सनेही ॥ शुकदेव कही चरणदास सो अवहीं सतयुग जान । सतबोलौ सतसों रहो सतकी गहिये आन ॥ १ ॥

त्रेता ।

त्रेतामें तपसाधते आसन संयम धार । पांचौ इन्द्री रोकते, जब मन जाताहार ॥ जब मन जाताहार खैंचि अनहदमें धरते । कै अपनोही इष्ट ध्यान ताहीको करते ॥ आप विसर्जन होय मुक्ति निश्चयकरि पाते । चरणदास शुकदेव तपस्या चाल दिखाते २ ॥

द्वापर ।

द्वापर पूजा वंदना, प्रेमसहित जो होय । कहा राजसी मानसी, पूजाकहिये दोय ॥ पूजा कहिये दोय जैसि जाके मन भावै । धरै नेम आचार अंतना चित्त डुलावै ॥ हितकरि पूजा कीजिये

द्वापरको यह भेव । चणदास निश्चय करौ कहिया श्री शुक-देव ॥ ३ ॥

कलियुग ।

कलियुग हरि गुण गाइये, गुणावादही सार । भजन करो मन मगन ह्वै, भय अरु सकुच निवार ॥ भय अरु सकुच निवार जातिकुल गर्वबहावो । साज बाज लै संग रामको गाय रिझावो ॥ कथा कीर्त्तन सों तरै कलियुगहीके माहिं ॥ शुकदेवकहि चरणदास सों तारौ गहि गहि बाहिं ॥ ४ ॥

इति चारौयुगवर्णन सम्पूर्णम् ।

अथ अंगवर्णन ।

नाममहिमा ।

दोहा–प्रणऊं श्री शुकदेव कूं, वाणी कहूं अगाध ॥
महिमा गाऊं नाम की, सबमिलिसुनियोसाध ॥
ज्योंकी त्योंहीं कहत हूं, कछू न राखूं भेद ॥
निश्चय आवै नाम की, छूटै सबही खेद ॥
जन्म मरण यमदंड के, गर्भ वासकी त्रास ॥
नाम रटे सबहीं छुटै, लख चौरासी गास ॥
कई बार जो यज्ञ करि, योग करै चितलाय ॥
चरणदासकहैंनामविन, सभी अफल ह्वै जाय ॥
अष्ट धातु में गुण नहीं, जो पारस के माहिं ॥
तप तीरथ व्रत साधना, राम नाम सम नाहिं ॥
ज्यों सेमरका सेवना, ज्यों लोभी का धर्म्म ॥
अन्न विना भुस कूटना, नाम विना यों कर्म्म ॥

छोड़ै सबहीं वासना, हो बैठै निष्काम ॥
चरणकमलमें चित धरै, सुमिरै रामहिं राम ॥
ऐसा हो जब संत हो, तब रीझै करतार ॥
दर्शन दे अपना करै, कभी न छोड़ै लार ॥
चार वेद किये व्यासने, अर्थ विचार विचार ॥
तामें निकसी भक्तिही, राम नाम ततसार ॥
जिनकहिया शुकदेवकूं, सुनिया प्रेम प्रतीति ॥
तिनजगमेंपरगट कियो, जैसी चहिये रीति ॥
ब्रह्महत्या अरु नारि की, बालक हत्या होय ॥
राम नाम जो मन बसै, सब कूं डारै खोय ॥
हियआवतजग दुख टरै, कंठ आय अघ जाय ॥
मुखसूं बोलै आयकरि, ताकी कौन चलाय ॥
ऐसाही हरिनामहीं, मोहिं रामकी सौंहिं ॥
जाकूं होवै परखही, सो समझै ह्यां लौंहिं ॥
विन समझे पातक नशैं, समझ जपै हो मुक्ति ॥
चरणदास यों कहत हैं, जो कोइ जानै युक्ति ॥
नामहिं लै जल पीजिये, नामहिं लेकर खाह ॥
नामहिं लेकरि बैठिये, नामहिं लै चल राह ॥
जबलग जागै राम कहु, तन मनसूं यहि चीत ॥
चरणदास यों कहतहैं, हरि बिन और न मीत ॥
तेरा तौ कोइ है नहीं, मात पिता सुत नार ॥
तातै सुमिरौ राम कूं, हे मन वारम्वार ॥
जिहिकारणभटकताफिरै, घरघर करतसलाम ॥
तेरे तो वे हैं नहीं, ये मन सुमिरौ राम ॥

जीवतही स्वारथ लगै, मूये देह जराय ॥
ऐ मन सुमिरो राम कूं, धोखे काहि पराय ॥
हाथी घोड़े धन घना, चन्द्रमुखी बहुनार ॥
नाम बिना यमलोकमें, पावे दुःख अपार ॥
जबलग जीवै रामकहु, रामहिं सेती नेह ॥
जीव मिलैगो राममें, पड़ी रहैगी देह ॥
अचरज साधन नामका, भक्तियोग का जीव ॥
जैसे दूध जमाय क,मथि करि काढ़ा घीव ॥
कुं०—आठ मास मुखसूं जपै, सोलह मास कँठजाप ॥
बत्तिसमास हिरदै जपै, तनमें रहै न पाप ॥
तनमें रहै न पाप, भक्ति का उपजै पौधा ॥
मन रुकजावै जहां, अपरबल कहियेयोधा ॥
शुकदेव कही चरणदास सूं, यही भेद ततसार ॥
बहुरू आवे नाभिमें, ताका कहूं बिचार ॥
दोहा—पांचबरष जप नाभिसों, रगरग बोलै राम ॥
देहजीव निज भक्तहो, पहुँचै हरिके धाम ॥
त्रिकुटी में जप रामकूं, जहां उजाला होय ॥
श्वासा माहीं जपते, द्विविधा रहै न कोय ॥
गगन मँडलमें जापकरि, जित है दशवांद्वार ॥
चरणदास यों कहत हैं, सो पहुँचै हरिवार ॥
नासा अग्रे जापकरि, देखै नूर अगाध ॥
बहुतकअचरजअरुखुलै, चरणदास कहेसाध ॥
नाम उठाकर नाभिसूं, गगन माहिं लैजाय ॥
जहां होय परकाशही, शुकदेव दिया बताय ॥

मनही मनमें जापकरि, दर्पण उज्ज्वल होय ॥
दर्शनहोवै रामका, तिमिरजाय सब खोय ॥
कूककूक कर नाम जप, छुटै सात अरु पांच ॥
जासों मन ठहरा रहै, चरणदास कहैं सांच ॥
सुरत माहिं जो जपकरै, तनसूं न्यारा जौन ॥
मिलै सच्चिदानन्द में, गहे रहै जो मौन ॥
सकल शिरोमणि नामहै, सब धर्मनके माहिं ॥
अनन्य भक्त वहि जानिये, सुमिरण भूलै नाहिं ॥
आन धरम मानै नहीं, आनदेव नहिं ध्यान ॥
ऐसे भक्त अनन्य कूं, कोई पावै जान ॥
पतिव्रता वह जानिये, आज्ञा करै न भंग ॥
पिय अपने के रँग रतै, और न सूनै ढंग ॥
अपने पियकूं सेइये, आन पुरुष तजिदेह ॥
पर घर नेह निवारिये, रहिये अपने गेह ॥
आज्ञाकारी पीवकी, रहै पियाके संग ॥
तन मनसूं सेवा करै, और न दूजो रंग ॥
रंग होय तौ पीवको, आन पुरुष विषरूप ॥
छाहँ बुरी परघरनकी, अपनी भलीजु धूप ॥
अपने घरका दुख भला, परघरका सुख छार ॥
ऐसे जानै कुलवधू, सो सतवन्ती नार ॥
पतिकी ओर निहारिये, औरनसे कह काम ॥
सबै देवता छोड़करि, जपिये हरिका नाम ॥
खसम तुम्हारो राम है, इत उतरुखमतमारि ॥
चरणदास यों कहतहैं, यही धारणा धारि ॥

यह शिर नवै तो रामकूं, नाहीं गिरियो टूट ॥
आनदेव नहिं परसिये, यह तन जावौ छूट ॥
पतिव्रता को व्रतगहो, व्यभिचारिणिअँगटार॥
पति पावे सब दुख नशैं, पावे सुक्ख अपार ॥
जब तू जाने पीवही, वह अपनौ करिलेइ ॥
परमधाममें राखिकरि, बाँह पकरि सुख देइ ॥
यही सिखापन देतहूं, धारो हिरदय माहिं ॥
ऐसा पौधा बोइये, ताकी बैठे छांहि ॥
सतवादी सतसूं रहो, सतही मुखसूं बोल ॥
एक ओर हरिनाम रख, एक ओर जग तोल ॥
सभी निचोरे कहतहूं, भक्ति करो निष्काम ॥
कोटि तपस्या यही है, मुखसूं कहिये राम ॥
रामनाम मुखसूं कहै, रामनाम सुन कान ॥
रोम रोम हरिकूं रटो, ऐसी गहिये बान ॥
विद्या माहीं वाद है, तपके माहीं ऋद्धि ॥
राम नाममें मुक्त है, योग माहिं यों सिद्धि ॥
ताते त्यागो वासना, राखो रामहिं नाम ॥
कोटिबन्ध छुटिजायँगे, पहुँचै हरिके धाम ॥
राम नाममें ये सबै, ऋद्धिसिद्धि औ मोक्ष॥
ऐसा इष्ट सँभारिये, चरणदास कहि सोक्ष ॥
जाका कीया सब बना, सात द्वीप नवखण्ड ॥
चरणदास यों कहत हैं, तीन लोक ब्रह्मण्ड ॥
तबकारणसबकुछकिया, नाना विधि सुख दीन ॥
तैं वाकूं जाना नहीं, नाम न कबहूँ लीन ॥

अबकेऔसरफिरिबन्यो, पाई मानुष देह ॥
चरणदास यों कहतहैं, राम नामहीं लेह ॥

राग केदारा ॥ सुनौ भाई नामकी महिमा । मुक्तिचारौं सिद्धिआठौं बसत हैं तहँमा ॥ वाल्मीक सो वनके वासी किये थे जिन पाप । भयोहै सब ऋषि शिरोमणि जपे उलटे जाप ॥ गणिकासी अति महापापी सो पढ़ावत कीर । नामके परताप-सेती कियो हरिपुरसीर ॥ अजामीलसे पतित कामी वेश्या सों रति कीन । चढ़ि विमानै गयो सुरपुर नाम सुत हित लीन ॥ और बहुतै पतित तारे गिने कापैजाहिं । दान जप तप योग संयम नामसमतुल नाहिं ॥ व्यास नारद शिव ब्रह्मादिक रटत जाकूं शेश । गुरुशुकदेव नामको चरण दासकूं उपदेश ॥

कवित्त ॥ नामके प्रताप नन्दलाल आप भयेप्रभु, नामके प्रताप सुत दशरथको कहायो है । नामके प्रताप पैज राखी प्रहलादजूकी, नामके प्रताप दौरो द्वारकासूं धायो है ॥ नामके प्रतापकी न महिमा मोपै कहीजात, नामके प्रताप सब सन्तन सहायो है । सोइ नाम वास अब आस लगो चरणदास, सोईनाम चारवेद विमल विमल गायो है ॥ नामकेप्रताप शवरी सुरनतें सरस करी, नामके प्रताप अधमलोककूं पठायो है । नामके प्रताप अजामलिकूं विमान आयो, नामके प्रताप गज-ग्राहसूं छुटायो है ॥ नामके प्रताप सब दीनन को दुखः हरो, नामको प्रताप शुकदेवजी दृढ़ायो है । सोई नाम वास अब आस लगो चरणदास, सोईनाम चारवेद विमल विमल गायो है ॥

पंचप्रेतवर्णन ।

दोहा—नामअंगमहिमाअधिक, मोपै कही न जाय ॥
पांच प्रेत अब कहतहूं, जाकूं सुनि चितलाय ॥

योग तपस्या भक्तिकूं, ज्ञान विगाड़न पांच ॥
जीवत दुखदै जगतमें, मुये नरक दै आंच ॥
काम क्रोध मोह लोभसे, और पांचवाँ गर्व्व ॥
राज करै वसुधा विषे, इन वश कीने सर्व्व ॥

कामवर्णन ।

काम बली वर्णन करूं, जिन मारे बलवन्त ॥
जाका बकसी नारि है, जीते गुणी महन्त ॥

नारीवर्णन ।

रागसोरठ ॥ साधो नारि सबलरे भाई । नहिं मानै राम दुहाई ॥ बांदर ज्यों पकरि नचावे । हरिजी सूं नेह छुटावे ॥ दया धर्म सब खोवै । जब नैन कजल भरिजोवै ॥ जिनका चितचोरा रांड़ी । तिनकी जग थू थू भांड़ी ॥उन सबही सरवस खोया । नरशीश पकरि करि रोया ॥ जनम पदारथ छीना । स्याहीका टीका दीना ॥ दोनों मुखसों खाया । फिर फिरकै गरभ दिखाया ॥ कामकटक मैं सूरी । वह साँवत कहिये पूरी॥ बड़े बड़े योधा मारे । अरु बहुतक शूर पछारे । गुरु शुकदेव बतावै । बटमारन तोहिं दिखावै ॥ चरणदास यह जानो । तुम छलबल कला पिछानो ॥

नारी नेहरि सुमरण सूं खोये । राजा परजा मुंडत चुंडत नैनकटाक्षन मोहे ॥ राती चूनर चटक मटकले भूषण काजल साधे । मुख मुसकावै मधुरी वानी प्यार प्रीत कर बांधे ॥ बहुतनको उन योग छुटायो बहुतनका तप छीनों । बहुतनकी उन भक्ति बिगारी अंग विषय रस दीन्हों ॥ बहुवां करि बहुनाच-नचायो फंदा मोह लगायो । याते सावधानही रहियो मैं तुम

कूं समुझायो ॥ गुरु शुकदेव बतावै साधो निश्चय ठगिनी जानौ । चरणदास कहैं हाथ न आवो नीकै ताहि पिछानौ ॥

साधौ पर तिरिया सूं डरियो ॥ जाके दरश परशके कीये जीवत नरकमें परियो ॥ गौतम घरनी सुन्दरि सुनिकै इन्द्रासन तजि आयो । जो गति भई जगत में जानी भलौ कलंक लगायो ॥ शृङ्गीऋषि वनमें तप कीन्हों सुरपति देखि डरायो। रंभा भजि हरो सत जाको सबही सेज सिरायो ॥ देवत देवत नर जो हूये नारी देख लुभाये । ताको फल ऐसोही पायो अजहूं कुयश सुनाये ॥ चरणदास शुकदेव गुरूने दे उपदेश बचाये । यती सती कोइ हाथ न आयो कामी पकरि नचाये ॥

अरे नर परनारी मत तकरे । जिन जिन ओर तको डायनकी बहुतनकूं गई भखरे ॥ दूध आकको पात कटइया झाल अँगनकी जानौ । सिंह मुछारे विषकारेको ऐसे ताहि पिछानौ ॥ खानि नरककी अति दुख दाई चौरासी भरमावै । जनम जनमकूं दाग लगावै हरिगुरु तुरत छुटावै ॥ जगमें फिरि फिरि महिमा खोवै राखै तन मन मैला । चरणदास शुकदेव चितावै सुमिरो राम सुहेला ॥

दोहा—नरनारी सब चेतियो, दीन्हो प्रगट दिखाय ॥
पर तिरिया पर पुरुषहो, भोग नरकको जाय ॥
पर नारी कै आपनी, दोनों बुरी बलाय ॥
घर बाहरकी आग ज्यों, देवै हाथ जलाय ॥

कामजीतन उपाय ।

चटकमटकसब छोड़दे, देही रूप बिगार ॥
देख न कोई रीझि हैं, ना होवै लगवार ॥

यही ढाल है जस्तकी, लगै न शस्तर काम ॥
आठ अंग हैं कामके, तासूं रहु निष्काम ॥
कामकानमें आय करि, फिर आवत है नैन ॥
बहुरि हियेमें आय करि, लगै बहुत दुख दैन ॥

वह काम बुरारे भाई । सब देवै तन बौराई ॥
पंचों में नाक कटावै । वह जूती मार दिलावै ॥
मुहँ काला गधे चढ़ावै । बहुलोग तमाशे आवैं ॥
झिड़का ज्यों डोलै कूता । सबहीके मनसूं ऊता ॥
कोई नीके मुख नहिं बोलै । शरमिंदा हो जग में डोलै ॥
वह जीवत नरकमँझारी । सुन चेतो नर अरु नारी ॥
काम अंग तजि दीजै । सतसंगतिही करि लीजै ॥
कहैं चरण हीं दासा । हरि भक्तन में करवासा ॥

दोहा—तन मन जारै कामहीं, चित करै डावाँडोल ॥
धरमकरम सब खोयकै, रहै आप हिय खोल ॥

वह दया क्षमा को मारै । जत सतको पकरिपछारै ॥
शुचि नेमको दूरि कढ़ावै । मुख ऊपर धूरि उड़ावै ॥
जग भीतर महिमा खोवै । पापों की मालापोवै ॥
वह धीरज नाहीं राखै । वह मुख सों झूठी भाखै ॥
वह चाल चलै विपरीता । करि विषय भोगकी चीता ॥
काम बली जहँ आवै । अरु बहुतक औगुण लावै ॥
यह मैनखोर कापूरा । कोइ जीतै गुरुमुख शूरा ॥
साधु भक्त वही गुनियां । जिन काम दृष्टिको हनियां ॥
चेत कही शुकदेवा । सब चरणदास सुनिलेवा ॥

दोहा—सुनिकै जो चितमें धरै, फेरि चलै वहचाल ॥
खाँड़ा पकरै शलिका, काम हनै ततकाल ॥

अथ क्रोधअंग ।

दोहा—क्रोध महा चण्डाल है, जानत है सब कोय ॥
जाके अँग वर्णनकरूं, सुनियो सुरति समोय ॥

क्रोधभूतके चरित सुनाऊं । भिन्न भिन्न परगटदिखलाऊं ॥
क्रोध भूत जब तापर आवै । तन मनकी सब सुधि बिसरावै ॥
नैना लाल वदन सब कारो । रोम रोम व्यापै हत्यारो ॥
महा चण्डाल नीच अतिघोरी । अति विपरीत बुद्धिकरि औरी ॥
अपने हाथ आपको मारै । अपने कपड़े आपहि फारै ॥
मुहरे झाग मरोड़ै हाथा । कहै वहकेती फूहर बाता ॥
हाफै बहुत आपको गाली । जेंवत आवै पटकै थाली ॥
कबहुँ शस्त्रसों मारन लागै । कबहूं कुंये पड़ने भागै ॥
भलीकहै ताहि भोग सुनावै । बुरे भलेपर ईंट चलावै ॥
सबल देख शीला होजावै । निबल देख बहु दुन्दि मचावै ॥
याका यतन करो मनभावै । चरणदास शुकदेव बतावै ॥

दोहा—जिहि घट आवै धूमसूं, करै बहुतही खार ॥
पतिखोवै बुधिकूं हनै, कहा पुरुष कह नारि ॥

वह बुद्धि भ्रष्ट करिडारै । वह मारहि मार पुकारै ॥
वह सब तन हिंसा छावै । कहिं दया न रहने पावै ॥
वह गुरुसे बोलै वेंडा । साधों सूं डोलै ऐंड़ा ॥
वह हरिसूं नेह छुटावै । वह नरक माहिं लेजावै ॥
वह आतमघाती जानौ । वह महा मूढ़ पहिचानौ ॥
सोंटोंकी मार दिलावै । कबहूं कै शीश कटावै ॥

वह नीच कमीना कहिये । ऐसे सूं डरता रहिये ॥
वह निकट न आवन दीजै । अरु क्षमा अंकभर लीजै ॥
जब क्षमा आय किया थाना । तब सबही क्रोध हिराना ॥
कहैं गुरु शुकदेव खिलारी । सुनु चरणदास उपकारी ॥

अथ मोहअंग ।

दोहा—क्रोध अंग पूरो कियो, कहूं मोहका अङ्ग ॥
जाहि लगे दुखदे घना, कबहूं छोड़ै सङ्ग ॥
माया मोह बिछाइया, जाल सँभारि सँभारि ॥
आय आय तामें फँसे, बहुत पुरुष बहुनारि ॥
फँसे आय करि चावसूं, लेन गया नहिं कोय ॥
चरणदास यों कहत हैं, पछिताये कह होय ॥
छूटि सकै नाहिं जालसूं, मिरगा ज्यों अकुलाय ॥
कूद कूद निकसो चहै, ज्यों ज्यों उरझतजाय ॥
मोह शहतसम जानिये, मक्खी सम जियजान ॥
लालच लागे जितफँसे, शीश धुनैं अज्ञान ॥
बन्दीखानो भवन है, सब दिन धंधे जार ॥
मोह छुटावै रामसूं, डारै नरक मँझार ॥
लख चौरासी योनिमें, फिर वह भरमें जाय ॥
हाँसे निकसै कठिनसूं, कबहूं औसर पाय ॥

तिरिया मोह महा बलदाई । मोह संतान सदा दुखदाई ॥
मोह कुटुंब अरु भाई बंधा । समझै नहीं मूढ़ मति अंधा ॥
देव भूत जिहि कारण धावै । ठग चोरी करि खोट कमावै ॥
बस्तर भूषण वाहन मोहा । सबमिलिकियाजीवसूंद्रोहा ॥
द्रव्य लाल अरु हीरा मोती । सब मिलि मोह लगावैंगोती ॥

मोह महल धरती अरु गाऊं । बड़ा मोह जो अपना नाऊं ॥
जामें फँसे रंक अरु राजा । तिहिवारण धंधा दुखसाजा ॥
परकाजैं वहुतै दुखपाया । अपना सबही मूल गवाँया ॥
बड़े बड़े खेद उठाये सबहीं । भूले ध्यान रामका जबहीं ॥
जीते मोह शूरिमा कोई । मिलै रामकूं साधू सोई ॥
होय मुक्ति जग बहुरि न आवै । चरणदास शुकदेव बतावै ॥

मोहनिवारण उपाय ।

दोहा—मोह बड़ा दुख रूपहै, ताकूं मार निकास ॥
प्रीति जगतकी छोंड़दे, जब होवै निरवास ॥
जग माहीं ऐसे रहो, ज्यों जिह्वा मुखमाहिं ॥
घीव घना भक्षण करै, तौभी चिकनी नाहिं ॥
जगमाहीं ऐसे रहो, ज्योंअम्बुजशर माहिं ॥
रहै नीर के आसरे, पै जल छूवत नाहिं ॥
ऐसा हो जो साधु हो, लिये रहै वैराग ॥
चरणकमलमों चितधरै, जगमें रहै न पाग ॥
मोहबली सबसूं अधिक, महिमा कही न जाय ॥
जाको बांधो जग सबै, छूटै ना बौराय ॥

अथ लोभअंग ।

दोहा—लोभ नीच वर्णन करूं, महापापकी खान ॥
मंत्री जाका झूठ है, बहुत अधर्मी जान ॥
तृष्णा जाकी जोय है, सो अंधा करि देय ॥
घटी बढ़ी सूझै नहीं, नहीं कालका भेय ॥
दम्भमकरछलभगलजो, रहत लोभके संग ॥
मुये नरक लै जायँगे, जीवत करैं उदंग ॥

दे हैं धर्म छुटाय हो, आन धर्म लेजाय ॥
हरि गुरु ते वेमुख करैं, लालच लोभ लगाय ॥
चहूँ देश भरमत फिरै, कलह कलपना साथ ॥
लोभ कंज उठउठ लगैं, दोउ पसारे हाथ ॥
लोभी भक्तहोय नहिं कबहीं । साधु पुराण कहतहैं सबहीं ॥
लोभी सती न होवै शूरा । लोभी दाता सन्त न पूरा ॥
लोभी हितू न होवे सांचा । लोभी रहै जगतमें राचा ॥
लोभी रहै द्रव्य के माहीं । तन छूटै पै निकसै नाहीं ॥
लोभी करै जीवकी घाता । लोभी करै कपटकी वाता ॥
लोभी पाप न करता डरै । लोभी जाय कष्टमें परै ॥
लोभी बेंचै अपना सीसा । लोभी डूबै बिसवैबीसा ॥
गुरु शुकदेव बतावै हमकूं । सो वह कथा कही मैं तुमकूं ॥
चरणदास कहैं लोभ न कीजै । हरिके पदपंकज मन दीजै ॥
दोहा—चींटी बांदर खगन कूं, लोभ बहुत दुख दीन ॥
याकूं तजि हरिकूं भजै, चरणदास परवीन ॥
लोभ घटावै मानकूं, करै जगत आधीन ॥
बोझघटा भिष्टल करै, करै बुद्धिको हीन ॥
लोभ गये ते आवई, महाबली संतोष ॥
त्याग सत्यकूं संगले, कलहनिवारणशोक ॥
घट आवै सन्तोषही, काह चहै जग भोग ॥
स्वर्गआदिलौं सुखजिते, सबकूं जानै रोग ॥
संतोषी निरमल दिशा, रहै राम लवलाय ॥
आसन ऊपर दृढ़रहै, इत उतकूं नहिं जाय ॥
काहूसे नहिं राखिये, काहूविधि को चाह ॥

परम संतोषी हूजिये, रहियें वेपरवाह ॥
चाह जगतकी दासहै, हरि अपना न करै ॥
चरणदास यों कहतहैं, व्याधा नाहिं टरै ॥

अथ अभिमानअंग ।

दोहा—चारअंग पूरे किये, कहूं गर्व गुण गाय ॥
वहुत सिकंडी मारिया, शिरपर छत्र फिराय ॥
अभिमानीचढ़िकरिगिरे, गये वासनामाहिं ॥
चौरासी भरमत भये, क्योंहीं निकसै नाहिं ॥
अभिमानी मीजेगये, लूट लिये धनवाम ॥
निर अभिमानी ढेचले, पहुँचे हरिके धाम ॥
चरणदास कहैआपाथपै, गिनै आपको पाँच ॥
मान वड़ाई कारने, सहैं जगतकी आँच ॥
करै वड़ाई कारने, परपंची छल धूत ॥
अभिमानी फूले फिरैं, ज्यों मर्कटका भूत ॥
अभिमानीकी मुक्ति न होई । अभिमानी मति अपनी खोई ॥
ऐंठ अकड़ अभिमानी माहीं । अभिमानी नीचा हो नाहीं ॥
विन नान्हापन सुखनहिं पावै । आनँद पदकूं कैसे जावै ॥
झूठकपट अभिमानी खेलै । कंचन वर्तन माटी मेलै ॥
भगली दंभ नितहि मन माहीं । निकट सांचभू आवै नाहीं ॥
हूं हूं हूं करताही डोलै । काहूते सीधा नहिं बोलै ॥
इन लक्षण जीवत दुख पावै । नरक माहिं तन छूटे जावै ॥
चरणदास शुकदेव वतावै । पूरासो अभिमान नशावै ॥
दोहा—चरणदास यों कहतहैं, सुनियो सन्त सुजान ॥
मुक्तिमूल आधीनता, नरकमूल अभिमान ॥

रूपवन्त गरवावै । कोइ मोसम दृष्टि न आवै ॥
तरुणापा गरवाना । वह अँधरा होवै राना ॥
कहै धन मधिमें परवीना । सब मेरेहो आधीना ॥
कहै कुल अभिमानीसूचा । मैं सब जातिनमें ऊंचा ॥
वह विद्या गर्व जु भारी । करै वाद विवाद अनारी ॥
अरु भूप करै अभिमाना । उन आपैही कूं जाना ॥
उन काल नहीं पहिंचाना । सो मार करै घमसाना ॥
गुरु शुकदेव चितावै । तोहिं परगट नैन दिखावै ॥
यम बाँधि पकरि लैजावैं । वै वहुतै त्रास दिखावैं ॥
जब कहाजाय अभिमाना । मेरा नीका सुन यह ताना ॥
फिर डारै नरक मँझारी । सुनि चेतौ नर अरु नारी ॥
तौ मद मत्सरता तजि दीजै । साधोंके चरण गहीजै ॥
हरिभक्ति करौ चितलाई । जब सकल व्याधि छुटिजाई ॥
कर जाति वरणकुल दूरा । हो सतसंगतिमें पूरा ॥
जब मुक्तधामकूं पावै । फिर गर्व जौन नहिं आवै ॥
कहैं गुरु शुकदेव बखानौ । यह चरणदासमत आनौ ॥

दोहा—मनमें लाय विचारिकूं, दीजै गर्व निकार ॥
नान्हापन सब आयहैं, छूटै सकल विकार ॥
पांचो उतरैं भूत जब, ह्वैहो ब्रह्म अरूप ॥
आनँद पदकूं पायहो, जित है मुक्तस्वरूप ॥
पांच प्रेत जो ये कहे, सद्गुरुके परताप ॥
शील अंग अब कहतहूं, जासूं छूटै पाप ॥

इति पंचप्रेतवर्णन ।

अथ पंचप्रेतनिवारणमन्त्र ।

शीलअंगवर्णन ।

दोहा—अब मैं गाऊं शीलकूं, येहो सन्त सुजान ॥
नर नारी सबही सुनौ, दैदै चित बुधि कान ॥
रूपगुणी कुलवंत जो, अरु होवै धनवंत ॥
शील बीस शोभा नहीं, भिष्टै नरक पड़ंत ॥
शील विना जो तपकरै, करै शील विनदान ॥
योगयुक्तिकरैशीलविन, सो कहिये अज्ञान ॥
शील बड़ोही योगहै, जोकर जानै कोय ॥
शीलविहीनौचरणदास, कबहुँ मुक्ति नहिंहोय ॥
सब शुभ लक्षणतो विषे, शील न आया एक ॥
जप तपनिर्फल जाहिंगे, चरणहिं दास विवेक ॥
पूजा संयम नेम जो, यज्ञ करै चितलाय ॥
चरणदासकहैशीलविन, सभी अकारथजाय ॥
सोइ सती सोइ शूरमा, सोइ दाता अधिकाय ॥
शील लिये नितही रहै, तौ निर्फल नहिं जाय ॥
शीलअंग ऊंचोअधिक, उनतीसों के बीच ॥
जाघट शील नआइया, सो घट कहिये नीच ॥
शील न उपजै खेत में, शील न हाट बिकाय ॥
जोहो पूरा टेक का, लेवै अँग उपजाय ॥
शील विना नरकै परै, शील विना यम दंड ॥
शीलविनाभरमत फिरै, सात द्वीप नौ खंड ॥
शीलविनाभटकतफिरै, चौरासीके माहिं ॥

पहिले होवै प्रेतही, यामें संशय नाहिं ॥
सब तजि सेवो शीलकूं, राम नाम लौलाय ॥
जीवत शोभा जगत में, मुये मुक्ति ह्वै जाय ॥
जाको शील सुभाव है, जाकी दूर बलाय ॥
ताकी कीरति जगत में, सुनहो कान लगाय ॥
शील रहेते सब रहैं, जेते हैं शुभ अंग ॥
ज्योंराजा के रहेते, रहै फौज को संग ॥
सत्यगया तौ क्या रहा, शील गया सब झाड़ ॥
भक्ति खेत कैसे बचै, टूटगई जब बाड़ ॥
ज्वानीशील न राखिया, बिगड़ गई सब देह ॥
अब पछितावाक्या करै, मुखपर उड़िया खेह ॥
शील गये शोभा घटै, या दुनियाके माहिं ॥
कूकरज्योंझिड़क्योंफिरै, कहींभी आदर नाहिं ॥
शील गये गुरुसूं फिरै, हरिसों बेमुख होय ॥
चरणदास कहँ लौं कहैं, सर्वस डारै खोय ॥
धिक जीवन संसार में, ताको शील नशाय ॥
जगमें फिर फिर होत है, मुये ताचना पाय ॥
शील कसैला आँवला, और बड़ों के बोल ॥
पाछे देवै स्वाद वै, चरणदास कहि खोल ॥
शील निरोगा नींबसा, औगुण डारै खोय ॥
पहिले करुवा दुख लगै, पाछे गुण सुख होय ॥
लाख यही उपदेश है, एक शीलकूं राख ॥
जन्मसुधारोहरि मिलौ, चरणदासकी साख ॥
शीलवंतके चरण का, जो चरणोदक लेय ॥

रोगदोपमिटिजायँ सब, रहै न यमका भय ॥
आठ अंगसूं शीलही, जाघट माहीं होय ॥
चरणदास यों कहत हैं, दुर्लभ दर्शन सोय ॥
शीलवंत दर्शन बड़े, देखत पातक जाय ॥
वचन सुनै मन शुद्ध हो, खोटी दृष्टि सिराय ॥
शीलसरोवरन्हाय करि, करौ राम की सेव ॥
यासम तीरथ और ना, कहिया गुरु शुकदेव ॥
शील अंग पूरो कियो, महिमा अधिकअपार ॥
दया अंग वर्णन करूं, समझै छुटै विकार ॥

अथ दयाअंगवर्णन।

दोहा—परमारथमें दया बड़, जो घट उपजै आय ॥
परगट हो निर्वैरता, कर्म गाँठि खुल जाय ॥
स्थावर जंगम चरअचर, या जगमें हो कोय ॥
सबही पै हित राखिये, सुखदानीही होय ॥
भोजनकरौसँभालकरि, पानी पीजौ छान ॥
हरावृक्ष नहिं तोड़िये, कर्म बचै यों जान ॥
औरौ बहुत विचारि ले, जासें लगै न कर्म ॥
यही तपस्या जानिये, यही दया यहि धर्म ॥
इक इन्द्री दो इन्द्रियां, ती- इन्द्री अरु चार ॥
पंच इन्द्री लौं जीवकी, हिंसा अकस निवार ॥
खावै वस्तु विचारि कै, बैठै ठौर विचार ॥
जोकुछकरैविचारिकरि, किरिया यही अचार ॥
मन सों रहु निर्वैरता, मुख सूं मीठा बोल ॥
तन सूं रक्षा जीव की, चरणदास कहि खोल ॥

करुवा वचन न बोलिये, तन सूं कष्ट न देहु ॥
अपनासा जो जानि कै, बनै तौ दुख हरि लेहु ॥
मुख सूं जो करुवा कहै, तन सूं देवै कष्ट ॥
यही जु हिंसा जानिये, दया धर्मजा नष्ट ॥
दश इन्द्री मन ग्यारवाँ, करि विचारि ले जान ॥
इनहीं सूं सुख दीजिये, चरणदास पहिंचान ॥
काहू दुख नहिं दीजिये, दुर्जन हो कै मीत ॥
सुखदाई सब जगत को, गहो दयाकी रीत ॥
कोमलता पर पीरता, सज्जनता निर्दोष ॥
सभी दया के अंग हैं, इन ते पावै मोष ॥
दया ज्ञान का मूल है, दया भक्ति का जीव ॥
चरणदासयों कहत हैं, दया मिलावै पीव ॥
दया नहीं तो कुछ नहीं, सबही थोथी बात ॥
बाहर कथनी सोहनी, भीतर लागी घात ॥
छापे तिलक बनायकै, माला पहिरी दोय ॥
दया बिना बकसम वही, साधरूप नहिं होय ॥
दया न आई घट विषे, हीया बड़ा कठोर ॥
यह नगरी कैसे बसै, तामें हिंसा चोर ॥
पँडिताई बहुतै करी, दया न राखी जीव ॥
छाँछि छाँछि तौ लैलई, डारि दिया तत घीव ॥
तोहिं पण्डित मैंकहकहूँ, मूरखकै परवीन ॥
लिया न तैं मत सूपका, चलनीका मत लीन ॥
दया गहेते सब नशैं, पाप ताप दुख द्वन्द्व ॥
ऐसी परम पुनीतकूं, तजै सो मूरख अन्ध ॥

दया विना नर पतित है, दया विना नर दुष्ट ॥
दया विना सुनवत बने, सबही थोथी गुष्ट ॥
जन्म मरण छूटै नहीं, नाहीं कर्म्म नशाहिं ॥
दया विना वदला भरै, चौरासीके माहिं ॥
काम क्रोध मोह लोभसे, गर्व आदि भजिजाहिं ॥
चरणदास कहैंदया जो, घटमें पहुँचे आहिं ॥
जितने वैरी जीवके, तनमें रहैं न एक ॥
चरणदास यों कहतहैं, दया जो आवै नेक ॥
दुख भाजैं सुख हों घने, काया नगरी ढंग ॥
हिंसा रानी जो भजे, लेकर अपनो संग ॥
धन्य दया धनि शीलकूं, जिनसे रीझे राम ॥
गुरु शुकदेव वतावई, सबही सुधरै काम ॥

इति दयाका अंग सम्पूर्णम्।

अथ मायारूपवर्णन।

राग भैरव।

बैठा गुरुसूं चलता चेला। सुखी होय रहै रैन अकेला ॥
दया क्षमा रख राम सुहाती। बातकहैं करुवी न हिताती ॥
विन जांचे उपदेश न दीजै। तरकी सूं चर्चा नहिं कीजै ॥
मौन गहै थोरासा बोले। पलक न मिलै नैन रहै खोले ॥
दृष्टिराख नासाके आगे। सत्य वचन मीठा मुख भाषे ॥
रसना उलट अकाश चढ़ावै। विनहीं बादल जल बरसावै ॥

पवन साधि मनकूं ठहरावे । कामिनि कनकरूप विसरावै ॥
आसन अडिग सुरत अनहदमें । अन्तर खोलमिलै नहिं जगमें ॥
चरणदास शुकदेव वतावे । ऐसा होय महन्त कहावै ॥

दोहा—जो बोलै तौ हरिकथा, मौन गहै तौ ध्यान ॥
चरणदास यह धारणा, धरै सो सज्ञान ॥
मायाकी अस्तुति करूं, होय रही संसार ॥
अद्भुत लीला कर रही, शोभा अगम अपार ॥
माया सकल पसार है, नाना रँग वहु क्रान्ति ॥
जहँलग यह आकारही, चंचल मिथ्या भ्रान्ति ॥
जैसे सुपना रैनका, मुख दर्पणके माहिं ॥
भासै है पर है नहीं, ज्यों तरुवरकी छाहिं ॥

यह माया सबकूं मोहै । वश होय न ऐसा कोहै ॥
यह वहुत सोहनी लागे । सवही नर नारी पागे ॥
कहिं चमक दमक वहुरूपा । अरु कहीं रंक कहिं भूपा ॥
अरु जहँ तहँ वहुत तमासे । वह भाँतिभाँतिही भासे ॥
अरु जहँ लग सकल सवादा । कोइ करै जु वाद विवादा ॥
अरु काम क्रोध मद लोभा । अरु मान बड़ाई शोभा ॥
अरु पाचौ इन्द्री जानौ । सव मायारूप पिछानौ ॥
अरु पांच तत्त्व गुण तीनौ । सो मायाही कूं चीन्हौ ॥
वह मकर पेच छल जानै । अरु पहर पहर वहुवानै ॥
गुरु शुकदेव जनावे । सव माया खेल दिखावे ॥

दोहा—जेते सुख संसार के, सवही माया जार ॥
तामें दो कणका धरे, एक द्रव्य इक नार ॥

लालच लागे चावसूं, गिरे आयकरि लोय ॥
फँसे आपसूं आपही, गहिनहिं लाया कोय ॥
पांचौ इन्द्री सों लखै, सो माया आकार ॥
याहीसेती सब भयो, जहँ लग है साकार ॥

अरु मायारूप अनन्ता । कोइ जानै साधूसन्ता ॥
कहा सुना अरु देखा । सब माया रूप विशेखा ॥
आठ सिद्ध नौ[1] माया । जहँ योगी तपी भुलाया ॥
अरु माया फंदे माहीं । सब जीव आइ फँसि जाहीं ॥
वे नरक माहिं दुख पावैं । यम वपु मन त्रास दिखावैं ॥
फिर भुगते लख चौरासी । वे गरभ योनिके वासी ॥
वे पशू देह धरि धावैं । नहिं मुक्ति ठिकाना पावैं ॥
चरणदास कहैं नर चेतौ । तजौ मायाहीसूं हेतौ ॥

दोहा—जगत वासना के तजे । मायाकी न वसाय ॥
करमछुटैमिटि जीवता, मुक्त रूपहो जाय ॥

इंद्रीवर्णन—(मन.)

फँसे न इन्द्री स्वाद में, चरणकमल में ध्यान ॥
पर आशा कोइ न रहै, लगै न माया बान ॥
सबमें अधिकी ज्ञानहै, तासे ऊंचो ध्यान ॥
ध्यान मिलावै पीवकूं, पावै पद निरवान ॥
ध्याता ध्येय कैसे मिलै, होय न विचमें ध्यान ॥
तीनौ एकहुये विना, लहै न पद निरवान ॥
इन्द्रिन के वशमन रहै, मनके वश रहै वुद्ध ॥
कहौ ध्यान कैसे लगै, ऐसा जहां विरुद्ध ॥

---

[1] नौ निधि ।

जित जित इन्द्री जातहैं, तितमनकूं लेजात ॥
बुधिभी संगहि जातहै, यह निश्चयकर बात ॥
जित इन्द्री मनहूं गया, रही कहांसूं बुद्धि ॥
चरणदास यों कहतहैं, करिदेखो तुम शुद्धि ॥
इन्द्री मनके वशकरै, मनकर बुधिके संग ॥
बुधिराखै हरि पद जहां, लागै ध्यान अभंग ॥
इन्द्री मन मिल होतहै, विषय वासना चाह ॥
उपजै जैसे कामही, नारी मिल अरु नाह ॥
न्यारे न्यारे ततरहैं, होत न कछू उपाध ॥
जुदे राखमन इन्द्रियन, गुरुगम साधन साध ॥
इन्द्रिनसूं मन जुदाकरि, सुरतनिरतकरि शोध ॥
उपजैना विष वासना, चरणदास कर बोध ॥
इन्द्री रोकेते रुकै, और यतन नहिं कोय ॥
मन चंचल रिझवारहै, रसक सवादी होय ॥
चलौकरे थिर नारहै, कोटि यतनकरि राख ॥
यह जबहीं वश होयगा, इन्द्रिनके रसनाख ॥
न्यारे न्यारे चहतहैं, अपने अपने स्वाद ॥
इन पांचोमें प्रीतिहै, कछू न वाद विवाद ॥
दुर्जनके फूटे विना, तेरी होय न जीत ॥
चरणहिदासविचारिकरि, ऐसी कहिये रीत ॥
जुदी जुदी पांचौ कह, एक एकका भेद ॥
जो कोइ इनकूं वशकरै, सबही छूटै खेद ॥

नेत्रइन्द्री ॥

यह इन्द्री आँख विचारो । सोदेत महादुख भारो ॥

वह रागद्वेष उपजावै। अरु हरष शोक लै आवै ॥
सो रूप माहिं फँसिजावै। तन मनमें व्याधि उठावै ॥
वह देह औरके हाथा। करि डारै बहुत अनाथा ॥
वह फंदे माहीं डारै। अरु काम अगिनि में जारै ॥
यह डोलै दौरी दौरी। करचित बुधिकी गति औरी ॥
कोइ साधु शूरमा मोड़ै। जग सेती नैना तोड़ै ॥
कहैं चरणदास सुनिलीजै। कछुयाका यतन करीजै ॥

दोहा–दीपकत्रिया निहारि करि, गिरै पतंग ज्यों जाय ॥
कछू हाथ आवै नहीं, उलटो आप जराय ॥

उन तन मन सभी जराया। कछु भोंदू हाथ न आया ॥
अरु विषय वासना फैला। जब छुटा राम का गैला ॥
तौ मुक्ति कहां सों होई। दिया जन्म पदारथ खोई ॥
अब क्या शिर मारै कोई। घरही में दुर्जन सोई ॥
यह दृष्टि सदा की वैरी। जो सुरत बिगारै तेरी ॥
वह मायामोह लगावै। अरु चौरासी भरमावै ॥
शरम सकुच सब खोवै। अरु बींज कुबुधि का बोवै ॥
यह ठग चोरीकी बानी। अरु जार करम अगवानी ॥
यह पानप सभी घटावै। यमपुर के त्रास दिखावै ॥
कहैं गुरू शुकदेवा। ये आँख महादुख देवा ॥

दोहा–ऐसी इन्द्री आँखकी, सो अपनी नहिं होय ॥
गुरु शुकदेव बतावई, चरणदास सुन लोय ॥
दर्शन कीजै साधुका, कै गुरुका कर लोय ॥
जहँ तहँ ब्रह्महिं देखिये, दुविधा दुर्मति खोय ॥

वैरी मितर एक सा, एकै रूपक रूप ॥
ऐसी होवै दृष्टिही, जब समझै मन भूप ॥

श्रवणइन्द्री ।

सुन दूजे इन्द्रीकाना । सो गुरु परतापै जाना ॥
जब सुनै कामरसरीता । तब भूलै पढ़ सुन गीता ॥
मन उपजे कामतरंगा । तब होत ध्यानमें भंगा ॥
फिर लोभ वचन सुन औरै । जब तृष्णा चहुँदिशि दौरै ॥
कहि द्रव्यहाथ लगि जावै । यों शोचि शोचि दुख पावै ॥
कहे ठग चोरीकर लाऊं । कहिं गड़ा दवाहो पाऊं ॥
काहू सुनै जु दौलत वंधा । मनहीं मन रोवै अंधा ॥
यों उपजैं अधिकी लोभा । जब बढ़ै पापकी गोभा ॥
कहैं चरणहिंदास विचारी । सुन चेतौ नर अरु नारी ॥
फिर सुनै बड़ाई कुलकी । जब पुलक हसतहै मुलकी ॥
जो अपनी सुनै बड़ाई । जब अकहुंहोत अकड़ाई ॥
फिर करन बड़ाई लागै । सोता ज्यों कूकर जागै ॥
जब उपजै बहु अभिमाना । अरु नेक न होवैं हाना ॥
परनिन्दा बहुत सुहावै । नहिं और बड़ाई भावै ॥
अहंकार बढ़ा मन माहीं । आधीन विना गति नाहीं ॥
सुनि उपजै तामस अंगा । जब करै बहुतही दंगा ॥
मन क्रोध रूपहो जावै । उठ उठकर मारन धावै ॥
कभी सुनै मोह कें बैना । लगै हर्ष शोक दुख दैना ॥
जब सुनै कुटुँबकी नीकी । तब करै खुशी बहु जीकी ॥
कोइ कुटुंब माहिं दुख पावै । सुन रोरो नैन गवाँवै ॥
जो हिरन कानवश हूवा । तो तीरलाग करि मूवा ॥

शुकदेव कहैं सुन जानौ । सब कान विकार पिछानौ ॥

श्रवणका सत्कर्म्म ।

दोहा–मन दै सुनिये हरि कथा, सुनिये हरियश कान ॥
ताहि विचारि जु कीजिये, होय भक्तिका ज्ञान ॥

उपजै ज्ञान भक्ति अरु योगा, सुनसुन उपजै राम वियोगा ॥
उपजै प्रेम अनन्य उमाहा । होय उमाह दरश का चाहा ॥
सुन सुन उपजै लक्षण साधू । सुनि २ पावै भेद अगाधू ॥
उपजै साधु संतकी सेवा । गुरुमुख होयसुनै यहि भेवा ॥
सुनि २ उपजै भय अरु लाजा । सोवै सकल सँवारन काजा ॥
सुनि सुनि यती सती होजावै । नान्हाहो अभिमान नशावै ॥
सुनि सुनि छूटै यमकी त्रासा । चौरासी में लहै न वासा ॥
सुनि सुनि चारपदारथ पावै । आवागमन के बीज जरावै ॥
सुनिसुनि काग हंस हो जाई । चरणदास शुकदेव बताई ॥

दोहा–सुनि सुनि उपजै सुबुधिही, लागे हरिका रंग ॥
सुनिसुनिउपजैकुबुधिही, खोटी उठै तरंग ॥
ऐसी इन्द्री कानकी, जाके युगल सुभाव ॥
कथा कीरतनहीं सुनौ, करि २ कोटि उपाव ॥
वचन सुनो गुरु साधुके, मनकूं लावो मोर ॥
विषय वासनासूं निकस, आवै हरिकी ओर ॥

जिह्वाइन्द्री ।

सरवन इन्द्री में कह्यो, दोनों अंग दिखाय ॥
जिह्वा इन्द्री कहतहैं, चरणदास चितलाय ॥
कुटिल जुइन्द्रीजीभकी, चाहै षटरस स्वाद ॥
यावश हो औ गुण करै, जन्म जाय बरबाद ॥

यह वहुत चटोरी कहिये। याहीते डरते रहिये॥
यह चोरीभी करवावै। यह पकड़ वन्धमें ध्यावै॥
करै याही कारण जारी। यह करे वहुतही ख्वारी॥
यह अमल खान सिखलावै। अरु गाली मार दिलावै॥
अरु वहुतै झूठ वुलावै। हो जीत नरक लेजावै॥
खेलै याही कारण जूवा। दुनियामें फिर फिर हूवा॥
ये पांचौ ऐब सुनाऊं। रसना में सभी दिखाऊं॥
यह महा अपरवल जानौ। अरु रणजीता हो भानौ॥

दोहा—जिह्वाके जीते विना, गये जन्म सब हार॥
चरणदास यों कहतहैं, भये जगत में ख्वार॥
वंशी डारी तालमें, मछरी लागी आय॥
जिह्वा कारण जिवंदियो, तलफितलफिमारिजाय॥
तजा न जिह्वा स्वादकूं, वा सँग दीन्हे प्रान॥
जो कोइ ऐसा जगत में, सो अज्ञानी जान॥
यासूं ले हरनामहीं, गुणावादही भाख॥
जो वोलै तो सांचही, नाहीं मुखमें राख॥
मीठा वचन उचारियो, नवता सवसूं वोल॥
हिरदैमाहिंविचारिकरि, जव मुख वाहर खोल॥
विना स्वादही खाइये, राम भजन के हेत॥
चरणदास कहै शूरमा, ऐसे जीतौ खेत॥
जिन जीता है जीभकूं, तिन जीती सव देह॥
कहै गुरू शुकदेवजी, मुक्ति धाम फल लेह॥
रसना जीतै भक्त जो, सो योगी सो साध॥
अगम पन्थ वहि पगधरै, पहुँचै देश अगाध॥

त्वचाइन्द्री।

त्वचा सुइन्द्री कामकी, नितही खेलै दाव ॥
पशुपक्षी असुरा नरा, फँसे आयकरि चाव ॥

यह त्वचा सुमल मल माँजै। अरु काजल सुरमा आँजै ॥
यह तेल फुलेल लगावै। अरु चिकना गात बनावै ॥
अरु वस्तर भूषण पहिरे। करै अंजन मंजन गहिरे ॥
अरु सपरसकी विधि ठानै। सब याहीकूं सुखमानै ॥
अरु फँसे आय करि दोऊ। अब निकसन कैसे होऊ ॥
हित गांठ पेंचगहि दीन्हा। दोउ नेह वचन बहु कीन्हा ॥
अरु एक एकनै बाधा। वह समझै नाहीं आधा ॥
अब शीश धुनैं पछितावैं। दोउ चले नरककूं जावैं ॥
कहै चरणदास नहिं जानौ। तुम औगुण ना पहिंचानौ ॥

दोहा—त्वचास्वादसब वशभये, फँधे जगतके माहिं ॥
जो कोई निकसो चहै, सोभी निकसै नाहिं ॥
धोखेकी हथिनी लखी, आयो गज ललचाय ॥
खंदक माहीं रुकि गयो, शीश धुनै पछिताय ॥
कछू हाथ आयो नहीं, परो फन्दमें जाय ॥
मैन महावत वश भयो, शिरमें अंकुश खाय ॥
जङ्गलमें आनन्दसूं, बहुतै केलि कराय ॥
अब तौ द्वारे भूपके, परो बन्धमें आय ॥
ऐसेही यह नर फँधो, देखि कामिनी रूप ॥
जन्म गँवायो दुख भरो, पड़ो अविद्या कूप ॥
करी न हरिकी भक्तिही, गुरुसेवा तजिदीन ॥
सुनी न हरिकीगुणकथा, सत संगत नाहिं कीन ॥

फिर ऐसो कब होयगो, पावै मानुष देह ॥
अबतौ चौरासी विषे, जाय कियो उन गेह ॥
जीतौ इन्द्री त्वचाकी, कहिया श्रीशुकदेव ॥
यासे तपही कीजिये, चरणदास सुन लेव ॥
शीत उष्णका दुख नहिं मानै । कोमल सकत एककरि जानै ॥
तपसूं काया उमर गवाँवै । अष्ट सुगन्ध निकट नहिंजावै ॥
आन त्वचा स्पर्श नहिं करै । काम अगिनि हियमें नाजरै ॥
काया तावन करनी ठानै । यही तपस्या मनमें आनै ॥
त्वचा सु इन्द्री जीतौ ऐसे । मैं यह भेद बतायो जैसे ॥
गुरु शुकदेव बतावै सबही । चरणदास कर तनसूं तपही ॥
दोहा—त्वचासुं इन्द्री वश किये, छूटै काम कलेश ॥
यत शत शीलसँतोषसूं, लगै न माया लेश ॥

नासिकाइन्द्री ।

त्वचा अंग पूरो कियो, कहूँ नासिका अंग ॥
तावसअलिसुतजीदियो, जाको. कहूं प्रसंग ॥
वास आस गुंजत फिरो, बैठो कमल मँझार ॥
सूर छिपेसे मुँदिगयो, अब शिर दैदै मार ॥
कुंजर आयो तालपै, जल पीवनके काज ॥
प्यासबुझी करनेलगो, खेलकरनको साज ॥
खेलकरतकमलहिगह्यो, लीन्हो ताहि उपारि ॥
फेरिदियो मुख माहिंहीं, चाबिगयो मुद धारि ॥
ऐसेही ये नर फँसे, परे काल मुख जाय ॥
चरणदास यों कहत हैं, चले जन्म गवाँय ॥
सुगँध ओर हरषै नहीं, दुरगन्धै न रिसाय ॥

ऐसी जीतै नासिका, मन भवँरा ठहराय ॥
समझनकूं तुक एक है, भूलनकूं तुकलाख ॥
गुण अवगुण इन्द्री कहै, सो तू मनमें राख ॥
जो इन्द्रिनके वश भयो, बांधो नरकै जाय ॥
चौरासी भरमत फिरै, गर्भयोनि दुखपाय ॥
जो इन्द्रिनके वश भयो, पावै ना आनन्द ॥
बार बार जगमाँहहीं, छूटैना सम्बन्द ॥
भक्ति माहिं चितना लगै, सबही बिगड़ैं काम ॥
जो इन्द्रिनके वशभयो, ताको मिलैं न राम ॥
चरणदास यों कहत हैं, इन्द्री जीतन ठान ॥
जग भूलै हरिकूं मिलै, पावै पद निरवान ॥

इन्द्री जिते सो ब्रह्मज्ञानी । इन्द्री जीतै सोई ध्यानी ॥
इन्द्रीं जीतै सो हरिदासा । अमरलोकमें पावै वासा ॥
इन्द्री जीतै सोई सिद्धा । अष्टकला अरु पावै ऋद्धा ॥
इन्द्री जीतै सोई शूरा । इन्द्री जीतै सो जन पूरा ॥
इन्द्री जीतै सो सतवन्ता । इन्द्री जीतै गुणी महन्ता ॥
इंद्री जीतै राम रिझावै । इंद्री जीतै सब कुछ पावै ॥
इंद्री जीतै सो संन्यासी । इंद्री जीतै सोइ उदासी ॥
इंद्री जीतै सब फलदायक । इंद्री जीतै सबकुछ लायक ॥
इंद्री जीतै छुटै विदेशा । या जगमें कछु लगै न लेशा ॥
इंद्री जीतै परम सुखारा । निश्चय पहुँचे हरि दरबारा ॥
इंद्री जीतै सो रणजीता । इंद्री जीतै आतममीता ॥
इंद्री जीतै ध्यान लगावै । सो निश्चय ईश्वर ह्वै जावै ॥

इंद्री जीतै मिलै भगवंता । इंद्री जीतै जीवनमुक्ता ॥
चरणदास सुन कहैं शुकदेवा । इंद्री जीतै सो गुरुदेवा ॥

मन ।

दोहा—मन इंद्रिनके वश भयो, होय रह्यो बेढंग ॥
आपा बिसरो जगरलो, हुवो जो नाना रंग ॥
आवै तरंग क्रोधकी, होत युवाके रूप ॥
काम लहर कबहूँ उठै, ताके होत स्वरूप ॥
लोभ कामना जब उठै, जभी लोभ रँग होय ॥
मोह कल्पनाके उठै, मोह वरण हो सोय ॥
मनहीं खेलै खेल सब, मनहीं कर अभिमान ॥
मनहीं यह जगह्वै रहो, अबसुनिमनका ज्ञान ॥

कबहूं यह मन होवै गिरही । कबहूं यह मन होवै बिरही ॥
कबहूं यह मन होवै रोगी । कबहूं यह मन होवै शोगी ॥
कबहूं यह मन होवै नारी । कबहूं यह मन राखै ख्वारी ॥
कबहूं यह मन दौरा डोलै । कबहूं यह मन टेढ़ा बोलै ॥
कबहूं यह मन कुलका ऊंचा । कबहूं यह मन नकटा बूंचा ॥
कबहूं यह मन दुन्दि मचावै । कबहूं क्षमाशील घर आवै ॥
कबहूं यह मन होवै दाता । कबहूं करै सूमसा बाता ॥
चरणदास कहैं मनकूं जानो । ऐसी विधि मनकूं पहिंचानो ॥

दोहा—बहुरूपी बहुरंग या, बहुतरंग बहु चाव ॥
बहुतभाँति संसारमें, करि करि घने उपाव ॥

यह मन राजा होवै भोगी । यह मन त्यागी होवै योगी ॥
यह मन होवै हरिका भक्ता । यह मन होवै योगरु युक्ता ॥
यह मन होय विवेकी ज्ञानी । यहमनतपियाजपियाध्यानी ॥

यह मन करै दयाकी वातैं। यह मन करै जीवकी घातैं॥
यह मन यती सती अरु शूरा। यह मन काशी पण्डितपूरा॥
यह मन तीरथ बर्त्त उपासी। यह मन ठकुरानीअरु दासी॥
यह मन होवै देवी देवा। या मनका कोइ लहै न भेवा॥
यह मन प्रेमी नेमी जनहीं। चरणदासकहैंसबकुछमनहीं॥

दोहा—या मनके जाने विना, होय न कबहूं साध॥
जगत वासना ना छुटै, लहै न भेद अगाध॥
तैं मनकूं जाना नहीं, करी न याकी सार॥
चौरासी छूटी नहीं, उपजा वारम्वार॥

मनजीतन उपाय।

मनकूं सत्संगति लै जावो। कानोहरियशकथा सुनावो॥
भाँति भाँति के रँग ललचावै। तौ हरिके रँग क्यों न रँगावै॥
तौ याको ज्ञानीही कीजै। जक्त ओर जानै नहिं दीजै॥
कै दीजै हरिहीका ध्यानू। राम भक्तिमें याकू सानू॥
कै कीजै यह योगी पूरा। याहि सुनावो अनहद तूरा॥
या मनकूं कीजै वैरागी। याकूं कीजै सर्वस त्यागी॥
जग रँग उतरि ब्रह्म रँग लागै। जाते कर्म भर्म भय भागै॥
चरणदास शुकदेव बतावै। मन फेरिनकी राह दिखावै॥

दोहा—मनने आयु गवाँइया, ज्ञान बुझाया दीव॥
करमलगाभरमतफिरो, मिला न अपने पीव॥
दौरि दौरि रसओरही, होय रहा कंगाल॥
नातरु आगे भूपथा, ऊंचा वड़ा दयाल॥
पांचौ इन्द्री स्वादमें, भयो निपट आधीन॥
राजवड़ाई सब नशी, भयो मूढ़ मति हीन॥

सरकिजाय विषओरही, बहुरि न आवै हाथ ॥
भजन माहिं ठहरै नहीं, जो गहि राखूं बाथ ॥
मन निश्चल आवै नहीं, निकसि २ भजिजाय ॥
चरणदास यों कहत हैं, काहूकी न बसाय ॥
पचिहारे ज्ञानी तपी, रहे बहुत शिर मार ॥
मन परेत सूं डर लगै, लै डूबै मँझधार ॥
यह मन भूत समान है, दौड़ै दांत पसार ॥
बाँस गाड़ि उतरै , सब बल जावै हार ॥
ज्यों आतममें मन धरै, होय जहां लौलीन ॥
ठहरिरहै फिरिना चलै, सकल विकलहोक्षीन ॥
भजैतो जानि न दीजियै, घेरि घेरि करि लाव ॥
या मनकूं परचायकरि, ध्यानहिं माहिं लगाव ॥
और कहौं विधि दूसरी, सुनियो चित्त लगाय ॥
रामनाम मनसूं जपै, चंचलता थकिजाय ॥
पवन रुकै जबमन थकै, और दृष्टि ठहराय ॥
ऐसी साधन साधियै, गुरुगम भेद मिलाय ॥
इन्द्री रोकै मन रुकै, अरु उत्तम विधि एहु ॥
चरणदास यों कहत हैं, यह साधनकरिलेहु ॥
इन्द्रिनकूं मन वश करै, मनकूं वशकरै पौन ॥
अनहद वशकर वायुकूं, अनहदकूं लै तौन ॥
याको नाम समाधि है, मन तामें ठहराय ॥
जन्म जन्मकी वासना, ताकूं दग्ध कराय ॥
इन्द्री पलटै मन विषै, मनं पलटै बुधि माहिं ॥
बुधि पलटै हरि ध्यानमें, फेरि होय लै जाहिं ॥

दग्ध वासना होय जब, आवागमन नशाय ॥
कहै गुरू शुकदेवजी, मुक्तरूप ह्वै जाय ॥

असत्यका वर्णन ।

मनके सगरे भेदही, जाको दियो जिताव ॥
चरणदास यों कहत हैं, झूंठ सांचको न्याव ॥
जो कोइ बोलै झूठही, ताकूं लागै पाप ॥
जन्म जन्म छूटै नहीं, दुखदे तीनौ ताप ॥

बोलै झूठ महा अपराधी । धर्म छुटै उठि लागै बाधी ॥
झूठा सौ सौ सौगँध खाय । झूठा लेवे कर्म लगाय ॥
झूठा करै बिराना बुरा । झूठा रहै जगतमें गिरा ॥
झूठेकी परतीत न होई । झूठा बोल न बोलै कोई ॥
झूठा हरिकी भक्ति न पावै । झूठा घोर कुण्डमें जावै ॥
झूठेकूं लागै यम मार । झूठा चौरासीमें ख्वार ॥
झूठ वचनका भारी दोष । झूठेकी होय गती न मोष ॥
झूठेके नहिं गुरू न राम । झूठेकूं नाहीं विश्राम ॥
चरणदास शुकदेव बतावैं । झूठे सबी नरककूं जावैं ॥

दोहा—झूठेके मुँह दीजिये, नौसादरका बाप ॥
डराकरै सकुचा रहै, वह शरमिंदा आप ॥

झूठेकूं हत्यारा जानौ । झूठेकूं ठग चोर पिछानौ ॥
झूठा कुटिल शराबी होय । झूठा कहिये कामी सोय ॥
झूठेहीको जानौ ज्वारी । समझि देखि सबही नर नारी ॥
सकल ऐब झूठेमें पाऊं । एकएक क्या खोल दिखाऊं ॥
पांचौ खोंट सबनके राजा । सो मैं कहे चितावन काजा ॥

झूठ पापकी कहिये खानि । सो वह करै पुण्यकी हानि ॥
सबही अवगुण झूठे माहीं । चरणदास शुकदेव बताहीं ॥

सत्यवर्णन ।

दोहा—साँच विना साधू नहीं, कबहुँ न मिलिहैं राम ॥
साँच विना गति ना लहै, पावैना निजधाम ॥
सत सत मुखसूं बोलिये, सतही चलिये चाल ॥
सतही मनमें राखिये, सतही रहिये नाल ॥
सांचे कूं ग्रहना लगे, सांचे कूं नहिं दाग ॥
सांचे शाप न लागई, सब दुख जावे भाग ॥
बड़ी तपस्या सांच है, बड़ा बरत है सांच ॥
जासों पाप सभी जरैं, लगै न गर्भकी आंच ॥
जाका वचन मुड़े नहीं, सांचे सब व्यवहार ॥
चरणदास त्रयलोकमें, कभी न आवे हार ॥

सांचेके मनहींमें राम । सांचा करै न छलके काम ॥
सांचा होकर सुमिरण करै । आप तरै औरन लै तरै ॥
सतवादीकी पति है सांच । ताकूं लगै न दिवकी आंच ॥
सांचे चोर[1] चुराया घोड़ा । परमेश्वर ताका रँग मोड़ा ॥
और चोर चोरीसूं गया । सांच प्रताप अचम्भा भया ॥
औरो सांच प्रताप अनंता । सबही जानै साधू संता ॥
लाख बातका एकहि जोड़ । सांचा पुरुष सबन शिरमोड़ ॥
आवै सांच परम सुख पावै । चरणदास शुकदेव सुनावै ॥

दोहा—सांचेकी पदवी बड़ी, दुष्ट साधके माहिं ॥
दोनों अस्तुतिही करैं, निन्दक कोई नाहिं ॥

---

१ भक्तमालमें देखो घाटमभक्तकी कथा । सर्वोत्तम भक्तमाल रामरसिकावली "श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम् प्रेस बम्बईसे मिलेगा ।

गुरुमुखवर्णन ।

गुरू कहै सो कीजिये, करै सो कीजै नाहिं ॥
चरणदासकी सीख सुन, यही राख मनमाहिं ॥

गुरुमुखलक्षण ।

कथा सुनी व्रतहू किये, तीरथ किये अघाय ॥
गुरुमुखके होये विना, जप तप निर्फल जाय ॥

अब गुरुमुखके लक्षण गाऊं । जुदे जुदे करि सब समझाऊं ॥
इनकूं समझ धर हिय कोई । पूरा गुरुमुख कहिये सोई ॥
प्रथमहिं गुरुसों झूठ न बोलै । खोटी खरी करै सब खोलै ॥
दूजे गुरुको पय न लगावै । निश्चय गुरुके चरण मनावै ॥
तीजे आज्ञाकारी जानौ । इन लक्षण गुरुमुखी पिछानौ ॥
जो कोइ गुरुका लेवै नाम । ताको निहुरि करै परणाम ॥
जो कहुँ देखै गुरुका बाना । ताकूं जानै गुरू समाना ॥
चरणदास शुकदेव बखानै । गुरुभाईकूं गुरुसम जानै ॥

दोहा—गुरुभाई कूं पूजिये, धरिये चरणन शीश ॥
चरणोदकफिरिलीजिये, गुरुमत विश्वावीस ॥

जो कहुँ गुरुका वस्तर पावै । हिये लगाय चूक हग क्ष्यावै ॥
गुरूदेशका मानुप आवै । दै परिक्रमा बलि बलि जावै ॥
कहां दया करि दर्शन दीन्हे । मेरे पाप भये सब क्षीने ॥
जो अपने गुरु द्वारे जइये । देखत पौरि बहुत हरपइये ॥
ह्वांई सूं दण्डवत जु कीजे । दर्शन करिकरि सर्वस दीजे ॥
फिर ठाढ़ो रहै जोरे हाथा । बैठै तब आज्ञा दे नाथा ॥
जो बोलैसो मन में धरिये । अपने अवगुण सबही हरिये ॥
चरणदास शुकदेव बतावै । ऐसा गुरुमुख राम रिझावै ॥

साधुमाहात्म्य ।

दोहा—साधुनकी निंदा वुरी, मत कोइ कीजो भूल ॥
दुनियामें दुख पाइ है, रहै नरकमें झूल ॥
साधुक निन्दक तन मन दुखी । साधुक निन्दक होय न सुखी ॥
निन्दक साधु दरिद्री होय । निंदक डारै सर्वस खोय ॥
साधुक निंदक नरक मँझार । निश्चय खावै यमकी मार ॥
साधुक निंदक पूरापापी । साधुक निंदक डूबै आपी ॥
मूरख होय सो निन्दा करै । साधुसंतकूं अवगुण धरै ॥
साधुक निंदक श्वान समान । साधुक निन्दक शूकर जान ॥
साधु रामकी कहिये देह । निन्दकके मुख माहीं खेह ॥
चरणदास निन्दा तजि दीजै । भक्तनकी अस्तुतिही कीजै ॥
दोहा—साधुनकी अस्तुति किये, हरिकी अस्तुति होय ॥
भक्तनकी निन्दा किये, प्रभुकी निन्दा सोय ॥

अथ मोहछुटावन अंगवर्णन ।

कुण्डलिया ॥ भक्ति दृढ़ावनकूं कहे, नानाही परसंग । शुकदेव कृपा सों अब, कहूं मोह छुटावन अंग ॥ मोहछुटावन अंग कोई हियमाहीं धारै । कुटुँब जानिसूं छूटिलगै हरिचरणौ लारै । चरणदास यों कहत हैं उपजै मन वैराग ॥ जगत नींदहीसूं खुलै, चौथे पदमें जाग ॥

दोहा—गुरू पूजि जग छोड़िये, भवसागरके द्वन्द्व ॥
साधुनकी संगति करौ, तजौ जातिकुल बन्ध ॥
बन्धु नारि सुत कुटुव सव, यमकी फाँसी जान ॥
तोहिं छुटावैं रामसूं, इनका कहा न मान ॥
खैंचि पकड़ि हुअँराखिहैं, जहां मोहका जाल ॥

जीवत दुख बहु भाँतिके, मुये नरक ततकाल ॥
या प्राणीकूं ठग लगे, सकल कुटुँब परिवार ॥
तिनमें दो बलवन्त हैं; एक द्रव्य इकनारि ॥
नारि किये दुख बहुत हैं, बन्धन बँधे अनेक ॥
जो सुख चाहै जीविका, तिरियाकूं मत पेख ॥
द्रव्य माँहि दुख तीन हैं, यह तू निश्चय जान ॥
आवत दुख राखत दुखी, जात प्राणकी हान ॥
ताते इनकी प्रीति मन, उठै तभी निरवार ॥
ये दुर्जन दुखरूप हैं, ऐसो करो विचार ॥
जो कोई इनमें पगे, तिनमें छूटै राम ॥
चरणदास यों कहतहैं, क्यों पावै हरिधाम ॥
हेरिफेरि धनको करत, बितै पहर इक रात ॥
तीनपहर निशिके रहैं, खोवै नारी साथ ॥
नारीके फैलावको, दीखै ओर न छोर ॥
द्रव्य माँहिं तृष्णा रहै, चाहै लाख करोर ॥
द्रव्य जोरि मरिजाय जब, होवैठे तहँ नाग ॥
नारीमें जो चितरहै, ह्वैहै कूकर काग ॥
ऐसेही भरमत फिरै, लख चौरासी देह ॥
कनक कामिनीकूं तजै, जबलग नाहीं नेह ॥
मूरख त्यागन करिसकै, ज्ञानवंत तजिदेह ॥
चौंकायल मृग ज्यों रहै, कहीं न साजै गेह ॥
जो कोइ छोड़ै कुटुँबही, ऐसीकर पहिचान ॥
जैसे छूटै बन्धसूं, यम जोरासूं जान ॥
जीवत यम तौ कुटुंब है, घेरि घेरि दुख देय ॥

ऐसे मनुषा देहकं, लूटैही नित लेय ॥
के ठग सबकूं जांनेये, कें धाडीके चोर ॥
रणजित कहै तू देखले, लूटत हैं निशि भोर ॥
बाहर कलकल करतहैं, भीतर लावहिं लाव ॥
ऐसो बांधो खैंचकरि, छुटै हाथ नाहिं पांव ॥
लाजतौक गलमें पड़ा, ममता बेरी पांय ॥
रसरी मूरुख नेहकी, लीन्हे हाथ बँधाय ॥
डारि दियो अज्ञानमें, परो परो बिललाय ॥
निकसनकूं जबहीं चहैं, कुतका मोह लगाय ॥
रखवारे जहँ पांच हैं, इंद्रिनके रस जान ॥
तबहीं देह भुलाय कै, जो कुछ उपजै ज्ञान ॥
कुटुंब और इन पांचकूं, एक मतोही जान ॥
प्राणीकूँ जगमें फँसा, चहै खान अरु पान ॥
ये सब स्वारथही लगै, इनका सगा न कोय ॥
जो शिर मारै धरणिपर, कल्प कल्प करि रोय ॥
मात पिता सुत नारिकी, इनकी उलटी रीति ॥
जगमें देह फँसाय कै, करिकै प्रीतिहि प्रीति ॥
जैसे बधिक बिछाय कै, जाल माहिं कण्डार ॥
प्रीति करै पक्षी गहै, पाछे करै जु ख्वार ॥
जैसे ठग बहु प्यार करि, भोलापनहीं देह ॥
पहिले लड्डू खवाय कै, पाछे सरवस लेह ॥
हित सूं हरिण बोलाय कै, गोली मारै तान ॥
चरणदास यों कहत हैं, ऐसे इनकूं जान ॥
जलमें बंशी डारिया, अटकाया जहँ मांस ॥

मछरी जानै हितकियो, लखो न अपनो नास ॥
भौंदू यह गति ना लखी, पड़ो कुमतिके धंध ॥
ज्योंकी त्यों सूझी नहीं, किया मोहने अंध ॥
सब ठग यह देखी नहीं, कपट हेत नहिं जान ॥
इनहीमें मिलकर चलो, समझौ ना अज्ञान ॥
अब इनके छलकहत हूं, समझै होय उदास ॥
जानै ना ह्वाईं रहै, कहै चरणहीं दास ॥

अब इनके छल कहि समझाऊं । भिन्न भिन्न परगट दिखलाऊं ॥
पिता कहै तुम पुत्र हमारे । बहुत भरोसे मोहिं तुम्हारे ॥
अब तुम ऐसी विद्या पढ़ो । अपने कुलमें ऊंचे चढ़ो ॥
सत संगतिमें कभी न जइये । अपने घरमें चित्त लगइये ॥
हम तौ हैं दुनियांके कूते । जाति वर्णमें होहिं सपूते ॥
कृत्य करौ पालौ सुत वाम । कथा कीरतनसूं क्या काम ॥
अब तुम ठौर हमारी हूजे । हमने किये सो तुमहूं कीजे ॥
ऐसी बुद्धि बड़ाई दीन्ही । इनहूं हिरदयमें धरि लीन्ही ॥
चरणदास कहैं देखो प्यार । मुये नरक जीवतही ख्वार ॥

दोहा—पिता बुद्धि ऐसी देई, रहिये कुटुँब मँझारि ॥
जो कुछ है सो जगतमें, धनसम्पति सुत नारि ॥
हरिकीराहभुलाय करि, दीन्हों कुटुंब चिताय ॥
ताते दुख जगमें घने, चौरासी भरमाय ॥

अब सुन माताहूकी बातें । अपना जानि सिखावै तातैं ॥
द्रव्य काज उद्यमहीं कीजै । लै माताकी गोदी दीजै ॥
करै कमाई सोइ सपूता । नाहीं तौ वह पूत कपूता ॥
नारी कूं भूषण पहिनावो । सुत पुत्रीको ब्याह रचावो ॥

पूजो पित्तर देवी देवा । सकल कुटुँवकी कीजे सेवा ॥
अपने कुलको न्योति जिमावो । ताते बहुत बड़ाई पावो ॥
बहु विधि स्वारथही सिखलावे । परमारथकी राह भुलावे ॥
बारबार जगमें उरझावे । ऐसे तौ नितही चलि आवे ॥
जितका तित ह्वांई रखि लीन्हा । चरणदास कहैं जान न दीन्हा ॥
दोहा—माताहूने प्यार करि, बहुत दिया शिरभार ॥
यही जो नीको धारियो, महल द्रव्य सुत नारि ॥
अब नारीकी गति सुनि लीजे । तामें चित्त कबहुँ नाहिं दीजे ॥
छल बलकरि वश अपने राखै । मधुर वचन रसनासे जु भाखै ॥
कहै कि शिरके छत्र हमारे । हम तौ लागीं शरण तुम्हारे ॥
तुमतौ बहुते लगौ पियारे । मोकों तजि मतहूजो प्यारे ॥
ऐसे कहि कहि बांधाचाहै । आठौ अंग कामके वाहै ॥
वस्तर भूषण देह शिंगारै । नानाविधि करि रूप सँवारै ॥
करै कटाक्ष बहुतही भारै । वशकरनेको टोना डारै ॥
काजलभरी आँखसूं जोहै । अंग विषे रस दैदै मोहै ॥
ह्वांसूं निकसन कैसे पावे । चरणदास शुकदेव सुनावे ॥
दोहा—तिरियाहीके जालमें, आय फँसै जो कोय ॥
तलफि तलफि ह्वाँई रहै, निकसि सकै नाहिं सोय ॥
सुत पुत्री वनितासूं जानों । समधाने यासूं पहिचानों ॥
और बँधे बहुते बँधवार । नाईब्राह्मण बहु परिवार ॥
सेठ मशानी देवी भूत । ग्रह नक्षत्रहु लगे अऊत ॥
चौथ अहोई लागे सौन । तिरिया कारण साजो भौन ॥
औरो बहुत बखेड़े जान । नारीसे तोहीं पहिचान ॥
महा अपरबल दुख तेहिमाहीं । मरिके चौरासीमें जाहीं ॥

तातै हूजै वेगि उदास । समुझितजौतिरियाकी आस ॥
कहि शुकदेव चरणहिंदासा । सभी कुटुँव है नरकनिवासा ॥

दोहा–सुतकी बोली तोतली, करै चोचले चाय ॥
मन मोहै बाँधै घनौ, छूटेकी न उपाय ॥
हँसि गोदीमें आय करि, बहुत बढ़ावै नेह ॥
तामें घने विकार हैं, अन्तकाल दुख देह ॥
मोह लगा मरजाय जब, तन मन लागै आग ॥
चरणदास यों कहत हैं, सुख चाहै तौत्याग ॥
जिहिकारणचिन्ता लगै, जबलग घटमें प्रान ॥
हरिगुरु हिये न आवई, यही जु पूरी हान ॥
तन छूटै सुत में रहै, एक न तेरी आस ॥
जनमजु शूकरको लहै, मुये नरकही जास ॥

कुटुँव बंध ऐसे करि जानौ । फाँसीगर तिनकूं पहिंचानौ ॥
तोकूं डारै नरक मँझारा । तातै होहिं सबनसे न्यारा ॥
बहुतक दुर्जन हैं घटमाहीं । तू उनकूं जानतहै नाहीं ॥
हैं वैरी तू जानत मीता । स्वपनेहूं इनकी नहिं चीता ॥
काम क्रोध लोभ अरु मोहा । सबही राखैं तोसूं द्रोहा ॥
जिनसे गर्व मछरता भारी । जगत बड़ाई तिनकी सारी ॥
आपा लिये सदाहीं रहै । टेढ़े वचन झूठ बहु कहै ॥
इनके संग घनेही दुष्टी । तेरे तनमें रहैं अदृष्टी ॥
नितही करैं अकारज तेरा । चरणदास कहैं याविधि घेरा ॥

दोहा–बहु वैरी घटमें बसैं, तू नहिं जीतत कोय ॥
निशिदिन घेरेही रहैं, छुटकारा नहिं होय ॥

जो कहुँ निकसि बाहरै आवै । अरु विरक्तका रूप बनावै ॥
कुटुंब छोड़ि उपजै वैराग । जगत रहा चरणोंसे लाग ॥
कछू वासना मनमें धँसी । जबहीं लोक बड़ाई हँसी ॥
पुष्टभयो आपा अभिमान । सहजहि आया मोह दिवान ॥
सबही संगी लिये बुलाय । या विरक्त कूं घेरो आय ॥
ताकूं बांधि मुरंडा कीन्हा । फेरि कुटुँबके माहीं दीन्हा ॥
कुटुंब मित्र गाढ़ाकरि बाँधा । बाड़िबाड़ि आँखों ऐसाआंधा ॥
चरणदास कहैं घरमें आया । घरके दुर्जन वाहि बँधाया ॥

दोहा—कुनवेमेंसे निकसि करि, फिर कुनवेमें जाय ॥
निश्चय नरकी होयगा, दुनिया में दुखपाय ॥

एक दृष्टान्त ।

एक तपोवनमें जा रहा । शीतउष्ण पावस शिरसहा ॥
सूखे पातों कियाअहारा । छूटे सबही जग व्यवहारा ॥
रहै ध्यानमें निशिदिनलागा । हरिके चरणकमलमें पागा ॥
महिमा सुनि राजा तहँ आया । दै परिक्रमा शीश नवाया ॥
हाथ जोरि ठाढ़ो फिरि भयो । तपसी मुखना बैठन कह्यो ॥
ठाढ़ेभये बार बहु भई । तब राजाने मनमें कही ॥
यह तपसी है बहु अभिमानी । मोआवन महिमा नहिं जानी ॥
ऐसी कहि मनमाहीं एठा । आपहि आप भूप वह बैठा ॥

दोहा— जो हरिके रँगमें रंगे, भूपनसूं क्या काम ॥
चरणदासकुछभय नहीं, ना कुछ चहिये दाम ॥

तपसी कछू न मुखसूं भाषा । राजा उठिचढ़िमारग लागा ॥
क्रोधभरा महलनमें आया । खोटा मनमें मता उपाया ॥
पातुरि भेजि वाहि अजमाऊं । भेद झूठ सांचेको पाऊं ॥

जबहीं पातुरि लई बुलाई। ये बातें वाकूं समझाई ॥
कहै पातुरी आज्ञा दीजै। देखि तमाशा वाका लीजै ॥
आयसु लै पातुरि घर आई। प्रथमैं लौंड़ी एक पठाई ॥
वा तपसीका लावो भेद। कौन वस्तुसे वाको हेत ॥
कहां सुभोजन करै अहारा। छुटै भजनसूं कौनी वारा ॥
बाँदी गई भेद सो लाई। पातुरिकूं सब बात सुनाई ॥

दोहा—झारै जा मुख धोयकै, फिरि तलावमें न्हाय ॥
चरणदास फलपात जो, गिरे पड़ेही खाय ॥

पातुरि सुनि मनमें डरपाई। कैसे वाकूं वश करुंजाई ॥
विनवश किये भूप नहिं रीझै। काढ़ि नगरसूं बहुतै खीजै ॥
ताते मकर पेंच कछु कीजै। तपसी काम नरकमें लीजै ॥
जो कहुँ इच्छा नेकहु पइये। छलबलकरिवा मदन जगइये
यह विचार पातुरि जब कियो। नानाविधिभोजनकरिलियो ॥
गई तहां तपसी अस्थाना। वह तौ करतहतोहरिध्याना ॥
बैठ रही धीरज उर धारी। जबलग उठै ध्यान निरवारी॥
उठे ध्यानते आँखैं खोली। करि दण्डवत नारियों बोली॥
पुत्र नहीं हमरे घरमाहीं। जिस कारण दर्शनकूं आई॥
यह कहि भोजन आगे राखा। तपसी भोजन लिया न भाखा॥
वादिन तौ योंहीं उठि आई। अंगुली टिकन ठौर नहिंपाई॥
दूजे दिन गइ बहुत सवारा। न्हकर आये थे उहिबारा ॥
कहा कि भोजन हमरा कीजै। हमरे नैननको सुख दीजै ॥
तपसी कहै न चित्त डोलाऊं। सूखेपात और फल खाऊं॥
पातुरि कहै दूरसूं आई। तुमतौ दयावंत सुखदाई ॥
यही मान मेरो तुम राखो। बहुत नहीं अंगुलीभरिचाखो॥

कहि कर वचन वाहि पघिलाया, अंगुली भरि भोजन चटवाया॥
चाटत चाटत चाटत रहा । रणजित कहैं योंमन वहिगया॥
दोहा—पातुरिने करजोरि करि, वहुरो वचन सुनाय ॥
एकबार अरु लीजिये, इन्द्रीजित ऋषिराय ॥
फिरि भारी अंगुली भरि लीन्हा। वहुरो मुखके माहीं दीन्हा॥
अंगुली टिकन काम करि आई। घर आकर बहुतै हुलसाई॥
फिर ह्वां दिना चार ठहराई । उतनहिं गई यही मन आई॥
पातुरि चतुर ढीलसूं गई । तपसी कही कहां तुम रही॥
जबहीं पातुरि प्रीति पिछानी । अपनी कला पैठती जानी॥
वादिन व्यंजन कछू न लाई । बहुविधि भोजनबात सुनाई॥
घर ठाकुर सेवा चित लाऊं । नानाविधिके भोग लगाऊं॥
लै आज्ञा निज भवन पधारी । चरणदासकहैंछलकियोनारी॥
दोहा—तपसीकूं जीतन कियो, टेक वांधिकरि वाद ॥
हैरैं हैरैं लाय हूं, या जिह्वाके स्वाद ॥
नानाविधिकेस्वाद करि, लै गई वाही पास ॥
कह्यो कि यह परसादहै, लीजै कोई ग्रास ॥
ठाकुरको परसाद जु लीजै । याको नाहीं कबहुं न कीजै॥
नाहीं किये होय अपराध । तुमतौ कहिये पूरे साध ॥
कछूक पातुरि वचन सुनायो । कछूक तपसीके मन आयो॥
डारो हाथ थारके माहीं । ज्यों ज्यों खातसराहत जाहीं॥
पातुरि कहो सदा ले आऊं । जो जो ठाकुर भोग लगाऊं॥
यामें कछू दोष नहिं लागै । तनमनका सब पातक भागै॥
वाकूंवश करिकै घर आई । सखियनकूं यह कथा सुनाई॥
कामदेवकी सौगँध खाऊं । तपसी बँधुवा करिदिखलाऊं॥

दोहा—रसनास्वादहि वश किये, मनमें जीतन वाद ॥
कभी आप बांदी कभी, पहुँचायों परसाद ॥
कबहूँ वा तपसी ढिगजावै। नानाविधिके भोजन खावै ॥
कबहूँ भेजै बाँदी हाथा। कहिये छुट्टी मोहिं न नाथा ॥
वह जानै मम सेवा करै। यह तो भोजन तपस्या हरै ॥
एक दिना पातुरि ह्वां गई। हाथ जोरि भाषत यों भई ॥
कहोकि मेरेभवन पधारो। करो पवित्तर जूँठनि डारो ॥
लावनकी बहुबात बनाई। सो तपसीके मन नहिं भाई ॥
ह्वांई रही टोना सो कीन्हों। तपसीको मनवशकरिलीन्हों ॥
दूजे रसकी कला दिखाई। मोह बढ़ो अरु आँख लजाई ॥
भोरभये फिर बात सुनाई। छलबल करि घरही लैआई ॥
चरणदास तपसी नहिं जानी। अजहूं ठगनी ना पहिंचानी ॥
दोहा—घरमें ला बहुसुख दिया, दिना आठही राखि ॥
तपसीहू वा वश भयो, पांचन सूं रसचाखि ॥
इन्द्रीवश पातुरि घर आया। अपने तपका तेज घटाया ॥
सिमट भया सब फूटक फूटा। लागा ध्यान रामका छूटा ॥
देखै घरके वैरी किया। पकड बाँधि औरोको दिया ॥
फिर पातुरि राजा पैगई। तपसी ठगनबात सब कही ॥
नेक नेक सब कहि समझाई। तब राजाकूं हाँसी आई ॥
योंहीं कही वेगि लै आवो। वाकी सूरत हमैं दिखावो ॥
फिर पातुरि उलटीही धाई। तपसीकूं इकबात सुनाई ॥
राजा दर्शन करन बोलावै। जितसेती खाने कूं आवै ॥
वाकूं चलकरि दर्शन दीजै। किरपा प्यार बहुतही कीजै ॥
हमतो उनकी दास कहावैं। नितउठिकरि मुजरेको जावै ॥

ह्वांतौ अपना घरही जानौ । उठिये चलियेसकुच नमानौ ॥
पाछे तपसी आगे वाला । ऐसे राज दुआरे चाला ॥
जा राजाकूं दई अशीशा । राजा वैठै नायो शीशा ॥
हँसिकरि कहीजुकिरपा कीन्ही । यहनगरीअपनी करिलीन्ही ॥
घर बैठे हम दर्शन पाये । वै धन है जो तुमको लाये ॥
तपसी कही धन्य तुम राजा । बहुतनको सारत हौ काजा ॥
तुम्हरो तेज देखि हम चीन्ही । तुमहुँ तपस्या आगे कीन्ही ॥
विना तपस्या राज न पावै । वेदपुराणनमें यों गावै ॥
हमहूँ दर्शन तुम्हरे पाये । तपसी कहियों वचन सुनाये ॥
भूपति बहुत अचम्भा कीन्हा । बहुत द्रव्य पातुरिको दीन्हा
फिर राजा तपसीसूं बोला । खोट हिये का सबही खोला
एकदिना हम तुम ढिग धाये । वनमें तुम्हरे दर्शन पाये ॥
ठाढ़ रह्यो हौं बहुतीवारा । ना तुम बोले नैन उघारा ॥
आजद्योस ऐसा हद कीन्हा । ह्यांईआ तुम दर्शन दीना
यह सुनि तपसीशोचिविचारा । तवहीं पातुरि सूं भयो न्यारा
वेगहि उठि जंगल कूं गया । चरणदास कहैं रमता भया ॥

दोहा—जो इन्द्रिनकेवश भयो, यही हाल ह्वैजाय ॥
पछतावा मन में रहै, करै हाय दुखहाय ॥

पांचौ चोर महा दुखदाई । सो या जगमें देह फँसाई ॥
तन मन कूं बहु व्याधि लगावैं । कायिक वाचिक पाप चढ़ावैं ॥
करम लगा बहुतै भरमावे । यमके छप्पन वास दिखावे ॥
फिर चौरासी माहिं फिरावै । जठर अग्निमें ताहि तपावै ॥
जन्म मरण भारी दुख पावै । मानुष देहका सर्वस लावे ॥
तीन लोकमें डोलै हाला । सुरपुर मृत्यु और पाताला ॥

कैसे मुक्ति धामकूं पावै । जो इन्द्रिनके वश हो जावै ॥
छूटै जब गुरु किरपा करैं । चरणदासके शिर कर धरैं ॥

दोहा—स्वारथहीके सब संगे, कुटुँब मित्र कुल गोत ॥
परमारथ समझावई, जो दयाल गुरुहोत ॥
परमारथमें दुख मिटै, कलह कलपना जाय ॥
स्वारथ माहीं सुख नहीं, तामें चित्त लगाय ॥
स्वारथमें चिन्ता घनी, जो ह्वांकर हो गेह ॥
विना आगकी चितामें, जीवत जरि है देह ॥
चिन्ता घटमें नागिनी, ताके मुख हैं दोय ॥
निशिदिन खाये जातहैं, जानसकै नहिं कोय ॥
ताघट चिन्ता नागिनी, जामुख जप नहिं होय ॥
जो टुक आवै यादभी, उहीं जाय फिरि खोय ॥
चिन्ताही सूं लगत है, चरणदास उर आग ॥
तहां ध्यान हरिचरणको, कैसेही अब लाग ॥
जगत वासनाके विषे, घर चिन्ताका जान ॥
जगकीआशाछोड़िकरि, हरिसुमिरणही ठांन ॥
आशा नदियामें चलै, सदा मनोरथ नीर ॥
परमारथ उपजै वहै, मन नहिं पकड़ै धीर ॥
धीर विना नहिं ध्यानहै, निश्चल जप नहिं होय ॥
जो चाहै हरिभक्त कूं, जगत वासना खोय ॥
जबलग जगसूं प्रीतिहै, तबलग दुःख अपार ॥
भय भारी चिन्ता घनी, भवन पिछानौदार ॥
जगसूं छुटि बाहर परै, उसी समय सब चैन ॥
उपजै आनँद परमहीं, तहँ कुछ लैन न दैन ॥

रहै एक हरिभक्तिही, बाधा सब छुटि जाहिं ॥
जबै राम अपनो करैं, वेगहि पकरैं बाहिं ॥
ताते सुन मन मेरे मीत । जक्त छुटनकी राखो चीत ॥
ऐसा अवसर फिर नहिंपावौं । काहे मानुष देह गँवावौं ॥
संगी तेरा नहिं धनधाम । तू क्यों पचै मूढ़ बेकाम ॥
पिछली गई तासकूं रोय । आगे रही योंहि मत खोय ॥
इकइक घड़ी अमोलक जान । चेत चेत मतहोय अजान ॥
अपने घरका करो सँभाल । ललकारत आवत है काल ॥
याते कीजे यही विचार । डारि सिदौसी जगजंजार ॥
शुकदेव कहीहो चरणहिं दास । हरिके चरण कमलकरवास ॥
दोहा—यामें ढील न कीजिये, यह विचार मन आन ॥
चरणदास यों कहत हैं, यह गो यह में दान ॥
आयुर्दा यों जात है, जस तरुवरकी छांह ॥
चेत सितावी[1] भक्ति में, तजो जगत की बांह ॥
तूही पकरो जगतने, तैंहीं पकरो आय ॥
ज्यों नलिनी को सूवटा, धोखे पकड़ो जाय ॥
जैसे बादर आपहि फँसिया । समझवान मनमाहीं हँसिया ॥
मूठ चनोंकी जो वह तजता । तौ काहेकूं फँसा जु रहता ॥
ज्यों कांटेसूं मच्छी लागी । आपहि आई चली अभागी ॥
सरुवरमें तरुवरकी छाहीं । अजया देखि गिरी वा माहीं ॥
जैसे पक्षी जाल मँझारा । आपहि आय फँसा वजमारा ॥
खन्दकमें हाथी आ परिया । लैन गयोकोउआपहिगिरिया ॥
बाजत बीण मृगाचलि आया । पकर कौन चंचलकूं ल्याया ॥

---

१ जल्दी.

योंही तुम अपनी गति जानौ। आपहि बधे यही पहिचानौ॥
ऐसे जगने तोहिं नहिं पकड़ा। चरणदास कहैं योंहीं जकड़ा॥

दोहा—छोड़ जगतकी वासना, यही जु छुटन उपाव॥
ये मन ऐसी धारिये, अबहीं नीको दांव॥
अबकी चूके चूक है, फिर पछितावा होय॥
जो तुम जक्तन छोड़िहो, जन्म जायगो खोय॥
जग माहीं न्यारे रहो, लगे रहो हरिध्यान॥
पृथ्वी पर देही रहै, परमेश्वरमें प्रान॥
ज्यों तिरिया पीहरवसै, सुरति पियाके माहिं॥
ऐसे जन जगमें रहैं, हरिकूं भूलैं नाहिं॥
ज्यों किरपण बहुदामहीं, गाड़ि जिमींके नीच॥
सदा वाहि तकतो रहै, सुरति रहै ताबीच॥
तन छूटे हो सरपही, जा बैठै वा ठौर॥
जहां आश तहँ वास है, कहूँ न भम और॥
चितरहैगोविँद के विषै, जगमें सहज सुभाय॥
तनछूटै हरिकूं मिलै, चरणकमललपटाय॥
जग त्यागो वैरागलै, निश्चय मनकूं लाव॥
आठपहर साठौघरी, सुमिरनसुरति लगाव॥
सबसूं रहु निरवैरता, गहो दीनता ध्यान॥
अंत मुक्तिपद पाइहो, जगमें होय न हान॥
चरणदास यों कहत हैं, बड़ी दीनता जान॥
औरनकी तौ क्या चलै, लगै न मायाबान॥
दया नम्रता दीनता, क्षमा शील संतोष॥
इनकूं लै सुमिरण करै, निश्चय पावै मोष॥

ये सब लक्षण राममें, प्रगटत देखैं मोहिं ॥
जो वे आवें तुझ विषे, प्यारकरैं हरि तोहिं ॥
हरि सूं प्रीति लगायके, सब सूं लेहि उठाय ॥
रहै सदा इक रामहीं, और सकल मिटजाय ॥
मिटतेसूं मत प्रीतिकर, रहतेसूं करनेह ॥
झूठे कूं तजि दीजिये, सांचेमें करि गेह ॥
सांचा हरिका नाम है, झूठा यह संसार ॥
शुकदेवकहीचरणदासहो, सुमिरणकरौ विचार॥
दशइन्द्रिन कूं खैंचकरि,अभयअमर फलचाख॥
सहजहि सुमिरण होतहै, तामें मनकूं राख ॥
मानसरोवर देशमें, मुक्ताहल जो श्वाँस ॥
चुगिये हंस स्वरूपहै, खुलै कर्म्मकी गांस ॥
अजपा को यहि अर्थ है, विना जपेही होत ॥
कछुवाकीज्योंसिमटकरि, तहां लगावो गोत ॥
आवतही कं देखिये, जाते कूं जो निहारि ॥
ऐसे सुरत सगाइये, चरणदास हियधारि ॥
सकारेतन सींचिये, हकारे सुख होय ॥
ऐसे सुमिरण संतकूं, जानै विरला कोय ॥
नाभिहि सेती उठत है, फिर तामाहिं समाय ॥
याको भेद अपार है, सद्गुरु देहि बताय ॥
नाभि नासिकामाहिंकरि, घाल हिंडोला झूल ॥
उपजै अति आनन्दही, रहै न दुखका मूल ॥
ब्रह्म सिंधुकी लहरहै, तामें न्हान सजोय ॥
कलिमलसबछुटिजायँगे, पातक रहै न कोय ॥

अरसठ तीरथ तो विषे, बाहर क्यों भटकाव ॥
चरणदास यों कहतहैं, उलटाहो घर आव ॥
श्वासासँभलविचारिकरि, तहां करो विश्राम ॥
जाते हरिही हरिकहौ, आवत कहिये श्याम ॥
श्वासा लेवै नाम विना, सो जीवन धिक्कार ॥
श्वास श्वासमें राम जप, यही धारणाधार ॥
उलट पलट जपरामही, टेढ़ा सीधा होय ॥
याका फल नहिं जायगा, कैसेहीलो कोय ॥
खाते पीते नाम ले, बैठे चलते सोय ॥
सदा पवित्तर नाम है, करै ऊजला तोय ॥
नीचनकूं ऊंचा करै, ऊंचन को कर देव ॥
देवनकूं हरिही करै, रहै न दूजा भेव ॥
भरमत भरमत आइया, पाई मानुष देह ॥
ऐसो अवसरफिरि कहां, नाम शिंतावी लेह ॥
कै घरमें कै बाहरे, जो चित आवै नाम ॥
दोनों होहिं बराबरी, कै जंगल कै ग्राम ॥
करै तपस्या नाम विन, योग यज्ञ अरु दान ॥
चरणदास यों कहतहैं, सबही थोथेजान ॥
अधिकी ऊंचा नाम है, सब करणीका जीव ॥
अष्टादश अरु चारिका, मथिकरि काढ़ाघीव ॥
चारौयुगमें देखिले, जिनजपियाजिननाव ॥
टेक पकरि आगे धँसै, परा न पीछे पाँव ॥
जैसी गति उनकी भई, गावत साधु पुरान ॥

---

१ जल्दी.

वैसी तेरी होयगी, यहनिश्चयकरिजान ॥
दुखधन्धे कं छोड़िकरि, कलहकल्पनात्याग ॥
शुकदेवकहिचरणदासकूं, राम भजनमें लाग ॥
हरिके गुण माला करौ, रसना ऊपर लाव ॥
कियाकियाही देखिकरि, ताहि सराहत जाव ॥
देखि देखि देखतरहो, अस्तुतिमुखसूंभाख ॥
वाकी चतुराई सबै, लैकरि मनमें राख ॥
वैसा तौ रगरेजना, वैसा छीपी नाहिं ॥
वैसा कारीगर नहीं, या दुनियाके माहिं ॥
अजबअजबअचरजकिये, अद्भुतअधिकअपार ॥
जलथलपवनअकाशमें, देखो दृष्टि उघार ॥
सृष्टि बाग माली रचौ, भाँति भाँति गुलजार ॥
रीझरीझ शिर दीजिये, एहो निरख बहार ॥
कबहूं जग परगट करै, कबहूँ करै अलोप ॥
नानाविधि बाजीकरै, आप रहतहै गोप ॥
बाजीगर बाजी रची, सब गति पूरण साज ॥
किये तमाशे बहुतही, तोहिं दिखावन काज ॥
देखि होय परसन्नहीं, तू वाको गुणमान ॥
चरणदास जो बुद्धिहै, अधिक सुघरता जान ॥
बहुत प्यार तोपै करैं, तू नहिं जानत सार ॥
वाहि भुलायेही फिरैं, नेक न करैं सँभार ॥
राम बिसारो आदि सूं, लियो द्रव्य अरु नारि ॥
याहीते भरमत फिरो, तन धरि वारम्वार ॥
गइसु गई अब राखिले, एहो मूढ़ अयान ॥

निष्केवल हरिकूं रटौ, सीख गुरूकी मान ॥
सोवनमें नहिं खोइये, जन्म पदारथ पाय ॥
चरणदासह्वै जागिये, आलस सकल गँवाय ॥
सोवनहीमें हानि है, जागनमें बहुलाभ ॥
बुद्धि उज्वलही होतहै, मुखपर चढ़ैजुआभ ॥
दिनकूंहरिसुमिरणकरौ, रैनिजागकरि ध्यान ॥
भूखराखि भोजनकरौ, तजि सोवनकी बान ॥
चारिपहरनहिंजागिसकै, आधीरात सुजाग ॥
ध्यानकरो जपहीकरो, भजन करनकूं लाग ॥
जो नहिं श्रद्धा दोपहर, पिछिले पहरे चेत ॥
उठ बैठे रटना रटौ, प्रभुसूं लावहि हेत ॥
जागैना पिछिले पहर, ताके मुखड़े धूल ॥
सुमिरै ना करतार कूं, सभी गँवावै मूल ॥
जागै ना पिछिले पहर, करै न आतम ध्यान ॥
ते नर नरकै जाइँगे, बहुत सहैं यमसान ॥
जागैना पिछले पहर, करै न गुरु मत जाप ॥
मुँह फारे सोवत रहै, ताको लागै पाप ॥
पिछिलेपहरेजागिकरि, भजनकरै चितलाय ॥
चरणदास वा जीवकी, निश्चय गति ह्वै जाय ॥
पिछले पहरे जागिकरि, भरिभरि अमृत पीव ॥
विषयजक्तकी ना रहै, अमरहोय करि जीव ॥
जन्म छुटै मरणा छुटै, अवागमन छुटिजाय ॥
एक पहर की रातसूं, बैठा हो गुण गाय ॥
पहिले पहरे सब जगै, दूजे भोगी मान ॥

तीजे पहरे चोरही, चौथे योगी जान ॥
मरयादाकी यह कही, क्या विरक्त परमान ॥
आठ पहर साठौ घरी, जागै हरिके ध्यान ॥
जे कोइ विरही रामके, तिनकूं कैसी नींद ॥
शस्तर लागा नेहका, गया हियेको बींध ॥
तिनसे जग सहजै छुटा, कहा रंक कह भूप ॥
चलेगये घरछोड़िके, धारि विरक्तका रूप ॥
जिनकोमनविरकतसदा, रहो जहाँ चितहोय ॥
घर बाहर दोउ एकसा, डारी दुविधा खोय ॥
सोये हैं संसार सूं, जागे हरिकी ओर ॥
तिनकूं इकरसही सदा, नहीं साँझ नहिं भोर ॥
उनकूं नींद न आवई, राम मिलनकी चीत ॥
सोवै ना सुखसेज पै, तजिकै हरिसों मीत ॥
कैसे वै हरिसूं मिले, जिनके ऊंचे भाग ॥
कैसे वै हरि त्यागिकै, रहे जगत सूं लाग ॥
सोवन जागन भेदकी, कोइक जानत बात ॥
साधूजन जागत तहां, जहां सबनकी रात ॥
जो जागै हरिभक्ति में, सोई उतरे पार ॥
जो जागै संसार में, भवसागर में ख्वार ॥
कै जागत हूका भरा, कै जागा वश काम ॥
कै जागा जग टहलमें, लाग रहो धनधाम ॥
ऐसे जन्म गँवाय दिय, महामूढ़ अज्ञान ॥
चौरासी में फिरि चल, मनका कहा जुमान ॥
सद्गुरुशरणै आयकरि, कहा न मानै एक ॥

ते नर वहु दुखपाइ हैं, तिनकूं सुख नहिं नेक ॥
सद्गुरु शरणै नालगे, कियान हरिका खोज ॥
सो खर कूकर शूकरा, अरु जंगल का रोझ ॥
पेट भरे भर सोइया, ते नर पशू समान ॥
परनारी के आपनी, तिनका नाहीं ज्ञान ॥
जैसा तैसा खाय करि, पेट भरे भरि लेह ॥
पड़कर सोवै भोरलौं, सो शूकर की देह ॥
हरिचरचा विन जो वकै, सो कूकर की भूस ॥
कहरणजितवहसाँझ लौं, खाय धूंसही धूंस ॥
जो पावे सोई चरै, करै नहीं पहिंचान ॥
पीठ लदे हरि ना जपै, ताकूं खरही जान ॥
रोझ जान वा देहकूं, ताकूं नहीं विचार ॥
फिरै विना मर्य्यादही, वहुता करै अहार ॥
वहुता किये अहारही, मैली रहै जु बुद्धि ॥
हरि के निर्मल नामकी, कैसे आवै शुद्धि ॥
सूक्षम भोजनखाइ करि, रहियेना परि सोय ॥
ऐसी मानुष देह कूं, भक्ति विना मत खोय ॥
जन्म चलोही जात है, ज्यों कूवे सैलाव ॥
दौरत मृगकी छाँह को, नेक नहीं ठहराव ॥
समझ शितावी भक्ति ले, नेक न ढील लगाव ॥
आपा हरिकूं दे चुको, याको यही उपाव ॥
जगका कहा न मानिये, सद्गुरु सों लै बुद्धि ॥
ताकूं हियमें राखिये, करो शितावी शुद्धि ॥

गुरु सेती सद्गुरु बड़े, परमेश्वर के रूप ॥
मुक्ति छाँह पहुँचाय दें, जगत छुटावैं धूप ॥

कुण्डलिया—पहिला गुरुदाई कहूं, दूजे माई जान । तीजा गुरू खिलावड़ी, चौथा पिता पिछान ॥ चौथा पिता पिछान पाँचवें पाधा जानौ । कनफूका गुरु छठा सात पूजा दे मानौ॥ सतवां सद्गुरु जानिये जगसूं करैं उदास । मुक्तिधाम सोइ देत हैं, कहैं चरणहीदास ॥

दोहा—गुरु मिलते ऐसे कहै, कछू लाय मोहिं देह ॥
सद्गुरु मिल ऐसे कहै, नाम धनीका लेह ॥
कनफूका गुरु जगतका, राम मिलावन और ॥
सो सद्गुरु को जानिये, मुक्ति दिखावन ठौर ॥
गलियारे गुरु फिरतहैं, घर घर कंठी देत ॥
और काज उनकूं नहीं, द्रव्य कमावन हेत ॥
सद्गुरु डंका देत हैं, भक्ति रामकी लेहु ॥
पहिले हमकूं भेंटही, शीश आपनो देहु ॥
सो सद्गुरु शुकदेव हैं, समझि हिये में राखि ॥
तिनके शरणै आव मन, चरणदास कहै भाखि ॥
यह सिगरो उपदेशही, मैं आपनकूं कीन ॥
मोमनकूं आपा घना, कहीं होय आधीन ॥
सद्गुरुसूं मांगौं यही, मोहिं गरीबी देहु ॥
दूर बड़प्पन कीजिये, नान्हाहीं करिलेहु ॥
जनक परम गुरुदेवजी, सुनु सद्गुरु शुकदेव ॥
यही अर्ज मैं करतहूं, मोहिं साधु करिलेव ॥

चारौयुग के भक्तजन, तुमहौ सुखके धाम ॥
चरणहिंदासा होयकै, तुम्हैं करूं परणाम ॥
आदि पुरुष किरपा करौ,सवअवगुणछुटिजाहिं॥
साधहोन लक्षण मिलैं, चरणकमलकी छाहिं ॥
तुम्हरी शक्ति अपारहै, लीला को नाहिं अंत ॥
चरणदास यों कहत हैं, ऐसे तुम भगवंत ॥

छप्पय–रच्यो आपमें जगतरूप नारायण कीन्हों। दूजे लक्ष्मी भई वहुरि पानी रँग भीन्हों॥ नाभिकमल फिरि भयो जहां ब्रह्माजी उपजे। विधिकी त्रिकुटी माहिं तहां शंकरजी निपजे॥ चारि वेद अरु विष्णु ह्वै सकल जगत छिनमेंकियो॥ निराकार आकारसों चरणदास जिहिं मन दियो॥

कवित्त॥ वही तो अडिग्ग राम चौथे पद वास जाको, वही तौ अडिग्ग राम मथुरामें आयोहै। वही तौ अडिग्ग राम योगी जाको ध्यान धरैं, वही तौ अडिग्ग राम सीतापति पायो है॥ वही तौ अडिग्ग राम सभीठाम रमि रह्यो, वही तौ अडिग्ग राम संतन सुहायो है। वही तौ अडिग्ग राम चरणदास चेरो जाको, वही तौ अडिग्ग राम काया खोजि पायोहै॥ मायाभ्रम फंददेख साधनको संगपेख, रामजूको पहिरि भेख कंचन तनतावरे। मनकूं पहिंचान ज्ञान एकाएकी सबै जान, नादके गेहेते तू अनाहद वजावरे॥ उलटि पलटि काया वीच चारो कर दूर नीच, ऐसी विधि मेरुपै समीर कूं चढ़ावरे। कहैं चरणदासा गमन मध्यकरौ वास जहां, नहीं शीत उष्ण निरभय पद धावरे॥

दोहा—दुर्योधन रावण गये, अरु यादव परिवार ॥
चरणदास थिरको नहीं, होय मिटै संसार ॥

कबित्त ॥ भोरसो विहानो जात ढरैगी दुपहरीसी, समझके विचारि देखि चली आवेरात है। भवँत है सचान काल तेरेपर तकिरहो, छिन पलकी खबर नाहिंकैरै आय घात है ॥ दारासुत सम्पति सब सपनेको सुख भयो, जानौगे जभी जब छूटिजाय गात है। कहैं चरणदास अब तजै क्योंन विषया वास, पांनी में नाव जैसे आयु चलीजात है। कुमारगसूं भाज और लाज खोटे करमन सूं, चौरासी के त्रासनसूं मूढ़ क्यों न लजरे। साधुनके संग बैठि धर्महूकी नाव लेटि, गुरुहूको ज्ञान राखि प्रेम भक्ति सजरे ॥ छूटै जब नारी यमदेवैं दुखभारी, डारैं नरक मँझारी आवागमन क्यों न तजरे। कहैं चरणदास अब तजै क्यों न विषय वास, रामके सँवारे तू रामराम भजरे ॥

सवैया।

भूलिरहो जगमें जड़ता वश दारासुतासुत प्रीतिबढ़ावे।
इनसूं मन बाँटिरहो गृहबीच सो अन्तसमै कोइपास न जावै ॥
आनिगहैं यमराज जबै सबही मिलि प्रीतम रामबतावै।
चरणदास कहैं चेतोनर मूरख रामबिना कोइ काम न आवै ॥

कबित्त ॥ धोवै भरम देवनकूं भीतनके लेवन कूं, संग साथी नाहिं भारि परे तेरा है। परसता है चंडकी भूत अरु शीतला कूं, भजै क्यों न रामनाम कटै यम वेराहै ॥ भैरों अरु वराही पाखंड पूजा सभी करैं, लगा है वहीर किन्हूं नैनन नहेरा है ॥ चरणदास कूं सब सन्तनको चेरो कहै, ऐसो जग अन्धा जानि कर्मनने घेरा है ॥

दोहा–यंतर टोना मूड़हलावन, और कीमियाँ झूठ ॥
चरणदासकहैंसवभगालहै, यहं जग लीन्हालूट ॥

कवित्त–भूतनकूं सेवै सो भूतनमें जाय मिलै, जादूको सेवै सो चमार ताकी माईसूं । देवतौंकूं सेवै तौ देवलोव वास-लहै, औपधीकूं सेवै तौ मिलाप रावराईसूं ॥ कीमि॰ाां सेवै तौ खराव होय दुनियामें, ऐसे धन खोवै जो सुनावै नहिं भाईसूं । कहैं चरणदास हम इतने कूं मानै नाहिं, देखी सवी छाड़िमन लगो है कन्हाईसूं ॥

कुं०–पारा मारा ना मरै, गंधक होय न तेल ॥
केते पचि पचि मरिगये, शिरमें मिट्टी मेल ॥
शिरमें मिट्टी मेल भटककरि जन्म सिरायो ॥
जड़ी बूटिकूं फिरे वहीं कुछ हाथ न आयो ॥
वौरे हरि क्यों भजै न काहे जन्म सिरायो ॥
चरणदास कीमियां झूठ शुकदेव सुनायो ॥

अरिल्ल ॥ सात पांचकी सेवत जो लगि एकसूं । सा॰नकी करिसेव मुड़ो मत भेपसूं ॥ भेषी माहिं अलेख यही तू॰ानि-यो । चरणदासकी सीख निश्चय करि मानियो ॥

दोहा–आपै भजन करैं नहीं, औरे मने करैं ॥
चरणदासकहैं वेदुष्टनर, भर्मभर्म नरके परैं ॥
औरनकूं उपदेश करि, भजन करैं निष्काम ॥
चरणदासकहैंवेसाधुजन, पहुँचैं हरिके धाम ॥
शून्य शहर हम वसतहैं, अनहद है कुलदेव ॥
अजपागोत विचारिले, चरणदास यहिभेव ॥
भक्ति पदारथ उदयसूं, होयसभी कल्यान ॥

पढ़ै सुनै सेवन करै, पावै पद निर्वाण ॥
भक्ति पदारथ मैं कही, कछुइक भेद बखान ॥
जो कोइ समझै प्रीतिसूं, छूटै यमदुखसान ॥
पाठकरै मनमें धरै, बहुरूं करै विचार ॥
कहैं गुरू शुकदेवजी, उतरै भवजलपार ॥
जयजय श्री शुकदेवजी, तुम्हें करूं परणाम ॥
तुमप्रसाद पोथी कही, भये जो पूरणकाम ॥
हिरदयमें शीतल हुये, तपनिगई सब दूर ॥
या वाणीके कहेते, कायर मन भयोशूर ॥
चन्दन चरचै पुष्पधरि, बहुरि करै परणाम ॥
कथा बांचि सबही सुनै, कहापुरुष कहवामं ॥
कहै सुनै जो प्रेमसूं, वाकूं राखै याद ॥
चरणदास यों कहत हैं, बजिहो पूरे साध ॥

इति श्रीस्वामिचरणदासजीकृतभक्तिपदार्थवर्णनंसम्पूर्णम् ।

अवधूतायनमः ।

अथ मनविकृतकरनगुटकासार ।

दोहा—नमो नमो श्रीव्यासजी, सद्गुरु परमदयाल ॥
ध्यान किये आशानशै, लगै न जगत बयाल ॥

अष्टपदी ।

नमोनमो शुकदेव तुम्हें परणाम है । तुम किरपासों आप मिलैं घनश्याम है ॥ तुम्हरी दयासों होय जु पूरणयोग है । तनकी व्याधा छुटै मिटै मन रोग है ॥ तुव किरपासों ज्ञान पदारथ पावई । उपजै सार विचार असार छुटावई ॥ तुम्हरी दयासों होय भक्ति निसभोरहै । हियसरोवर उठत जु प्रेम हिलोरहै ॥ तुमकिरपा वैराग दूरलगि आवई । सकल वासना छूटि परमपद पावई ॥ सब गुणदायक लायक परमदयालहौ ।

ममहिरदयमें आय भेद सबही कहौ ॥ मोसे कछु नहिं होय जु तुमबिन नाथजू । नितहि रहै तुव हाथजु मेरे माथजू ॥ अरज करे रणजीत सुनो गुरुदेवजी । मोमुख सेती भाषिकहो सब-भेवजी ॥

दोहा—एकादश भागवतमें, जाकी यह गति जान ॥
दत्तात्रेयीने कह्यो, राजा यदु सों ज्ञान ॥
अब मैं भाषा कहतहौं, तुमहीं करौ सहाय ॥
ज्योंकीत्योंमुखसेनिकासि, पूरीही ह्वै जाय ॥
सुनियो ज्ञानीसन्तजन, रहन गहनकी चाल ॥
जो कोइलै हिरदय धरै, होवै तुरत निहाल ॥
चरणदासहौं कहतहौं, परमारथ के काज ॥
जो अँग श्रीभागवतमें, साधु होनेके साज ॥
गुरु शुकदेव प्रतापसों, कहूं विचार विवेक ॥
दत्तात्रेयीने किये, चौबीसौ गुरु देख ॥

कुं०—एक दिना यदुभूपही, खेलन गये शिकार ॥
तहाँ नगरके निकट जो, ह्वां थी अधिक उजार ॥
ह्वांथी अधिक उजार एक अवधूता लेटे ॥
मूरति पुष्ट प्रसन्न जक्तके भय सब मेटे ॥
राजा देखि प्रणाम करि, पूछा शीश नवाय ॥
पाये आनँद कहा तुम, मोसे कहौ उपाय ॥

दोहा—बोले दत्तात्रेय जब, सुन हो भूप विशाल ॥
चौविसपरिक्षागुरुकिये, तासों भये निहाल ॥

कुं०—पृथ्वी पवन अकाशहै, नीर अग्नि शशि भान ॥
कपोत गुरुअजगरलखो, और सिंधुको जान ॥

और सिंधुको जान पतंगा भँवरा कहिये ॥
माखी हाथी मृगामीन अरु पिंगला लहिये ॥
चील्हूवाल कन्याकहूं, तीर बनावन हार ॥
साँप माकरी भृंगजो, चौबीसौं उरधार ॥
दोहा—भिन्नभिन्न अब कहतहौं, जुदो जुदो बिस्तारि ॥
ताकोसुनिकरि चेतियो, चरणदास नरनारि ॥

अष्टपदी ॥ दत्तात्रेयकी बात सकल अब गायहौं । बीसचारि गुरुकिये ताहि समुझायहौं ॥ जिसकारण जिसहेतु जु उन ऐसीकरी । जो जो शिक्षालई समझ हिरदयधरी ॥ जासों भजै मनरोग जक्त ब्याधानसी । उपजि परम संतोष क्षमा हिय आवसी ॥ परम भये आनंद परमपद पाइया । जीवन्मुक्ता होय के चाह उठाइया ॥ सोइ कहूं अब साध सबै सुनि लीजिये । शुकदेव परीक्षितसों कहो सांच पतीजिये ॥ दत्तात्रेय अवतार श्रीभगवानके । राजा यदुसों बोलि वचन भाषत भये ॥ हमने गुरू चौवीस करे संसार में । तिनको ज्ञान विचार कहूं निर्धारमें ॥ पहिले गुरुकी शरणगही बहुप्रीति सों । उनदीनों उपदेश मंत्र जो रीतिसों ॥

दोहा—सद्गुरुने किरपा करी, धरो हाथ मम शीश ॥
यही कही सुमिरण करो, ध्यान करो जगदीश ॥

अष्टपदी ॥ काया छीजत देखि यही मनमें धरो । बिरथा खोवन आयु नेम तपको करो ॥ गहि बिरक्तकी रीति तभी गृहको तजो । रामभक्ति को चाव हमारे मन रचो ॥ जगसों रहो उदास बास हरि पद जहां । छुटि छुटि जावैं ध्यान न मन लागे तहां ॥ बालक गारी देइ कोई बेलानहीं । शिरपै डारैं

खेहसोई वेकाजहीं ॥ हँसि हँसि ताली पीट जु हमरे सँगलगैं । मैंहूं चलो उठाय तौ वै आगे भगैं ॥ ताते निशिदिन क्रोध आपने मनधरूं । हरि सुमिरण गो भूलि जक्तमें यों फिरूं ॥ अव शिक्षा गुरु किये चौवीसो भेदही ॥ सो अव वर्णन करूं छुटै सव खेदही ॥ तिनसों सीखीचाल सभी उरमें धरी । चरणहिं दास होय सुरति आनँद भरी ॥

पृथ्वी १.

दोहा—पहिले गुरु पृथ्वी किया, तीन सीख लइतास ॥
गिरिवर तरुवर मही जो, भयो चरणको दास ॥

अष्टपदी ॥ पहिले पृथ्वी गुरू हमारो जानिये । ताते लइमति तीन सांच हिय आनिये ॥ पहिले पर्वत एक मही ऊपर लखा । जाके निकटै जाय जु चढ़ि बैठा शिखा ॥ कोइ ऊपर चढ़ि जाय कोई आवै तले । जल वरषै ना बहै पवन सो नाहिलै ॥ वा पर्वतकी सीख बुद्धिमें मानियां । देह लोभ दियो त्याग जु थिरता आनियां ॥ क्रोध दियो विसराय जो तामस डारई । कोउ कहौ दुर्वचन कोउ क्यों न मारई ॥ क्रोध लोभ जो होय करै मन भंगहै । कैसे सुमिरण होय लगै हरि रंगहै ॥ क्रोध लोभ छुटिजाय यह रहन अगाध है । पर्व्वतकी सम होय जो निश्चल साध है ॥ वृक्ष कहूं अव जान जासु मति पाइया । कहै चरणको दास जो चित्त लगाइया ॥

दोहा—तरुवरने काया धरी, परमारथके हेत ॥
कोऊ वैठै छाँह में, कोऊ कारज लेत ॥

अष्टपदी ॥ दूजे देखे वृक्ष धरणि ऊपर भले । उनहूँकी लइ सीख गयो उनके तले ॥ मन न हुती यह वात जु पर कारज-

करूं । याप्राणीके काज नहीं करतो फिरूं ॥ जब आई यह रीति वृक्षकी दृष्टिमें । मैं लीन्ही सोइ धारि भलीविधि सृष्टिमें ॥ कोई बैठे छाहँ कोई डारी हनै । कोई ले फल फूल वृक्ष कछु ना भनै ॥ परमारथके काज वृक्षदेही धरी । सकल जीव क्यो-साह यही मनसा करी ॥ जो विरक्तसों काज कोई अपनो कहै । वाको नाटै नाहिं सभी शिरपर सहै ॥ काहूको कछु काज जो काया सो सरै । यह शिक्षा भलिभाँति वृक्षकी मनधरै ॥ तीजे शिक्षा और महीकी धारिया । चरणहिंदासा होय अहूंको मारिया ॥

दोहा—कोई खोदै नीवको, कोई खोदै कूप ॥
अरु ऐसे कारज किते, ऐसो धरो स्वरूप ॥

अष्टपदी ॥ काहूको वह भलो बुरोहूना कहै । ऐसे विर-क्तरहै सभी दुख सुखसहै ॥ हरि सुमिरणमें मगन सदा आनँद रहै । भलो बुरो नहिं मान एकता दृढ़ गहै ॥

पवन २.

दूजे गुरु कियो पवन सीखलइ जासुकी । दोय भाँति पहिंचान हिये धरि तासुकी ॥ इकदिन बागके माहिं सहजही मैं गयो । देखन लाग्यों फूल जाय ठाढ़ो भयो ॥ पुष्पनसों लगि पवन बास मोहिं आइया । जबहीं कीन्हों ज्ञानवास सब पाइया ॥ वह तौ अतिहि सुगन्ध हर्ष उपजावई । फिर आई दुर्गन्ध बहुत अनखावई ॥ गन्धहिसों लगि पवन आप गन्धहि भई । फुनआई बिन गन्ध शुद्ध निर्म्मल वही ॥ वाको देखि स्वभाव यही मन आइया । चरणहिंदासा होय अंग उपजाइया ॥

दोहा—एक दिना इच्छा करि, भिक्षामाँगी जाय ॥
अपनी श्रद्धा उन दियो, भोजन करमें लाय ॥

अष्टपदी ॥ वाकी अस्तुति नाहिं कछू मुखते कही । फिरि गयो दूजे द्वार दई भिक्षा नहीं ॥ जाकी निंदा नाहिं कछूक उचारिया । अस्तुति निंदा त्याग यही जु विचारिया ॥ जिन कछु दीन्हों नाहिं नहीं औगुण धरो । जो कछु पहिले आयो सोई भोजन करो ॥ जो कहुं अपने काज गयो भलि ठांवहीं । गिरहूण कीन्हो नाहिं रंग नहिं लावहीं ॥ जो गयो भोंड़ीठौर बुरो नहिं जानियां । आतमरूप सँभाल जहां मन आनियां ॥ सवही सों निर्लेप सवन के माहिंहूं । सहज भवनमें आय सहज कहि जाहिंहूं ॥ परालब्ध जो पाय ताहि भोजन कियो । नातौ करि परणाम वैठि योंहीं रह्यो ॥ जिह्वा लौहीं जान स्वाद भोजन सभी । इकसम सवही होयँ उदर जावै जभी ॥ अब आयो सन्तोप कल्पना सब गई । चरणहिं दास भयो जभी यह मति लई ॥ २२ ॥

आकाश ३.

दोहा—तीजे गुरु आकाश को, कीन्ह्यो सभी सँभार ॥
जाकी मतिके लेतही, पायो ब्रह्म विचार ॥

अष्टपदी ॥ तामें वरसै मेह और आंधी चलै । विजली चमकै वामाहिं और पावक जलै ॥ सदा रहै निर्लेप और निर्मलरहै । सबही जग वामाहिं आप निर्लेम्वहै ॥ पवन हलावै नाहिं अग्नि जारै नहीं । ताहि न भिजवै नीर मरै मारै नहीं ॥ लघुदीरघ नहिं होय पुरुष नहीं नारहै । नहिं सूक्षम नहिं भार वार नहिं पारहै ॥ शब्द उठै बहुभाँति वही जो अबोलहै । उतपति परलय

माहिं सदा जो अडोल है ॥ यह नभ ब्रह्मसमान लखे दृष्टांत है। निरखि हिये की आंखि गयो सब भ्रांत है ॥ भाँड़े कनक के होहिं चांदी के देखिया। कांस पितलके होयँ मटी के पेखिया ॥ सब माहीं आकाश एकही जानिया। यों घट घट- में ब्रह्म सकल पहिचानिया ॥ थिर चरही के माहिं जु थावर जंगमें। न्यारा अरु सब बीच भली विधि रंगते ॥ जो वर्तन गयो फूटि रहो आकाशहूं। ऐसेहि काया विनशि रहै नित ब्रह्मजू ॥ नित्य अनित्य विचार तभी निश्चय भई। पायो आत्मज्ञान सभी दुविधा गई ॥ ना काहूसे वैर काहूसे प्रीति है। ना काहू दुख देहुँ नहीं सुख रीति है ॥ काहूसे नहिं डरूं न काहू सँग लगूं। काहू की शरण न जावँ न काहूसे भगूं ॥ कहैं श्रीशुकदेव विवेक विचार सों। दत्तात्रेयी कह्यो यथा यदुराज सों ॥ यह शिक्षा आकाशसों लीन्ही जानिके। चरणहिं दासभयो यही मत मानिके ॥ २४ ॥

नीर ४.

दोहा—चौथे गुरु किय नीरही, जाको सुनिय प्रसंग ॥
आप महा उज्ज्वल रहै, मिलिजावै सब रंग ॥

अष्टपदी ॥ जल ज्यों निर्मल होय सदा बिरकत वही। तजै न शीतल अंग वसै नितही मही ॥ गृही संग जो चलै बाट कबहूं कहीं। मनसों न्यारा रहै लेप लागै नहीं ॥ ऐसो रखै विचार यथा वरषा समै ॥ जल मैला ह्वै जाय खेह सँगही रमै ॥ संगति गुणसों होय जु गँदला आपही। जाड़े में ह्वै शुद्ध लगै नहिं पापही। समझो यों चितमाहिं संगको गुण यहै। निर्म्मल नीर स्वभाव सदा उज्ज्वल रहै ॥ संसारीके संगसो जब मन फिरगयो। तब

नारायण रूप ध्यान आनँद लयो ॥ कछू मैल मनमाहिं कबहुँ व्यापै नहीं । जल अरु साधू भाँति एक जानौ तहीं ॥ जो कुचील कछु होय सो जलसों धोइये । वाको कीजै शुद्ध मैल सब खोइये ॥ साधू ऐसा होय ज्ञान मुख उच्चरै । श्रोताके सब पाप ताप व्याधा हरै ॥ तातेही उपदेश भक्तिका कीजिये । नीच ऊंच मतदेख वृक्ष ज्यों सींचिये ॥ मीठे शीतल नीरको यह गुण लीजिये । मीठा सबसों बोलि परमसुख दीजिये ॥ गुरु शुकदेव प्रतापसों जल गुण गाइया । चरणहिं दास होय न मनता आइया ॥

अग्नि ५.

दोहा—पंचमगुरु कियो अग्निको, समझि निहारि निहारि ॥
उत्तम मध्यम जारदे, राखै कछु न विचारि ॥

अष्टपदी ।.

ब्राह्मणहूं करै होम शूद्र जोपै करै । दोउ पवित्र करै युगल के अघ हरै ॥ ऐसे साधूलोग जहां भोजन करैं । वाको पावन करैं पाप सबहीं हरैं ॥ गृही जु सेवा करै आश ऐसी धरै । विरकत भोजन किये पाप निश्चय जरै ॥ धान्य हमारी खायजु साधूजन कभी । हमरे प्राछत जाहिं और व्याधा सभी ॥ साधूजन जो होय अग्निके भाँतिही । सकलपाप करै छार जु वाकी क्रांतिही ॥ सदा गुप्तही रहै प्रगट किये होतहै । ऐसे साधूभेद छिपावै जोत है ॥

चंद्रमा ६.

छठवाँ गुरु कियो चन्द सदा इक सम बहै । कला घटै अरु बढ़ै मावस लगना रहै । पूनोको सब होहिं कलाभर पूरही ।

चांदनि सब जगमाहिं विराजत नूरही ॥ शशिमण्डल इकभाँति रहै नाहीं घटै। योंहीं आतमरूप चरणदासा रटै ॥

दोहा—उतपति परलय देहको, घटै बढ़ै दुख होय ॥
आतम इकरस जानिये, अविनाशी है सोय ॥

अष्टपदी ॥ ताते कियो विचार यह काया ना रहै। जन्म मरणही होय कलाके ज्यों यहै ॥ परमातम इकभाँति सदाही जानिये। घटै बढ़ै वह नाहिं यों मनमें आनिये ॥ काया छोटी होय बड़ी पुनि होत है। कबहूँ हो मनमगन कबौं रोवै वहै ॥ आतमहीं नितजानि जु कायामें रहै। वही सदा इकभाँति कोई ज्ञानी लहै ॥ ताते श्रीभगवानको सबठां पेखिकै। मनमाहीं गहिराखि फिरतहूं भेखिकै ॥

सूर्य्य ७.

सतवें गुरु किया सूर जु शिक्षा दोलई। आठमहीने किरणि नीर सोखत वही ॥ चारमास वह आप फेरि वरषा करै। वा जलको कछु लोभ नहीं मनमें धरै ॥ ऐसे साधू होय जु कछु कोइदेतहै। वाको आछीभाँति सोई वह लेतहै ॥ मोह न कबहूं करै जु कोई कछु चहै। चरणहिं दासा जानि सोई यह गति लहै ॥

दोहा—लेते कछु हरषै नहीं, देते दुख नहिं होय ॥
ऐसे निर्लोभी रहै, चरणदास है सोय ॥

अष्टपदी।

दूजे जो प्रतिविम्ब सूरको देखिये। जल भांड़ों के माहिं सबन अवरेखिये ॥ खोजिकै देखौ वाहि सूर तौ एकहै। घटघटमें प्रतिविम्ब विचारि अनेकहै ॥ ना काहूसे वैर

प्रीतिहू ना करे । सूरज एक निहारि सकल घट छबि धरै ॥ ऐसेही निर्लोभ सदा निर्लेप है । वाको साधू जान सो ऐसी विधि रहै ॥

कपोत ८.

अठवें कियो कपोत गुरू मैं विचारिकै । निर्मोहित मन भयो तभी जु निहारिकै ॥ उठी एक मनमाहिं नारि सुत कीजिये । जगमें ह्वै निश्चिन्त बहुत सुख लीजिये ॥ सहज बागके माहिं जाय ठाढ़ोभयो । वृक्षपै एक कपोत कपोतिनि को लख्यो ॥ ता ऊपर उनगेह आपनो साजिया । बहुत प्रीति सुखमानि सकल दुख भाजिया ॥

दोहा—करि विचार मनमें धरी, धन्यभाग सुख होय ॥
हम समान या जगतमें, और न दीखै कोय ॥

अष्टपदी ॥ भयो कपोतिनि गर्भ अण्ड द्वैवादिये । प्रीतिसों सेवन किये फूटि द्वैसुत भये ॥ केतक दिवसन माहिं पंख निकसे सभी । उड़िकै बैठन लगे डारऊपर तभी ॥ निरखत बहु सुखमानि कपोत कपोतिनी । हमरे अति बड़भाग दियो यह सुख धनी ॥ एक रहे घर माहिं जु रक्षा धारने । दूजे वनमें जाय जीविका कारने ॥ वनसे चूगालाय वचन मुख डारई । वाते उनकी क्षुधा सकल निरवारई ॥ जन्म सुफल मनजानि रैनदिन योंरहै । वसुधामें कछु शोच न हियमाहीं लहै ॥ इकदिन कह्यो कपोत कपोतिनि साथही । ये बच्चा अब बड़े भये सब गातही ॥ एतौ रहैं गृहमाहिं दोऊ हम वन चलैं । चूगालावै बहुत करैं भोजन

भलें ॥ ह्वै करि निस्संदेह दोऊ वनको चले। कहैं चरणहिंदास चुगनलागे भले ॥

दोहा—पाछे वधिक जु आइया, दीनो जाल बिछाय ॥
पकरन की मनमें करि, बैठ्यो घात लगाय ॥

अष्टपदी ॥ दोऊ गे वनमाहिं वधिक इक आइया। उन बच्चनको देखिकै जाल बिछाइया ॥ तापर किणका डारि आप तौ छिपिरह्यो। बच्चन चूगा देखि भेद कछु ना लह्यो ॥ यह कणकारण मातपिता वनको रमैं। सो पायो यंहिठौर चुगैं क्यों ना हमैं ॥ दोऊ उतरे तहां जबै मुख डारिया। तब वाहि वधिकने जाल फंदको मारिया ॥ आय कपोतिनि जबै शब्द नाहीं सुनो। घरमें पाये नाहिं शीश तवहीं धुनो ॥ बच्चन कारण शब्द कियो हंकारिकै। बोले पिंजर माहिं जु वचन निहारिकै ॥ देखि कपोतिनि जालमें यह मन आनियां। अपना जीवन अफल जगतमें जानियां ॥ तनमें अतिदुखपाय कल्पना बहु करी। कहैं चरणहींदास बुरी आशा धरी ॥

दोहा—जाल माहिं मोसुत फँसे, जाय परौं वा ठौर ॥
विकल होय चलिभे तबै, कियो विचार न और ॥

अष्टपदी ॥ मोह फंदवश होय जालमाहीं परी। वाहू को गहि वधिक पिंजरमाहीं धरी ॥ आयो बहुरि कपोत लख्यो सुत बालहूं। इन विन कैसे जिऊं मरौं बेहालहूं ॥ परो जालके माहिं बहुत दुख मानिकै। चारौ गहि लै चलो वधिक सुख जानिकै ॥ राजा मो मनहुति जु सुत दाराकरूं। निरखि लई यह सीख बहुरि नहिं चितधरूं ॥ वाको कीन्ह्यो गुरू यह कौतुक देखिकै। हरि सुमिरणमें पगोरहूं जु विशे-

षिकै ॥ मोह महादुखरूप सकल बिसराइया । लिये रहूं वैराग परमसुखपाइया ॥ सदारहूं निर्बंध द्वन्द सब भाजिया । चरण कमलको ध्यान हियमें साजिया ॥ तहां बसौं निशि भोर अंत नाहीं वहूं । चरणहिंदासा होयकै निज आनंद लहूं ॥

अजगर ९.

दोहा—नवां गुरू अजगर कियो, लियो परमसंतोष ॥
परालब्ध दृढ़ करि गही, रहा राग नहिं दोष ॥

अष्टपदी—जिहि कारण गुरु कियो कहूं कारण सभी । जासों रहौं दृढ़ बैठि भयो धीरज तभी ॥ आगे भिक्षा काज़ ध्यान तजि डोलतो । कोऊ देतो भीख कोउ दुर्बोलतो ॥ जो कोउ भोजन दियो मगन होतो तहां । जो कोउ नाहिं दियो क्रोध करतो तहां ॥ अजगर इक दिन लखो जहां उतपतिभयो । निशिदिन ह्वांई रह्यो कहूं नाहीं गयो ॥ आय अचानक मृगा सिंह वा मुखधँसै । चौपाये यों आय तासु मुखमें फँसै ॥ जो वह जागतहोय उन्हें मुख सों गहै । तिनको भोजन करै उदर भरियों लहै ॥ परालब्ध जो होय सोई ह्वां आरहै ।परो रहै वहिठौर सभी दुख सुख सहै ॥ वाकी लीनी रहनि बहुत सुखपाइया । चरणहिंदासा होय अधीर गँवाइया ॥

दोहा—जबसों पर आशा तजी, गृहीद्वार नहिं जावँ ॥
लगो रहौं हरिध्यानमें, सहज मिलै सो खावँ ॥

अष्टपदी ॥ मनराखौं प्रभु ध्यान सदा आनन्दमें । ज्ञान दिशा अब भई रहों नहिं द्वन्दमें ॥ याचक घर घर फिरै न भिक्षा पावई । साधनको वनमाहिं भोजन हरि ख्वावई ॥ जब भइ ऐसी समझ निचल बुधि आइया । जहँलग जिह्वा स्वाद सभी

जु गँवाइया ॥ स्वादी अरु विन स्वाद जो भोजन आवई। करि सब अंगीकार सुरुचि सों पावई ॥ सूखो गीलो होय जु भूनो हो कछू। ताको फेरौं नाहिं सभी लेकर भछूं ॥ जो कछु आवै नाहिं ह्वांई बैठो रहूं। परालब्धी जानि बुरो भलो ना कहूं ॥ सकल विकल नहिं होय न आशा कछु कहीं। नारायणके ध्यान रहूं लागो वहीं ॥ अजगर कीसी वृत्त निरी मेरे रही। चरणहिंदासा होय भक्ति दृढ़करि गही ॥

सिंधु १०.

दोहा—दशवें गुरु कियो सिंधुको, कहूं सोई परसंग ॥
लीन्हे समझ विचारिकै, जाके तीनो अंग ॥

अष्टपदी ॥ खारी नीर स्वभाव सदा इक रस वही। मीठी सरिता वहुत चली आवै वही ॥ मिलि नहिं फिरै स्वभाव तासु को जानिये। ऐसे विरकत रहै जगतमें मानिये॥ वहुतै होय गँभीर थाह नहिं पावई। ऐसा साधू जानि राम मन भावई ॥ वर्षाऋतुकी नदी रलैं वहुवादसों। घटै बढ़ै वह नाहिं रहै मर्यादसों ॥

पतङ्ग ११.

एकादश जो पतंग कहूं मैं सुनायकै। देखि दीपकी ज्योति गिरोहै आयकै ॥ दीन्हों आप जराय हाथ कछु ना लगो। समुझिकामिनी रूप सो मैं दूरीभगो ॥ ज्ञान जाय अरु नरकपरै इस रीतिको। सुन्दररूप निहारि करो मत प्रीतिको ॥

भँवरा १२.

दोहा—फूल फूलपर बैठि कै, उदर भरै तिसनाल ॥
सो भवँरा गुरु वारवां, लई जु वाकी चाल ॥

अष्टपदी ॥ भिक्षा कारण मांगन घर घर जात हो । कोऊ देतो आनि कोऊ जु रिसातहो ॥ ताते शिक्षा भवँर कि यह उरमें लही । सूक्षम सबही पुष्पसों उन रसनागही ॥ तब मैं कियो बिचार इकट्ठो लेनते । देनहार को दुःख बहुतही होतहै ॥ नेक नेकही लेहु बहुत घरजायकै । उदर पूरणा करूं जु आनँद पायकै ॥ जितना होय अहार सोई अब लेतहों । वासी नेक न राखि न काहू देतहों ॥ अलिसुतकी यह रीति भूखभरि खावई । और दिना के काज न नेक बचावई ॥ फूलनको रस चाटि नहीं उनसों बँधे । ऐसे विकरत रूप जगत में ना फँधे ॥ चरणहिं-दासा होय त्याग मन राखई । राजा सों इहिभाँति ऋषीश्वर भाखई ॥

मधु मक्खी १३.

दोहा—देखि दशामाखीनकी, तजो सकल संदेह ॥
मिटि दुविधा निर्भय हुये, भई सुखारी देह ॥

अष्टपदी ॥ तेरह शहतकी माखी ताहि पिछानियाँ । सब वृक्षनको मीठो इकठाँ आनियाँ ॥ जब छत्ताभो पूर किसीने तोरिया । सब रस लीन्हों काढ़ि कै वाहि मरोरिया ॥ बहुत भयो उन कष्ट जु वै भागी फिरीं । बहुत मरीं वहि ठावँ बहुत सिसकैं गिरीं ॥ ताते माखी गुरू हिये माहीं धरो । कोउ जक्तकी वस्तुको संग्रह ना करो ॥

हाथी १४.

चौदहवें हाथी जानि काम वश होयकै । आपा आप बँधाय जन्म दियो खोयकै ॥ इकगज मातो हुतो जँगल के बीचहीं । अति बलवंत विशेषि कोऊ वा सम नहीं ॥ वा ढिग हस्ती और

कोई नहिं जात हौ। मानुष पशुजिया योनि कहूँ कह वातहौ ॥ वाकी आई बात जु राजापै चली। इक कुंजर वनमाहिं रहत है अतिबली ॥ भूपति अज्ञादई पकरि वा ली-जिये। जामें आवै हाथ यतन सोई कीजिये ॥

दोहा—पीलवान अज्ञालई, खोदी खंदक जाय ॥
चरणदासतहँछलकियो, दीन्ही घास बिछाय ॥

अष्टपदी ॥ भगलकी हथिनि बनाय सवाँरी बुद्धिसों। खंदक ऊपरधरी खरी करि शुद्धिसों ॥ जल पीवनके काज जु हस्ती आइया। वा हथिनीको देखिकै अधिक लोभा-इया ॥ जब हथिनीकी ओर चलो मति हीनहीं। सपरश इच्छा धारि परो खंदकमहीं ॥ निकसन कैसे होय बहुत लंघनकरे। अति दुर्बल तन भयो पराक्रम सब हरे॥ तब वापर चढ़ि बैठ महावत आय कै। बाहर लायो काढ़ि जुताहि सधायकै ॥ फिरि राजाके पास खड़ो कियो लायकै। अंकुश शिरके माहिं जुबेड़ी पायँकै ॥ शीश धुनै पछिताय वे आनँद कितगये। जो सुख बनके माहिं सभी स्वपना भये ॥ सदाहुतो निर्बंध आय बंधन बँधो। कहैं चरणहीं दास काम फँदन फँधो॥

दोहा—सपरशकी इच्छा किये, भया जु ऐसा हाल ॥
पशुपक्षी नर नारिही, फँसे कामके जाल ॥

अष्टपदी ॥ भाषत दत्तात्रेयजु साधूजन कभी। कामिनि और निहारि करै सपरश तभी। हस्ती कैसो हाल साधुको होय है। सुमिरण ज्ञानरु ध्यान जु सबही खोय है। जो कहै हम हैं साधु जु कोई भाख्यों। चूमै हमरे चरण तासु होय है कहा ॥ चरणन चूमै आय हाथ धरि पायँ पै। सा-

धूमन चलिजाय स्पर्श सुख पायकै ॥ वाको सुख उरधारि क्रै इक कामिनी । वाते पुत्र कलत्र बहुतही यामिनी ॥ वनमें तप अरु योग जु करतो निशि दिना । सो सबही गो भूलि नहीं सुख इकक्षना ॥ ताते हस्ती गुरूहिये में धारिया । कामिन को परसंग सकल निर्वारिया । काठकि पुतली होयकै काग़ज़ में रची । चरणहिंदासा होय सोभी देखनतजी ॥

मृग १५.

दोहा–पन्द्रहवों गुरु मृगकियो, ताकीगति सुनिलेहु ॥
औगुणहींको छोड़िकरि, गुणहींमें चितदेहु ॥

अष्टपदी ॥ मृग देखो वन माहिं ताकी मति आनियां । जीव दियो वहि ठौर सोई हम जानियां ॥ वधिक बजाई बीण राग गावनलगो । सरवण सुनि वह हिरण रीझि आयो भगो ॥ पहुँचो पारधिपास बाण उन मारिया । ता दिन रागको चाव सकल निर्वारिया ॥ जो विरक्त सुनै राग जु रस शृंगारको । ऐसाहि होवै ख्वार नरकमें जायसो ॥ सुनिये गुण गोपाल चरित्र कर्त्तारको । जासों दुख छुटिजाय ये मायाजारको ॥ तासों उपजै ज्ञान ध्यान दृढ़ करि गहै । पावै पद निर्वाण जहां सुखसों रहै ॥ निश्चयही तू जान जु मैंने यह कही । चंचलता गइ छूटि जु बुधि निश्चल भई ॥ ना नारी रीराग नाच बिसराइया । चरणहिंदासा होय चरण चित लाइया ॥

मछली १६.

दोहा–कहूं सोलवीं मीनकी, बुरी जीभकी स्वाद ॥
जो कोई यामें फँसै, लगै बहुत उठि व्याध ॥

अष्टपदी ॥ सोलहों गुरु सुन मीन जो ऐसे देखिया । वा मच्छीको एक वधिक अवरेखिया ॥ थोरो मास लगाय जु

बंसी साथही। जलमें दी छुटकाय डोरगहि हाथही॥ जिह्वा स्वादके काजमीन वह खाइया। गई उदरके माहिं हिये अटकाइया॥ तीक्षण कांटा लोह हियको फारिया। ताहीक्षण वह मीन प्राण तजिडारिया॥ ताते मच्छी गुरू हिये माहीं करो। जिह्वाको कछु स्वाद नहीं मनमें धरो॥ जो विरक्तको स्वाद जीभको चाहिये। बहुत भाँति दुख होय नहीं सुख पाइये॥ जिह्वा स्वादके काज गृही घर जायहै। आछो भोजन पाय तौ रुचिसों खायहै॥ भोंड़ो भोजन होय तौ नाक चढ़ावई। हरि सुमिरणको त्यागिके जिततित जावई॥ ताते साधूलोग नहीं घर घर फिरैं। जिह्वाको कछु स्वाद नहीं चितमें धरैं॥ ऐसो भोजन खाय लखै ज्यों औषधी। सबही रोग नशाहिं रहै काया शुधी॥ चीकन भोजन खाय नींदबहु आवई। ध्यान भजनकी रीति सकल बिसरावई॥ सब इन्द्रिनके माहिं जो जिह्वावश करै। जो आवै सोइ खाय कभूं भूखोरहै॥ जो जिह्वावश होय तौ इंद्री वश सबै। जो रसनावश नाहिं तौ सब परबल तबै॥ चीकन भोजन खाय तौ इंद्री सब जहां। अतिही ह्वै बलवन्त करैं औगुण तहां॥ षट्रसही के स्वादसों नारी वश भये। जगमाहीं दुखपाय मुये नरकै गये॥ मनमें देखि विचारि गुरू कियो मीनहूं। जासों लीनी सीख इन्द्रिभइ क्षीनहूँ॥ सबही स्वाद भुलाय शरण हरिकी लई। चरणहिंदासा होय सुरति निर्मल भई॥

पिंगला १७.

दोहा—सत्रहवाँ गुरु पिंगला, लीन्हों जासों ज्ञान॥
आशातजि निर्मलभयो, लगो रहूं हरिध्यान॥

अष्टपदी ॥ गुरु सत्रहवाँ जान हमारो पिंगला । पर आशा-दइ छाँड़ि रहूं आनँद मिला ॥ इक दिन राजा जनक विदेही के नगर । गयो अचानक लखो पिंगलाको बगर ॥ पिंगला उठि परभात भली विधि न्हाइया । भूषण वस्तर पहिरि सुगन्ध लगाइया ॥ घरके द्वारे बैठि जु बाट निहारई । कोऊ दे बहु द्रव्य सु ह्यां पग धारई ॥ मारगमें नर देखि यही आशा करै । आवतजानै ताहि खुशी हियमें धरै ॥ जब वह आयो नाहिं दुखी मनमें भई । कबहूं आश निराश ऐसही निशि अई ॥ ऐसे सब दिन बीतिगयो यहि भाँतिही । मनमें भई मलीन आइ पुनि रातिही ॥ काया आलस धारि जु घर भीतर गई । पलँगा बैठी जाय जहां भलि सेजही ॥ बिछै बिछौना श्वेत फूल तापरधरे । लेटी तहँ मग जोय नैन निद्राभरे ॥ कबहूं उठि जा द्वार कभूं जा भीतरै । कहै चरणहिंदास नींद नाहीं परै ॥

दोहा—आशाकी डोरी बँधी, क्षण घरमें क्षण द्वार ॥
थिरता ना संतोष विन, दुखी पिंगला नार ॥

अष्टपदी ॥ ऐसे आधीरात गई जब बीति कै । कोऊ आयो नाहिं सुह्यां कछु प्रीतिकै ॥ पिंगला उपजो ज्ञान हिये परकाशही । उदयभयो संतोष लोभ गयो नाशही ॥ वर्ष सहसदश माहिं जु तपकोऊ करै । हिरदै निर्मल होय सभी कलिमल हरै ॥ ऐसो ज्ञान उजास पिंगलाको भयो । तब उन हिरदै माहिं वचन ऐसो कह्यो ॥ हीन हमारे भाग जन्म योंही गयो । मनुष रूपसों काम क्रोध लोभै छयो ॥ ताते जिविका मच्छि। [illegible] चाहिया । परमातम भगवानसों प्रीति न

लाइया ॥ सदा विराजत निकट दूरि नहिं होत है । सब-विधि पूरणकाम सकल जग ज्योति है ॥ सवहीको नित देत खान अरु पानई । चरणहिंदासा होय सोई यह जानई ॥

दोहा—लख चौरासी योनिमें, सबको भोजन देय ॥
सदा वही पालन करै, अपनो नाम न लेय ॥

अष्टपदी ॥ मनुषरूप जो देय एकदिन खानको । दूजे दिन वह बहुत घटावे मानको ॥ नारायणसों भक्ति जो जग-को सुख चहे । ऐसे वाको देय सदा इकरस रहे ॥ जाके लीन्हे नाम सकल पातक नशैं । कथा जु उनकी सुनै हिये आनँदलशैं ॥ ऐसो हरि विसराय मनुपको चाहिया । विरथा जन्म गवाँयकैं सुख नाहिं पाइया ॥ काया है इक गेह हाड़ अरु माँसको । नाड़ी गुणसों बांधिरखो है तासुको ॥ चामरु लोहू पीव तहां नवद्वारहैं । सदा वहतही रहत यही जु विचार हैं । विष्टा मूत जो होय या गेहके माहिंहीं । ऐसे घरसों भोग मुदित मन चाहहीं ॥ ऐसे विरथा आयु सकल जु गवाँइया । हरिके चरणनदास नहीं जु कहाइया ॥

दोहा—अब उरमें ऐसी उठी, करूं भक्ति चितलाय ।
चरणकमलमें मन धरूं, जगसों नेह उठाय ॥

अष्टपदी ॥ अब करूं भक्ति उपाय जु हरिमन भाइया । ताते लेहुं रिझाय परमगुण गाइया ॥ जैसे लक्ष्मी सेवकरी मन लायकै । कीन्हे महा प्रसन्न श्रीपति धायकै ॥ ऐसे मन भगवान सों अपनो लायहीं । पावों पुरुष निधान प्रीतिके भाय हीं ॥ लक्ष्मी करी जु भक्ति पुराणनमें कहैं । नारायण दई ठौर सदा हियमें रहैं ॥ मैं हूं ऐसी भक्तिकरूं अति प्रेमसों ।

करूं महापरसन्न अधिकही नेमसों ॥ आजके दिनसे आश मनुषकी त्यागिकै । राखूं प्रभुकी आश चरणहीं लागिकै ॥ जो कछु हरि मोहिं देयँ सोई निर्दोष है । करूं भजन भगवन्त तासु सों मोषहै ॥ मनुषरूप कह वस्तु जु आशा कीजिये । बहुत हुवाँलौं देत जहांलौं लीजिये ॥

दोहा—दुखमें काम न आवई, मुये न संगी कोय ॥
चरणदास यों कहतहैं, ये संसारी लोय ॥

अष्टपदी ॥ जब वह मृत्यक होय नहीं कछु हेतहै । हरि जु सदाही संग सभी सुधिलेत है ॥ मनुष आपनी नाहिं जु इच्छा करिसकै । औरनको कह देय मूर्ख योंही तकै ॥ पिंगलाकहो यह ज्ञान मुझे क्यों आइया । नीके काजन माहिं न चित्त लगाइया ॥ तीरथ बर्त्तन साधू दर्शन देखिया । हौं तिरिया बुरे कर्म किचाल विशेषिया ॥ परमेश्वरकी दया सों यह पहिंचानिये । और बात कछु नाहिं हियेमें आनिये ॥ जो कोई कहै आज कछू धन नालयो । कोई आयो नाहिं ज्ञान ताते भयो ॥ आगेहू बहुदिवस कोई नहिं आइया । कीन्हे लंघन बहुत द्रव्य नहिंपाइया ॥ ज्ञान कबौं नहिं भयो आज जानत नहीं । कौनभाग बड़ मोरभयो परगट अभी ॥ कहैं गुरू शुकदेव जु उन नहिं जानिया । दत्तात्रेयके दर्शसों कुमति भुलानिया ॥

दोहा—पिंगला आई घर विषे, छोंड़ि मनुषकी आश ॥
सुखी होय सोवन लगी, जब वह भई निराश ॥

अष्टपदी ॥ मनमें किय सन्तोष सकल दुख मिटिगये । छोड़ी जगकी आश हिये आनँद हुये ॥ यों कहैं दत्तात्रेय

राजासों यही। वाकी मैं लइ सखी सोई दृढ़ करिगही॥ गृही द्वार नहिं जावँ न माँगौं कछु कहूं। ताते सुखीरु शान्त सदा वैठोरहूं॥ उद्यम करूं कछु नाहिं वासना त्यागिकै। आनँद तन मन मोहिं वहुत अनुरागिकै॥ मनुष दुखी वहि होय रहै आशा लिये। काम क्रोध अरु लोभ मोह उतपति किये॥ जो आशा मन आय कवौं वह नाभई॥ क्रोधभयो उत्पत्ति यही मनसा ठई॥ काहूते इकवस्तु कछू जु मँगाइया। वाने दीन्हीं नाहिं क्रोध उपजाइया॥ वाते कीन्हों वैर अधिक रिस ठानिया। नारायणके ध्यान सुरति नाहिं आनिया॥ यह शिक्षा लइ मानि पिंगलासे तभी। जगकी छोड़ी आश भये कारजसभी॥

चील्ह १८.

दोहा—चील्हअठरहोंगुरुकियो, मिटो सकल सन्देह॥
रहों अकेलो संग तजि, करौं न कछु संग्रेह॥

अष्टपदी॥ जब गृहसेती निकसि वैरागी हमभये। तव हमरे मनमाहिं जु ये कारज छये॥ दो भाजन सँग होहिं एक जल पीजिये। दूजे भाजन माहिं खानको लीजिये॥ इक चादर कौपीन दोयहू चाहिये। ताते ओढ़ि नहानाकि युक्ति वनाइये॥ करिकै जब अस्नान ध्यान करने लगो। मनमें चित्यो कोऊ कौपीनहिं लैभगो॥ समझो यह मनमाहिं वहुत अधिकारते। अन्त महादुख होय मोह उरधारमें॥ ऊंची पदवी पाय वहुरि नीचेपरै। जब वह संयुत जाय घनो मनमें झुरै॥ जो कोइ रहै इकन्त अकेलोई सहै। ताहि उदरको शोच कछू नाहीं रहै॥ दशविश सौ जो साथ अधिक दुख

लहत है। आप अकेलो रहैं परमदुख सहत है॥ सकल विकल विसराज जु आनँद पावई। चरणहिंदासा होयकै वोझ बगावई॥

दोहा—उड़ती देखी चीलह को, पंजे माहीं मास॥
बहु पक्षी घेरे फिरैं, लेन न देवें श्वास॥

अष्टपदी॥ पक्षी सभी लोभाहिं माँसको देखिकै। वाको मारै चोंच जु लोभ विशेपि कै॥ कोई नोचै पंख कोई मस्तक भनै। वह दुख पावे बहुत समाझि मूड़ी धुनै॥ मैं काहूसे वैर प्रीति नहिं मानिया। या भक्षणके काज कष्टही जानिया॥ माँस दियो छिटकाय जु दे पक्षीभये। वा भक्षणके पास सभी दौरेगये॥ वह बैठी मन मुदित जु पंखपसारिकै। दीन्ह्यो दुख बिसराय जु व्याधा टारिकै॥ वा दिनते लइ सीख जु संग्रह नाकरौं। कछू न राखौं पास नग्नतन मैं फिरौं॥ जहँ चाहूं तहँ जावँ भजन आनन्दमें। कछु मन चिन्ता नाहिं छुटो मन वन्धते। काहू वस्तु न शोच कोई लैजायगो॥ चरणहिंदासा होय ध्यान हरिपायको॥

बालक १९.

दोहा—बालक गुरु उन्नीसवों, ताके लिये स्वभाव॥
नहीं मान अपमान है, लोभ न कछू उपाव॥

अष्टपदी॥ बालक माहीं नहीं मान अपमानहूं। लोभजु-वामें नाहिं रहै अनजानहूं॥ मारै कोई वाहि रोष वहना करै। करै जु फिरि वह प्यार वाल हँसिहँसि परै। निन्दा अस्तुति दोय कभी नहिं धारई। वैर प्रीतिको अंग कछू न विचारई॥ जो मणि बहुतै मोलकी वासे लीजिये। खेल खिलौना फूलको

पलटे दीजिये ॥ मणिको लोभ न करत कछू नहिं भाषई। चितको अपने खेलके माहीं राखई ॥ जो कोउ नारी पकरि-हिये सो लागई। बालक अरु वा नारिको काम न जागई ॥ नरन जु बालक फिरत लाज नहिं आवई। ज्योंभावै त्यों रहै कोई न चलावई ॥ क्रिया कर्म अरु सकुच कछू वाके नहीं। ठाकुर अरु चरणदास कछू जानै नहीं ॥

दोहा—बोले दत्तात्रेयजी, राजासों यह वैन ॥
इक दिनबालककीसवै, देखी अपने नैन ॥

अष्टपदी ॥ भाषैं दत्तात्रेय बालगति देखिकै। वाके लिये स्वभाव सभी जु विशेषिकै ॥ जोकहुं हमसों प्रीति बहुत आदर कियो। काहू गारी काढ़ि बहुत झिड़को दियो ॥ दोनों एक समान और नहिं व्यापई। बैठूं सहज स्वभाव उठूं फिर आपई ॥ जो कीन्हूं भोजन दियो चाटि ह्वांई लियो। कर-हीको कर पत्र तहैं पानीपियो ॥ अष्टधातु को लोभत्याग सबही कियो। कैसोहि वस्तरदेहु छाँड़ि तितही दियो ॥ ज्यों बालक निज खेलमें आनँदसों रहै। त्यों परमातम संग कछू दुखहू न भै ॥ तुरिया पद निर्वाण मातु समही कहूं। ताकी गोदी माहिं सदा सुखसों रहूं ॥ चरणहिंदासा होयकै गर्व नशाइया। छोटापनके अंग सबै तब आइया ॥

कन्या २०.

दोहा—कन्या गुरु कियो वीसवों, समझि विचारिकै देखि ॥
रहौं अकेलो तभीसों, पायों यही विवेक ॥

अष्टपदी ॥ पुण्यतू विसवों जान गुरु कन्या कियो। वाको मत अनुराग हियमाहीं लियो ॥ इक नगरीके माहिं एक दिन

हमगये । इकगृह चारीके गेहजाय ठाढ़ेभये ॥ स्यानी कन्या तासु जु घरमाहीं हुती । मातापिता केहु काज गवनकीन्हों तभी ॥ करन सगाई आयलोग बैठेतहीं । या कन्याकी करैं सगाई आजहीं ॥ कन्या कीन्हों शोचयही कैसेकहूं । मात पिता कहिं गये अकेली मैं अहूं ॥ ऐहैं मातरु पिता चिन्त मनमें करैं । भोजनको कछु नाहिं जु हम आगे धरैं ॥ कन्या-कारिकै शोच ये वचन उचारिया । मात पिता गये न्हान अभी पगधारिया ॥ आवो बैठो खाट रसोई खाइये । भोजन होत सबार कहीं नहिं जाइये ॥ वाके गृह कछु नाहिं धान थोरेहुते । कूटनलागीं ताहि सोई अपने मते । चूरी हाथके माहिं बहुत करकन लगीं । फिरि समझी मनमाहिं शोच-माहीं पगीं ॥ यों समझें येलोग कछू गृहमें नहीं । भोजन कारन धानजु कूटतिहै तहीं ॥ चूरीडारी फोरि दोय तहँ राखिया । तऊ न खरको गयो शब्दही भाषिया ॥ दूजीदइ बिगसाय एकही रहगई । तब खरका नहिं होय कुटत निर्भय भई ॥ वादिन कन्या गुरूजु हमने चितधारा । साधु अकेलो रहै सदा आनँद भरा ॥ धर्मशाल ते निकसि शिष्यको साथलै । कबहूँ उपजै क्रोध शिष्य भाषै यहै ॥ आपनहीं लियो बहुत हमैं थोरोदियो । गुरुको चहियै टहल शिष्य रूठैगयो ॥ गुरू कहै कछु और शिष्य औरै कहै । झगड़ैं आपसमाहिं प्रीति थिर नारहै ॥ दोउमें कलकल होय शा-न्ति नाहिं आवई । विना अकेलेरहे चैननहिं पावई ॥ पशु-पक्षी नरनारि संग नाहिं लीजिये । दूजेही को साथ सभी-

तजि दीजिये ॥ छूटैं सकल कलेश ध्यान लागै भलो । चरणहिंदासा होय रहै हरिसों मिलो ॥

तीर बनानेवाला २१.

दोहा–गुरु कीन्हो इक्कीसवों, ताहि तीरगर जान ॥
चरणदास यों कहतहैं, वासों सीखो ध्यान ॥

अष्टपदी ॥ पुनि इकीसवों गुरू तीरगर हम कियो । ताते ध्यानको भेद सीखि हियमें लियो ॥ इकदिन नगरीमाहिं तीरगर हाटमें। ठाढ़ भयो तहँजाय चलतही वाटमें ॥ वह तौ बनावत तीर आपनी जानमें । और कछू सुधि नाहिं पगो वा ध्यानमें ॥ वाके आगे होय भूप इक आइया । हस्ती अरु दल साज निशान बजाइया ॥ भयो मुहूरत एक मनुष तहँ आइकै । भूपगयो इसराह वुझो जु सुनायकै ॥ वह तौ साजत तीर यही उत्तर दियो । हम तौ जानतनाहिं नहीं दर्शन कियो ॥ भाषत दत्तात्रेय जु हम वासों कह्यो । राजा सँग वहु भीर शब्द दुन्दुभि भयो ॥ बहुत कटक लिये साथ जु भूप सिधारिया। तैं काहे नाहिं सुनो न दृष्टि निहारिया ॥ उन यों उत्तर दियो तीरके ध्यानहीं । सुरतिरही तेहि माहिं याते नहिं जानहीं ॥ वाको कीन्हों गुरू हियेमें धारिकै। मन हरि चरणन पास रखूं निर्धारिकै ॥ दृष्टि मना अरु बुद्धि जहां जु लगाइया । ऐसो कहिये ध्यान विरल कहुँ पाइया ॥

दोहा–ध्यान करै दृग मूँदि करि, जो कोई नर नार ॥
खटका सुनि पलकैं खुलैं, मन चल वारम्वार ॥

अष्टपदी ॥ वह नहिं कहियत ध्यान जु खुलिखुलि जातहै । निश्चल लागै ध्यान जु पूरी बातहै ॥ ध्याता ध्यानके बीच ध्यान

ध्येय माहिं है । तीनौ एकहि होहिं विघ्न कछु नाहिंहै ॥ मन हरि-चरणन पास कायकी सुधिनहीं । भूखप्यास कछु नाहिं ध्यान लागत तहीं ॥ मन गयो औरै ठावँ ध्यान जो लाइये । सो वह डिगि डिगि जाय न थिरता पाइये ॥ जब नारायण साथ मगन मन ह्वैगयो । सबकारज गो भूलि कछू सुधि ना रह्यो ॥ जैसे भाषत लोय समाधी पुरुपको । दिन बीतें दश बीस नहीं सुधि बुधि कहूं ॥ कहिये यही समाधि वासना सब जरैं । कोटिन मध्ये एक ध्यान ऐसो धरैं ॥ सोई चरणको दास सोई योगी सही । सोइसाधक सोइ सिद्ध जु बिस्वेबीसही ॥

दोहा—ध्यानी ध्यान लगायकै, रहै राम लवलाय ॥
आपा बिसरै हरिमिलै, बहुरि न उपजै आय ॥

अष्टपदी ॥ तनकी सुधि बिसराय कछू सुधि ना रहै । या विधिसे जो करै ध्यान ताको कहै ॥ हलचल ध्यान जो करै सो हरिसों ना मिलै । अफल ध्यान सोइ होय जो मन क्षण क्षण चलै ॥ तीर बनावनहार गुरू हमने कियो । ताते यह उपदेश हिये माहीं लियो ॥ ऐसे मन को साधि प्रभू चरणन धरै । ह्वैइरहै चितलाय जु इतउत ना फिरै ॥

सांप २२.

बाइसवों गुरु सांप हमारो जानिये । ताते लीन्ही सीख यही पहिंचानिये ॥ सदा अकेलो रहै कबौं घरना करै । रैनि जहां कहुँ होय वहीं वह वसिरहै ॥ वाकी देखी रहनि जु मनमें लाइया । सदारहूं निर्बंध न मन्दिरछाइया ॥ उपजो मोह न लोभ नहीं मन दाग है । चरणहिंदासा भयो द्वेष नहिं राग है ॥

दोहा—बँधा जु पानी गांदला, चलता निर्मल होय ॥
दोनों रीति विचारिकै, भली होय सो लेय ॥

मकरी २३.

तेइसवों मकरी गुरू, उगिलि तार भपि जाय॥
ऐसे जग परकाश करि, प्रभुले आप लुकाय॥

अष्टपदी—तेइसवों गुरु जान हमारो माकरी। आप सों काढ़े तार रहै थामो खरी॥ फिरि वह तार समेटि लेय उरमें धरै। यों हरि लीला जानिय कौतुक सो करै॥ वसुधाको उपजाय करै पालन जभी। फिरि सब लेय मिलाय आप माहीं तभी॥ जैसे मकरी तारसों जाल बनाइया। फिरि अपना वा बीचमें सहज समाइया॥ जब चाहै वह जाल उदरमें लै धरै। मक्षीं जालमें फँसै सो नाहीं ऊबरै॥ भाषैं दत्तात्रेय मुक्ति जो चाहिये। हरि उतपति क्षय करन कि शरनमें आइये॥ जन्म मरण भय मानि भक्तिमें पागिये। जगकें जालसों छूटि वेगिही भागिये॥ लीजै त्यागि वैराग चरणहीं दासहो। हरियश हरिगुण गाय तजो जग वासहो॥

भृङ्गी २४.

दोहा—भृंगी मिलि भृंगी भवै, सुनो हतो यह बैन॥
अबमन आई सांचही, देखा अपने नैन॥

अष्टपदी—चौविसवों गुरु कियो जु भृंगी जानिकै। वासों निश्चय भई हियेमें आनिकै॥ सुनीहुति यह बात जु कोई हरिभजै। निशिदिन मन ह्वांलायकै प्रभुसेवा सजै॥ सो नारायण रूप आप ह्वैजात है। यामें संशय नाहिं सांच यह बात है॥ मन ठहरत ना हुतीय बात सुहावनी। सेवक जो

कोइ होय सों क्यों होवै धनी ॥ भृंगीको हम लखो कीट इक आनिकै ॥ राखो उन गृह माहिं आपनो जानिकै ॥ आपन बाहर बैठि ताहि सम्मुख कियो । केतक दिवसन माहिं व भृंगीकरि लियो ॥ भृंगी रूपको देखिकै भृंगी ह्वै गयो । ताते भृंगी गुरू हमारे मन छयो ॥ जैसे करै कोइ ध्यान सो वा सम होत है। नहीं रहै चरणदास रहै ब्रह्मज्योति है ॥

दोहा—चौवीसौ पूरेकिये, समझिसमझिकरिदेखि ॥
विरक्त ह्वै जग में रहूं, लगै न मायारेखि ॥
फिरिअपनीकायालखी, रही न जासों प्रीति ॥
थके जु इन्द्री स्वादही, सहज गई सब रीति ॥

देह ।

अष्टपदी ॥ भाषैं दत्तात्रेय गुरू इक देहहै । पहिले मोकोहो तो अधिक सनेह भै ॥ देखो क्षण क्षण देह क्षीण ह्वै जातही । नित उठि सुखके काज भला कुछ खातही ॥ बहुतचाव करि आप कछू भोजन कियो । दूजे दिन वहि भाँति घनोही दुख दियो ॥ इकदिन वस्तर विमल बनाये लायकै । फिरि वस्तरके काजफिरूं दुखपायकै ॥ जितनो कियो उपाय काया सुख काजही । कबहूं सुख ना भयो फिरत बेलाजही ॥ इकदिन एक उपाय जु सुखको धारिया । दूजेदिन वहि दुःख बहुत विस्तारिया ॥ और लखी इक बात यह काया आपनी । अपनीही होवै नाहिं विचारीही घनी ॥ मूरुख जानै नाहिं सु याही भेदको । होवैना चरणदास सहै बहु खेदको ॥

दोहा—बालपने अरु तरुणमें, और बुढ़ापे माहिं ॥
तीनों पनमें देह यह, कबहूँ अपनी नाहिं ॥

अष्टपदी ॥ वालकपनमें हाथ बाप अरु मायकै । तरुणा पनमें फँसै त्रिया कर जायकै ॥ वृद्ध अवस्था माहिं पुत्रके हाथहीं । पुनि जब मृत्यक होय अगिनि जारै तहीं ॥ जो योंहीं रहिजाय पशू आदिक भषैं । देहन अपनी होय ज्ञान माही लषैं ॥ वादिनते सुख काज नहीं श्रम धारिया । परालब्ध जो आय उदरमें डारिया ॥ कायाते इककाज- भलो पुनि होत है । हरिकी प्रापत होय जु ज्ञान उदोत- है ॥ मृत्यु जबहिं होयजाय भरकाया नारहै । भारे कैसो गेह जीव काया लहै ॥ जवहीं आवै कालनहीं ठहरायगो । खचैं जो वहु द्रव्य न क्षण रहिजायगो ॥ जवहीं समुझो ज्ञान देहको जीयमें । भयो विरक्त विचार आपने हीयमें ॥ लई सीख चौवीस देहहित त्यागिकै । कीन्हों हरिको ध्यान वहुत अनुरागिकै ॥ दत्तात्रेय ये वचन कहे वहु चावसों । पुनि ती- र्थनको गये भक्तिके भावसों ॥ राजा सुनि यह ज्ञान हियेमें धारिया । हरिसों सुरति लगाय सकल दुखटारिया ॥ चरणहिं दासा होय परम सुखही लियो । तनको जगमें राखि जु मन हरिको दियो ॥

दोहा—दत्तात्रेयीने कहे, जो राजासे वैन ॥
सो मैं भाषामें कियो, समझो पावो चैन ॥

अष्टपदी ॥ चौवीसों के माहिं होय उपदेशदै । सद्गुरु वाहि उवारिकिये सब दूरि भै ॥ उनहीं के परताप चौविसौ समझही । आई घटके माहिं जुउज्ज्वल बुद्धिही ॥ चौवीसौ तनधारि जु अंग बताइया । जासोंभयो कल्याण अधिक सुख पाइया ॥ ऐसे हैं गुरुदेव ये निश्चय जानिये । सकल विकल

सब छोंड़ि गुरूही मानिये ॥ गुरुहीके परसाद मिलैं नारायणा । जन्ममरण बँध छूटि होय पारायणा ॥ समरथ श्रीगुरुदेव शीशपर राखिये । भवसागरकी व्याधि सकलही नाखिये ॥ कहैं मुनी शुकदेव चरणहीदासको । वही जु पावै चौथे परम निवासको ॥

दोहा—गुरु समानतिहुँ लोकमें, और न दीखै कोय ॥
नामलिये पातक नशैं, ध्यान किये हरिहोय ॥
गुरुहीके परताप सों, मिटै जगतकी व्याध ॥
राग द्वेष दुख ना रहै, उपजै प्रेम अगाध ॥
गुरुके चरणन में धरो, चितबुधिमनअहंकार ॥
जब कछु आपा ना रहै, उतरै सबही भार ॥
मन विरक्तके करनको, कीन्हों गुरुका सार ॥
पढ़ै सुनै चितमें धरै, भवसागर हो पार ॥

इति श्रीस्वामीचरणदासकृतमनविकृतकरन-
गुटकासारवर्णनसम्पूर्णम् ।

अथ श्रीब्रह्मज्ञानसागरप्रारम्भः ।
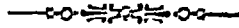
दोहा—जैसे हैं शुकदेवजी, जानत सब संसार ॥
भगवतमतपरगटकियो, जीव किये बहु पार ॥
तिन मोपै किरपा करी, दियो ज्ञान विज्ञान ॥
सोशिखतुमसोंकहतहौं, छूटै सब अज्ञान ॥
शिष्यसुनौअबकहतहौं, परम पुरातम ज्ञान ॥
निगुडेको नहिं दीजिये, ताके तपकी हान ॥

कुं०—मोक्ष मुक्ति तुम चहतहो, तजो कामना काम ॥
मनकी इच्छा मेटिकरि, भजो निरंजन नाम ॥
भजो निरंजन तत्त्व देह अध्यास मिटावो ॥
पंचनके तजि स्वाद आपमें आप समावो ॥
छूटिगई जब देह, जैसके तैसे रहिया ॥
चरणदास यह मुक्ति, गुरूने हमसे कहिया ॥

दोहा—देह मरै तू है अमर, पारब्रह्म है सोय ॥
अज्ञानी भटकत फिरै, लखै सो ज्ञानी होय ॥
देह नहीं तू ब्रह्म है, अविनाशी निर्वान ॥
नित न्यारो तू देहसों, देह कर्म सब जान ॥

डोलन बोलन सों बनो, भक्षण करन अहार ॥
दुख सुख मैथुनरोगसब, गर्मी शीत निहार ॥
जाति वर्णकुल देहकी, सूरति मूरति नाम ॥
उपजै विनशै देह सो, पांच तत्त्वको ग्राम ॥

पंचतत्त्व ।

पावक पानी वायु है, धरती अरु आकास ॥
पंचतत्त्वके कोटमें, आय कियो तैं वास ॥

तीन गुण ।

पांच पचीसो देह सँग, गुण तीनों हैं साथ ॥
घट उपाधि सों जानिये, करत रहैं उत्पात ॥

तमोगुण ।

तामस अरु हिंसा करै, वचन चलन विपरीति ॥
आलस अरु निन्दा करै, तामस गुणकी रीति ॥
दम्भकपटछलछिद्रबहु, खोटे सब व्योहार ॥
झूठ वचन ऐंठो रहै, तामसके गुण धार ॥

रजोगुण ।

मान बड़ाई नाम ना, सिद्धि चहैं भजि राम ॥
भोजन नाना स्वादके, राजस गुणके काम ॥
खेल तमासे राजसी, अरु सुगन्धकी वास ॥
आपनको ऊंचो गनै, औरनकी कर हास ॥

सतोगुण ।

दया क्षमा आधीनता, शीतल हिरदय धाम ॥
सत्यवचनगुणसात्विकी, भजन धर्म निष्काम ॥
दुखी न काहूको करै, दुखसुख निकट न जाय ॥
समदृष्टी धीरज सदा, गुण सात्त्विकको पाय ॥

ग्रहण करनेयोग्य गुण।

राजससों तामस बढ़ै, तामससों बुधि नास॥
रजगुणतमगुणछाँड़िकै, करो सतोगुण वास॥
सतगुणमें मन थिरकरो, करि आतमसों नेह॥
आतम निर्गुण जानिये, गुण इन्द्री सँग देह॥
सात्त्विक राजस तामसी, त्रैगुणते संसार॥
तीन पांचको नाश है, माया ब्रह्म विचार॥
अहंतत्त्व ॐ भयो, जिनते तीनों देव॥
जिनकेपरे जु आतमा, अगम अगोचर भेव॥
उपजै सो माया सभी, विनशि नेकमें जाय॥
छल मायासो कहत हैं, स्वप्नो सकल दिखाय॥
निराकारअद्वैत अचल, निर्वासी तू जीव॥
निरालम्ब निर्वैरसो, अज अविनाशी सीव॥

ज्ञान इन्द्री।

जिह्वा इंद्री नीरकी, नभकी इंद्री कान॥
नासा इंद्री धरणिकी, करिविचार पहिचान॥
त्वचासो इंद्री वायुकी, पावकइंद्री नैन॥
इनको साधै साधु जो, पद पावै सुखचैन॥

पृथ्वीकी प्रकृति।

चाम हाड़ नाड़ी कहौं, रोमजान अरु माँस॥
यह पृथ्वीकी प्रकृति है, अन्त सबनको नास॥

पानीकी प्रकृति।

रक्त बिन्दु कफ तीसरो, मेद मूत्रको जान॥
चरणदास प्रकृती इते, पानीसों पहिचान॥

अग्निकी प्रकृति ।

निद्रा संगम आलकस, भूख प्यास जो होय ॥
चरणदास पांचौ कही, अग्नि तत्त्वसों जोय ॥

वायुकी प्रकृति ।

बलकरना अरु धावना, उठना अरु संकोच ॥
देह बढ़ै सो जानिये, वायु तत्त्व है शोच ॥

आकाशकी प्रकृति ।

कामक्रोधमोहलोभभय, तत्त्वआकाशकोभाग ॥
नभकी पांचौ जानिये, नित न्यारो तू जाग ॥

प्रकृतिविचार ।

रोम अग्नि नाड़ी पवन, मास अग्निका अंश ॥
त्वचानीर सों जानिये, अस्थि महीको वंश ॥
कफाकाशविंदुवायुसों, रक्त अग्निसों बूझ ॥
मूत्र नीर रणजीत भन, मेदमदीसों सूझ ॥
नीर व्योमसपरशपवन, आलस अग्नि पिछान ॥
प्यासनीर रणजीतभन, भूख महीसों जान ॥
उठना तौ आकाश सों, बल करना है वायु ॥
बढ़निअग्निधावनउदक, संकोचन महिआय ॥
लोभ जु नभका अंशहै, काम वायुका भाग ॥
क्रोध अग्नि जल मोह है, भय पृथ्वीका लाग ॥

ब्रह्म ।

पांच पचीसौ एकही, इनके सकल स्वभाव ॥
निर्विकार तू ब्रह्म है, आप आपको पाव ॥
निराकार निर्लिप्त तू, देही जान अकार ॥
आपन देही मान मत, यही ज्ञान ततसार ॥

शस्त्रछेदि सकता नहीं, पावक सकै न जारि ॥
मरै मिटै सो तू नहीं, गुरुगम भेद निहारि ॥
जलै कटै काया यही, बनै मिटै फिरि होय ॥
जीवऽविनाशी नित्य है, जानै विरला कोय ॥
जरा मरण धर्म देहको, भूख प्यास धर्म प्रान ॥
सकलविकलमनजानिये, स्वाद सुइंद्रीजान ॥
आँख नाक जिह्वा कहूं, त्वचाजान अरु कान ॥
पांचौ इन्द्री ज्ञान हैं, जानैं संत सुजान ॥
जो जो इनसों जानिये, निश्चय ना ठहराय ॥
कहै सुनै चाखै लखै, सो सोई मिटिजाय ॥
इन्द्री जानिसकै नहीं, मन बुधि लहै न ताय ॥
ज्ञानदृष्टि पहिचानिये, वासों वाको पाय ॥

कर्म इन्द्री ।

गुदा लिंग मुख तीसरो, हाथपावँ लखिलेह ॥
पांचौ इन्द्री कर्म हैं, यहभी कहिये देह ॥
देह मिटत है स्वप्न ज्यों, जीव रहत है नित्त ॥
देहकर्म विसराय करि, आतमसों कर हित्त ॥

साधन ।

मनजीतै इन्द्री गहै, चित्त स्थिर जब होय ॥
आतम सों परचो रहै, राखै सुरति समोय ॥

पृथ्वी ।

पृथ्वी काल जे ठौर है, मुखै जानिये द्वार ॥
पीरो रँग पहिचानिये, पीवन खान अहार ॥

जल ।

जलको बासा भाल है, लिंग जानिये द्वार ॥
मैथुन कर्म अहार है, रंग सफेद निहार ॥

अग्नि ।

पित्तेमें पावक रहै, नैन जानिये द्वार ॥
लाल रंग है अग्निको, मोह लोभ आहार ॥

पवन ।

पवन नाभिमें रहत है, नासा जानि दुवार ॥
हरो रंग है वायुको, गंध सुगन्ध अहार ॥

आकाश ।

अकाशशीशमेंवास है, श्रवण दुवारो जान ॥
शब्द कुशब्द अहारहै, ताको श्याम पिछान ॥

तीन शरीर ।

कारण सूक्षम लिंग हैं, अरु कहियत अस्थूल ॥
शरीर तीनसों जानिये, मैं मेरी जड़मूल ॥

अवस्था चार ।

जाग्रत् का अस्थूल है, स्वप्ने लिंगशरीर ॥
कारण जान सुषुप्ती, तुरिया जाग्रत् वीर ॥
जाग्रत् स्वप्न सुषुप्ती, तुरी अवस्थ विचार ॥

वाणी ।

परा पश्यंति मध्यमा, वैखरी वाणी चार ॥
जाग्रत् वासा नैनमें, स्वप्न कण्ठ अस्थान ॥
जानसुषुप्ती हियेमें, नाभि तुरिय मनतान ॥
नाभि मध्य वाणी परा, हिये पसंती सुक्ख ॥
कंठ मध्यमा जानिये, कहूं वैखरी मुख्य ॥

चितबुधिमन हंकार जो, अन्तःकरणसुचार ॥
ज्ञान अग्नि सों जारिये, आतम तत्त्वविचार ॥

अन्तःकरण।

जलसोंमननिश्चयकियो, भयो वायुसों चित्त ॥
अहंकार भो अग्निसों, बुद्धि पृथ्वीसों मित्त ॥

पंच विषय।

शब्द स्पर्शरु गंध है, अरु कहियत रसरूप ॥
देह कर्म तनमात्रा, तू कहियत निहरूप ॥
शब्दा गुण आकाशका, सपरश गुण है वाय ॥
पृथ्वीका गुण गंध है, सो यह प्रकट दिखाय ॥
रूप अग्निका गुण कहूं, रसगुण जलका जान ॥
रणजीतबतावैखोलिकरि, ऐशिष ले पहिंचान ॥

इन्द्रियोंकी उत्पत्ति।

श्रवण मुखसु इन्द्री भई, तत्त्वाकाश सों होय ॥
त्वचा हाथ इन्द्री युगल, वायु तत्त्वसों होय ॥
पावक सों इन्द्री युगल, भये नैन अरु पावँ ॥
जलसों जो इन्द्री भई, लिंग रसना दो नावँ ॥
गुदा नाशिका दो भई, पृथ्वीसों पहिंचान ॥
चरणदास यह कहत हैं, एक कर्म इकज्ञान ॥
राजस सों इन्द्री भई, तामस सों तत्त्व पांच ॥
सात्त्विकसों चारौ भये, चरणदास कहैं सांच ॥
तीनों गुणसे है परे, सो आतमको रूप ॥
सो वह दृष्टि न आवई, अगम अगोचर रूप ॥

---

१ अन्तःकरण, मन, बुद्धि, चित्त, अहंकार।

चौवीसतत्त्व ।

दश इन्द्री तन पांच है, तन्मात्रा भी पांच ॥
चारौ अन्तःकरण हैं, ये चौवीसौं वांच ॥
पन्द्रहको अस्थूल है, नौको लिंग शरीर ॥
कारण झीनी वासना, तुरिया निर्म्मल धीर ॥
जाग्रत्में चौवीस हैं, स्वप्नेमें नौ जान ॥
सुषुप्तिमें सब लीन है, ये अँग जड़के मान ॥
तुरिया इकरस आतमा, निर्म्मलअचलअनाद ॥
घटै बढ़ै उपजै नहीं, तहां न वाद विवाद ॥
घटै बढ़ै उपजै मिटै, जड़को यही स्वभाव ॥
सो सब कौतुककररही, नाना किये उपाव ॥
चेतन ज्यों की त्योंसदा, सदा अकर्त्ता जोय ॥
सब कर्मनसों रहित है, आतम ऐसो होय ॥
काहूते उपजो नहीं, वाते भयो न कोय ॥
वह न मरै मारै नहीं, राम कहावै सोय ॥
योग युगतकरिखोजिले, सुरतिनिरतिकरिचीन॥
दशप्रकार अनहद बजै, होय जहां लवलीन ॥

दशवायु ।

तीन बंध नौ नाटिका, दशबाईको जान ॥
प्राणापान समान हैं, और कहत उद्यान ॥
व्यानवायुअरुकिरकिरा, कूरम बाई जीत ॥
नाग धनंजय देवदत्त, दश बाई रणजीत ॥

नाड़ी तीन ।

नवो द्वारको बंधकरि, उत्तम नाड़ी तीन ॥
इड़ा पिंगला सुषुम्ना, केलि करै परवीन ॥

प्राणायाम।

करतै प्राणायामके, पावै आतम वेख ॥
अनहद ध्वनिके वीचमें, देखै शब्द अलेख ॥
पूरक करि कुंभक करै, रेचक पवन उतार ॥
ऐसे प्राणायाम करि, सूक्षम करै अहार ॥
धरती वन्ध लगाय करि, दशौ वायुको रोक ॥
मस्तक प्राण चढ़ाय कै, करै अमरपुर भोग ॥
पांचौ मुद्रा साधिकै, पावै घटको भेद ॥
नाड़ी शक्ति चढ़ाइये, पटौ चक्रको छेद ॥
नासाध्यान दृष्टि भृकुटीमें, सुरतिशास्त्रकेमाहिं ॥
आतम देखो जातहै, यामें संशय नाहिं ॥
योगयुक्तिकै कीजिये, कै आतमको ध्यान ॥
आपा आप विचारिये, परम तत्त्वको ज्ञान ॥

वर्ण विचार।

शूद्र वैश्य शरीर है, ब्राह्मण औ रजपूत ॥
बूढ़ावाला तू नहीं, चरणदास अवधूत ॥

आत्मज्ञान।

काया माया जानिये, जीव ब्रह्म है मित्त ॥
काया छुटि सूरति मिटै, तू परमातम नित्त ॥
पाप पुण्य आशा तजौ, तजौ मान अरु थाप ॥
काया मोह विकारतजिं, जपै सु अजपा जाप ॥
आप भुलानो आपमें, बँधो आपही आप ॥
जाको ढूँढ़त फिरतहो, सो तुम आपहि आप ॥
इच्छा दई विसारिकै, क्यों न होय निर्वास ॥

तू तो जीवन्मुक्त है, तजौ मुक्तिकी आस ॥
आपाखोजै आपलखि, आप अपनको देख ॥
चरणदास तुहि ब्रह्म है, तूही पुरुष अलेख ॥
जैसे कछुवा सिमिटिकै, आपहि माहिं समाय ॥
तैसे ज्ञानी श्वासमें, रहै सुरति लवलाय ॥
सबघट रमो सो राम है, आदि पुरुष निर्गम्य ॥
लखचौरासी योनिमें, एक समानौ सम्य ॥
दृष्टि मुष्टि आवै नहीं, रूप न देखो जाय ॥
बिनसूरतिबिननामको, घट घट रहो समाय ॥

छप्पय ॥ इच्छा दुईकर दूर आप तू ब्रह्महै जावै । और सोद्वितीया कौन तासुको शीश नवावै ॥ मालातिलक बनाय पूर्व अरु पश्चिम दौरा । नाभि कमल कस्तूरि हिरण जंगल भो बौरा ॥ चरणदास लखि दृष्टि भरि एक शब्द भरपूर है। निरखि परखिले निकटही कहन सुननको दूर है । झूठी सी यह दृष्टि जगत सब झूठो दरशै । मूरख जानै सत्य तासुसों फिरि फिरि परशै ॥ चंद सूर थिर नहीं नहीं थिर पौन न पानी । त्रैदेवा थिर नहीं नहीं थिर मायारानी ॥ नवनाथ चौरासी सिद्ध जो चरणदास थिर ना रहै । ब्रह्म सत्य सर्वज्ञ है आत्म विचार क्यों नाश है ॥

दोहा—जो मुख सेती बोलिये, अरु सुनियत है कान ॥
जो आँखिन सों देखिये, सबही माया जान ॥
एकै सबतन रमि रह्यो, चेतन जड़के माहिं ॥
मायादर्शत है सभी, ब्रह्म लखत है नाहिं ॥
जैसे तिलमें तेल है, फूल मध्य ज्यों वास ॥

दूध मध्य ज्यों घीव है, लकड़ीमध्य हुतास ॥
थावर जंगम चर अचर, सबमें एकै होय ॥
ज्यों मनिको में डोरि है, बाहर नाहीं कोय ॥
एकडोरि मनिका गुहै, अवरण वरण निहारि ॥
आतम तौ निहरूप है, नित्य अनित्य विचारि॥
माया यही स्वभाव है, उदय होय छिपि जाय ॥
चंचल चपल सुहावनी, ओला ज्यों गलिजाय ॥
परमातम तौ नित्य है, ताको आदि न अन्त ॥
सदा अचल चंचलनहीं, सब गुण रहत अनन्त ॥
सत चेतन आनन्द है, आदि अन्त मधि हीन ॥
आदि अन्त आकारको, सो तू झूठो चीन ॥
सूरति नाम आकार है, ज्यों भूतनको नाच ॥
मृग तृष्णाको नीर है, निकट गये नहिं सांच ॥
चितवत सांचीसी लगै, खोजकिये मिटिजाय ॥
दीखै है पर है नहीं, कौतुक सो दरशाय ॥

शिष्यवचन।

ब्रह्म विना खाली नहीं, धरबेको इक पाँव ॥
मायाको कह ठौर है, सद्गुरु मोहिं बताव ॥
निर्विकार तौ ब्रह्म है, अद्वय अचल अपार ॥
आई माया कहांते, सद्गुरु कहौ विचार ॥

गुरुवचन।

आप ब्रह्म माया भयो, ज्यों जल पाला होय ॥
पालागालि पानी भयो, ऐसे नाहीं दोय ॥
झूठी माया सो कहैं, ज्ञानी पंडित लोय ॥

भर्म भूल सांची लगै, समझै सांच न होय ॥
सोनेको गहनो गढ़े, कहन सुननको दोय ॥
गहनो ना सोनो सबै, नेकजु दो नहिं होय ॥
झूठ सांच दोना चहै, झूठ मिटै इक सांच ॥
नाम मिटै सूरत मिटै, भूषणको लगआंच ॥
जाको माया कहत है, सो तू नेक निकास ॥
जैसे हींग कपूरकी, नेक जुदी करवास ॥
जल समान तौ ब्रह्म है, माया लहर समान ॥
लहर सबै वह नीर है, लहर कहै अज्ञान ॥
खेल खिलौना खाँड़के, कीजै लाख पचास ॥
सकलखिलौना खांड़है, ऐसे गहु विश्वास ॥
चरणदासखिलौनाखांड़के, भाजन राखे खांड़ ॥
विन विनशेभी खांड़ है, विनाशि जाय तौखांड़ ॥
माटीके भांड़े भवैं, सूरति अरु बहुनाम ॥
विगसि फूटि माटीभई, वासन कहु केहिठाम ॥
ऐसेही माया नहीं, समझिदेखुमन माहिं ॥
जो दीखै सो ब्रह्म है, रंचक माया नाहिं ॥
इच्छा मेटै दुइ तजै, एकै मन विश्राम ॥
ब्रह्मज्ञान विज्ञान है, समझ परमपद धाम ॥

सवैया ॥ श्वास उसाँस चलै जब आपहि है जु अखण्ड टरै नहिं टारो । भीतर वाहर है भरिपूर सो ढूँढ़ौं कहां नहिं नाहिंन न्यारो ॥ चरणदास कहैं गुरुभेद दियो भ्रम दूरिभयो जुहुतो अतिभारो । दृष्टिअदृष्टि जु रामको देखत रामभयो पुनि देखन हारो ॥

विज्ञान।

दोहा—आप आपमें आप है, खेलौ बहु विस्तार ॥
द्वितिया तौ कछु है नहीं, एकहि एक निहार ॥
कहीं नरायण नाभि है, कहीं ब्रह्म कहिं वेद ॥
कहिं शंकरगिरजाकहीं, कहीं अभेदाभेद ॥
कहिंऋषिमुनिकहिंदेवता, कहींसिद्धकहिंनाथ ॥
आपनको आपै खड़ो, कहूं न नावै माथ ॥
कहिं आसनकहिंतपकरै, कहींज्ञान कहिंयोग ॥
कहींदुखीकहिंसुखभयो, कहीं रोग कहिंभोग ॥
कहींनारि कहिंनरभयो, कहीं बाल ना बाल ॥
कहिंमँगता दाता कहीं, कहीं सुखी कंगाल ॥
कहींवृक्ष कहिंफलभयो, कहींफूल कहिंबीज ॥
कहीं मूल शाखाभयो, कहिं माली कहिंसींच॥
कहिंमालिनिकहिं मालती, कहिंफुलवाकहिंहार॥
कहीं बाग क्यारी भयो, कहीं भवँर गुंजार ॥
कहींघटाकहिं बिज्जुली, दादुर मोर बहार ॥
कहिं पर्वत जंगल भयो, कहिं वारिदकहिंवारि ॥
कहिंवड़वानलअग्नि है, धारो तेज अपार ॥
मानसरोवर भयो कहिं, मोती कहीं मराल ॥
कहिंसरिता धीवर कहीं, कहीं मीन कहिंजाल ॥
कहीं कथा श्रोता कहीं, कहीं कीर्त्तन रूप ॥
कहीं त्याग वैराग लै, कीन्हों संत स्वरूप ॥
कहिंपृथ्वीकहिंब्रजभयो, कहिंगोपीकहिंग्वाल ॥
कहीं प्रेमके रूप है, कहिंप्रेमीकहिंख्याल ॥

कहिं कालिंदीनिकटहो, कहिं वृन्दावनधाम ॥
कहिं कुंजें अति सोहनी, कहींयुगल ल्यांनाम ॥
कहिंसुगन्धशीतलपवन, कहिं वंशी वटठावँ ॥
कहीं चरणहींदास ह्वै, वार वार वलिजावँ ॥
कहीं कन्हैया ह्वै खड़ो, एकपावँ अँगमोर ॥
कहिं मुरलीअधरनधरी, बाजत है घनघोर ॥
कहींमुकुटकुण्डलभयो, अलकैं कहीं कपोल ॥
कहिं ललचौंहे नैन हैं, नासा मुकुर सठोल ॥
कहीं धुकधुकी कंठ है, कहीं मोतियन माल ॥
कहिं बाजू नवरत्नके, नटवर मदन गोपाल ॥
कहींकड़ाकहिंकरभयो, कहिं पहुँची जहँगीर ॥
रतन चौक गूँठी भयो, लागी संग जँजीर ॥
कहीं बादलौ जर्द है, नीमो ह्वै गयो अंग ॥
कहिं वद्धी गल जिंद है, कही साँवरो रंग ॥
कहिं पैंजनि कहिं पगभयो, कहीं चरणको दास ॥
कहीं आपही नख भयो, शशि समान परकास ॥
आप आपमें आप है, आप आपमें आप ॥
आप अपनमें जपत है, आप आपनो जाप ॥
अविनाशी नाशै नहीं, नाश न कबहूं होय ॥
तत्त्व स्वरूपी एकहै, कभी होय नाहिं दोय ॥
आपब्रह्म मूरति भयो, ज्योंबुद गलजल माहिं ॥
मूरति विनशै नामसँग, जल विनशत है नाहिं ॥
बुदगल देखो जल सबै, बुदगल कहूं न होय ॥
कहबेको दूजो कहो, जल बुदगल नहिं दोय ॥

भयो नेकमें बुलबुलो, नाच कूद मिटिजाय ॥
निराकार रहि जायगो, मूरति ना ठहराय ॥
निराकार आकार धर, खेलौ कै इकबार ॥
स्वप्नो ह्वै ह्वै मिटिगयो, रहो सारको सार ॥
आप आपमें खेल मचायो। ज्यों पानी बुदगिल ह्वै आयो ॥
ऐसे ब्रह्म धरी है काया। आपहि पुरुष आपही माया ॥
आप नरायण लक्ष्मी भई। नाभि कमलअरु आपहिदई ॥
आपहि धरती आपहि पानी। आपहि रुद्र चतुर विज्ञानी ॥
ह्वै नारायण विष्णु कहायो। शेषनाग ह्वै तले पठायो ॥
तेतिसकोटि देवता भयो। ऋषिमुनिकोटिअठासीछयो ॥
चारौयुग आपहि भयो लोका। पापपुण्य आपहिभयोशोका ॥
आपहि फूल शूल अरु वारी। आपहि पुरुष आपही नारी ॥
दोहा—जल थल पावक रामहै, राम रमो सब माहिं ॥
हरि सबमें सब राममें, और दूसरो नाहिं ॥
दश अवतार आप ह्वै आयो। सेवक साहब आप कहायो ॥
आपहिगिरिवर आपहि तरुवर। आपहि हंस आपही सरवर ॥
आपहि चारि वर्ण षट् दर्शन। पूजे आप आपही पर्शन ॥
आपहि ध्यानी आपहि प्रेमी। आपहि योग भोग अरु नेमी ॥
चरणदास शुकदेव बतायो। अपनो भेद आपही गायो ॥
तारा मण्डल आप अकाशा। आपहि चंद सूर परकाशा ॥
जैसे जल तरंग ह्वै आई। उलटि फेरि जलमाहिंसमाई ॥
आप आपमें स्वप्न उठायो। आपहि स्वप्न आपह्वै आयो ॥
ना कछु गयो नाहिं कछु आयो। अपनो भेद आपही पायो ॥
ना कछु करै मिलै नाहिं छीजे। ना कछुउठै चलै नाहिं भीजे ॥

स्वप्नो मिटिभयो एकअकारा । ज्ञानी अवही ल्योहनिहारा ॥
नहीं सूक्ष्म अस्थूल न भारी । रूपरंग नहिं है परकारी ॥
वार पार कछु दीखत नाहीं । कवसों है अरु कवसों नाहीं ॥
कहा कहौंकिछु कहत न आवै । गूँगो स्वप्नो कहा वतावै ॥
वार पार पार नहिं पायो । ढूँढ़त ढूँढ़त आप भुलायो ॥
कहत कहत मैं गयो हिराई । अव मोपै कछु कह्यो न जाई ॥

दोहा—हद कहूं तौ है नहीं । वेहद कहौं तो नाहिं ॥
हद वेहद दोनों नहीं, चरणदास भी नाहिं ॥
जग स्वप्नो सो ह्वै गयो, भयो पेखनो गावँ ॥
जवजागोतव मिटिगयो, चरणदास नहिं नावँ ॥

छप्पै ॥ तव न चंद नाहिं सूर नहीं नभमें तारागण । नाहिं धरती नाहिं शेष नहीं अगवी पारायण ॥ तव न रूप नाहिं नाम नहीं त्रैगुण त्रैदेवा । तव न ब्रह्म नाहिं जीव नहीं साहव नाहिं सेवा ॥ रणजीत मीत नाहिं वैर तव निर्गुण सगुण नाहुता । तव न वेद वाणी नहीं नाहिं ज्ञानी नाहिं पंडिता ॥ जो श्रवणन सो सुनै और मुखसेती भाषै । जो कछु देखै नैन और सोवै अरु जागै ॥ औ आवै दुर्गंधगंध नासाके माहीं । यह सव झूँठो जान कछू ठहरतहै नाहीं ॥ अरु चरणदास उपजै नहीं विनशै नहिं संसार कहूँ । ब्रह्म सत्य सर्वज्ञ है सुझूंठो दरशै स्वप्न यहूँ ॥

दोहा—ब्रह्म विना खाली नहीं, सरसों सम कहुँ ठोर ॥
स्वप्नो सो जग देखिये, स्वप्न भयो मनमोर ॥
शुद्ध ब्रह्म है रैनि सम, जगत दिवाली दीव ॥
ज्यों तरंग जलमें उठै, ब्रह्म वीच ये जीव ॥

वार न जाको पाइये, पार परे नहिं चीन ॥
ऐसे सिन्धु अथाहमें, जगत जानिये मीन ॥
ब्रह्म बीच ये जीव सब, फिरत रहत आधीन ॥
जैसे सागर सिन्धुमें, नानारूपी मीन ॥
जैसे लहरि समुद्रकी, उठत रहत तेहि माहिं॥
विन इच्छाविनभावना,ह्वैह्वै मिटिमिटि जाहिं॥
औंडो सीव गँभीर है, विन इच्छा विन दोय ॥
निजस्वभावजगहोतहै, मिटि २फिरि २ होय॥
धरतीमें लीकट खिंचै, उठि नहिं आवै हाथ॥
ब्रह्म सत्य जग झूँठ है, ह्वैह्वै मिटिमिटि जात॥
जगत ब्रह्ममें यों दिपै, ज्यों धरतीपर रेख ॥
रेख मिटै धरती रहै, ऐसही जग देख ॥
झूंठ सांच दोउ नाम हैं, झूंठ मिटै थिर सांच ॥
ज्यों लोहा पावक मिलो, लोह रहै मिटि आंच॥
ज्यों सोवतस्वपनो उठो,दृष्टि खुली जब नाहिं॥
जगस्वपनो सो ह्वै मिटै,समझि देखु मन माहिं॥
देखनकोअतिनिकटहै, कहबेको बहुदूरि ॥
एकै ब्रह्म अखण्ड है, सकल रह्यो भर पूरि॥
अद्वै अचल अखंड है, अगम अपार अथाय॥
नहीं दूर नाहिं निकट है, सद्गुरु दियो बताय॥
भूल हुतो जब दो हुते,अब नहिं एक न दोय॥
अटक उठी धोखोमिटो, आपनहूं गयो खोय ॥

छप्पय–जहां गुरू नाहिं शिष्य जहां नाहिं साहब दासा। जहां गुफा नाहिं योग जहां नाहिं गगन निवासा ॥ जहां नहीं

तप दान जहां नहिं देवल पूजा । जहां ब्रह्म नहिं जीव जहां नाहिं एक न दूजा ॥ अरु चरणदास मि.ल मिटि गयो सो अचरज ऐसा न सूझिया । कौन सुने कासों कहै सो आप आप नहिं दूजिया ॥

दोहा—अपरम्पार अपार है, आदि अनादि अडोल ॥
पुरुष पुरातन ब्रह्म है, बिनकाया बिन बोल ॥

चौ०—अगम अगोचर अजर [illegible] । [illegible] अथाह भगवंता ॥
निराकार निर्भय निर्वाना । परमेश्वर परमात्मा प्राना ॥
अद्धै उरद्धै नहीं गोसाईं । नहिंबाहर नहिं मध्यम माहीं ॥
नहीं जीव नहिं सीव सहाई । श्वेत श्याम नहिं है अरुणाई ॥
है जैसो तैसोही राजै । आपन माहिं आपही गाजै ॥
नहीं नाँव नाहिं भावन भारी । है अखण्ड नहिं खंडित कारी ॥
है सर्वज्ञ सत्य विज्ञाना । छेदाभेद अकत्थ सुज्ञाना ॥
ज्योंका त्यों जैसेका तैसा । नाहिं ऐसा नाहिं कहिये वैसा ॥

दोहा—नीचे नीचे अन्त ना, ऊपर ऊपर ऊप ॥
बाँयें बाँयें हदना, दहिने दहिने गूप ॥
नहिं नीचे ऊपर नहीं, नाहिं दहिने नाहिं वाम ॥
मध्य नहीं आकारना, निराकार नहिं नाम ॥
निर्गुण ना सगुण नहीं, उपजै ना मिटिजाय ॥
सबकुछहैअरु कुछनहीं, सदा ब्रह्म थिरथाय ॥
जहां सांच जहँ झूँठहै, जहां झूंठ जहँ सांच ॥
झूँठ सांच दोनों नाहिं, तहँ कुछ शील न आंच ॥
बंध नहीं मुक्तौ नहीं, पाप पुण्यभी नाहिं ॥
उतपति ना परलय नहीं, नहीं नहीं [illegible]हिं ॥

इन्द्री ना निग्रह करौं, मन नाहिं जीतूं ताहि ॥
भूलैंना चेतौं नहीं, मैं नाहिं खोजौं वाहि ॥
योग नहीं युगता नहीं, नहीं ज्ञान नहिं ध्यान॥
बुधि विचार पहुँचै नहीं, तहँ कछु लाभ न हान॥
जैनधर्म शिवशक्तिना, स्वर्ग नरक नाहिं वास॥
षट् दर्शन चौवर्णना, नहीं कर्म संन्यास ॥
सिद्ध नहीं साधक नहीं, नहीं तिमिर नहिं भान॥
शून्य नहीं वेशून्यना, नहीं तत्त्व विज्ञान ॥
धर्म कर्म अरु मोहना, अरु नाहीं वैराग ॥
ज्योंका ज्यों सो भी नहीं, नहीं दुखी अनुराग ॥

चौ०—ब्रह्मज्ञान विन मिटै न दोई। ब्रह्मज्ञान बिन मुक्त न होई॥
दान यज्ञ तप नाना भोगा। ब्रह्मज्ञान विन सबही रोगा ॥
कलह कल्पना मनमें दोष। ब्रह्मज्ञान विन ना सन्तोष ॥
तिमिर अविद्या सबही भागै। ब्रह्मज्ञानमें जो तू जागै ॥
मत मारग मिलि भर्म बढ़ावैं। पक्षपातलै सब भर्मावै ॥
गुरु विन ब्रह्म ज्ञान नाहिं पावै। गुरुविन तत्त्व कौन दर्शावै ॥
गीता अरु वेदान्त बतावै। सामवेदभी योंहीं गावै ॥
ब्रह्मज्ञानमें निश्चय आवै। जीवन्मुक्ता सोइ कहावै ॥

दोहा—तू नाहीं सब रामहै, वेद भेदकी सीख ॥
एक रमैया रमि रह्यो, सकल अण्ड व्यापीक॥
सिद्ध स्वरूपी ब्रह्ममें, ज्यों पाला सब लोक ॥
पाला गलि पानीभवै, कछू न निकसै फोक॥
उलझे को सुलझायकै, कई जन्मको सूत ॥
चरणदास निर्भय भये, आशातजि अवधूत ॥

कवित्त–स्वर्गहू न चहिये जो होम यज्ञ दानकरौ, इन्द्र-आदि भोगनको चित्तते उठायो है । ऋद्धिहू न चाहिये जो जक्तमें बड़ाई चलै, सिद्धिहू न चहीं सब साधन विसरायोहै ॥ जातिहू न चाही जो कुलकी मर्य्याद चलूं, चारि वर्ण एक यों वेदनमें गायो है । कासों कहैं मुक्त और बंध तौन सूझेकहूं, कहै चरणदास आप आपन लौ लायो है ॥

सवैया–आदिहू आनँद अन्तहू आनँद मध्यहू आनँद ऐसेही जानो । बंधहु आनँद मुक्तहु आनँद आनँद ज्ञान अज्ञान पिछानो ॥ लेटेहु आनँद बैठेहु आनँद डोलत आनँद आनँद आनो । चरणदास विचारि सबै कछु आनन्द आनँद छांड़िके दुःख न ठानो ॥ १ ॥ आदिहु चेतन अन्तहु चेतन मध्यहु चेतन माया न देखी । ब्रह्म अद्वैत अखण्ड निरालँभ और न दूसरो आनँद ऐखी ॥ सिन्धु अथाह अपार विराजत रूप न रंग नहीं कुछ रेखी । चरणदास नहीं शुकदेव नहीं तहँना कोइ मारग ना कोइ भेखी ॥ २ ॥ भक्षतहैं नाहिं भक्षत भोजन पीवतहैं नाहिं पीवत पानी । डोलतहैं नाहिं डोलत परसों बोलतहैं नाहिं बोलत बानी ॥ नानारूप व्योहार में देखत निश्चयके मध्य कछू नाहिं आनी । चरणदास बताय दियो शुकदेवने ऐसे रहै ताहि जानिये ज्ञानी ॥ ३ ॥ सोवत है नहिं सोवत नींद सो जागतहै नाहिं जाग दिखानी । योग करैं न करैं कछु साधन ध्यान करैं न करैं कछु ध्यानी ॥ वचन विशाल करैं चरचा न करैं चरचा नहिं होय बिनानी । चरणदास बताय दियो शुकदेवने ऐसे रहै ताहि जानिये ज्ञानी ॥ ४ ॥

कवित्त–मंदिर क्यों त्यागै अरु भागै क्यों गिरिवरको, हरिजीको दूर जानि कलपै क्यों बावरे। सब साधन बतायो अरु चारिवेदं गायो, आपन को आप देखि अन्तर लौ लावरे॥ ब्रह्मज्ञान हिये धरो बोलते का खोजकरो, माया अज्ञान हरो आपा बिसरावरे। जैहैं जब आप धाप कहा पुण्य कहा पाप, कहै चरणदास तू निश्चल घर आवरे॥

अथ ब्रह्मज्ञानीलक्षणवर्णन (ज्ञान परीक्षा.)

निरालंब १ निर्भ्रम २ निर्वासिक ३ निर्विकार ४ (अथ विचारपरीक्षा) निर्मोहत १ निर्बंध २ निर्हिंसक ३ निर्वाण ४ (अथ विवेकपरीक्षा) सावधान १ सर्वंगी २ सारग्राही ३ संतोषी ४ (अथ परमसंतोषपरीक्षा) अयाचक १ अमानी २ अपक्षीक ३ स्थिर ४ (अथ सहजपरीक्षा) निष्प्रपंच १ निहतरंग २ निर्लिप्त ३ निष्कर्म ४ (अथ निर्वैरपरीक्षा) सुहृद् १ सुखदायी २ शीतलताई ३ सुमती ४ (अथ शून्य परीक्षा) शीलवंत १ सुबुद्धी २ सत्यवादी ३ ध्यानसमाधी ४ जामें ये लक्षण होयँ ताको ब्रह्मज्ञानी कहिये और जामें ये लक्षण न होयँ ताको वाचक ज्ञानी वितंडा जानिये॥

दोहा–जनक गुरू शुकदेवजी, चरणदास शिष्य होय॥
आप रामहीं राम हैं, गई दुई सब खोय॥
ब्रह्मज्ञान पोथी कही, चरणदास निर्वार॥
समझै जीवन्मुक्त हो, लहै भेद ततसार॥

इति श्रीशुकदेवजीकेशिष्यश्रीस्वामीचरणदासजी-कृतब्रह्मज्ञानसागरसम्पूर्णम्॥

॥ ॐ ॥

अथ

श्रीचरणदासकृतशब्दवर्णन ।

मंगलाचरण गुरुस्तुति ।

दोहा—ब्रह्मरूप आनन्द घन, निर्विकार निर्लेव ॥
मङ्गल करण दयाल जी, तारण गुरु शुकदेव ॥
सातियन । तुम सत्यहौ, शूरन म हौ वीर ॥
यतियनमें तुम यतिहौ, श्रीशुकदेव गँभीर ॥
पतित उधारण तुमलखे, धर्म्म चलावन भेव ॥
संकट सकल निवारिये, जै जै श्री शुकदेव ॥
चिंता मेटन भवहरण, दूरिकरण जग व्याध॥
गुरु शुकदेव कृपा करौ, चरण लगे सवसाध ॥
दाता चारौ वेदके, श्रीशुकदेव दयाल ॥
चरणदास पर हूजिये, वारम्वार कृपाल ॥

रागकल्याण—नमो शुकदेवहो चरण पखारणम् । द्वंद संकटहरण करणसुख मंगल परम आनन्द घन पतितके तारणं॥ नावतक त्याग वैरागहै मुक्तलौं तीतिहूं गुणनते निर्विकारं। महा निष्काम और धाम चौथेरहौ सिद्धि चेरी भई फिरैं लारं ॥ ज्ञानके रूप अरु भूप सव मुनिनमें दयाकी नाव-किये जीव पारं । उदैभागौत मति भान परगट कियो तिमिर कियो दूर अरु धर्मधारं ॥ मोहदल जीति अनरीतिके

खण्डनं भक्तिके दृढ़ करन भवविडारं । चरणदासके शीश-
पर हाथ नितहीरहो यही मांगौ गुरु वार वारं ॥ ६ ॥

अथ चरणोंकेचिह्नका मंगलाचरण ।

दोहा—दश चिह्न दाहिने चरण, वांयें हैं दश एक ॥
जिनके निश्चल ध्यानते, कटैं जो विघ्न अनेक ॥
श्रीशुकदेव अज्ञादई, चरणदास उच्चार ॥
सो अब वर्णन करतहूं, शब्दमाहिं विस्तार ॥

रागकल्याण—चरणचिह्न चितलाव फेरि तेराजन्म न होगा । पदम झलक छवि निरखि नैनभरि अंकुश मन अ-टकाव ॥ अम्बर छत्र कलश जो राजत ध्वजा धेनु पदभाव । शङ्ख चक्र अरु कलश सुधाहद तासूं चित उरझाव ॥ शस्त्रक जम्बू फलकी शोभा जासों सुरति लगाव । अर्द्धचन्द पट-कोन मीन बुन्द उर्ध रेख लखिचाव ॥ अष्टकोण तिरकोण विराजै धनुष बाण उरधाव । कोटिकाम नख ऊपर वारूं नूपुर सुन्दर पाव ॥ श्रीशुकदेव चिह्नपद वरणे सो तू हियेमें लाव । चरणदासहितराखिभोरनिशि वारवार वलिजाव ॥

आरती राग भैरव ।

मंगल आरति याविधि कीजै । हर्षपाय आनँदरस पीजै ॥
प्रथमैं मंगल गुरुही जान । जिनसूं पायो पद निर्वान ॥
ज्ञान भानु परगट कियो भोर । मिटिगइ रैन तिमिर घनघोर ॥
दुतिये मंगल श्री गोपाल । भक्ति वच्छल वहुपतित उधार ॥
राम कृष्ण पूरण अवतार । दुष्टदलन सन्तन रखवार ॥
तृतिये मंगल प्रभुजी के साध । मान सरोवर मता अगाध ॥
तिनकी संगति उठि गयोशंसा । कागपलटि गतिह्वैगयो हंसा ॥

चौथे मंगल श्रीभागौत । घट उजियार करनकूं ज्योत ॥
पाप ताप दुख मेटनहारी । जिहि नौका चढ़ि उतरौ पारी॥
पँचवें मंगल श्रीशुकदेव । तनमनसूं करि उनकी सेव ॥
चरणहिंदास चरण चितलायो । मंगलचार भयो जसगायो ॥
मंगल आरति कीजे प्रात । सकल अविद्या घटगइ रात ॥
सूरज ज्ञान भयो उजियारा । मिटिगयेऔगुणकुबुधिविकारा
मनके रोग शोग सब नाशै । सुमतिनीरशुभजलज प्रकाशै॥
भै अरु भर्म्म नहीं ठहराई । दुविधा गई एकता आई ॥
जाति वर्ण कुल सूझे नीके । सब सन्देह गये अब जीके ॥
घटघट दरशै दीन दयाला । रोम रोम सब होगइमाला ॥
दृष्टि न आवै दुख जगजाला । कागपलटि गति भये मराला॥
अनहद बाजन बाजन लागे । चोरनगरियातजितजि भागे ॥
गुरुशुकदेव कि फिरी दोहाई । चरणदास अन्तर लवलाई ॥

भोरकीध्वनी रागभैरव ।

आरतिआदि पुरुषकी कीजे । साधौ अगमअपार अचल मन दीजे ॥ अद्भुत आरतीॐकारा । त्रैदेवाह्वै जगत पसारा ॥ पहिले मच्छरूप हरि धारो । वेदलाय शंखासुर मारो ॥ रई मँदाचलवासकनेती । चौदहरत्न मथे दधि सेती ॥ रूप वराह धारि हरिधाये । हिरण्याक्ष हनि धरतीलाये ॥ खम्भ फारि हिरणाकुश मारो । नरसिंह ह्वै प्रह्लादउबारो ॥ वामन ह्वैकरि बलि छलि लीन्हे । तीनि लोक तीनों डगकीन्हे ॥ परशुराम ह्वै शस्तर धारे । क्षत्री सबै नि[illegible]छ करिडारे । रामरूप रावण दलमलिया । लंका राज बिभीषण मिलिया ॥ कृष्णरूप ह्वै कंस पछारो । दर्शन दे ब्रज सकल उधारो ॥ बुद्धरूप अच-

रज गतितेरी । कौतुक देखि थकी बुधि मेरी । निष्कलंक निर्लिप्त निरासा । संभलसुरति लियो जहँ वासा ॥ हरि हैं एक रूप वहुधारे । निराकार आकार नियारे ॥ दश अवतार आरती गाऊं । निरभै होय अभयपद पाऊं ॥ चरणदास शुकदेव वतायो । निर्गुणहरि सर्गुण ह्वै आयो ॥ आरति रमता राम कि कीजे । अन्तर्द्धान निरखि सुखलीजे ॥ चेतन चौकी सतको आसन । मगन रूप तकिया धरि दीजे ॥ सोहंथाल खैंचि मन धरिया । सुरति निरति दोउवाती वरिया ॥ योग युगति सूं आरति साजी । अनहद घंट आपसूं वाजी ॥ सुमति साँझकी विरिया आई । पाँच पचीस मिलि आरति गाई ॥ चरणदास शुकदेवको चेरो । घटघट दर्शै साहव मेरो ॥ आरति करत हँसै मन मेरो । वारपार कछु दिखै न तेरो ॥ अमर अडोल निरीक्षण भेखा । त्रैगुण रहत रूप नहिं रेखा ॥ चेतन आनँद नित निरधारा । निराकार निर्लिप्त नियारा ॥ निराकार आकार विवरजति । निरगुण अरु सरगुण तेरी गति ॥ हाथ पाँव अरु शीश घनेरे । कैसे आरति करूं प्रभुमेरे ॥ सोहंवाती घीव अखण्डा । एकहि ज्योति वलै ब्रह्मण्डा ॥ तुही थाल तुहि आरति साजे । तुहि घंटा तुहि झाँझरि वाजै ॥ चरणदास शुकदेव लखायो । सुरतिथकी पै पार न पायो ॥ गगन मँडलमें आरति कीजे । उत्तमसाज सकल सजि लीजै ॥ सुखमन अमृत कुम्भ धरावै । मनसा मालिनि फूल चढ़ावै ॥ घीव अखंडा सोहंवाती । त्रिकुटी ज्योति जलै दिनराती ॥ पवन साधना थाल करीजे । तामें चौमुख मन धरिलीजे ॥ रवि शशिहाथगहौ तिहिमाहीं । खिन दहिनो खिन वांयेंलाईं ॥

सहसकमल सिंहासन राजैं । अनहद झाँझरि नितही बाजैं ॥ इहिविधि आरति सांची सेवा । परमपुरुष देवनको देवा ॥ चरणदास शुकदेव बतावै । ऐसी आरति पार लँघावै ॥ ऐसी आरतिकरि हुलसावै । दै परिक्रमा शीश नवावै ॥ तनको थाल अरु मनको चौमुख ज्ञान ध्यानकी बातीलावै । भक्तिभावको घी भरि तामें जगमग जगमग ज्योति जगावै ॥ अर्ध ऊर्ध-हितसूं करि फेरै रचना रचै फूल वर्षावै । सुरति मृदंग अरु निरति तँबूरा झेगड़ झेगड़ झाँझबजावै ॥ ताल वीण मुरचंग शंखध्वनि प्रेम मगन ह्वै हरिगुण गावै । सोरन कलशा जलको राखै धूपरु अगर सुगन्ध धरावै ॥ या विधि सों शुकदेव श्यामकी गाय आरतीको फल पावै । युगल किशोर निरखि नैनन सों चरणदास सखि बलि बलि जावै ॥

रागविभास—या विधि गोविंद भोग लगावो । भक्तवछल हरि नाम कहावो ॥ बेर भीलनी के तुम पाये । देखि ऋषीश्वर सकल लजाये ॥ जैसे साग विदुर घर पायो । दुर्योधन को मान घटायो ॥ भक्त सुदामा के तंदुल लीन्हे । कंचन महल अधिक सुख दीन्हे ॥ ज्यों कर्माकी खिचरी खाई । नेह लियो सब शुचि बिसराई ॥ तुम्हरी विभौ प्रभु तुम्हरेहि आगे । हमसूं दीननकूं कहलागे ॥ प्रेम प्रीतिसूं भोजन कीजै । बचै सीथ संतनकूं दीजै ॥ चरणदास भरि राखी झारी । अँचवो हरि शुकदेव मुरारी ॥

भोगके आगेकी ध्वनि—काफी ।

जैजै पारब्रह्म परधान । जाकूं पावै गुरुके ज्ञान ॥ ब्रह्म पुरुषको धरो स्वरूप । सोतो कहिये अधिक अनूप ॥ जैजै ॐ

और त्रैदेव। जै जै दशऔतार अभेव॥ जै जै वृन्दावन निज धाम। जै जै गोकुल अरु नँदग्राम॥ जै जै गोपी जै जै ग्वाल। जै जै सदा बिहारीलाल॥ जै जै कुंजगली नँदलाल। मोर-मुकुट मुरली बनमाल॥ जै जै राधे कृष्ण मुरार। जै जै व्या-सदेव उच्चार॥ जै जै महाविदेह जनकजी। जै जै श्रीशुकदेव दयाल॥ इनको नाम जपै जो कोय। प्रेमभक्ति पावतहै सोय॥ चरणदास शुक वास लहैं। हरि चरणनके पास रहैं॥

अथ गुरुदेवकाअंग रागकल्याण।

सद्गुरु पांचो भूत उतारो। जन्म जन्म के लागेहि आये दै मंतर अब तिन्हैं बिडारो॥ काम क्रोध मोह लोभ गर्भन मन बौराय कियो जो अप भायो। जिनके हाथ परो जिय मेरो घेरा घेरी बहुत दुखपायो॥ एकघरी मोहिं छोंड़त नाहीं लहरि चढ़ायके बहुत निवावो। कपि ज्यों घर घर द्वार नचावै उत्तम हरिको नाम छुटावो॥ अबकी शरणि गही है तुम्हरी चरणहिंदास अजाने। किरपा करि यह व्याधि छुटावो गुरु शुकदेव सयाने॥

रागधनाश्री—अब मैं सद्गुरु शरणौं आयो। बिन रसना बिन अक्षर वाणी ऐसोहि जाय सुनायो॥ काम क्रोध मद पाप जराये त्रैविधि ताप नशायो। नागिनि पांच मुई सँग ममता हृष्टसूं काल डेरायो। किरिया कर्म अचार भुलाना ना तीरथ मग धायो। समझौ सहज वचन सुनि गुरुके भर्म को बोझ बगायो॥ ज्यों ज्यों जपू गरक हों वामें वह मों माहिं समायो। जग झूंठो झूंठो तन मेरो यों आपा

नहिं पायो ॥ वाकूं जपै जन्म सोइ जीतै सो हम शुद्ध बतायो। चरणदास शुकदेव दया यों सागर लहरि समायो ॥

रागसोरठ—गुरुदेव हमारे आवोजी । बहुत दिनोंसे लगो उमा हो आनँद मंगल लावोजी ॥ पलकन पंथ बहारूं तेरो नैनन परिपग धारोजी । बाट तिहारी निशिदिन देखूं हमरी ओर निहारोजी ॥ करौं उछाह बहुत मन सेती आँगन चौक पुरावोंजी । करूं आरती तन मन वारूं बारबार बलिजावोंजी ॥ दे पैकरमा शीश नवाऊं सुनि सुनि वचन अघाऊंजी । गुरु शुकदेव चरणहूंदासा दर्शन माहिं समाऊंजी ॥ हो अँखियां गुरु दर्शनकी प्यासी । इकटक लगी पंथ निहारूं तनसूं भई उदासी ॥ राति दिना मोहिं चैन नहीं है चिन्ता अधिक सतावे । तलफतरहूं कल्पना भारी निश्चल बुधि नाहिं आवे ॥ तन गयो सूक हूक अति लागी हिरदय पावक बाढ़ी । खिनमें लेटी खिनमें बैठी घर अँगना खिन ठाढ़ी ॥ भीतर बाहर संगसहेली बात नहीं समझावे । चरणदास शुकदेव पियारे नैनन ना दर्शावे ॥

रागभैरव ।

गुरु बिन मेरे और न कोय । जगके नाते सब दियेखोय ॥
गुरुही मातु पिता अरु वीर । गुरुही सम्पति जीवससीर ॥
गुरुही जाति वरण कुल गोत । जहां तहां गुरुसंगी होत ॥
गुरुही तीरथ बरत हमार । दीन्हे और धरम सबडार ॥
गुरुही नाम जपौं दिनरैन । गुरुको ध्यान परम सुखदैन ॥
गुरुके चरण कमलकरि बास । और न राखूं कोई आस ॥
जो कुछ चाहैं गुरुही करैं । भावै छाँह धूपमें धरैं ॥

आदिपुरुष गुरुही कूं जानूं । गुरुही मुक्तिरूप पिछानूं ॥
चरणदास के गुरु शुकदेव । और न दूजा लागै लेव ॥

अथ भक्तिअंग वर्णन रागकरखा ।

राखिये लाज महाराज गोपालजी दीनजन शरण आयो तिहारी । लगो मोह ध्यान दृढ़ चरणही कमल में कीजिये किरपा सुनिहो विहारी ॥ विषय जंजार रस स्वाद घेरो घन्यो पांचहूं चोर दुख देह भारी ॥ नीच वहु दुष्ट वलवान पच्चीसठग तकैं निशि द्योस हिये घात डारी ॥ पकरि गजराज कूं ग्राह खैंच्यो तबै टेरदे हेर कीन्ही पुकारी । गरुड़ तजि धायआये छुटायो तुरत हरि हिये व्याध तन विपति टारी ॥ ध्रुव अचलकियो प्रहलादकूं दर्शदियो कियो हनुमानसूं प्रीति भारी । भीलनी अरु कामी अजामीलसे अधम अति पतित गणिका उवारी ॥ पाण्डु सुतहूं वचाये जरत अग्निसूं द्रौपदी चीरवाढ़ो अपारी । नामदे सैन पीपा कवीरा सदन नरसिया दास मीरा उधारी ॥ कोटि अनगन भक्त तारि दिये तिनको मैं कहों मेरी सुरति क्यों विसारी । तो विना कहांजाऊं कहीं ठार ना तेरेही द्वारकोहूं भिखारी ॥ सकल संशयहरण तूही तारणतरण श्याम शुकदेव गिरिधर मुरारी । दास चरणदास रणजीतको आसरो तुही है आप तौ जानलीजे सँभारी ॥

साधौ सोई जनशूर जो खेतमें मड़रहै भक्तिमें दानमें रहैठाढा । सकललज्जा तजै महा निरभै गजै पैजनी ज्ञान जिनआय गाड़ा ॥ भये वहुवीर गम्भीर जे धीर मत सवनको यशक-हत ग्रन्थहोई । तिनंविषे कछू इकनाम वर्णनकरूं सुनौ हो सन्तदै चित्त सोई ॥ पितासूं रूठि ध्रुव पांचही वर्षको टेक

गहि भक्तिके पन्थधायो । छल भयो ना डिगो टेक पूरीभई जीति मैदान हरिदर्श पायो ॥ हठो प्रहलाद हरिनाम छाँडो नहीं बापने त्रासदै बहु डिगायो । टेक जवना टरी राम रक्षा-करी दुष्ट को मारिकै जन जितायो ॥ कबीर दादू धने पहिरि बख्तर बने नामदेव सारिखे बहुत कूदे । सेन सदना वली भक्त पीपा बड़ो रामकी ओरकूं चले सूधे ॥ मलूक जैदेव गज ग्राह कलकी धरे शूर रैदास मुख नाहिं मोड़ा । ध्यान बन्दूक में प्रेम रञ्जकजमा मीरमाधो चला कुदाय घोड़ा ॥ दासमीरा पिली प्रेमसम्मुख चली छोड़िदई लाज-कुल नाहिं माना । और शबरी मढ़ी तोड़ि ऊंचीगढ़ी दौर करमाचली प्रेम जाना ॥ श्रीशुकदेव रणजीत सांवत कियो लड़े कलियुगविषे खम्भ गाड़े । बहुत सेनालिये ललक हूहू किये चरणहींदास सँग नाहिं छांड़े ॥

रागकाफी—हे जगके करतार तेरी कहा अस्तुति कीजे । तूही एक अनेक भयोहै अपनी इच्छाधार ॥ तूही सिरजै तूही पालै तूहीकरै सँहार । जितदेखूं तित तूही तूहै तेरारूप अपार ॥ तूही राम नरायण तूही तूही कृष्ण मुरार । साधोंके रक्षाके कारण युगयुगले औतार ॥ तुही आदि अरु मध्य तुही है अन्त तेरा उजियार । दानव देव तुहींसूं प्रगटे तीनलोक विस्तार ॥ जल थलमें व्यापकहै तूही घटघट बोलनहार । तोविन और कौनहै ऐसो जासों करो पुकार ॥ तही चतुर शिरोमणि है प्रभु तूहीं पतित उधार । चरणदास शुकदेव तुही है जीवन प्राण अधार ॥ तवगुण करूं बखान यह मेरी बुद्धि कहां है । चतुर्मुखी ब्रह्मागुणगावैं तिनहुँ न पायोजान ॥ गुणगावत शं-

कर जब हारे करनेलागे ध्यान । गुण अपार कछु पार न आयो सनकादिक कथज्ञान ॥ गुणगावत नारदमुनि थाके सहसमुखनसूं शेश । लीलाको कछु वार न पायो ना परिमाणनभेश ॥ शक्ति घनी अनगिनत तुम्हारी बहुतरूप बहुनावँ । जबहिं विचारूं हियेमें हारूं अचरज हेरि हिरावँ ॥ अति अथाह कछु थाह न पाऊं शोच अचक रहिजावँ । गुरु शुकदेवथके रणजीता मैं कहु कौन कहावँ ॥

रागपरज ॥ रामगुण कोई न जानेहो । शेश महेश गणेश अरु ब्रह्मा रहे थकानेहो ॥ सुरति निरतिबुधि गम नहीं सबदेव लुभानेहो । सनकादिक नारदहू हारे कौन बखानेहो ॥ योगी जंगम ऋषि मुनि तपसी सुरज्ञानेहो । ध्यान लगावै अन्त न पावैं गये हिराने हो ॥ पशू मनुपकह कहिसकै विषे शशि लपटानेहो ॥ चरणदास शुकदेव दया यह बात पिछानेहो ॥

रागकाफी—रामारामा जी साईं । अलख निरंजनरूपा ॥ तूही एक अनेक स्वरूपा ॥ तेरी ज्योति सकल जगछाई । तू घटघट रह्यो समाई ॥ तूहीआदि अनादि कहावे । ब्रह्मादिक पार न पावैं ॥ अविगत अविनाशी जाना । निरगुण सरगुण पहिंचाना ॥ बहु विधिके भेष बनावे । सिरजै पालै विनशावै ॥ अचरज कौतुक विस्तारा । जनकारण ले औतारा ॥ तूही है देवनको देवा । सनकादिक लहै न भेवा ॥ चाहै सो करै पलमाहीं । तूही व्यापक है सब ठाहीं ॥ तूही ज्ञानी गुणी अपारा । पूरण परमातम प्यारा ॥ गुण बहुत कहांलौं गाऊं । विनती करि शीश नवाऊं ॥ शुकदेव गुरू बतलाया । चरणदास शरण तेरी आया ॥२४॥ रामारामाजी सुनि लीजै बिनती मेरी । मैं

शरण गही है तेरी ॥ तैं बहुतै पतित उधारे । भवजलसूं पार-
उतारे ॥ हौं सब को नाम न जानूं । अब कोइकोइ भक्त ब-
खानूं ॥ अंबरीष सुदामा नामा । सो पहुँचाये निजधामा ॥
ध्रुव पांच वरषको बाला । तेंहि दर्शन दियो गोपाला ॥ प्रह-
लाद टेक सुत राखी । यों जानतहैं सब साखी ॥ शबरीके
फल तुम खाये । त्रयलोचनके घर आये ॥ पण्डवनकी करी
सहाई । द्रौपदी कि लाज बढ़ाई ॥ गणिकाहूं पार लखाई ।
करमाकी खिचरीखाई ॥ मीरा तुम्हरे रँगभीनी । नरसीकी
हुंडीलीनी ॥ धनाको खेत जमायो । तैंसाग विदुर घरखायो॥
कबिराके बादललाये । सब काजकिये मनभाये ॥ सदनासे
सेना नाई । तैं बहुत किये मुकताई ॥ ग्राहसुं गजजाय छु-
डायो । तैं मोकूं क्यों बिसरायो ॥ सनकादिक ब्रह्मा ध्यावैं ।
तेरा शेष आदि यशगावैं ॥ तेरा वेद पार नाहिं पाया । जि-
न नेति नेति बतलाया ॥ मैं कामक्रोधने घेरा । ममताकी उर
उरझेरा ॥ मोह लोभके फंदे फरिया । तेरा नाम विसरि दुख-
भरिया ॥ अब तुमहीं करोनिबेरा । मोहिं जानि चरणको
चेरा ॥ मैं पापी महा संतापी । अपराधी बहुत कलापी ॥
तुम छाँडि कासुपै जाऊं । यह दुख कौने समझाऊं ॥ शुक-
देव गुरू मैं पाया । जिन तेरहि नाम बताया ॥ चरणदास
आपनो कीजै । मोहिं भक्तिदान बर दीजै ॥

राग रामकली—पतित उधारण बिरद तुम्हारो । जो
यह बात सांच है हरिजी तौ तुम हमको पार उतारो ॥
बालपने अरु तरुण अवस्था और बुढ़ापे माहीं । हमसे भई
सभी तुम जानौ तुमसे नेकहुँ छानी नाहीं ॥ अनगिन पाप

भये मनमाने नखशिख अवगुण धारी । हिरि फिरिकै तुम शरणै आयो अब तुमको है लाज हमारी ॥ शुभकरमनको मारग छूटो आलस निद्रा घेरो । एकहि बात भली बनिआई जग में कहायो तेरो ॥ चेरो दीनदयाल गुपाल विश्वंभर श्रीशुकदेव गुसाईं । जैसे और पतित घनतारे चरणदासकी गहिये बाहीं ॥ १ ॥ अर्ज सुनो जगदीश गुसाईं । ग्रह[1] नक्षत्र अरु देव विसारो चरण कमलकी आयो छांईं ॥ सत विश्वास यही हिय धारो तोहिं न भूलों एक घरी । इतउतसे मन खैंचि लियो है काहूसे कछु नाहिं सरी ॥ अब चाहो सो करो प्रभु तुमहीं द्वार तुम्हारे सुरति अरी । भावै नरक स्वर्ग पहुँचावौ भावै राखौ निकटहरी ॥ अपनी चाहरही नहिं कोई जबसूं तुम्हरी आश धरी । आन भरोसो छोंड़ि दियो है सकल विकल सब छार करी ॥ यह आपा तुमहीं को दीजो मेरी मो मैं कुछ न रही । आदिपुरुष शुकदेव सुनोजी चरणदास यों टेरि कही ॥ २ ॥

रागविभास–अबकी करौ सहाय हमारी । दुष्टदलन अरु भक्त बचावन ऐसी साखि तुम्हारी ॥ जिन प्रहलाद असुर गहि बांध्यो लीन्हो खड्ग निकारी । हिरणाकुश हनि दास उबारो नरसिंह को तनु धारी ॥ खैंचि ग्राह गज बोरन लागो राम कहो यकबारी । सुनत पुकार पयादेहि धाये तजिकै गरुड़ सवारी ॥ द्रौपदि लाज उबारण कारण लाये सभा मँझारी । दीनानाथ लई सुधि वेगहि बाढो चीर अपारी ॥ जिन जिन शरण गही सङ्कटमें कहा पुरुष कह नारी । चारौ

१ रवि, चंद्र, भौम, बुध, बृहस्पति, शुक्र, शनि, राहु, केतु, इतिनवग्रहाः

युग हरि करी सहाई रक्षक भये मुरारी ॥ गुरु शुकदेव बतायो तोकों सन्तनकी रखवारी ॥ चरणदास थकि द्वारे तेरे गुण पौरुष दियो डारी ॥

रागधनाश्री—अब तुम करो सहाय हमारी । मनके रोग होयगये दीरघ तनके बड़े बिकारी । तुम सों बैद और को दूसर जाहि दिखाऊं नारी ॥ सञ्जीवन मूल अमर मूल हो जासों सोहै दया तुम्हारी । क्रिया कर्म की ओषधि जेती रोग बढ़ावनहारी ॥ दीजै चूरण ज्ञान भक्तिको मेटो सकल व्यथारी । जनके काज पयादे धावत चरण कमल पर वारी ॥ मैं भयों दास अधीन तुम्हारो मेरो करो सँभारी । जो मोहिं कुटिल कुचालि जानिकै मेरी सुरति बिसारी ॥ चरणदासहै शुकदेव तेरो दुष्ट हैं सँगे भारी ॥१॥ हरिजी सङ्कट बेगि निवारो । जनकूं भीर परीहै भारी चक्र सुदर्शन धारो ॥ कंस निकन्दन रावण गञ्जन हरणाकुश गहि मारो । दुष्टदलन अरु भक्त उवारण जन प्रहलाद उबारो ॥ पांचौ पाण्डव राखलिये हैं कौरव दल संहारो । जिन जिन दोष कियो सन्तन सों सो सोई हनि डारो ॥ निरभय भक्तिकरैं जन तेरे ऐसो समय विचारो ।चरणदास के घटमें वैरी तिनको क्यों न बिदारो॥२॥

रागबिभास—राखो जी लाज गरीबनिवाज । तुम बिन हमरे कौन सँवारै सबही बिगरै काज ॥ भक्त बछल हरिनाम कहावो पतित उधारण हार । करो मनोरथ पूरण जनको शीतल दृष्टि निहार ॥ तुम जहाज मैं काग तिहारो तुम तजि अन्त न जाऊं । जो तुम हरिजी मारि निकासौ और ठौर

नहिं पाऊं ॥ चरणदास प्रभु शरण तिहारी जानत सब संसार । मेरी हँसी सों हँसी तिहारी तुमहूं देखि विचार ॥

रागविलावल ॥ प्रभुजी शरण तिहारी आयो । जो कोइ शरण तिहारी नाहिं भर्मि भर्मि दुखपायो॥औरनके मन देवी देवा मेरे मन तुहिभायो । जबसों सुरति सँभारी जगमें और न शीशनवायो ॥ नरपति सुरपति आश तिहारी यह सुनिकरि मैं धायो । तीरथ वरत सकल फल त्यागे चरणकमल चितलायो॥ नारद मुनि अरु शिव ब्रह्मादिक तेरो ध्यान लगायो। आदि अनादि युगादि तेरो यश वेद पुराणन गायो ॥ अब क्यों न वांहगहो हरि मेरी तुमकाहे विसरायो॥ चरणदास कहैं करता तूही गुरुशुकदेव बतायो॥

राग केदारा ॥ अबकी तारिहौ बलवीर । चूक मोसों परीभारी कुबुधि के संगसीर ॥ भवसागर की धारा तीक्षण महा गँधीलो नीर । काम क्रोध मद लोभ भँवरमें चित न धरत अब धीर ॥ मच्छ जहां बलवन्त पांचहू थाह गहर गंभीर । मोह पवन झकोर दारुण दूर पै लखतीर॥ नावतौ मँझधार भरमी हिये बाढ़ीपीर । चरणदासकहै कोई नहिंसंगी तुमबिना हरिहीर ॥

राग सोरठ ॥ अब जगफन्द छुटावोजी हौंतो चरण कमलको चेरो । परोरहूं दरबार तिहारे सन्तन माहिं बसेरो॥ विना कामना करूं चाकरी आठौं पहरेनेरो । मन सब भक्ति क्रिया करि दीजै मोहिं यही बहु तेरो ॥ खानेजाद कदीमी कहियो तुही आसरो मेरो। झिड़क बिड़ारौ तहूं न छाड़ौं सेवा सुमिरण तेरो ॥ काहू और आन देवनसों रहोनहीं उर

झेरो। जैसे राखो त्योंहीं रहहूं कर लीजै सुरझेरो॥ तेरे घर बिन कहों न मेरो ठौर ठिकानो डेरो। मोसे पतित दीनको हरिजी तुमहीं करो निबेरो॥ गुरु शुकदेव दयाकरि मोकूं ओर तिहारी फेरो। चरणदासको शरणैं राखो यही इनाम घनेरो॥

राग बिलावल॥ तुम साहब करतारहो हम बन्दे तेरे। रोम रोम गुनहगार हैं बकसो हरि मेरे॥ दशौ दुवारे में लहै सब गन्दम गन्धा। उत्तम तेरोनाम है बिसरो सो अन्धा॥ गुण तजिकै औगुण किये तुमसब पहिंचानौ। तुम सों कहा छिपाइये हरिघटकी जानौ॥ रहमकरो रहमानत् यहदास तिहारो। भक्तिपदारथ दीजिये आवा गमन निवारो॥ गुरुशुकदेव उबारलौ अब मेहर करीजे। चरणहिंदास गरीबको अपना करलीजे॥

राग रामकली—चारिवरण सों हरिजन ऊंचे। भये पवित्तर हरिके सुमिरे तनके उज्ज्वल मनकेसूचे॥ जो न पतीजे साखि बताऊं शबरीके झूंठे फल खाये। बहुत ऋषीश्वर ह्वांईरहते तिनके घर रघुपति नहिं आये॥ भीलनी पाव दियो सरितामें शुद्धभयो जल सब कोई जाने। मन्दहतो सो निर्मल हूवो अभिमानी नरभये खिसाने॥ ब्राह्मण क्षत्री भूपहुते बहु बाजो शङ्ख श्वपच जब आयो। बालमीकि यज्ञ पूरण कीन्हो जयजयकार भयो यश गायो॥ जाति बरण कुल सोई नीको जाके होय भक्ति परकास। गुरु शुकदेव कहत हैं ताको हरिजन सेव चरणही दास॥ १॥ सब जातिनमें हरिजन प्यारे। रहनी तिनकी कोई न पावै तनसों जगमें मनसों न्यारे॥ साखिसुनौ अँबरीष भूपकी दुर्बासा जहँ आयो।

लगो शरापदेन राजाको चक्रसुदर्शन जारनधायो ॥ प्रभुजी आये दुर्योधनके वह मनमें गरवायो । नाना विधिके व्यंजन त्यागे साग विदुर घर रुचिसों पायो ॥ सतयुग त्रेता द्वापर कलियुग मान सन्तको राखो । भक्तों वश भगवान सदाहीं वेद पुराणनमें जो भाखो ॥ ब्राह्मण क्षत्री वैश्य शूद्र घर कहीं होय क्यों न वासा । धनिकुल वह शुकदेव वखाने यह तुम सुनौ चरणहीदासा ॥ २ ॥

राग कान्हरा–धनि वे नर हरिदास कहाये । रामभक्ति दृढ़हीकरि पकरी आन धर्म सवही विसराये ॥ आठपहर गलतान भजन में प्रेममगन हियमें हुलसाये ॥ आप तरै तारै औरनको बहुतक पापीपार लगाये ॥ प्रभु दर्शन बिन और न आशा धर्म्मकाम अरु मोक्ष न चाहै । आठौ सिद्धि फिरैं सँग लागी नेक न देखैं नैन उठाये ॥ तिनको ऋषि मुनि जाप करतहैं हरि हरिजन दोउ सँगही गाये । ऊंची पदवी इन्द्र हुते देवनदेखि अधिक ललचाये ॥ कहैं शुकदेव चरणहीं दासा धनिमाता ऐसे जनजाये । जीवत सो जगमें यश पाये तनुछूटे हरिमाहिं समाये ॥

रागसोरठ–मोको कछु न चहिये राम । तुम विन सवही फीके लागैं नाना सुख धन धाम ॥ आठ सिद्धि नौनिद्धि आपनी और जननको दीजे । मैंतो चेरो जन्म जन्मको निजकरि अपनो कीजे ॥ १ ॥ स्वर्ग फलनकी मोहिं न आसा । ना वैकुंठ न मोक्षहि चाहौं चरणकमलके राखौ पांसा ॥ यह उर माहिं उमाहूं ॥ भक्ति न छांड़ौ मुक्ति न मांगों सुनु शुकदेव मुरारी । चरणदासकी यही टेकहै तजौं न गैल तुम्हारी ॥

रागभैरव ॥ वह पुरुषोत्तम मेरा यार । नेह लगा टूटै नहिं तार ॥ तीरथ जाऊं न वर्त्त करूं । चरणकमलको ध्यानधरूं ॥ प्राण पियारे मेरेहि पास । वन वन माहिं न फिरूं उदास । पढूं न गीता वेदपुराण । एकहि सुमिरौं श्रीभगवान ॥ औरनको नहिं नाऊं शीश । हरिही हरि हैं विस्वेवीश ॥ काहूकी नहिं राखूं आस । तृष्णा काटि दही है फाँस ॥ उद्यमकरूं न राखूं दाम । सहजहि ह्वै रहै पूरणकाम ॥ सिद्धि मुक्ति फल चाहौं नाहिं । नितहि रहूं हरि संतन माहिं ॥ गुरु शुकदेव यही मोहिं दीन । चरणदास आनँद लवलीन ॥

सन्त महिमा ।

राग भैरव—यों कहैं हरिजी दयानिधान । सन्तहमारे जीवनप्रान ॥ सन्तचलैं जहँ सँगहीजावँ । सन्त दियो सो भोजन खावँ ॥ सन्त सोलवै जितरहुँ सोय । सन्त विना मेरे और न कोय ॥ सन्त हमारे माई वाप । सन्तहिको मनराखूं जाप ॥ सन्तको ध्यान धरौं दिनरैन । सन्त विना मोहिं परै न चैन ॥ सन्त हमारी देही जान । सन्तहि की राखूं पहिचान ॥ सन्तकी सकल बलइया लेवँ । सन्तकूं अपनो सर्वसदेवँ ॥ सन्तहिहेत धरूं अवतार । रक्षाकारण करूं न वार ॥ सुखदेऊं दुख सब निरवार । चरणदास मेरो परिवार ॥

राग सोरठ—भक्तजन सो हरिके मनभावै । निष्कामी अरु प्रेमहिये में अनन्य भक्ति चितलावै ॥ आनदेव जो मोती बरषैं तौनाहीं पतियावै । प्रभुके चरण कमलके ऊपर भँवर भयो लिपटावै ॥ सिद्धि न चाहै ऋद्धि न मांगै दर्शनको ललचावै । मुक्ति आदिदे चाह न कोई आशा सकल गँवावै ॥

रोमहिं रोम पुलकि सबदेहीं गोविन्दके गुणगावै । गद्गदवाणी कंठउसासै नैनन नीर ढरावै ॥ परमेश्वर मिलनेकी लहरैं इक-आवै इक जावै । कहैं शुकदेव चरणहींदासा हरिहूं कंठलगावै ॥

रागविलावल—हमारे चरणकमल को ध्यान । मूरख जगतभर्मता डोलै चाहत जल असनान ॥ सब तीरथ वाहीसों प्रकटे गंगा आदिक जान । जिन सेवन सब पातक नाशै नितहोवै कल्यान ॥ साकर गिरही वानेधारी हैं सबही अज्ञान । हरिसों हीरा छांड़ि दियोहै पूजै कांचपखान ॥ हरि चरण-नकी महिमा जानैं हैं वे सन्त सुजान । भौंदू नर मायाके चेरे इनको कह पहिचान । चरणदास शुकदेव गुरूने दीन्हो अंजन ज्ञान । हरिसों प्रीतम सूझ पराहै विसरिगयो सब आन ॥

रागनट व विलावल सारंग ॥ हमारे रामभक्ति धनभारी। राज न डांड़ै चोर न चोरै लूटि सकै नहिं धारी ॥ प्रभु ऐसे अरु राम रुपैया मुहर मुहव्वत हरि की । हीराज्ञान युक्तिके मोती कहा कमी है जरकी ॥ सोना शील भँडार भरेहैं रूपा रूप अपारा । ऐसी दौलत सतगुरु दीन्हीं जाका सकल पसारा ॥ बांटों वहुत घटै नहिं कबहूं दिन दिन ज्योंढ़ी ज्योंढ़ी । चोखा माल द्रव्य अति नीका बट्टा लगै न कौड़ी ॥ साह गुरू शुकदेव विराजै चरणदास वन जोटा । मिलि मिलि रंक भूप हो वैठै कवहुँ न आवै टोटा ॥

रागनट विलावल—जो नर हरि धन सों चितलावै । जैसे तैसे टोटा नाहीं लाभ सवायापावै ॥ मन करि कोठी नाव खजानो भक्ति दुकानलगावै । पूरा सतगुरु साझी करिकै संगति वणिज चलावै ॥ हुंडी ध्यान सुरति लै पहुंचै प्रेम

नगरके माहीं । सीधा साहूकारा सांचा हेर फेर कछु नाहीं ॥ जित सौदागर सबही सुखिया गुरु शुकदेव वसाये । जन रंजीत विलमि रहे ह्वांईं योनी पंथ न आये ॥ ४६ ॥

राग देवगन्धार—मनुवाँ रामके व्यापारी । अबकै खेप भक्तिकी लादी वणिज कियो तैं भारी ॥ पांचौ चोर सदा मगरोकत इनसों कर छुटकारी । सतगुरु नायकके सँग मिलि चल लूटसकै नहिं धारी ॥ दो ठग मारग माहिं मिलैंगे एक कनक एक नारी । सावधानहो पेच न खइयो रहियो आप सँभारी ॥ हरिके नगरमें जा पहुंचौगे पैहो लाभ अपारी । चरणदास तोको समझावे ये मन वारम्वारी ॥

राग सोरठ ॥ हरि पावनकी गति न्यारी है । कष्ट तपस्या पढ़न लिखन सूं ढूंढ़त मूढ़ अनारी है । अड़सठ तीरथ भरमत डोलै देहगई सब हारी है । निरजल वर्त्तकिये वहु भाँती आश फलन की धारी है । तप करनेको वन जा बैठे कीन्हीं त्वचा उघारी है । पौन अहारी तनहूं गारौ दर्शै नाहिं मुरारी है ॥ विद्या पढ़ि पढ़ि पण्डित होवै अर्थ करै वहु भारी है । अभिमानी ह्वै जन्म गँवायो भयो न प्रेम खिलारी है ॥ सांचि भक्ति विन हरि नहिं रीझै बहुत गये शिरमारी है । चरणदास शुकदेव श्यामपर तनमनसूं बलिहारी है ॥१॥ सुनु रामभक्ति गति न्यारी है । योग यज्ञ संयम अरु पूजा प्रेम सबनपर भारी है ॥ जाति वरणपर जो हरि जाते तौ गणिका क्यों तारी है । शवरी सरस करी सुरमुनिते हीन कुचील जो नारी है । दुश्शासन पति खोवन लागो सबही ओर निहारी है । होय निराश कृष्ण कहँ टेरी वाढ़ो चीर अपारी है ॥

टेढ़ी लौंड़ी कंसरजाकी दीन्हों रूप करारी है। एकसूं एक अधिक व्रजनारी कुबिजा कीन्हीं प्यारी है॥ पांचौ पाण्डवन यज्ञ सजो है सगरी सजी सवारी है॥ वालमीकि विन काज न होतो बाजो शंख मुरारी है॥ साधौंकी सेवामें राचो भूपकि सुरति विसारी है। सैन भक्तके कारण हरिजी वाकी सूरत धारी है। दासकबीरा जाति जोलाहा ब्राह्मण मिलन कि ख्वारी है। बनिजारा हो बालिधलाये ताकी करी सँभारी है॥ साखि सुनौ रैदास चमारा सो जगमें उजियारी है। कनक जनेऊ काढ़ि दिखायो विप्रगये सब हारी है॥ अजामील सदना तिरलोचन नाभानाम अधारी है। धन्नाजाट कालु अरु कूवा बहुतकिये भवपारी है॥ प्रीतिबराबर और न देखै वेदपुराण विचारी है। चरणदास शुकदेव कहत हैं तावश आप मुरारी है॥

रागगौरी—आवो साधौ हिलमिल हरियशगावैं। प्रेमभक्तिकी रीतिसमझकरि हितसों रामरिझावैं॥ गोविंदके कौतुक लीला गुण ताको ध्यानलगावैं। सेवा सुमिरण बंदन अर्चन नौधासों चितलावैं॥ अबकी औसर भलो बनो है बहुरिदावँ कवपावैं। भजन प्रताप तरेभवसागर उरआनन्द बढ़ावैं॥ सतसंगति को साबुन लेकर ममता मैल वहावैं। मनको धो निरमल-करिउज्ज्वल मगनरूप ह्वै जावैं॥ ताल पखावज झांझ मँजीरा मुरली शङ्ख बजावैं। चरणदास शुकदेव दयासूं आवागमन मिटावैं॥

राग बिलावल—करिले प्रभुसों नेहरा मन माली यार। कहा गर्व मनमें धरै जीवन दिनचार॥ ज्ञानवेलि गहु टेककी दया क्यारा सवाँर। यतसत दृढ़के बीजहि बोवै तासु मंझार।

शील क्षमा के कूपको जल प्रेमअपार । नेमडोलभरि खैंचिकै सींचोबाग बिचार ॥ छलकीकरकूं काटकै बाँधो धीरज बार । सुमति सुबुद्धि किसानको राखो रखवार ॥ धर्म्म गुलेलज्यु प्रीतिकी हित धनुष सुधार । झूंठ कपट पक्षीनकूं तासों मार बिड़ार ॥ भक्तिभाव पौधालगै फूल रङ्ग फुलवार । हरिरसमाताहोयकै देखै लालबहार ॥ सतसंगति फलपाइये मिटै कुबुधि बिकार । जब सतगुरु पूरा मिलै चाखै अमृतसार । समझावै शुकदेवजी चरणदास सँभार । तेरीकायामें खिलै साँचो गुलजार ॥

रागमंगल—सोई सुहागिल नारि पियामन भावई । अपने घरको छोड़ि न परघर जावई ॥ अपने पियको भेद न काहू दीजिये । तन मन सुरति लगाय कि सेवा कीजिये । पतिकी आज्ञा चाल पाल पियको कहो । लाज लिये कुलवंत यतनहींसूं रहो ॥ धनि धनि है जगमाहिं पुरुप बहु हितधरै । सब से नायकहोय जो सबरको करै ॥ पियको चाहो रूप शृँगार बनाइय । पतिब्रता कुल दोयमें शोभा पाइये ॥ नौधा बस्तर पहिरि दया रँगलालहै । भूषण बस्तरधार बिचित्तर बालहै ॥ रङ्गमहल निर्दोष ह्वाँ झिलमिल नूरहै ॥ निर्गुण सेजबिछाय सभी करि दूरभै ॥ मन्दिर दीपक बाल बिना बातीघीवकी । सुघर चतुर गुणराशि लाड़िली पीवकी ॥ कहैं गुरू शुकदेव यों बालम मोहिये । चरणदास ले सीख जो प्रेम समोइये ॥१॥ परमसुखी सोइ साधु जो आपा नाथपै। मन के दोषमिटाय नाम निर्गुणजपै ॥ परनिन्दा परनारि द्रव्य नाहीं हरै । जिन चालन हरिदूरि बीच अन्तरपरै ॥

क्षण नहिं बिसरै राम ताहि निकटै तके । हरिचर्चा बिन और वाद नाहींबकै ॥ झूठ कपट छल भगल ये सकल निवारिये । यत सत शील सँतोष क्षमा हियधारिये ॥ काम क्रोध मद लोभ बिड़ारन कीजिये । मोह ममता अभिमान अकस तजदीजिये॥ सब जीवन निर्वैर त्यागि वैरागलै । तब निरभै ह्वै सन्त भाँति काहू न भै ॥ काग करम सब छोंड़ि होय हंसागती । तृष्णा आश जलाय सोई साधू मती ॥ जगसूं रहै उदास भोग चित ना धरै । जब रीझै करतार दास अपनो करै ॥ कहै गुरूशुकदेव जो ऐसा हूजिये । चरणहिंदास विचार प्रेममें भीजिये॥२॥राधेकृष्ण राधेकृष्ण राधेकृष्ण गावरे॥या देहीको कहा भरोसो पल पल छिन छिन छीजत आवरे ॥ कह अभिमान करै मायाको यह धोखे सो जनि वावरे । मानुषजन्म भाग्य सों पायो बहुरि न ऐसो कबहुँ दावरे ॥ भवसागर जो उतरोचाहै सतसंगति की चढ़ले नावरे । ज्ञानबली गहिपार मुक्तिहो निश्चय तत्त्व पदारथ पावरे ॥ सतयुगमें सतही सत कहते त्रेता तप करते तनतावरे । द्वापरपूजा राजमानसी कलियुग कीर्त्तनहरिहि रिझावरे॥ ताते सबतजि हरिही हरिभजि निशिदिन चरणकमल चितलावरे । चरणदास शुकदेव चेतावै श्याम मिलनको यही उपावरे॥३॥जगमें दो तारणको नीका । एकतौ ध्यान गुरूका कीजै दूजे मान धनीका ॥ कोटि भाँति करि निश्चय कीयो संशयरहा न कोई । शास्त्र वेद पुराण टटोले जिनमें निकसा सोई ॥ इनहींके पीछे सबजानौ योग यज्ञ तपदाना । नौविधि नोधा नेम प्रेम सब भक्ति भाव अरु ज्ञाना॥ और सबै मत ऐसे मानो अन्न बिना भुस जैसे । कूटत कूटत

बहुतै कूटा भूखगई नहिं तैसे ॥ थोथा धर्म वही पहिचानो तामें ये दो नाहीं । चरणदास शुकदेव कहत हैं समझि देखि मन-माहीं ॥ ४ ॥

रागआसावरी—साधौ भक्ति नफा करिलीजै । दिनदिन काया छीजै ॥ मकरतजै तौ मक्का मनमें कपटतजै तौ कासी । और तीर्थ सबही जग न्हाया नाहिं छुटी यम फांसी ॥ भाल तले तिरवेणी राजैं विरले जन कोइ न्हावैं । सुगुरा होय सो नित उठिप रशै निगुरा जान न पावैं ॥ कायामन्दिरमें हरि कहिये वेदपुराण बतावैं । इतउत भूले लोग फिरतहैं धोखेको शिर नावैं ॥ यंतरटोना मूड़ हलावन ताकूं सांच न मानौ । तजिकै सार असार गह्यो है तापर भयो सयानौ ॥ चरणदास शुकदेव कहत हैं निजकरि मूल गहीजै । पारब्रह्म जिन सृष्टिउपाई ताओरी चितदीजै ॥

रागबिलावल—नमो नमो श्रीरामजी देवनके देवा । शिव नारद सनकादि लौं कोइ लहै न भेवा ॥ एजी निरगुणसों सरगुण भये कौतुक विस्तारे । साधुनकी रक्षाकरी दानवदल मारे ॥ दशरथ सुत भूले.कहै कोइ जानत नाहीं । इकशत अंड दिखाइया अपने मुखमाहीं ॥ गौराने परचोलियो सिय-वेष बनायो । देखे रूप अनन्तही जब मन बौरायो ॥ आदि निरंजन एक तू दूजा नहिं कोई । शुकदेव कही चरणदासको नित सुमिरो सोई ॥१॥ नमो नमो गोविन्दजी हूं दास तिहारो। चौरासी दुख सब हरो आवागमन निवारो ॥ कर्मनको प्रेरो फिरूं नहिपायो नेरो। अबके ऐसी कीजिये दीजै चरणबसेरो॥ पतित उधारण तुम सुनें वेदन में गाये । अजामील गणिका

तरे ले पार लगाये ॥ एजी गुरु शुकदेव बताइया गही तुम्हरी आसा । आनधर्म को छोड़िके भयो चरणहिंदासा ॥२॥

रागजैजैवन्ती—आदि तौ सनातन ओई अज अबिनाशी है साई । जाको नहिं वारपार निर्गुणको तत्त्वसार तासों भयो जगसब आप निबासी है ॥ अद्वै निराकार जानौ सतचिदानन्द मानौ पुरुषको रूपधरि माया परकासी है । नेति नेति वेद कहै अस्तुति माहीं रहै भेद कछु नाहीं लहै थकथक जासी है ॥ योग ध्यान आवै नाहीं ज्ञानसों न गहोजाई भक्तों के हिये माहिं सदा जो बिलासी है । सन्तौं हेतु देह धरै आयके सहायकरै पृथ्वीको दुःख हरै घटघटबासी है ॥ एहो चरणदास जन वासों क्यों न लावोमन शुकदेव कृपा घन खोलिदई गांसी है ॥१॥ साँवरो सलोना प्यारो मेरो मन भायो है माई । कहा कहूं शोभा वाकी तीनलोक माया जाकी शेषहू की रसना थाकी पारहू न पायो है ॥ निरगुण निरंकार कोऊ कहा जानैं सार सन्तोंकी सहायकाज देह धरि आयो है । ब्रजहू में कौतुक कीन्हे सन्तन को सुख दीन्हे मुरली बजाय गाय रीझिके रिझायो है ॥ योगी जाको ध्यान लावैं ब्रह्मा अरु वेद गावैं याको तो यशोदा माता गोदमें खिलायो है । चरणदास सखीपर शुकदेव कृपा कीन्ही बांकोसो बिहारी एक पलमें दिखायो है ॥ २ ॥

बधाईरागमलार—बधाई सबही ब्रज सोहाई । मुदितभये बसुदेव देवकी मनमें अति अधिकाई ॥ पहुँचे जाय महरि घरमाहीं काहू भेद न जानो । यशुमति रानी बालक जन्म्यो सबने योंकर मानो ॥ घर घर मंगलचार भये हैं बन्दनवार

बँधाई । नूतन बस्तर पहिरि पहिरिकै नारिसबै घिरि आईं ॥ करि कौतूहल मिलि २ गावत करैं उछाह घनेरा । याचक भीर बहुतभई द्वारे बजत दमामे भेरा ॥ जिसलायक देखा सो दीन्हा करीशुश्रूषा भारी । इक आवत इक जात विदाहो देत अशीशमहारी ॥ धनिगोकुल धनिपौरि भवनधनि आये हैं जगदीशा । शिव ब्रह्मादिक ध्यान धरतहैं लख ईशनको ईशा ॥ दुष्टदलन सन्तन सुखकाजैं लीन्ह्यो है अवतारा । चरणदास शुकदेव कहतहैं जगपति सिरजनहारा ॥१॥ नन्दघर कौतुक करत नवीने । जो जो वचन किये थे आगे सो आ पूरण कीने ॥ भक्तवछल करतार गुसाईं धरिआये अवतारा । रक्षाकारण साधु ऋषिनकी भूमि उतारणभारा ॥ जब जब भार बढ़त पृथ्वीपर तब तब होत सहाई । मर्यादा पुरुषोत्तम येही बिगरी सबै बनाई ॥ निरगुणसों सरगुण वपुधारे कष्ट निवारण काजै । योगेश्वर जेहि ध्यान लगावैं नामलिये अघ भाजै ॥ भाग बड़े यशुमति रानी के दर्शन दीन्हें आई । चरणदास शुकदेव कहतहैं सुर मुनि करी बधाई ॥२॥ जगतपति देखि महरघर आये । बालचरित्र रही दिखलावन आनँद अधिक बधाये । तपकीन्हों तो नन्द यशोदा पिछले जन्म अघाई ॥ वरमांगो तो हम सुतहोके खेलो भवन मँझाई । वचन न मोड़ा आय विराजे भक्तोंवश सुखदाई ॥ जोजो चाहो सो सुखदीजो हूये कुवँर कन्हाई । संग लियो सामीप मुक्तिको ब्रज में आवन कियो है ॥ सुख उपजायो नर नारिनको दर्शन आय दियोहै । जब जब प्रगटे चारोयुग में सत कलि द्वापर त्रेता ॥ चरणदास शुकदेव

कहतेहैं सन्तनही के हेता ॥ ३ ॥ सखीरी आज गोकुल भाग वड़ाई। दर्शन दे वसुदेव देवकी नन्दघर प्रगटे आई । भादोंमास वदी बुध आठैं ग्रह नक्षत्र बहु नीके । यशुमति रानी गोद सिरानी भये मनोरथ जीके ॥ भयो उछाह स्वरगके माहीं देवसभी हर्पाये। अपने अपने वैठि विमानन पुष्प वहुत वर्पाये ॥ यह धरती परफुल्ल भई है फूलउठा बनसारा । कालिन्दीको वड़ो उमाहो करिहैं लाल विहारा॥ किरपा सागर होय उजागर मर्यादा वँधवाँधन । चरणदास शुकदेव कहतेहैं कारण अपने साधन ॥४॥ सखीरी सुनि देख अभी मैं आई। यशुमति रानी बालक जायो यह तोहिं आनि सुनाई ॥ नारनि डोलैं हँसि हँसि वोलैं घर घर कहत वधाई। भयो उछाह सकल गोकुलमें वातभई मनभाई ॥ सुन सुन आपस में मुसकाने देन वधाई लागे । भूपण वस्तरलगे सवाँरन नर नारी रसपागे ॥ बनसों रहे गये नंद्द्वारे ग्वाल सभी हरपाये। वड़ी पौरिके आगे याचक गावनहीं को आये। मैं घरजाऊं बनकरआऊं तुमहूं देह शृंगारो । साथ चलैंगी जायमिलैंगी होइहै कौतुक भारो ॥ शुकदेवा का मुह देखैंगी करि हैं अधिकहुलासा । ऐसे कहि वह भवन सिधारी भनै चरणही दासा ॥ ५ ॥

राग हिंडोलनो—झूलत हरिजन सन्तभक्ति हिंडोलने राममा दृढ खम्भ रोपे प्रेमडोरी लाय ॥ टेक पटरी बैठि सजनी अति अनन्दवढ़ाय। ध्यानके जहँ मेघ वरसैं होय उमँग हुलास ॥ गुर्मुखी जहँ समझ भीजें पूरण हरिके दास। बुद्धि विवेक विचारि गावैं सखी सहेली साथ ॥ अगमलीला

रटैं सजनी जहां ब्रह्मविलास । परमगुरु श्रीजनक झूलैं झूलैं गुरु शुकदेव । चरणदास सखी सदाझूलैं कोइ न पावै भेव ॥

राग हेली—और न मेरे कोय हेली । प्राणपियारे लालजी रोम रोम वेई रमेरी अरीहेली ॥ तन मन व्यापक सोय जित देखों तित लाल कोरी अरी हेली । दूजा नाहीं और आदि अन्तहै लालजी सर्वमयी सबठौर देशकाल सबलाल हैरी अरीहेली ॥ अधऊरधहै लाल दहिने बायें लालजी दशोंदिशा में लाल सोवतहीमें लालहैरी अरीहेली । जाग्रतही में लाल माहिं सुषोपति लालजी तुरियाही में लालगही शुकदेव चरणदासहै लालकी विरला जानै कोय ॥१॥ जो होवै हो हरिदास हेली । एते कुलतारै वही फल न मुक्तिचाहै नहींरी अरीहेली ॥ भक्ति करै निवास बीस चारकुल दादकेरी अरीहेली ॥ बीस नानाके जान । सोलहकुल ससुरारके द्वादशसुता वखान॥ बहिनीके ग्यारह तरेरी अरीहेली। दश भूवाके पार मौसीके कुलआठही वेद कहतेहैं चार ॥ अष्टादश यों कहीरी अरीहेली । कहैं साधुगुरु सन्त चरणदास शुकदेवभी कहैं कमलको कन्त ॥२॥ छूटे आलजआल हेली । चरण कमल के आसरे भर्मभूत सबही छुटेरी अरीहेली । सौन नक्षत्रनालजन्तर मन्तर सबछुटेरी अरीहेली । छूटेबीर मशान मूठडील अबनालगे नहीं घातको वान ॥ शनीश्चरबल अबना चलैरी अरीहेली नहीं राहु अरुकेतु।मंगल बृहस्पति नादेहैं नहींभोग उनदेतु ॥ ज्योति वाल परसो नहींरी अरीहेली मानूं न देवी देव ।सतगुरु देवबताइया साँचो झूठो भेव॥ अठसठ तीरथना फिरूं पूजन पाथरनीर । श्रीशुकदेव छुटाइया

जन्म मरणकी पीर ॥ निश्चलहो हरि की भईरी अरी हेली सुमिरूं निर्मलनावँ। अनन्यभक्ति दृढ़सूं गही मारग आन न जावँ ॥ गोविन्द तजि औरन भजैरी हेली जाके मुँहड़े छार। चरणदास यों कहतहैं राम उतारै पार॥ ३ ॥

अथ सुमिरणका अंग।

रागकाफी–कहा कहि तोहिं पुकारूं करतार हमारे। नाम अनन्त अन्तनाहिं जाको बहुगुण रूप तिहारे ॥ अजर १ अमर २ अविगत ३ अविनाशी ४ अलख ५ निरञ्जन ६ स्वामी ७। पुरुष पुरातन ८ पुरुषोत्तम ९ प्रभु १० पूरण अन्तरयामी ११ ॥ कृष्ण १२ कन्हैया १३ विष्णु १४ नरायण १५ ज्योतीरूप १६ विधाता १७। अपरमपार १८ मुकुन्द १९ मुरारी २० दीनबन्धु २१ ब्रजनाथा २२॥ यादवपति २३ जगदीश २४ चतुर्भुज २५ निर्भय २६ सर्वप्रकाशी२७। पारब्रह्म२८प्राणनको दाता२९सबठां घटघटवाशी ३०॥निर्विकार३१परमेश्वर३२गिरिधर३३ माधव ३४ गोविंद प्यारा ३५। कमलनैन ३६ केशव ३७ मधुसूदन ३८ सबमें ३९ सबसे न्यारा ४० ॥ हृषीकेश ४१ मुरलीधर ४२ मोहन ४३ ॐ ४४ अखिल ४५ अयोनी ४६। भगवत४७ वासुदेव ४८ भगवाना ४९ ज्ञानी ५० ध्यानी ५१ मोनी ५२ ॥ दीनानाथ ५३ गोपाल ५४ हरी ५५ हर ५६ गरुड़ध्वज ५७ घनश्यामा ५८। भक्तबछल ५९ अरु देवकिनन्दन ६० करता सब विधिकामा ६१ ॥ आदि प्रधान ६२ माधुरी मूरति ६३ धरणीधर ६४ बलवीरा ६५। नन्दनँदन ६६ अरु यशुदानन्दन ६७ सुन्दर श्याम शरीरा ६८॥

परशुराम ६९ नरसिंह ७० विश्वंभर ७१ अचल ७२ अखण्ड ७३ अरूपी ७४ । ईश ७५ अगोचर ७६ और जगतगुरु ७७ परमानँद ७८ बहुरूपी ७९॥ करुणामय ८० कल्याण ८१ अनन्ता ८२ दयासिंधु ८३ बनवारी ८४ । धारण शंख चक्र ८५ रुक्मिणिपति ८६ आनँदकन्द ८७ विहारी ८८ ॥ परमदयाल ८९ मनोहर ९० नरहरि ९१ कृपानिद्धि ९२ फलदाता ९३ । कंसनिकन्दन ९४ रावणगंजन ९५ जगपति ९६ लक्ष्मीनाथा ९७॥ जगन्नाथ ९८ अरु बद्रीनाथा ९९ निरगुण १०० सरगुणधारी १०१। दामोदर १०२ रघुवर १०३ सीतापति रामा १०४ कुंजविहारी १०५॥ दुष्टदलन १०६ सन्तनकोरक्षक १०७ सकल सृष्टिको सांई १०८ । दुःखहरणके कौतुक अनगिन शेष पार नहिं पाई ॥ सौ अरु आठ नामकी माला जो नर मुख उच्चारै । अपने कुलकी सारी पाठी एकरुसौको तारै ॥ गुरु शुकदेव मन्त्र निज दीन्हो रामनाम तत सारा । चरणदास निश्चय सो जपकरि उतरो भवजल पारा ॥

रागकेदारा—हरिको सुमिरि संकटहरन । कोटिकष्ट निवारि टारैं जगपति पोषण भरन॥ भक्ति पूरण देखि निश्चल अननव बाधों परन। अग्निमें प्रह्लाद राखो दियो नाहीं जरन ॥ गिरि शिखरसों डारि दीन्हों लगो करुणा करन । दीन जानि संभार लीन्हों कियो ठाढ़ो धरन ॥ खम्भ बाँधो खड्ग काढ़ो दुष्ट लागो अरन। अब बता तेरो रामकित है गहौ वाकी शरन ॥ ढीठहो प्रह्लादो भाष्यो डारि शंका डरन । मोमें तोमें खड्ग खम्भमें मध्य नारी नरन ॥ खम्भ फटकर

भये परगट धरो नरसिंह वरन । असुर मारो जन उवारो पुष्प वरपे सुरन ॥ मोहिं गुरु शुकदेव कहिया सेव सोई: चरन । चरणदास उपासना दृढ़ होय तारण तरन ॥

राग अलहिया ॥ सुमिरु मन राम नाम ततसार । जिन जिन सुमिरो सो सो उतरे भवसागरसों पार ॥ वेद पुराण और षटमाहीं तारण को यहि योग । जोपै पांचौं प्रेत निवारै अरु इन्द्रिनके भोग ॥ साधन संयम पूजा अर्चन और करै तपदान । नाम समान न फल काहूमें करि देखी पहिचान ॥ जो जप करै धरै हिरदे में आशा सकल विड़ार । तीनलोकमें धनि धनि होवै शोभा अगम अपार ॥ सब धर्मन परधान नाम है सब इष्टन शिरमौर । निश्चय पकड़रहो याहीको सकल विकल तजिदौर ॥ तामें ज्ञान भरोही देखै पावै ब्रह्म विचार । गुरु शुकदेव दियो दृढ़ मोकूं चरणहिंदास सँभार ॥

राग विलावल ॥ अब तू सुमिरण कर मन मेरे । अगले पिछले अबके कीये पाप कटैं सब तेरे ॥ यमके दंड दहन पावकको चौरासी दुख प्रेरे । भर्म कर्म सबही कटिजै हैं जगत व्याध उरझेरे ॥ पैहै शक्ति मुक्ति गति आनँद अमरहि लोक बसेरो । जन्मै मरै न योनी आवै या जग करै न फेरो ॥ सुमिरण साधन माहिं शिरोमणि जो सुमिरण करिजानै । कामक्रोध मद पाप जरावै हरिबिन और न मानै ॥ गुरु शुकदेव बताय दियो है बिन जिह्वा करिलीजै । चरणदास कहैं घेरि घेरि कर अर्ध उर्ध मन दीजै ॥

रागकेदारा—अरेमन करो ऐसो जाप । कटैं संकट कोटि तेरे मिटैं सगरे पाप ॥ चेत चेतन खोज करले देख आपा आप ।

कागसों जब हंसरोवै नामके परताप ॥ ध्यान आतम सुरति राखौ छुटै त्रयगुण ताप । सुरति माला सुमिरि हिरदै छाँड़ु सकल संताप ॥ पराभक्ति अगाध अद्भुत विमल अरु निष्काम । चरणदास शुकदेव कहिया बसैं निजपुर धाम ॥

रागभैरों—राम राम राम राम राम राम गावो ॥ मनके रोग सकल बिसरावो ॥ नाम प्रताप शिला जलतारी । सोई नाम जपौ नरनारी ॥ नाम लेत प्रह्लाद उबारो । परगट ह्वै हिरणाकुश मारो ॥ पतित अजामिलको सब जानै । नामलेत चढ़िगयो बिमानै ॥ सुवा पढ़ावत गणिका तारी । नाम लेत निजधाम सिधारी ॥ सोइ नाम नारदमुनि गायो । वेदव्यास मुनि प्रगट जनायो ॥ हरिके नामको करो विचारा । सतसंगति मिलि उतरोपारा ॥ शिव ब्रह्मादिक नाम उपासी । आठसिद्धि नौ नाम कि दासी ॥ शुकदेव गुरुने नाम बतायो । चरणदास हरिसों चितलायो ॥

राग बिलावल—रामनाम चारौ वेदको कहियत है टीको । पाप ताप दुख द्वंद्वकूं मेटनकूं नीको ॥ एजी जेहि सुमिरे रक्षाकरी प्रहलाद उबारो । निर्गुण सों सगुण भयो जानत जग सारो ॥ एजी जप तप संयम योगमें सबहुन परभारी । नामलिये सबहीतरैं बालक नर नारी ॥ जो हिरदै दृढ़गहै सोइ हरिदर्शन पावै । चौरासी बन्धन कटैं आवागमन नशावै ॥ गुरु शुकदेव दयाकरी हरिनाम बतायो । चरणदास आधीनके निश्चय मनआयो ॥ १ ॥ सांचा सुमिरण कीजिये जामें मीन न मेख । ज्यों आगे साधुन कियो वाणीमें देख ॥ टेकगहौ दृढ़भक्तिकी नौधाहिय धारि । सन्तनकी सेवाकरो

कुलकानि निवारि ॥ जासों प्रेमा ऊपजै जब हरि दरशाय । आगे पीछेही फिरै प्रभु छोड़ि न जाय ॥ चारि मुक्ति बाँदी भवै सिद्धिचरणन माहिं । तीरथ सब आशाकरैं अघ देख नशाहिं ॥ कहैं गुरू शुकदेवजी चरणदास गुलाम । ऐसी साधन धारिये रहिये निष्काम ॥ २ ॥ ऐसा सुमिरण कीजिये सुनिहो मनमेरे । रसना राम उचारिये करमालाफेरे ॥ निन्दा अकस न रोपियो काहू दुखनहिं दीजे । सन्तनसूं सनमुख रहो गुरुसेवा लीजै ॥ भूखे भोजन दीजिये प्यासे नीर पियावो । सबसे नीचा ह्वै चलो अभिमान नशावो ॥ सतसङ्गतिमें मिलिरहौ गुरुमतसूं रहिये । आन धर्म नहिं चालिये यमदण्ड न सहिये ॥ तामसकूं विषज्यों तजो शुकदेव बतावै । चरणदास हरिहरिजपै मुकता ह्वै जावै ॥ ३ ॥ थोथे सुमिरण कहासरे । मनके रोग शोक नहिं खोये हिंसा डूब अकसेजरे ॥ नारी सुतसूं मोह कियोहै नेक न हरिके प्रेमअरे । कुलनाते परिवार सँभारे साधनकी नहिं टहलकरे ॥ माला तिलक सुधारि सँवारे राखत छलबल मकर घने । अन्तर और निरन्तर औरै सिंह गऊमुख रहतबने ॥ ऐसी भक्ति मुक्ति नहिंपावै करम लगैं अरु नरकपरे । यमके दण्डदहन पावककी जनम मरण योनाहिंटरे ॥ लक्षण प्रेम सहित जप कीजै भीतर बाहर उघर नचे । चरणदास शुकदेव कहतहैं हरिरीझैं जब व्याधि बचे ॥ ४ ॥ मालाफेरे कहाभयो । अन्तरके मनको नहिं फेरा पाप करत सब जन्मगयो ॥ परनिन्दा परनारि न भूलो खोटकपटकी ओरनयो । काम क्रोध मद लोभ न खोये है रह्यो मूरख मोहमयो ॥ दुनिया सांचसमझ घर कीन्हो धन जोरनको परन

लयो। दयाधर्म दोउ मारग छोड़े मँगतन को नहिं दानदयो॥ गुरुसों झूंठ भगल साधन सों हरिको नाहीं नेह जयो। चरणदास शुकदेव कहतहैं कैसे कहियो मुकतिहयो॥ ८॥

रागहेली—और उपासन कोय हेली टेक हमारे नामकी। आन शरण जाऊं न हेरी अरी हेली होनो होय सो सोय॥ योग यज्ञ तप नामहींरी अरी हेली नाम नक्षत्तर वार। सकल शिरोमणि नाम है तन मन डारूंवार॥ अडसठ तीरथ नाम हींरी अरी हेली नाम हमारे नेम। नामहीं सूं राची रहूं नाम हमारे प्रेम॥ मरत हमारे नामहींरी अरी हेली इष्ट हमारे नाम। अर्थ धर्म्म फल नामहीं नाम मुक्तिको धाम॥ पढ़न लिखन सब नामहींरी अरी हेली नाम गरह सब देव। जो कुछ है सो नामहीं नाम हमारो भेव॥ राम नाम शुकदेव दियोरी अरीहेली सो राखो मनमाहिं। चरणदासके नामहीं इह समतुल कछु नाहिं॥

अथ सगुण उपासना अंग रासशब्दों के—दोहा।

धन सतगुरु शुकदेवजी, मेरी करी सहाय। निज वृन्दावनधामकी, लीला दई दिखाय॥ १॥ अब कुछ कौतुक रासको, वर्णत है चरणदास। लाल लाड़िली कृपा सों, पावै निजपुरवास॥ २॥

राग रासबिहागरा—नृत्य करत छबिसों बनवारी। टेरिलई सबही ब्रज बनिता मुरली मधुर बजाय बिहारी॥ सुनत श्रवण धुनिहोय प्रेमवश व्याकुलभईं सुन्दरि सुकुमारी। गृहके काज लाज तजि पियकी उठिं धाईं तनु सुरति विसारी॥ आये गावन छहूं रागमिलि पांच पांच इक इककी

नारी । आठ आठ इक इकके बेटा मूरतवन्त स्वरूप महारी ॥ ताल वीण मुरचंग मँजीरा तनन तनन तँबुरा गति न्यारी । ताधिन तधिन धिन बजत पखावज घुंघुरू झनक झनक झनकारी ॥ इक इक गोपियनके सँग इक इक सुन्दर वेष धरो गिरिधारी । ऐसोरच्यो रासको मण्डल मध्यराधिका कृष्णमुरारी ॥ गावत प्रीति बढ़ाय परस्पर मान करत पियसों पियप्यारी । लेत मनाय लाड़िलो प्यारो हँसि हँसि विहरत दै दै तारी ॥ ततथेई ततथेई थेइ थेइ ततथेई धुरपद सांगीत उचारी । नटवररूप करो मनमोहन सो सतको वरणत शोभारी ॥ भये चकित सुर मुनि ऋषि किन्नर बाढ़ी रैनि शरद उजियारी । चरणदास शुकदेव श्यामकी अद्भुत लीलापै बलिहारी ॥

राग भैरोंरास—देख सखीरी रास रच्यो साँवरे विहारी । ब्रह्मा शिव इन्द्र शेष नारदसे थकित भये ऐसो कवि कौनकरै वरणत उपमारी ॥ सोहै शिर मुकुट और कुण्डल छवि तिलक भाल किंकिणी कटि पीताम्बर नूपुर झनकारी । बहुत नारि सुवर सखी राधाजू चन्द्रमुखी ललितादिक सहचरी शृंगार सों सवाँरी ॥ कोऊ तँबूरा कोउ मुरचंग कोऊ बजावै गति मृदङ्ग कोऊ ताल देत कोऊ सुर उठान भारी । बंशी में करत गान बाँकीसी मधुरतान श्यामा जब करत मान श्याम लोमनारी ॥ कबहूं करजोर दोऊ नाचतहैं नवकिशोर कबहूं हरि नृत्यकरत कबहूं पियप्यारी । ता ता ता ता ता ता थेई ह्वैरही बाढ़ी निशि शरददेखि हरिकी नृतकारी ॥ गउवन तृण छाँड़ि दियो बछरन पय नाहिं पियो मुरली

धुनि सुनत मोहे मुनिजन व्रतधारी । शुकदेवजी गुरुको चरणदास सब ऊपर नाम करै रासको विलास दियो परगट दरशारी ॥

रास राग विहागरा—रास में निरत करत बनवारी । मुदित मनोहर रंग वढ़ावत सँग वृषभानु दुलारी ॥ मोरमुकुट छबि शीश विराजत नाक बुलाक सुधारी । कर मुरली कटि काछनि काछे अलकैं घूँघुरवारी ॥ राधाजूके शीश चन्द्रिका नीलाम्बर जरतारी ॥ गावैं सखी श्याम श्यामा सँग नखशिखरूप उजारी । ताधिन ताधिन धिन बजत पखावज ताल बीण गति न्यारी ॥ ठनन ठनन ठन नूपुरकी धुनि झनन झनन झनकारी । थेई थेई थेई थेई नचत दोऊ मिलि विहँसि विहँसि मुसकारी ॥ चरणदास सुखदेवदयासूं पायो दरश मुरारी ॥

रास रामकलेवा भैरों ॥ नृत्यत गोपाललाल तत्तता तथेई । नख शिख शृंगार किये राधा गल बाहँ दिये सखियां सँग नाचत स्वर ताल तान देई ॥ तननन तंबूर गिड गिड धुधकधू मृदंग ताल झम झम झै झांझ बजत बीन बाँसुरी । झननन झनकार होत पायल ठनकार राग गावत कल्याण औंर नट धनासिरी ॥ कबहूं लै कान्हरा अलाप कभूं सोरठ को परज अरु विहागरु केदारा आसावरी । कबहूं कै बिभास मालसिरी ललितं रामकली भैरहूं विलावल धुनि धुपंद को चावरी ॥ सुन्दर बहु वेष धरे रासको बिलासकरे मुनिजन मनहेरि बढ़ो आनँद तेहि ठाईं । अद्भुत छबि कहा कहूं किरपा शुकदेव चहूं चरणदास होय रहूं चरण कमल माहीं ॥

रास राग पंचम—सखी दोऊ रसिक प्रीतम पिय प्यारी मिलि खेलत हैं रास छवि कहि न जाई ॥ एककी एक सों सरस शोभा बनी निरखि सब सुरमुनी रहे लुभाई ॥ कोऊ कर बीनलै सुघरसुर तालदै गावत संगीत रीझत रिझाई । थुंकना थुंगना धुधक धूधूकत बजत मिरदंग गति अति सुहाई ॥ तार मुरचंग सुरसप्तसों मुरलिका मधुर धुनि चतुरसारंग बजाई । नचत दोउ भावसों अधिक बहुचाव सों तत्तथेई थेई गतिलगाई ॥ कबहूं पियप्यारी जू मानकरैं लालसों कबहूं भुजगहि पियाले मनाई । धरत सुन्दर डगन बजत नूपुर पगन हँसतदोउ लसत दिये गरबाहीं ॥ बढ़ी निशिशरदकी कौन वर्णनकरै शेषहू सहसमुख रहे थकाई । कहै चरणदास शुकदेव किरपा करी ध्यानके माहिं लीला दिखाई ॥

दोहा—एरी बैरन बाँसुरी, तूही ब्रजके माहिं ॥
लगीरहत पियमुख जुतू, पलछिनछाँडतनाहिं ॥
जबतू बाजत तानसूं, ऐ बन्शीबड़ भाग ॥
कसक उठै जियरा जरै, तनमन लागी आग ॥
हमरे पियतैं वशकिये, करत अधर रसपान ॥
कह टोना कीन्ह्यो जुतैं, बरपाये भगवान ॥
ब्रह्मा भूले वेदधुनि, शंकर छोड़ो ध्यान ।
रणजितकहसुनिबाँसुरी, इन्द्रतजो अभिमान ॥
छैल छबीलो लाड़िलो, रंग रँगीलो लाल ।
चरणदास के मनबसो, बंशीधर गोपाल ॥

रागकाफी—मोहन प्यारेकी वंशी बाजेरी। हमकूं जरावत विरह अग्निसों जब अधरनपै राजैरी ॥ लालनमुख लागीरहै निशिदिन नेकन नाहिंन लाजैरी । तैंवश कियो शुकदेव हमारो सुनत कलेजे दाझैरी ॥ चरणदास कहैं अब कहा कीजै तुही भई सिरताजैरी ॥१॥ वंशीवारे सों नेहरा कीन्होरी। काहूको कछु कहो न मानूं यह तनमन वहि दीन्होरी ॥ भ्रमंत भ्रमंत बहुतै हारी भटक भटक जग वीनोरी । आन देवसों काज न मेरो साँचो प्रीतम चीन्होरी ॥ शोभाको सागर गुणको आगर कुँवर किशोर नवीनोरी । नवल लाडिलो मोहन सोहन सोई वर वर लीन्होरी ॥ प्रभुको छाँड़ भजूं औरनको तौ कहियो बुधिहीनोरी । चरणदासकोहै सुखदायी श्याम सुन्दर रंग भीनोरी ॥२॥ वा मुरलियाने हेली मेरे प्राण हरे । जब बाजत पियकेमुख लागी सुनि धुनि तनुकी सुधि बिसरे ॥ ऐसो जप तप कहा किया है मोहन सोहन लालबरे । जाके रसवश भये श्यामजी ताबिन पलछिन कल न परे ॥ तीन लोक विच धूम मचाई सुर मुनि ऋषिके ध्यानटरे । चरणदास शुकदेव दया सों मनवांछित सब काजसरे ॥३॥ या मुरलियाको बोल मेरे हिये कसकै । बाजत मान गुमान गरबले कारि राखो हरिकों वशकै ॥ बाँकी तान बान ज्यों लागत चुभत कलेजे में धसकै । नेक न होत पिया सों न्यारी अधरनके रसके चसकै ॥ कहाकरूं कुछ यतन न दीखै कोई उपाय न होय सकै । चरणदास शुकदेव पियारे कबहूं बोलैंगे हँसकै ॥४॥ बंशीबारे तू साडी गली आय जावो । तेरे कारण भई बावरी टुक मुख छबि दिखला जावो ॥ व्याकुल

प्राण धरत नहिं धीरज तनकी तपनि सिरा जावो। चरण-
दास तलफत दर्शन विन शुकदेव दुःख मिटा जावो ॥ ५ ॥

राग परज—तुम्हारे रूप लोभानी हो। खान पान सुधि
सब गई और अबक बानी हो। तुम्हरे चरण कमल मन मेरो
रहो लिपटानी हो॥ तुम बित चैन नहीं दिन राती सुनि पिय
जानीहो। दरश दिखावो सांवरे जवहिये सिरानी हो॥ ना-
तर वह गति ह्वै है हमरी मीन ज्यों पानी हो। शुकदेवा
दुख सब हरो काहे बिसरानी हो॥ चरणदास यह सखी ति-
हारी मिलजा छानी हो॥

राग विहागरा—सुधि बुधि सब गई खोयरी मैं इश्क
दिवानी। तलफतहूं दिन रैन सखीरी जैसे जल बिन मीनरी॥
बिन देखे मोहिं कल न परतहै देखत आँख सिरानी। सुधि
आये हियमें दव लागे नैनन वर्षत पानी॥ जैसे चकोर रटत
चन्दाको जैसे पपीहा स्वाती। ऐसे हम तलफत पिय दर्शन
विरहव्यथाइहिभाँती॥ जबते मीत बिछोहा हूवा तबते कछु-
न सुहानी। अंग अंग अकुलात सखीरी रोम रोम मुरझानी॥
बिन मनमोहन भवन अँधेरो भरि भरि आवै छाती। चरणदास
शुकदेव मिलावो नैन भये मोहिं घाती॥१॥ भईहूं प्रेममें चू-
रहो मोहिं दरशनदीजै। हूं तो दासि तिहारी मोहन वेगि ख-
वरिया लीजै॥ ज्ञान ध्यान औ सुमिरण तेरो तुव चरणन
चित राखूं। तेरोहि नाम जपूं दिन राती तुव बिन और न भाखूं॥
तनु व्याकुल जिय रूंधोहि आवत परी प्रीति गल फाँसी।
तुमतो निठुर कठोर महापिय तुम को आवै हाँसी॥ विरह
अग्नि नख शिखसूं लागी मनमें कलपन भारी। गिरोहिं प्रीति

तनु सम्भ्रम नाहीं रहत भवन में डारी ॥ की विष खाय तजों यह काया की तुम्हरे सँग रहसूं । चरणदास शुकदेव बिछोहा तेरी सूं नहिं सहसूं ॥ २ ॥

राग कान्हड़ा—तुमबिन अतिव्याकुल भइया । मोहूंको दर्श दिखावरे मोहन प्यारे चितव नैन हँसन दशनन की अटक रही हिय मँइया ॥ वह लटकन मटकन चटकन पर मोरमुकुट की छबि छइया । अधर मधुर मुरली सुर गावत टेरि बुलावत गइया । हाहा खाऊं शीश नवाऊं और परौं तोरि पइयां ॥ वारीहूं वारी मुखऊपर दोउकर लेहुँ बलइयां ॥ अबतौ धीररहो नाहिं रञ्चक हो शुकदेव गुसइयां । चरणदास भइ प्रेम बावरी आनि गहौ क्यों न बहियां ॥

रागपरज ॥ तुम बिन कैसे जीऊं प्यारे नँदलाल । भूख प्यास कछु लागत नाहीं तनुकी सुधि न सँभाल ॥ कल न परत पल पल अकुलावों छिन छिन छिन बेहाल । विरह व्यथाको रोग बढ़ो है पीर महा बिकराल ॥ कहरी करूं कित जाऊंरी सजनी कौन मेटै जंजाल । लटक चलन बाँकी चितवन की चुभत कलेजे भाल ॥ भइ ऐसे यह देह दूबरी सूझ परो नसजाल । तरफत हूं हियमें दव लागी नैना बरत मशाल ॥ चरणदास यह सखी तिहारी हो शुकदेव दयाल । आप कृपाकरि दर्शन दीजे कीजे वेगि निहाल ॥

राग बिलावल ॥ लागीरी मोहनसों डोरी । आनि कानि कुलकी तजि दीन्ही कोऊ कैसी बात कहोरी ॥ श्याम सलोने के रँगराती मगन भई कोइ परी ठगोरी । निरखत छबि तनुकी सुधि बिसरी प्रेम प्रीति रसमें भइ बोरी ॥ ऐसो रूप उजारो

प्यारो शोभा वर्णत शेष थकोरी । तीनिलोक ब्रह्माण्ड सकल सब जाकी मायासों दरशोरी ॥ कान कुण्डल गलमाल बिराजै शीशमुकुट माथे तिलक फबोरी । नखशिख भूषण करलिये लकुटी कांधे सोहै पीत पिछोरी । कल न परत निशि दिन बिन देखे रोम २ मेरे वही रमोरी । कान्ह सुजान सदा सुखदायी चरणदासके हिये बसोरी ॥

राग झंझोटी ॥ आया मेरा मोहन मदनगोपाल । मानौ रङ्क अष्टसिधि पाई निरखत भई निहाल ॥ बलि बलि जा दिया अँग न समादिया मोहिं दरश दियो लाल । कोटि भानु छवि मुखपर वारूं बेंदा सोहै भाल ॥ अद्भुतरूप अनूपसाँवरो सुन्दर नैनविशाल । घूँघरवारी अलकैं झलकैं चिकने लंबेबाल ॥ चितवत तीखीभौंह मरोरत करलिये वेणुरसाल । गावततान आनि बांकी सों चलत अनोखी चाल ॥ श्रीशुकदेव दयाके सागर नटनागर नँदलाल । चरणदास को किरपा करिकै रीझदई उरमाल ॥

राग काफी ॥ लटकरी चालपै मैं वारी वारी जादिया । रैन दिनासानूं ध्यान तुम्हारो मन वच कहूं दीबादिया ॥ कुण्डल कान मुकुट शिर सोहै शोभा अधिक सुहादिया । अलबेली छवि बाँके नैना निरखत नैन लुभादिया ॥ जब बाजी प्यारे तेरी बंशी खान पान बिसरा दिया ॥ भूलगई घर काज साज सब लाज छार उठवा दिया ॥ चरणदास हम भई बावरी फूली अंग न समादिया ॥ राखि शरण शुकदेव पियारे चरण-कमल लिपटादिया ॥ १ ॥ कोई समझावोरी मोहनलालकूं । ग्वालबाल सबहीसँग लेकर सूनेघर धँसिआवै । याकी घाली

मोरीआली माखन रहन न पावै ॥ लेकर मटुकी चटदे झटकै गटकै माखन सारो । चटपट चाटपोछ धरि पटकै नट ज्यों सटकै प्यारो ॥ जबहीं जावँ गगरिया भरने ठाढ़ोरहै बिहारी। आगे होकर कांकर मारै भीजै मोरी सारी ॥ जो अपने घर-बैठिरहूं तो अँगना धूम मचावै । जो कबहूंकै सोऊं सजनी स्वपनेमें दर्श दिखावै ॥ मेरे पीछे लागो आली जितजाऊं तित डोलै । कहँ लगि कहूं ढीढता वाकी बात अटपटी बोलै॥ बांकोछैल महाअलबेलो प्रगट्योहै जगमाहीं । चरणदास शुक-देव पियारो सदारहो या ठाहीं ॥ २ ॥ कोइआनि मिलावोरी श्यामसुजानको । नन्ददुलारो मोहन सोहन अजब अनोखो-छैला । मदनगुपाल मुकुन्द मुरारी मेरो जीवनप्रानरी ॥ नैनन नींद न आवै सजनी कल न परै दिन रैना । व्याकुल भई फिर-तहूं बौरी भूली खान अरु पानरी ॥ जो कोऊ हितु ह्वैहै मेरो आली लालनकी सुधिलावै । दर्शदिखायहरै सबबाधा मोको दे जीदानरी ॥ छिन छिन छिन गति और होत है लगो बिरहको बानरी । चरणदासकी पीर मिटावो सुन्दर सुखके निधानरी ॥ ३ ॥

राग सोरठ ॥ हमारे घर आयेहो सुन्दर श्याम । तनकी तपन मिटी देखतही नैननभयो अराम ॥ अंगन लिपाऊं चौक पुराऊं फूल बिछाऊं धाम । आनँद मंगलचार गवाऊं हूये पूरणकाम ॥ अब जागे सखि भाग हमारे मन पायो विश्राम । चरणदास शुकदेव पियाकूं हितसों करूं प्रणाम ॥ १ ॥ सो अब घरपायाहो मोहनप्यारा । लखो अचानक अज अविनाशी उघरि गये हगतारा ॥ झूमरहो

मेरे आँगनमें टरत नहीं कहुँटारा । रोम रोम हिय माहीं देखो होत नहीं छिनन्यारा ॥ भयो अचरज चरणदास न पइये खोज कियो बहुबारा ॥ २ ॥ वहघरी कौनसी लागे मोरे नैना । छोटी उमर भोलापन भारी जानूं एक न बैना ॥ जब-लागे तब कछू न जानी अबलागे दुख देना । चरणदास शुकदेवकुं देखै जब पावै सुखचैना ॥ ३ ॥

राग मलार ॥ सो बिथा मोरी जानतहो अकि नाहीं । नख शिख पावक विरह लगाई बिछुरन दुख मनमाहीं ॥ दिन नहिं चैन नींद नहिं निशिकूं निश्चलबुधि नहिं मेरी । कासूंकहूं कोउ हितु न हमारो लख्नलहरि हरितेरी ॥ तनभयो क्षीन दीनभये नैना अजहूं सुधि नहिं पाई । छतिया दरकत कर्क हिये में प्रीति महा दुखदाई ॥ जल बिन मीन पियाबिन बिरहिनि इन धीरज कहु कैसी । पक्षी जरै दवलगी बन में मेरी गति भइ ऐसी ॥ तरफतहूं जिय निकसत नाहीं तनुमें अति अकुलाई । चरणदास शुकदेव बिना यो दर्शनद्यौ सुखदाई ॥

रागसोरठ ॥ हमारे नैना दर्श पियासाहो । तनगयो सूखि हाय हियबाढ़ी जीवतहूं वहि आसाहो ॥ बिछुरन थारो मरण हमारो मुखमें चलै न ग्रासा हो । नींद न आवै रैनि बिहावै तारे गिनत अकासाहो ॥ भये कठोर दर्श नहिं जाने तुम कूं नेक न सांसाहो । हमरी गति दिन दिन औरेही विरह वियोग उदासाहो ॥ शुकदेव पियारे मतरहु न्यारे आनि करो उरवा-साहो । रणजीता अपनो करि जानो निजकरि चरणन दासा हो ॥१॥ ऊधोजी कहांरहे भगवान । हम जानी काहूने मोहे मो-

हैन चतुर सुजान ॥ तबसूं नैनन नींद न आवे धीरज धरत न प्रान । उमँगि उमँगि हियरो हुलसतहै वह सुन्दर मुसुकान ॥ योग कथा तुम काह सुनावो हमकूं नाहीं ज्ञान । प्रेम प्रीति की रीति अनोखी कापै होत बखान ॥ ऐसो हितू न कोऊ देखो जाय सुनावै कान । बाढ़ी व्यथा विरहकी तनुमें सुधिलो कृपानिधान ॥ आवो दर्श दिखावो प्यारे देहु हमैं जी दान । चरणदास शुकदेव श्याम बिन तजों खान अरु पान ॥२॥

राग सारंग ॥ ऊधो क्या जानै हमरे जीवकी । चातक बूँद चकोर चंदकूं ऐसे हमकूं पीवकी ॥ नेह कमान बिछुरके खैंची मारि गये हरि तीरकी । भाल वियोग हिये बिच खटकै सुधि न लई या पीरकी ॥ चरणदास सखि निशिदिन तलफै ज्यों मछली बिन नीरकी । कहैं कुछ और करैं कुछ औरै आखिर जात अहीरकी ॥

रेखता ॥ फ़रज़न्द नन्दजी का दिल बीच भावँदा । बर-पाय ख़ूब नूपुर सुन्दर सुहावँदा ॥ वह साँवला सलोना मह-बूब यार मन । आहिस्त लटक चाल मटक मेरे आवँदा ॥ टीका सिंदूर खैंचिके माथे पै अदासों । बरसर विराजै अफ-सर हीरे जरावँदा ॥ कुण्डल झलकते कानमें दरहरदो गोश में । आवाज बांसुरीकी शीरीं वजावँदा ॥ नीमा जरीक गलमें कटि काछनी बनी है । पीरे डुपट्टेवाला बीरे चवावँदा ॥ करता है नृत्य नादर घुँघुरू कि झनकसों । तत्तत्ततातथेई थेई गति लगावँदा ॥ नैनों की आन तानिके अबरू कमानसूं । पलकों के प्रेम तीर कलेजे चुभावँदा ॥ घायल किया है मेरे तईं उसके इश्कने । शुकदेव चरणदासके जियमें समावँदा ॥

राग हिंडोला ॥ हिंडोला झूलत नन्दकुमार । जोड़ी युगलकिशोर विराजै नान्हीं परत फुहार ॥ कंचन खंभ जटित हीरनसों नग लागे तामाहिं । पटुली अधिक अनूपम सोहै डोरी सुरँग सुहाहिं ॥ चहूंओर वदरा घिरिआये उमड़ घुमड़ घहराव । गरजत मेघ पवन झकझोरत दामिनि दमक दुराव॥ गावत गीत मलार सहेली मिल मिल दै दै तार । झोंका देत विशाखा ललिता आनँद वढ़ो अपार ॥ वोलत मोर पपीहा कोयल दादुर हंस चकोर । हरी भूमि ऋतु भई सुहाई भौंर करत अतिशोर ॥ भीजत रंगरँगीलो प्यारो शोभा कही न जाय । चरणदास शुकदेव श्यामकी दोउ कर लेत वलाय ॥१॥ झूलत कोइ कोइ संत लगन हिंडोलने । पौन उमाह उछाह धरती शोच सावन मास । लाजके जहँ उड़त वगले मोर हैं जगहास ॥ हरष शोक दोउ खंभरोपे सुरत डोरी लाय । विरह पटरी बैठि सजनी उमग आवै जाय ॥ सकल विकल तहँ देत झोके विपति गावनहार । सखी बहुतक रंगराती रँगी पांचौनार ॥ नैन वादल उमगि वरसैं दामिनी दमकात । वुद्धिको ठहराव नाहीं नेह की नहिंजात ॥ शुकदेव कहै कोइ वली झूलै शीश देत अकोर । चरणदासा भये वौरे जात वरण कुलछोर ॥ २ ॥

हेली ॥ मो विरहिन की वात हेली विरहिनि हो सोइ जानि है । नैन विछोहा जानतीरी अरी हेली विरहैं कीन्हो घात । या तनुकूं विरहा लगोरी अरीहेली ज्यों घुन लागो काठ ॥ निशिदिन खाये जातहै देखूं हरिकीवाट ॥ हिरदेमें पावक जलैरी अरीहेली तपि नैना भये लाल । आंशूपर

आंशूगिरैं यही हमारो हाल ॥ प्रियतम विन कलनापरैरी अरीहेली कलकल सब अकुलाहिं । डिगीपरूं सत ना रहो कब पिय पकरैं बाहिं ॥ गुरुशुकदेव दया करैंरी अरीहेली मोहिं मिलावैंलाल । चरणदास दुखसब भजैं सदारहूं पति नाल ॥१॥ तरसैं मेरे नैनहेली राममिलन कब होयगो पिय दर्शन बिना क्यों जिऊंरी अरीहेली कैसे पाऊं चैन । तीर्थ व्रत बहुतै कियेरी अरीहेली चितदे सुने पुरान ॥ बाट निहारतही रहूंरी अरीहेली सुधि नहिंलीनी आय । यह यौवन योंहीचलो चलो जन्म सिराय ॥ विरहादल साजेरहैरी अरीहेली छिनछिन में दुखदेह । मन लालनके वशपरो भई भाखसी देह ॥ गुरुशुकदेव कृपा करोजी अरीहेली दीजे विरह छुटाय । चरणदास पियसूं मिलैं शरण तुम्हारी धाय ॥ २ ॥ तनुकूं कछुन सुहाय हेली प्रीतिलगी घनश्याम सूं । जो सुखहै संसारकेरी अरीहेली सो सब दिये वहाय ॥ भवन तजो अरु धन तजोरी अरीहेली तजीकुलन की रीत । मान बड़ाई सब तजी रहा एक हरि मीत ॥ भूख प्यास निद्रा तजीरी अरीहेली तजिदियो वाद विवाद । रागरोष दोऊतजे तजो पांचको स्वाद ॥ बहुतडरै सकुचीरहैरी अरीहेली कहै न काहू बात । लगीरहै हरि ध्यान सो ऐसे रैनि बिहात ॥ श्रीशुकदेव भले कहीरी अरीहेली बारम्बार सँभार । चरणदासहो श्यामकी वही निवाहनहार ॥ ३ ॥ मोमन कछु न सुहाय हेली प्रीतिलगी प्यारेलाल सूं । हँसि हँसिके टोना कियोरी अरीहेली दै गयो मुरली गहाय ॥ जबहीं सूं चेटक लगोरी अरीहेली ढूंढूं कुंजनमाहिं । बौरीहो दौरी फिरूं वह छवि दीखै नाहिं ॥

मोहिं मिलावै सांवरोरी अरीहेली ताके बलि बलि जावँ। जन्म जन्म दासीरहूं कबहुँ न छोडों पावँ॥ है कोइ पूरी रामकीरी अरीहेली मोहिं बतावै ठौर । जहाँ विराजे श्यामजी वह बड़भागी पौर ॥ चरणदास घायल भईरी अरीहेली मोहन मारो बान । श्रीशुकदेव दिखाइये मेरे जीवन प्रान ॥ ४ ॥ वह छवि करूं बखान हेली जा छबिसों नैनालगे। हितू देखि तोसूं कहूंरी अरीहेली और न पावैं जान ॥ मोर मुकुट माथे दियेरी अरीहेली कुण्डल शरवण माहिं । अलकैं बल खाई रहैं योगी देखि लुभाहिं ॥ भौंहन मधि बेंदा दियेरी अरीहेली सुन्दर नैन विशाल । मोतीनासा सोहना अरु वैजन्ती माल ॥ नीमों अंग पीरो खुभोरी अरीहेली घूम घुमारो फेर । लाल खराऊं पावँ में मोमन राखत घेर ॥ पहुँचनमें पहुँची कड़ेरी अरीहेली अँगुरिन मुँदरीछाप । अधरनपै मुरलीधरे गावत रीझत आप ॥ चरणदास तिनकी भईरी अरीहेली तन मन डारोवार । गुरुशुकदेव सराहिया बुरोकहो परिवार ॥ ५ ॥ वंशीवटकी छाहिं हेली लाल लाड़िली मैं लखे । दोउ खड़े गावैं हँसैंरी अरीहेली अरुडारे गल-बाहिं ॥ मोर मुकुट माथे दियेरी अरी हेली सुंदर नैन विशाल पीताम्बर बर सोहनो करमुरली उरमाल ॥ बांके विराजैं चन्द्रिकारी अरीहेली लील वसन जरतार । नखशिख भूषण सोहने अरु फूलनके हार ॥ गुरु शुकदेव बताइयारी अरी-हेली जब हमलिये पिछान । चरणदास तिनकी भई लगोरहैं वहि ध्यान ॥ ६ ॥

अथ सन्त शूरमाका अंग ॥

दो०—सन्त समान न शूरमा, कहैं रणजीत विचार ॥
टेक गहैं सम्मुख चलैं, बांधि प्रेम हथियार ॥

रागसोरठ ॥ ना कोई सन्त समान शूरा । मोह सहित सब सेना मारी ऐसो सावँत पूरा ॥ क्षमा कि ढाल गही कर अपने बांधेशस्तर बारा । कर्म धर्म्मके दलको पेलै पल पल बारम्बारा ॥ सुरत को तीर हृदय को तरकस ध्यान कमान बनावै । प्रेमहाथ सूं खैंचनलागे चोट निशाने लावै ॥ बुद्धि विवेक कटारी बांधै वचन विलास कि बरछी । सतपुरुषोंके हियरे बांधै कहि कहि बतियां तिरछी ॥ चितमें चाव चौगुनो उसके सुनसुन अनहद तूरा । अगम पंथसों पग न डिगावै होयजाय चकचूरा ॥ मन हुलास आशधर पीकी सुनत खेतमें धावै । चरणदास शुकदेव कहत हैं अमरलोकपद पावै ॥

राग सोरठ वा आसावरी ॥ साधू पै जग है सोइ शूरा । काके मुखपर नूर है जब बाजै मारू तूरा ॥ कलँगी अरु गजगाह बनावै इसका परन दुहेला ॥ सांवत वेष बनाय चलतहै यह नहिं सहज सुहेला ॥ या बानेको नेम यहीहै पगधरि फिरि न उठावै । जो कछुहोय सो आगेहि आगे आगेहीको धावै ॥ रणमें पैठि झड़ाझड़ खेलै सम्मुख शस्तर खावै । खेत न छोड़ै ह्वांई जूझै तबहीं शोभा पावै ॥ गुरु शुकदेव दियो है हेला ऐसा होय सो आवै । चरणदास बाना संतनका तौले शीशचढ़ावै ॥१॥ साधो टेक हमारी ऐसी । कोटि यतनकरि छूटै नाहीं कोउकरौ अब कैसी ॥ यह पगधरो संभाल अचल

हो बोल चुके सोइबोले। गुरु मारगमें लेन न दीन्हो अब इत उत नाहिं डोले॥ जैसे शूर सती अरु दाता पकरी टेक न टारैं। तनकरि धनकरि मुख नाहिं मोडैं धर्म्म न अपनो हारैं॥ पावक जारो जलमें बोरो टूक टूक करिडारो। साध संगति हरि भगति न छाँडूं जीवन प्राण हमारो॥ पैज न हारूं दाग न लागे नेक न उतरै लाजा। चरणदास शुकदेव दयासूं सब विधि सुधरै काजा॥ २॥

राग सारंग॥ हमारे राम नामकी टेक टारी ना टरै। लाखकरो कोइ कोटि करोजी का तैं कुछ न सरै॥ ज्योंकामी कूं तिरिया प्यारी ज्योंलोभीको दाम। अमलदार कूं अमल पियारो ऐसे हम कूं राम॥ करसों दृग गहि गहिकै पकरों हारिलकी लकड़ी भई। अब कैसे करि छूटै मोसों रोम रोम तन मन मई॥ ज्यों प्रहलाद पैज दृढ़ कीन्हीं हिरणाकुशसे बहुअेर। उबरो संत असुर गहिमारो परगट हो हरि आखेर॥ गुरु शुकदेव सहाय करी है अब पग पाछे क्यों परैं। चरणहिदास वचन नहिं मोडै शूरसती मूपै टरै॥१॥ साधो टेकगई जाको सबगयो। लाजगई अरु काजगये सब वचन धर्म कछु ना रह्यो॥ जगमें हांस फांस हियमाहीं कायरपन यों दहि गयो। अब पछिताये होत कहा है वह पान पतेरो बहिगयो। पैज तजी मुखकारो हूवो धिकधर्म जीवन तासको। बोझगयो ओछेकी संगति यह प्रताप कुवासको॥ चरणदास शुकदेव कहै यों टेक न देवो शिर देवो। बार बार नरदेह न पइये अपयश जगमें क्यों लेवो॥

राग सोरठ ॥ साधौ वेष वही जामें टेक है । टेक नहीं तौ कहा भरोसो टेक विना नरतेकहै ॥ टेक विना कैसी सतवंती टेक बिना नहिं शूरमा। टेक विना दाता भी नाहीं टेक विना योगी बूबना ॥ टेक विना नहिं भक्त हरिको टेक विनानाहिं सिद्धि है। टेक बिना सब भर्मत डोलैं टेकविना नहिं ऋद्धि है ॥ साधु संत अरु वेद कहत हैं टेक पकरि चढु धाम कूं । चरणदास शुकदेव बतावैं टेक मिलावै राम कूं ॥ १ ॥ साधौ जो पकरी सो पकरी। अब तौ टेक गही सुमिरण की ज्यों हारिल की लकरी ॥ ज्यों शूराने शस्तर लीन्हों ज्यों बनिये ने तखरी । ज्यों सतवंती लियो सिंधौरा तार गह्यो ज्यों मकरी । ज्योंकामी कूं तिरिया प्यारी ज्यों किरपिणकूं दमरी । ऐसे हमकूं रामपियारे ज्यों बालककूं ममरी ॥ ज्यों दीपककूं तेल पियारो ज्यों पावककूं समरी । ज्यों मछली कूं नीर पियारो बिछुरे देखै यमरी ॥ साधौंके संग हरिगुण गाऊं ताते जीवन हमरी । चरणदास शुकदेव दृढ़ायो और छुटी सब गमरी ॥ २ ॥ अरेले गुरुके वचन चितधररे । छिन छिन तेरी आय घटत है वेगि सँभारो घररे ॥ शील क्षमायत दृढ़करि राखो गर्व गुमान निवारो । पांचौइन्द्रिय वशकरि अपने मन गनीमको मारो ॥ काया कोटि बहारि युक्तिसूं सतसिंहासन धरिये । तापर बैठि अमर पदवी लै राज अभैपुर करिये ॥ सबपर अमल चलै जब तेरो तो सम और न कोई । सेवक साहिब लोहा कञ्चन बूंद समुन्दर होई ॥ विघ्न कलेश आपदा नाशै निर्मलआनँद पावै । चरणदास शुकदेवदयासूं रहनि गहनि समुझावै ॥ ३ ॥ जब गुरुशब्द नगारे बाजें । पांच पचीसों

वडेमवासी सुनिकै डङ्का भाजैं ॥ दृढ़ दस्तकले ज्ञान सजावल जाय नगरके माहीं । हरिके धाम भजनकरि माँगै चित्त चौधरी पाहीं ॥ कानोगोय लोभके खोटे छलबल पाहीं झूटे। काम किसानरु मोह मुकद्दम सबै बांधिकरि लूटे ॥ तृष्णा आमिल मदको मातो पकरि गांवसूंकाढ़ै । मन राजा को निश्चल झण्डा प्रेमप्रीति हित गाड़ै ॥ सुबुधि दिवान शीलको बकसी यतको हाकिम भारी । धर्म्म कर्म्म सन्तोष सिपाही जाके आज्ञाकारी ॥ साञ्च करिन्दा औ पटवारी धरिज नेम विचारै । दया क्षमा अरु बड़ी दीनता पूरीजमा सँभारै ॥ मगन होय चौकस कण करिकै सुमति मेवडी मापै । दर्शन द्रव्य ध्यानको पूरण वांटापावै आपै ॥ श्रीशुकदेव अमल करिगाढ़ो सूवस देश नशावै। चरणदासहूं तिन को नायब तत परवाना पावै ॥४॥ जो नर इकछत भूप कहावै। सतसिंहासन ऊपर बैठै यतही चँवर ढुरावै ॥ दया धर्म्म दोउ फौज महालै भक्ति निशान चलावै । पुण्य नगारा नौबति बाजै दुर्जन सकल हलावै ॥ पाप जलाय करै चौगाना हिंसा कुबुधि नशावै। मोह मुकद्दम काढ़ि मुलकसों लावै रागबसावै ॥ साधन नायब जित तित भेजै दे दे संयम साथा । राम दुहाई सिगरै फेरै कोइ न उठावै माथा ॥ निर्भय राजकरै निश्चल ह्वै गुरु शुकदेव सुनावै । चरणदास निश्चय करिजानो विरला जन कोइपावै ॥ ५ ॥

राग कल्याण ॥ वह राजा सो यह विधि जानै । काया नगर जीतिबो ठानै ॥ काम क्रोध दोउ बलके पूरे । मोह लोभ अति सांवत शूरे ॥ बल अपनो अभिमान दिखावै । इ-

नको मारि राहगढ़ धावै ॥ पाञ्चौथाने देह उठाई । जव गढ़में कूदै मनलाई ॥ ज्ञान खड्गलै द्वन्द्व मचावै । कपट कुटिलता रहन न पावै ॥ चुनि चुनि दुर्जन हनि सब डारै । रहते रहते सकल विडारै ॥ मन सों ब्रह्म होय गति सोई । लक्षण जीव रहै नहिं कोई ॥ अचल सिंहासन जव तू पावै । मुक्ति-खवासी चँवरढुरावै ॥ आठौंसिद्धि जहां करजोरैं । सौहीं ताके मुख नाहिं मोरैं ॥ निश्चल राज अमल करै पूरा । बाजै नौवत अनहद तूरा ॥ तीन तीन अरु कोटि अठासी । वै सब तेरी करैं खवासी ॥ गुरु शुकदेव भेद दियो नीको । चरणदास मस्तक कियो टीको ॥ रणजीता यह रहनी पावै । थोथी करनी कथनि वहावै ॥

अथ योगका अंग ।

राग करखा ॥ साधौ गुरु दया योग इह विधि कमायो । मूलको शोधि सङ्कोच करि शंखिनी खैंचि आपान उलटो चलायो ॥ वन्ध पर वन्ध जव वन्ध तीनो लगैं पवन भइ थकित नभ गर्ज्जि आयो । द्वादशा पलटि करि सुरति दो दल धरी दशौ परकार अनहद वजायो ॥ रोंक जव नवन को द्वार दशवें चढ़ोशून्य के तख्त आनन्द वढ़ायो । सहस दल कमल को रूप अद्भुतमहा अमीरस उमँग आझरि लगायो ॥ तेज अतिपुञ्ज परलोक जहँ जगमगे कोटि छवि भानु परकाश लायो । उनमनीं और चित हेत करि वसिरह्यो देखि निज रूप मनुवां मिलायो ॥ काल अरु ज्वाल जगव्याधि सव मिटिगई जीवसों ब्रह्मगति वेगिपायो । चरणदास रणजीत शुकदेव की दयासों अभयपद परशि अविगत समायो ॥१॥ साधो

पिण्ड ब्रह्माण्ड की सैल गुरु गमकरी पराशि या युक्तिसों अलखराई । सहजही सहज पग धरा जब अगमको दशौपरकार झागड़ बजाई । खोलि कपाट अरु वज्रद्वारे चढ़ो कलाके भेद कुञ्जी लगाई । पहलके महलपर जाय आसनकिया दूसरे महलकी खबरि पाई ॥ तीसरे महलपर सुरति जा बसिरही महल चौथे दुही अमीगाई । पांचवें महलको साधुकोइ पाइहै महल छठवां दिया गुरु बताई ॥ सातवें महलपर कोटि सूरजदिपै आठवें महल अविगति गोसाई । रूप अद्भुत तहां देखि अचरज जहां देखिया दरश तब विपति जाई ॥ शुकदेवकी सहासों धारण गहासों आपने पविके भवन आई । चरणदास आपा दिया प्रेम प्याला पिया शीश सदके किया पूजि पाई ॥ २ ॥ साधो परसिया देश जहँ भेशनाहीं । घाट तिसलखि जहां बाट सूझै नहीं सुरतिके चांदने सन्तजाई ॥ चन्द षोड़श दिपै गंग उलटीबहैं सुखमना सेज पर लम्ब दमकै । तासुके ऊपरै अमीका ताल है झिलमिली ज्योति परकाश झमकै ॥ चारि योजन परे शून्य स्थानहै तेज अति शून्य परलोक राजै । द्वार पश्चिम धँसे मेरुही दण्डहो उलटिकर आय छाजे विराजै ॥ नूर जगमगकरै खेल आगाधहै वेदहूकहे नहिं पारपावैं । गुरुमुखी जायहैं अमरपद पाय हैं शीशका लोभतजि पन्थधावैं ॥ तीनगुन छेदि रणजीत चौथे बसै जन्म अरु मरण फिरि नाहिं होई ॥ चरणदास करि बास शुकदेव बकसीससों पूज वेगमपुरी अमरसोई ॥

रागसोरठ ॥ ऐसादेश दिवानारे लोगो जाय सो माताहोय । विन मदिरा मतवारे झूमैं जन्म मरण दुख खोय ॥ कोटि

चन्द सूरज उजियारो रवि शशि पहुँचत नाहीं । बिना सीप मोती अनमोलक बहुदामिनि दमकाहीं ॥ बिन ऋतु फूले फूल रहतेहैं अमृत रसफल पागो । पवन गवन बिन पवन बहतहै बिन बादर झरिलागो ॥ अनहद शब्द भवँर गुंजारैं शंख पखावज बाजैं । ताल घंट मुरली घन घोरा भेरि दमामे गाजैं॥ सिद्धगर्जना अतिहीभारी घुंघुरू गति झनकारैं । रम्भा नृत्य करैं बिन पगसों बिन पायल ठनकारैं ॥ गुरु शुकदेवकरैं जब किरपा ऐसो नगर दिखावैं । चरणदास वा पगके परशे आवागमन नशावैं ॥

राग सारंग व बिलावल व सोरठ ॥ साधो अजब नगर अधिकाई । औघट घाट बाट जहँ बांकी उस मारग हम जाई ॥ श्रवणबिना बहु बाणी सुनिये बिन जिह्वा स्वरगावैं । बिना नैन जहँ अचरज दीखै बिना अंग लपटावैं ॥ बिना नासिका बास पुष्पकी बिना पावँ गिरि चढ़िया । बिना हाथ जहँ मिलोधायकै बिनपाधा जहँ पढ़िया ॥ ऐसा घर बड़ भागीपाया पहिरिगुरूका बाना । निश्चल ह्वैके आशामारी मिटिगा आवनजाना ॥ गुरु शुकदेव करी जब किरपा अनभय बुद्धि प्रकासी । चौथे पदमें आनँद भारी चरणदास जहँ बासी ॥

राग सोरठ ॥ सो गुरुबिन वह घर कौन दिखावै । जिहि घर अग्निजलै जलमाहीं यह अचरज दरशावै ॥ कामधेनु जहँ ठाढ़ी सोहै नैन हाथ बिन दुहना । घाये दूधा थोड़ा देवै भूखे दे पय दूना ॥ पीवैं जन जगदीश पियारे गुरुग्राम बहुत

अघावैं । मूरख कायर और अयोगी सो वै नेक न पावैं ॥ अ-मृत अँचवै वा पद पहुँचै महातेजको धारै । होय अमर निश्चल ह्वै बैठै आवागमन निवारै ॥ भेद छिपावै तौ फल पावै काहूसे नहिं कहिये । वह अद्भुत है ठौर अनूठी बड़भा-गन सों लहिये ॥ या साधन के बहु रखवारे ऋषि मुनि देवत योगी । करन न देवैं बुधि हरि लेवैं होय न गोरस भोगी ॥ लोभी हलके को नहि दीजै कहै शुकदेव गोसाईं । चरणदास त्यागी वैरागी ताहि देहु गहि बाहीं ॥ १ ॥ सो गुरु गम मगन भया मन मेरा । गगन मण्डलमें निज घर कीन्हो पंच विषय नहिं घेरा ॥ प्यास क्षुधा निद्रा नहिं व्यापी अमृत अँचवन कीन्हा । छूटी आश बास नहिं कोई जगमें चित नहिं दीन्हा ॥ दरशी ज्योति परम सुखपायो सबही कर्म जलावे । पाप पुण्य दोऊ भै नाहीं जन्म मरण बिसरावे ॥ अनहद आनँद अति उपजावै कहि न सकूं गतिसारी । अति ललचावै फिरि नहिं आवै लगी अलखसों यारी ॥ हंस कमलदल सतगुरु राजै रुचि रुचि दरशन पाऊं । कहि शुकदेव चरणहींदासा सब विधि तोहिं बताऊं ॥ २ ॥

रागमलार ॥ चहूंदिशि झिलमिल झलक निहारी । आगे पीछे दहिने बायें तल ऊपर उजियारी ॥ दृष्टि पलक त्रिकुटी ह्वै देखै आसन पद्मलगावै । संयम साधै दृढ़ आराधै जब ऐसी सिधिपावै ॥ बिन दामनि चमकार बहुतही सीप बिना लर-मोती । दीपमालिका बहु दरशावैं जगमग जगमग ज्योती ॥ ध्यान फलै तब नभके माहीं पूरणहो गतिसारी । चन्दघने सूरज अणकी ज्यों सू भर भरिया भारी ॥ यहतो ध्यान प्र-

त्यक्ष बतायो श्रद्धाहोय तौ कीजै । कहि शुकदेव चरणहीं-दासा सो हमसों सुनि लीजै ॥

राग केदारा ॥ अवधू सहस दल अब देख । श्वेत रँग जहँ पैंखरी छबि अग्रडोर विशेख ॥ अमृत बरषा होत अतिझारि तेज पुंज प्रकास । नाद अनहद बजत अद्भुत महा ब्रह्म बिलास ॥ घंट किंकिणि मुरलि बाजै शंखध्वनि मनसान । ताल भेरि मृदंग बाजत सिद्ध गर्जन जान ॥ कालकी जहँ पहुँच नाहीं अमरपदवी पाव । जीति आठौ सिद्धि ठाढ़ी गगन मध्ये आव ॥ करै गुरु परताप करणी जाय पहुँचै सोय । चरणदास शुकदेव कृपा जीव ब्रह्मै होय ॥

राग धनाश्री ॥ सो गुरुगम इहिविधि योग कमायो । आसन अचल मेरु कियो सीधो कसि बँध मूल लगायो ॥ संयम साधि कलावश कीन्हीं मन पवना घर आयो । नव दरवाजे पटदै राखे अर्द्ध ऊर्ध्व मिलायो ॥ नाभितलै पैंड़ो करि पैठे शक्ति पताल गई है । कांप्यो शेष कमठ अकुलायो सायर थाह दई है ॥ उलटि चले मठ फोरि इकीसौ गये अभय पद माहीं । अति उजियारो अद्भुत लीला कहन सुनन गमनाहीं ॥ जित भये लीन सबै सुधि बिसरी छूटी जगत कि बाधा । चरणदास शुकदेव दयासों लागी शून्य समाधा ॥ १ ॥ सो साधो ऐसी योगयुक्ति गतिभारी । मूलहि बंध लगाय युक्तिसों मूंदि दई नवनारी ॥ आसन पद्म महादृढ़ कीन्हों हिरदय चिबुक लगाई । चंद सूर दोउ समकरि राखे निरति सुरति घर आई ॥ ऊपर खैंचि अपान सहजमें सहजै

प्राण मिलाई । पवन फिरी पश्चिमको दौरी मेरुहि मेरु चलाई ॥ ऐसेहि लोक अमरपद पहुँचे सूरज कोटि उज्यारी । श्वेत सिंहासन सतगुरु परशे करि दरशन वलिहारी ॥ आपा विसारि प्रेम सुखपायो उनमन लागी तारी । चरणदास शुकदेव दयासों चरणदास छुटिवारी ॥ २ ॥

रागमलार ॥ वा पद रामसों करिनेह । विषकी बूंद न पइये जित ह्वां वरषत अमृतमेह ॥ चमकत विजुली गरजत गगना वाजत अनहदघोर । यह मन थकत गलतजित पांचौ मिटि हैं निशि अरु भोर ॥ जाग्रत मिटिहै स्वप्नौ मिटिहै मिटिहु सुपोपतजाय । पटऋतु पइये नाहिंन अवधू एकहिरस दर्शाय ॥ विनहीं जोते विनहीं बोये उपजत खेतहै धीर । लागत अचरज फलमहँ मुक्ता विनहीं सींचे नीर ॥ राजागुरु शुकदेव न वाटैं सवहि करैं वकसीस । चरणदास रस सव पावैं मिलि है जहँ विस्वेवीस ॥

रागसोरठ ॥ अवधू ऐसी मदिरा पीजै । वैठि गुफामें यह जग विसरै चंद सूरसम कीजै ॥ जहाँ कुलाल चढ़ाई भाठी ब्रह्म ज्वाल परजारी । भरि भरि प्याला देत कुलाली वाढ़ै भक्ति खुमारी ॥ माता ह्वै करि ज्ञानखड्ग लै काम क्रोध को मारै । घूमत रहै गहै मन चंचल दुविधा सकल विडारै ॥ जो चाखै यह प्रेम सुधारस निजपुर पहुँचै सोई । अमर होय अमरापद पावै आवागमन न होई ॥ गुरु शुकदेव किया मतवारा तीनि लोक तृण वूझा । चरणदास रणजीत भये जव आनँद आनँद सूझा ॥

रागसारंग ॥ पीवै कोई यह प्याला मतवारा । सुर नर मुनि जा मदको तरसैं गुरु विन लहै न वारा ॥ शूदर के घर भाठी औटे ब्रह्मा अग्नि जलाई । शिव शोधैं अरु विष्णु चुवावैं पीवैं साधु अघाई ॥ सीता प्याला भरि भरि देवैं हनूमान हंकारैं । व्यास शेष नारद सनकादिक किरिया नाहिं विचारैं ॥ नवधा नेम औ संयम पूजा विसरी सब कह कहिये। घूमतरहैं महारसचाखे स्वर्गमुक्ति ना चहिये ॥ श्रीशुकदेव सुधारस अमृत नितप्रति अँचवनकीन्हा । चरण-दास पर किरपा करिकै निजप्रसाद करिदीन्हा ॥ १ ॥ साधौ यह प्याला मतवारहै । अँचवैगा कोई योग युगन्ता चित स्थिर मन मारिहै ॥ चन्दसूर दोउ समकरि राखै ब्रह्मज्वाल अन्तर वरै । मुद्रा लगै खेचरी जवहीं वङ्कनाल अमृत झरै ॥ भवँर गुफा में भाठी औटै भभक भभक सुषुमन चुवै ॥ सगुरा पीपी रहित भये हैं विन पीये उपजैं मुये ॥ शिव सनकादिक नारद शारद और पिया नौ नाथहै । सिधि चौरासी हरिपदवासी मगन भया सव साथहै ॥ रामानन्द कवीर नामदे अमरहुये जिन जिन पिया । गुरु शुकदेव करी जब किरपा चरणदासको सो दिया ॥

राग धनाश्री ॥ जो जन अनहद ध्यानधरै । पांचौ निर्वल चञ्चल थाके जीवतही जु मरै ॥ शोधे मूलवन्ध दै राखै आसन सिद्धकरै । त्रिकुटी सुरति लाय ठहरावै कुम्भक पवनभरै ॥ घन गरजै अरु विजुली चमकै कौतुक गगनधरै । वहुतभांति जहँ बाजन वाजैं सुनि सुनि सन्धअरै ॥ सहज सहजमें होप-रकाशा बाधा सकलहरै । जगकी आश बास सब टूटैं ममता

मोहजरै ॥ शून्य शिखरपर आपाविसरै कालसों नाहिं डरै । चरणदास शुकदेव कहत हैं सब गुण ध्यानधरै ॥ १ ॥ तबते अनहद घोर सुनी।इन्द्रिय थकित गलित मन हूवो आशा सकल भुनी ॥ घूमत नैन शिथिल भइ काया अमल जु सुरति सनी । रोम रोम आनन्द उपजि करि आलस सहज बनी ॥ मतवारे ज्यों शब्द समायो अन्तर भीज कनी । भर्म्म कर्म्मके बन्धन छूटैं दुविधा विपति हनी । आपा विसरि जगतको विसरो कितरहिं पांच जनी ॥ लोक भोग सुधि रही न कोई भूलो ज्ञान गुनी । हो तहँ लीन चरणहिंदासा कहैं शुकदेव मुनी । ऐसो ध्यान भाग्य सों पइये चढ़िरहै शिखर अनी ॥ २ ॥

राग बिलावल ॥ घटमें खेलिले मन खेला । सकल पदा-रथ घटही माहीं हरिसों होय जुमेला ॥ घटमें देवल घटमें जाती घटमें तीरथ सारे । वेगहि आव उलटि घटमाहीं बीतें परवीन्हारे ॥ घटमें मानसरोवर मों भर मोती और मराला । घटमें ऊंचा ध्यान शब्दका सोहं सोहं माला ॥ घटमें बिन सूरज उजियारा राति दिना नहिं सूझै । अमृत भोजन भोग-लगत है विरलाजन कोइ बूझै ॥ घटमें पापी घटमें धर्म्मी घटमें तपसी योगी । गुण अवगुण सब घटहीमाहीं घटमें वैद्यरुरोगी ॥ रामभक्ति घटहीमें उपजै घटमें प्रेमप्रकासा । शुकदेव कहैं चौथपद घटमें पहुँचै चरणहिंदासा ॥

राग बिभास ॥ घटमें तीरथ क्यों न नहावो । इत उत डो-लो पथिक बनेहीं भरमि भरमि क्यों जन्म गवाँवो ॥ गोमती कर्म सुकारथ कीजै अधरम मैल छुटावो । शील सरोवर हित-

करि न्हइये काम अग्निकी तपनि बुझावो ॥ रेवा सोई क्षमा को जानौ तामें गोता लीजै । तनुमें क्रोध रहन नाहिं पावै ऐसी पूजा चितदै कीजै ॥ सत यमुना संतोष सरस्वति गंगा धीरज धारो । झूठ पटकि निर्लोभ होय करि सबही बोझा शिरसों डारो ॥ दया तीर्थ कर्मनाशा कहिये परशे बदला जावै । चरणदास शुकदेव कहत हैं चौरासीमें फिरि नहिं आवै ॥

राग विभास ॥ घटमें तीरथ यों तुम न्हावो । तिनके न्हान अमरपद पहुँचौ आदिपुरुष निश्चय करि पावो ॥ काशी सो तत करणी कीजै कलिमल सकल नशावो । रहनि गहनि पुष्करको जानौ यामें मज्जन क्यों न करावो ॥ ध्यान द्वारका दृढ़ करि परशौ हितकी छाप लगावो । इन्द्रीजित सोइ बदरीनाथा यह सतकरि चितमें लावो ॥ भँवर गुफामें है त्रिवेणी सुरति निरति लै धावो । योग युक्ति सों चुबकी लेकरि काग पलटि हंसा ह्वै जावो ॥ तनुमथुरा अरु मन वृन्दावन तामें रासरचावो । हिरदय कमल खिले परकाशा दरशन देखि अधिक हुलसावो ॥ गुरु चरणनमें सबही तीरथ सिमिटि सिमिटि तहँ आवो । चरणदास शुकदेव कहत हैं अपनो मस्तक भेंट चढ़ावो ॥

रागपरज ॥ सुधारस कैसे पइयेहो । कूप कहां केहिठौरहै कैसे करि लइये हो ॥ नेजू कित कित गागरी कितभरने वारिहो । कैसे खुलै कपाटही को ताला तालीहो ॥ कौन समै किस गृह विषे अँचवै किन माहीं हो । तुमसे जानै भेदको अरु बहुतक नाहींहो ॥ पीकरि किस कारज लगै अरु स्वाद बतावो हो । फल याका कहि दीजिये सब खोलि जतावो हो ।

शुकदेव सों पूंछन करैं यह चरणहिंदासा हो । किरपा करिकै कीजिये मेरी पूरी आशाहो ॥१॥ गुरू हमारे प्रेम पिआयो हो। तादिन ते पलटो भयो कुलगोत नशायो हो ॥ अमल चढ़ो गगनै लगो अनहद मन छायो हो। तेज पुञ्जकी सेज पै प्रीतम गल लायो हो ॥ गये दिवाने देसड़े आनँद दरशायो हो। सब किरिया सहजै छुटी तप नेम भुलायो हो ॥ त्रैगुणते ऊपर रहूं शुकदेव बसायो हो। चरणदास दिन रैन नहिं तुरिया पद पायो हो ॥२॥

राग जैजैवंती ॥ ऐसी जो युक्ति जानै सोई योगी न्यारा। आसन जो सिद्धि करै त्रिकुटीमें ध्यान धरै बिना तेल दिया बरै ज्योति हूं उज्यारा ॥ संयमं सँभाल साधै मूल द्वार बन्ध बांधै शंखनी उलटि साधै कामदेव जारा ॥ प्राण वायु हिये माहीं खैंचिकै अपान लाहीं दोऊ नीके मिलि जाहीं ऐसा खेल धारा। कुम्भक अथक राखै अनहद की ओर ताकै सुखमन पैठि नाकै आगे जो विचारा॥ खोलिकै कपाट सिरा कोऊ चढ़ै शूरवीरा कामधेनु जावै तीरा अमी को उतारा। उनमनी जाय लागै निज गृह माहीं जागै जन्म मरण भागै छूटै यम भारा। गुरु शुकदेव कहै करणी यहि विधि लहै चरणदास होयरहै आपको सँभारा ॥

राग सोरठ सारंग ॥ पांचन मोहिलियो बलिना। नासा त्वचा और श्रवणीया नैनन अरु रसना ॥ एक एक नेवारी बाँधी गहि गहि लैलै जाहिं। निशि दिन उनहीं के रस पागो घरमें ठहरत नाहिं ॥आलि पतंग गज मीन मृगा ज्यों होय रह्यो परा-

धीन । अपनो आप सँभारत नाहीं विषय वासनालीन ॥ हौं कुलवन्ती टोना सीखो अनहद सुरति धरूं । गगन मण्डलमें उलटा कूवां तासों नीरभरूं ॥ भँवर गुफासें दीपक बारौं मन्तर एक पढूं । काम क्रोध मद लोभ मोहकर लालन चित्त हरूं ॥ यतन यतन करि पीव छुटाऊं फिर नहिं जाननदूं । चरणदास शुकदेव बतावैं निज मनहीं करलूं ॥

राग सोरठ ॥ तू सदा सोहागिनि नारी है । पियके संग मिली मद पीवै ताते लागत प्यारीहै ॥ भँवर गुफामें भँवर बनावो विन वृत ज्योती जारीहै । सुषमन सेज महा सुख दायी भोगत भोग दुलारी है ॥ वशकियो कन्था चलै न पन्था टोनाडारो भारी है । आठ पहर तुम्हरे रँग राचो हमको मिलै न वारी है ॥ पति मनमानी सो पटरानी सोई रूप उज्यारी है । हम चारो जो सौति तुम्हारी तुम गुण आगे हारी है ॥ चरणहिंदास भई त्वहिं सेवैं लगिरहै नितलारी है । शुकदेवा शिर छत्र हमारो सो वशभयो तुम्हारीहै ॥

राग बिलावल ॥ करणीकी गति औरहै कथनीकी औरै । विन करणी कथनी कथैं बकवादी बौरै ॥ करणी विन कथनी ऐसी ज्यों शशिविन रजनी । विनशस्तर ज्यों शूरमा भूषण विन सजनी ॥ ज्यों पण्डित कथि कथि भले वैराग सुनावैं । आप कुटुम्बके फँद पड़े नाहीं सुरझावैं ॥ वांझ झुलावैं पालना बालकनाहिं माहीं । वस्तु विहीना जानिये जहँ करणी नाहीं ॥ बहु डिंभी करणी विना कथि कथि करि मूये । संतौ कथि करणींकरी हरिकी समहूये ॥ कहैं गुरू शुकदेवजी चरणदास विचारौ । करणी रहनी दृढ़गहौ थोथी कथनी डारौ ॥

हेली ॥ पांचसखी लेलार हेली काया महल पगधारिये। योग युक्ति डोला करौरी अरीहेली प्रान अपान कहार ॥ कुञ्ज कुंज सव देखियेरी अरीहेली नानाबाग पहार । मानसरोवर न्हाइये सदा वसन्त निहार ॥ विना सीप मोती वनेरी अरीहेली विनागूंद फूलनहार । विन दामिनि चमकारहै विन सूरज उजियार ॥ अनहद उतवाजे वजैरी अचरज बहुतक ख्याल । तेजपुंज की सेजपै कागा होहिं मराल ॥ श्रीशुकदेव कृपा करैं जव पावै यह भेद । चरणदास पियसों मिलै छुटैं जगतके खेद ॥१॥ योगयुक्ति करिलेहि हेली । जो चाहै हरिसों मिलो आसन संयम साधिकैरी ॥ गगनमण्डल करि गेह उलटी दृष्टि चढाइयेरी होय सूरज परकाश । करम भरम सवही जरैं स-हजछुटै जग आश । प्राण अपान मिलायकैरी मूलवन्धको वांधि । रसना उलटि लगाइये सुरति ऊर्ध्व को साधि ॥ वङ्क सुधारस पीजिये अनहदहो गलतान । भँवर गुफा दृढ़ वैठिके शून्य शिखरको ध्यान ॥ सुषमन मारग है चलौरी जव पहुँचो निजधाम । अचल सिंहासन श्वेतहै जहां विराजैं राम ॥ यह साधन शुकदेव कारी जो कोइ जानै साध । चर-णदास अविगतिलहै देखै खेल अगाध ॥ २ ॥

अथ वैरागका अंग ।

राग मङ्गल ॥ चलाचली जगठाट अचल हरिनामहै । माल मुलकचालि जाय जाय रज धामहै ॥ तेल फुलेल लगाय व-हुत सुन्दर गहे । नानाकरते भोग सोभी नर नारहे ॥ तेज तमक और रूपजाय यौवनघना । सकल वराती जायँ जायँ दुलहिनि वना ॥ रोगी रोग अरु वैद्यजाय ओपधि भले ।

ज्योतिषपुस्तक तटविन सरजल लैमिले ॥ ज्ञानी पण्डित पीर अधिक बेवश गले । गौस कुतुब अब्दाल पैगम्बर सब चले ॥ एकके पीछे एक वहीर लगी चली । नरपति सुरपति जाहिं अन्तवाहीगली ॥ ऋषि मुनि देवन सिद्ध योगेश्वर जाहिंगे । जिन वश कीन्ही मौत सोभी न रहाहिंगे ॥ पांच तत्त्व गुणतीनि नहीं ठहराहिंगे । स्वर्ग मृत्यु पाताल सभी रलि जाहिंगे ॥ धरती अम्बर जाय जाय शशि भानहे । चरणदास शुकदेव दया लियो जान है ॥ १ ॥ रहै रामका नाम जपै सोभी रहै । वेद पुराणन माहिं सभी योंहींकहै ॥ जन्म मरण नाहिं होय न योनी आवई । सतसिंहासन बैठि अमरपुर पावई ॥ यम जालिमके दण्ड भर्म छुटिजाहिंगे । लख चौरासी बन्ध सबी कटिजाहिंगे ॥ नवग्रह लगे न देह गेह आनँद रहै । डाकिनि सर्पिनि सिंह भूत नाहीं दहै ॥ साधुसंग गुरुसेव आय घटमें बसै । कलह कल्पना जाय द्वन्द्व संकट नसै ॥ तिलको दिये लिलाटजु कण्ठीसोहनी । नौबिस लक्षण धारि सहज जीतै मनी ॥ ऊंची पदवी होय जगत सब पगलगै । दुष्टजलैं मनमाहिं दूरिही सों तकैं ॥ पाप भगैं मुखदेखि दरश कोई करै । भक्ति परापत ताहि सु चरणन आपरै ॥ कहैं गुरू शुकदेव चरणहीं दासको । सब मन्तर शिरमौर सुमिर हरिनाम को ॥ २ ॥

राग काफी ॥ क्या दिखलावै शान यह कुछ थिर न रहैगा । दारा सुत अरु माल मुल्कका कहाकरै अभिमान । रावण कुम्भकर्ण हिरणाकुश राजा कर्ण सँभार । अर्जुन नकुल भीमसे योधा माटीहुये निदान ॥ क्षणक्षण तेरो तनु छी-

जत है सुनु मूरुख अज्ञान । फिरि पछिताये कहा होयगा जब यम घेरैं आन ॥ विनशैं जल थल रवि शशि तारे सकल सृष्टिकी हानि । अजहूं चेतहेत कर हरिसों ताहीकी पहिंचानि ॥ नवधाभक्ति साधुकी संगति प्रेम सहित करध्यान । चरणदास शुकदेवहि सुमिरो जो चाहो कल्यान ॥ १ ॥ रामनाम चितलाव अरु सब शोक निवारो । सकल विकल सब मनके टारो निश्चय करि ह्यां आवै ॥ तीरथ बर्त सभी फलदेवें रामनाम तुलनाहिं । पार लखावन मुक्ति करावन समझि देखु मनमाहिं ॥ पढ़ौ पढ़ावो भेद न पावो कछू न लागैहाथ । अर्थ विचारो तौतुम जानौ कै सन्तनको साथ ॥ उमिरि गवाँवै तुच्छ स्वाद में करि पांचन सों भोग । अन्तकाल दुख होहिं घनेरे तन मन लिपटैं रोग ॥ लोक परलोक महासुख पावै जो सुमिरै हरिनाम । चरण दास शुकदेव कहतहैं होवैं पूरणकाम ॥ २ ॥

राग मालश्री ॥ थिर न रही रहनाहै आखिर मौतनिदान । देखत देखत बहुतक विनशे आवत तुम्हरी बार ॥ यतन करौ कोइ नाना विधि के बचै नहीं नरनार । वे योगेश्वर वशकरि मौतै जड़िदये वज्र केवार । ह्वै बैठे ज्यों मरना नाहीं माटी ह्वै गये हाड़ ॥ कित गये रावण कुम्भकर्णसे हिरणाकुशशिशुपाल । शङ्कर दियो अमर वर जिनको सोभी खाये काल॥ यहतन वर्तन कांचकोरे ठेक लगे खुलिजाय । आज मरै कै कोटि वर्षलौं अन्त नहीं ठहराय ॥ बीतत अवधि चलावा आवै छोड़ि जगतकी आस । गुरुशुकदेव चितावै तोको समुझु चरणहींदास ॥ १ ॥ क्षणभंगी छलरूप यह तनु ऐसारे ।

जाको मौत लगी बहु विधि सों नाना अंग ले बान ॥ विप अरु रोग शस्त्र बहुतकहैं और विघन बहु हान। निश्चय विनशै बचै न क्योंहीं यत्न किये बहु दान ॥ ग्रह नक्षत्र अरु देव मनावैं साधैं प्राण अपान। अचरज जीवन मरबो सांचो यह औसर फिरि नाहिं ॥ पिछिले दिन ठगियन सँग खोये रहे सुयोंहीं जाहिं। जोपलहै सो हरिको सुमिरो साध सँगतगुरुसेव॥ चरणदास शुकदेव बतावैं परम पुरातन भेव॥२॥ वादिनकी सुधि राख सोई दिन आवै है॥ जब यमदूत बुलावन आवैं चल चल चलकहैं भारी। एकघरी कोइ राखि नसकैगो प्यारेहूते प्यारी ॥ बिछुरैं मात पिता सुत बन्धव बिछुरैं कामिनि कन्त। जो बिछुरैं सो बहुरि न मिलिहैं जो युग जाहिं अनन्त ॥ राम सँघाती नेक न बिछुरैं ताहि सँभारत नाहीं। अपनी काया सोऊ न अपनी समझि देखु मनमाहीं ॥ चरणदास शुकदेव चितावै छाँडौ जग उरझेरा। अमर नगर पहिचान सिदौसी जिनकर निश्चल डेरा ॥ ३ ॥ जानै कोइ सन्त सुजान यह जग स्वप्नाहै ॥ स्वप्न कुटुम्बी आपा मानै स्वप्ना वैरागीलै। स्वप्ने लेना स्वप्ने देना स्वप्ने निर्भयभै ॥ स्वप्ने राजा राज्य करतहै स्वप्नै योगी योग। स्वप्ने दुखिया दुख बहु पावै स्वप्ने भोगी भोग॥ स्वप्ने शूरा रणमें जूझै स्वप्ने दाता दान। स्वप्ने पियसँग पायकजरिया स्वप्न मान अपमान ॥ स्वप्ने ज्ञानी गुरुगम जागै अपना रूप निहारि। अज्ञानी सोवत स्वप्नेमें डसे अविद्या नारि ॥ चरणदास शुकदेव चितावै स्वप्ना सों सब झूंठ। अचरज समझ अगाध पुरानी मौन गहौ यहि मूठ ॥ ४ ॥

राग ललित ॥ यह सब जानौ झूंठा ठाट।समझ सवेरे चलना बाट॥ जग सरायमें कहा भुलानो। भठियारीके मोह लुभानो॥ तुझको तौ बहुकोसन जानो। करि हिसाब बनियेंकी हाट॥ कुटुँब मित्र कोइ हितू न तेरा।अपने स्वारथहीको घेरा॥ ह्यां नहिं तेरा निश्चल डेरा। उठिये हूजै वेगि उचाट॥ चलनेकी तदबीर न कीन्हीं। खोंटी राह थाह नहिं चीन्हीं॥ मँजिलौंकी खरची नहिं लीन्हीं। गाफिल सोवै अजहूं खाट॥ मग माहीं ठग बाग लगाये। बहुत मुसाफिर जित परचाये॥ अरु उनको विप लड्डू खवाये। मारि लिये स्वादनके घाट॥ सावधान कोइ हाथ न आये। बचकर चले सो निरभय धाये॥ उनके छलके पेच न खाये। नेक न लागी तिनको आंट॥ मन चंचलका घोड़ा कीजै। ध्यान लगाम ताहि मुखदीजै॥ ह्वै असवार ताहि गहि लीजै। भवसागरका चौड़ा फांट॥ चरणदास शुकदेव चितावै। अपना जानि तोहिं समझावै॥ तेरे भले कि बात बतावै। बारबार कहुँ तोका डांट॥

राग आसावरी॥ गुरु मुख यह जग झूठ लखाया। साधुसंत अरु वेद कहतहैं और पुराणन गाया॥ मृगतृष्णाके नीर लोभाना सीपी रूपाजाना। फटिक शिलापर पीक परी है मूरख लाल लोभाना॥ स्वप्नेमें सब ठाट ठटो है कुल नाते परिवारा। दृष्टि खुली जब सबही नाशे रहो नहीं आकारा। ताते चेत भजन कर हरिको ह्यांमत मनको पागौ। वा घरगये बहुरि नहिं आवै आवागमन न लागौ॥ यास्वप्नेमें लाभ यही है चरणदास सुखभाखो।योगेश्वर जापद मिलि रहिया तुरेयाहित चित राखो॥

रागबरवा ॥ या तनुको कहगर्व करत है ओला ज्यों गल जावैरे । जैसे वर्तन बनो कांचको ठवकलगे बिगसावैरे ॥ झूठ कपट अरु छल बल करिकै खोटे कर्म कमावैरे । वाजीगरके वांदरका ज्यों नाचत नाहिं लजावैरे ॥ जबलौं तेरी देह पराक्रम तबलौं सबन सोहावैरे । माय कहै मेरापूत सपूता नारी हुक्म चलावैरे ॥ पल पल २ पलटै काया क्षण क्षण माहिं घटावैरे । बालक तरुण होय फिरि बूढ़ा वृद्ध अवस्था आवैरे ॥ तेल फुलेल सुगन्ध उवटनो अम्बर अतर लगावैरे । नाना विधिसों पिण्ड सँवारै जरिबरि धूरि समावैरे ॥ कोटि यतसों बचै न क्योंहीं देवीदेव मनावैरे । जिनको तू अपने करि जानै दुखमें पास न आवैरे ॥ कोई झिड़कै कोइ अनखावै कोई नाक चढ़ावैरे । यह गति देखि कुटुँब अपनेकी इनमें मत उरझावैरे ॥ जबहीं यमसों पाला परिहै कोई नाहिं छुटावैरे । औसरखोवै परके काजे अपनोमूल गवाँवैरे । विन हरिनाम नहीं छुटकारो वेद पुराण बतावैरे ॥ चेतन रूप बसै घट अन्तर भर्ममूल बिसरावैरे । जो टुक ढूँढ़खोज करिदेखै सो आपहिमें पावैरे ॥ जो चाहै चौरासीछूटै आवागमन नशावैरे । चरणदास शुकदेव कहतहैं सतसंगति मनलावैरे ॥

रागबरवा ॥ तनका तनक भरोसा नाहीं काहे करत गुमानारे । ठोकर लगे नेकहू चलतै करिहैं प्राण पयानारे ॥ ऐंठ अकड़ सब छाँड़ बावरे तेज तमक इतरानारे । रंचक जीवन जगत अचम्भव क्षणमाहीं मरजानारे ॥ मैं मैं मैं मैं क्यों करताहै माया माहिं लोभानारे । बहु परिवार देखिकै फूलो मूरख मूढ़ अयानारे ॥ टेढ़ोचलै मिरोरत मुच्छैं विषयवास

लपटानारे । आपनको ऊंचो करिजानै मातोमद अभिमानारे॥ पीर फकीर औलिया योगी रहैं न राजा रानारे । धरणि आकाश सूर शशि नाशैं तेराक्या उनमानारे ॥ ठाढ़े घातकरैं शिरपै यम तानेतीर कमानारे । पलक पैंड़पै तकि तकि मारैं काल अचानक बानारे । श्वास निकसि कटि आँखिजाहिं जब कायाजरै निदानारे । तोको बांधि नरक लैजैहैं करिहैं अगिनि तपानारे ॥ अजहूं चेत सीखिले गुरुकी करिले ठौर ठिकानारे । अमर नगर पहिंचान सिदौसी तब नहिं आवन जानारे ॥ हरिकी भक्ति साधुकी संगति यह मत वेद पुरानारे। चरणदास शुकदेव कहत हैं परम पुरातन ज्ञानारे ॥

रागसोरठ ॥ यह तनु बालू कासा डेरा । जैसे दामिनि दमक चमकको क्षणनहिं रहत उजेरा ॥ मैड़ी मण्डप मुल्क खजानो अरु परिवार घनेरा । सो सब कौतुक सों दीखतहै राम सँभार सबेरा ॥ गज घोड़ा अरु चाकर चेरा आखिर कोइ न तेरा । जिनके कारण भमंत डोलै करता मेरा मेरा ॥ थोडेसे जीवनके काजे बहुतक करत बखेरा । कालबलीकी खबरि नहीं है करहि अचानक घेरा ॥ कहैं शुकदेव समझ नरभोंदू छाँड़ि विषय उरझेरा । चरणदास हरिनाम भजन बिन कैसे होय निबेरा ॥ १ ॥ दमका नहीं भरोसारे करिले चलनेका सामान । तनु पिंजरेसों निकसि जायगो पलमें पक्षीप्रान ॥ चलतै फिरतै सोवत जागत करत खान अरु पांन । क्षण क्षण क्षण क्षण आयु घटतिहै होत देहकी हान ॥ माल मुलुक औ सुख सम्पतिमें क्यों हूवा गलतान । देखत देखत विनशि जायगो मतिकरु मान गुमान ॥ कोई रहन

न पावै जगमें यह तू निश्चय जान। अजहूं समुझि छाँडु कुटिलाई मूरख नर अज्ञान ॥ टेरि चितावैं ज्ञान बतावैं गीता वेद पुरान। चरणदास शुकदेव कहतहैं रामनाम उरआन ॥ २ ॥

रागकाफ़ी ॥ वह बोलता कितगया काया नगरी तजिकै। दशदरवाजे ज्योंके त्योंहीं कौनराह गयो भजिकै ॥ सूनादेश गावँ भया सूना सूने घरके वासी। रूपरंग कछु औरै हूवा देहीभई उदासी ॥ साजनथे सो दुर्जनहूये तनुको बांधि निकारा ॥ चितासँवारि लिटाकरि तामें ऊपर धरा अँगारा। ढहगया महल चहलथी जामें मिलिगया माटी माहीं। पुत्र कलत्र भाय अरु बंधव सबही ठोंक जलाहीं ॥ देखतहीका नाता जगमें मुये संग नहिं कोई। चरणदास शुकदेव कहतहैं हरि बिन मुक्ति न होई ॥ १ ॥ समझौरे भाई लोगो समझौरे। अरे ह्यां नाहिं रहना करना अन्त पयाना ॥ मोह कुटुंब के औसर खोयो हरिकी सुधि बिसराई। दिन धंधे में रैनि नींदमें ऐसे आयु गवाँई ॥ आठ पहरकी साठौ घरियां सो तौ विरथा खोई। क्षणइक हरिको नाम न लीन्हो कुशल कहांते होई ॥ बालकथा जब खेलत डोला तरुण भया मद माता। वृद्धभये चिन्ता अति उपजी दुखमें कछु न सुहाता ॥ भूलो कहा चेतु नर मूरख कालखड़ो शरसांधे। विषको तीर खैंचिकै मारै आय अचानक बांधे ॥ झूंठे जगसे नेह छोड़करि सांचो नाम उचारो। चरणदास शुकदेव कहतहैं अपना भलो विचारो ॥२॥

राग झंझौटी ॥ समझै नहिं मायाका मतवार। भूलिरहो धन धाम कुटुँबमें हरि गुरु दियो बिसार ॥ पाप दुकान

लीपि अवगुणसों पूंजीरची विकार। कामके दाम क्रोध थैली धरि बैठा हाट पसार ॥ छल कांटे बिच कपट रुपइया निरख तौल निर्धार। कर्म ढेर कौड़िनको करिकै गिनि गिनि धरत सुधार ॥ कह लाया कह लै निकसैगा अपने जीव विचार। कोइ दम अचरज देखि तमाशा क्षणइक राम सँभार ॥ नरदेही है लाल अमोलक ताकी लखी न सार। अन्तसमय ज्यों हारो ज्वाँरी दोऊ कर चले झार ॥ यह जग स्वप्न जान बावरे आखिर यमसों रार। भुगते कष्ट महादुख पावे सो जीवन धिरकार ॥ आवत काल अचानक तोपै कहैं शुकदेव पुकार। चरणदास अब राम सुमिरि ले नातर होइहै ख्वार ॥

राग नट व विलावल ॥ अरे नर अपनो लाभ विचार। श्वास खजानो घटत सदाही ताको वेगि सँभार ॥ जोरि जाय सो बहुरि न आवै खरचैं लाखहजार। ऐसो रत्न अमोलक हीरा तू करसों मतिडार ॥ सतसंगतिमें हित चित राखौ दुष्टन संग निवार। मायाजाल अरु प्रीति कुटुंबकी ताको मन सों बिसार ॥ काम क्रोध अरु मोह लोभसे परबल बड़े विकार। ज्ञान अग्नि अन्तरपट जारो तासे इनको जार ॥ विषय वासना इन्द्रिनके सुख बूडिरह्यो संसार। चरणदासको नाव चढ़ाकै शुकदेव लियो उबार ॥

राग केदारा ॥ रे नर क्यों गवाँवे जनम। आयु तेरी बीतिजाय नाहिं जाने मरम ॥ जनमपाय हरिभजन करिले देहको यही धरम। लोक अरु परलोक सुधरै रहै तेरी

शरम ॥ भक्तिसम कछु नाहिं दीखै योग यज्ञ तप करम । आन धर्म विचार त्यागो मेट थोथे भरम ॥ चरणदास सतसंग मिलिकै आव हरिकी शरण । राम सुखदाई सुमिरि ले वही तारण तरण ॥

राग सोरठ ॥ अरे नर अफल जन्म मत खोरे । ज्यों तेलीको बैल फिरत है निशिदिन कोल्हू धोरे ॥ भक्ति विहीने खर है आये ढोवत बोझा रोरे । सांझभये वाको वाको पति घूरे ऊपर छोरे ॥ भर्मत भर्मत मनुष भये हौ ऊंचे आय चढ़ोरे । लख चौरासी योनि भुगुति करि फिरि तामें न परोरे ॥ अब के चूके बहु पछितैहौ मान वचन तू मोरे । चरणदास शुकदेव कहतेंहें हरिपद सुरति धरोरे ॥

राग बिलावल ॥ अरे नर जन्म पदारथ खोयारे । बीती अवधि काल जब आया शीश पकरि कै रोयारे ॥ अब क्या होय कहा बनिआवै माहिं अविद्या सोयारे । साधु संग गुरुसेव न चीन्ही तत्त्व ज्ञान नहिं जोयारे ॥ आगेसे हरिभक्ति न कीन्ही रसना राम न जोयारे । चौरासी यमदंड न छूटै आवागमनका दोयारे ॥ जो कछु किया सोई अब पावो वही लुनो जो वोयारे । साहब सांचा न्याव चुकावो ज्यों का त्योंही होयारे ॥ कहूँ पुकारे सब सुनि लीजो चेतिजाव नर लोयारे । कहै शुकदेव चरणहींदासा यह मैदान यह गोयारे ॥

राग सारंग व राग नट व राग धनाश्री ।

नट ज्यों नाचि गये कितने । दाता शूर सती सिधि साधक रावरंक जितने ॥ रावण कुम्भकर्णसे योधा बहुतक कौन

गिनै । बहुतक इकछत राज करत थे पूजत लोग जिनै ॥ बहुतक भोगी नानाविधिसों करते भोग विलास । बहुतक तपसी वनके वासी तनु पर उपजी घास ॥ बहुतक ऋषि मुनि दुर्वासा से देते अडिग शराप । बहुतक ज्ञानी हरि ह्वै बैठे कहते आपहि आप ॥ हमहूं याचक नाचन आये यह नहिं अपना देश । चरणदास शुकदेव दया सों फिर नहिं काछूं भेश ॥१॥ नट ज्यों नाचहि नाचिगये । जिन जिन वेष धरो जगमाहीं सोसो नाहिं रहे ॥ बहुतक स्वांग धरो राजा को बहुतक रंक भये । बहुतक भूप कर्णसे हूये कंचन दानदये ॥ बहुतक स्वांग सती के आये ह्वै गये अग्नि मयेः । बहुतक चुंडत मुण्डत योगी गुफा वनाय छये ॥ भीषम अरु द्रोणाचारज से शूरा बहुत ठये । रणसों पीठिदई नहिं कबहूं सन्मुख बाणलये ॥ बहुत यती सिध ह्वै ह्वै बैठे लोगन चरणगहे । बहुतक कामी चतुर सयाने काम मुतास वहे ॥ उत्तम मध्यम काछ कछे हैं नाना स्वांग मचे । चरणदास शुकदेव दया सों प्रेमी होय नचे ॥ २ ॥

राग सारंग ॥ दुनिया मगन भये धन धाम । लालच मोह कुटुंबके पागे विसरि गये हरिनाम ॥ एक घरी छुटकारो नाहीं बँधिरहे आठौ याम । पांच प्रहर धंधे में माते तीन प्रहर सँग बाम ॥ फूले फिरत महा गर्वाये पवन भरे ये चाम । दीप कलश ज्यों विनाशि जायगो या तनुको यहि काम ॥ साधु संग गुरु सेव न कीन्हीं सुमिरे ना श्रीराम । चरणदास शुकदेव कहतहैं कैसे पावो ठाम ॥

राग काफी ॥ कोई दिन जीवै तौ कर गुजरान । कहर गरूरी छांड दिवाने तजो अकसकी बान ॥ चुगुली चोरी अरु निंदा लै झूठ कपट अरु कान । इनको डारि गहौ जत सत को सोई अधिक सयान ॥ हरि हरि सुमिरौ क्षण नहिं बिसरौ गुरु सेवा मन ठानि । साधुनकी संगतिकर निशिदिन आवै ना कुछ हानि ॥ मुड़ौ कुमारग चलौ सुमारग पावै निज पुर वास । गुरु शुकदेव चेतावैं तोको समझ चरणहींदास ॥ १ ॥ एते परक्यों हुआ मगरूर । क्षणभंगी यह तनु बहुरंगी जरि बरि होइहै धूर ॥ मूछ मरोरि चलै बांकी गति अकड़ि अकड़िरहै घूर । छैल चिकनियां माया मदमें माते चकनाचूर ॥ काम क्रोधके शस्तर बांधे लोभ रह्यो भरिपूर । गुरुको ज्ञान न मनमें आवै ऐसा है बेसहूर ॥ करि अभिमान जगत सच माने हरिको जानैदूर । चरणदास शुकदेव बतावै साईं सदा हुजूर ॥ २ ॥

राग बिलाविल ॥ राम नाम तैं क्यों बिसराया । सीखे कपट झपट छल बल बहु कामरु क्रोध मोह लव लाया ॥ चारि दिना का जगत अचम्भा झूठे सुखमें कहा लोभाया । क्षण इक सतसंगति नहिं कीन्ही जन्म अकारथ खोय बहाया ॥ वाद विवाद स्वादको चौकस विषय वास रसमें लपटाया । दया धर्म हिरदयसों भूला परनिन्दा हिंसाको धाया ॥ चौरासी लख योनि भुगति करि मनुष स्वरूप भाग्यसों पाया । लाहा कछू न किया हासलै उलटा मूल गवाँया ॥ श्रीशुकदेव पुकारि चितावें समझतना केतो समझाया ॥ चरणदास कलियुगके माहीं हरिगुण गावन सार बताया ॥ १ ॥ नाहिंरे कोइ हरि बिन तेरो । यह जग जाल महा दुखदाई तामें है इक रैनि

बसेरो ॥ आनि फँसो मायाके फन्दन मोहममत कीन्हो उर झेरो। रंचकहू छुटकारो नाहीं विषय स्वाद पांचौने घेरो ॥ साधु सन्तसों नेह न राखै दारा सुत सम्पति को चेरो। अन्तकाल बहुतै पछितैहो जब मारै यम आय थपेरो ॥ धनके कारण घर घर डोलै परकाजे पचि मरत घनेरो। जोरत दाम वाम वशह्वैकै काम क्रोधसों हित बहु तेरो ॥ जोचाहै तू भलो आपनो तौ ह्यांसे करु वेगि निबेरो। चरणदास शुकदेव कहत हैं छाँडि देहि सब विषय बखेरो ॥ २ ॥

राग धनाश्री ॥ अपना हरि बिन और न कोई। मात पिता सुत बन्धु कुटुँब सब स्वारथही के होई ॥ या कायाको भोग बहुतदे मर्दन करि करि धोई। सोभी छूटत नेक तनकसी संग न चाली वोई ॥ घरकी नारि बहुतही प्यारी तिनमें नाहीं दोई। जीवत कहती साथ चलूंगी डरपन लागी सोई ॥ जो कहिये यह द्रव्य आपनो जिन उज्ज्वल मति खोई ॥ आवत कष्ट रखत रखवारी चलत प्राण ले जोई ॥ इस जगमें कोइ हितू न दीखै मैं समझाऊं तोई । चरणदास शुकदेव कहैं यों सुनिलीजौ नर लोई ॥

राग कान्हरा—हरि बिन कौन तुम्हारो मीता। कुटुँब सँघाती स्वारथ लागे तेरी काहूको नहिं चींता ॥ तैं प्रभु ओरी सों मुख मोड़ा झूठे लोगन सों हितकीता। अरु तैं अपनी आँखौं देखा कई बार दुख सुख हो बीता ॥ सम्पतिमें सबही घिरि आवैं विपतिपरे अधिकी दुखदीता। मूठि बाँधि जनम नर लायो हाथ पसारि चलै गो रीता ॥ धरि धरि स्वांग फिरै

तिन कारण कपि ज्यों नाचत ताता धीता । मुये न संगी होइ तिहारे बाँधिजलावैं देह पलीता ॥ गुरुसेवा सतसंग न कीन्हीं कनक कामिनी सों करि प्रीता । चरणदास शुकदेव कहतहैं मरत मरत हरिनाम न लीता ॥

राग रामकली ॥ धनि धनि वे नर हरि शरणाये । और पशुनसों सबही नीचे परमारथ के काम न आये ॥ अचरज मनुषा देही दुर्लभ बड़भाग्यन सों पाई । तीनोंपनमें नाहिं सँभारी झूंठे धन्धे योंहिं गँवाई ॥ बालापन खेलन में खोया तरुण भया सँगनारी । बूढ़ाभये कुटुँबके संशय पावत है अतिही दुखभारी ॥ जिनकारण तैं पाप कमाये सो नाहिं चलिहैं लारी । तेरेही शिर आनिपरैगी जैहौ अकेले नरक मँझारी ॥ गर्भ माहिं तैं वचन कियेथे करिहौं भक्ति तुम्हारी । ह्यां आके कछु औरै कीन्हा प्रभुसे झूंठा हुवा अनारी ॥ होसांचा अजहूं सुमिरणकर होहिं दयालुमुरारी । चरणदास शुकदेव कहतहैं आगेहु पतित किये भवपारी ॥१॥ फिर फिर मूरख जन्म गँवायो । हरिकी भक्ति साधुकी संगति गुरुके चरणनमें नहिं आयो ॥ धनके जोरनको हद कीन्हों महल करन व्रतधारो । टेक पकड़कर नारी सेई शिरपर बोझ लियो अतिभारो ॥ ह्वै हैं दुख नानाविधि केरो तनमन रोग वढ़ायो । जीवत मरत नहीं सुखपैहौ आवागमन को बीज जगायो ॥ भर्मि भर्मि चौरासी आयो मनुषा देही पाई । यातनुकी कछु सार न जानी फिरि आगे चौरासी आई ॥ आँखि उघारि समुझु मनमाहीं हिरदय करौ विचारा । ऐसा जन्म बहुरि कब पैहौ विरथा खोवै जग व्यवहारा ॥ जानैंगे जग

छाँडि चलौगे कोइ न संग तुम्हारे । चरणदास शुकदेव कहतहैं याद करौगे वचन हमारे ॥ २ ॥

राग विहाग—रे नर हरि प्रताप ना जाना । तुवकारण सब कछु तिन कीन्हा सो करता न पिछाना ॥ जिहि प्रताप तेरि सुन्दरि काया हाथ पाँव मुखनासा । नैनदिये जासों सवसूझै होय रहा परकासा ॥ जिहि प्रताप नानाविधि भोजन वस्त्र अभूषण धारे । वाका नाहिं निहोरा मानै ताको नाहिं सँभारे ॥ जिहि प्रताप तू भूप भयोहै भोगकरै मनमानै । सुखलै वाको भूलि गयो है करि करि वहु अभिमानै ॥ अधिकी प्यारकरै मातासों पल पलमें सुधि लेवै । तूलौ पीठि दियेही नितही सुमिरण सुरति न देवै ॥ कृत्यघनी औ लूणहरासी न्याव इँसाफ न तेरे । चरणदास शुकदेव कहत हैं अजहूँ चेतु सवेरे ॥

राग विहागरा ॥ अरे नर हरिका हेत न जाना । उपजाया सुमिरणके काजे तैं कछु औरै ठाना ॥ गर्भमाहिं जिन रक्षा कीन्ही ह्वां खानेको दीन्हा । जठर अग्निसों राखिलियो है अँग सम्पूरण कीन्हा ॥ बाहर आय वहुत सुधिलीन्ही दशनविना पयप्यायो । दांत भये भोजन बहुभाँती हितसों तोहिं खिलायो ॥ और दिये सुख नानाविधिके समुझि देखु मनमाहीं । भूलो फिरत महागर्वाये तू कछु जानत नाहीं ॥ तव कारण सब-कछु प्रभु कीन्हो तू कीन्हा निजकाजा । जग व्यवहार पगोही वोलै तोहिं न आवै लाजा ॥ अजहूं चेत उलट हरिसौंहीं जन्मसफल करु भाई । चरणदास शुकदेव कहैं यों सुमिरण है सुखदाई ॥

राग काफी ॥ गुमराही छाँड़ु दिवाने मूरख बावरे । अति दुर्लभ है नरदेह भया गुरुदेव शरण तू आवरे ॥ जगजीवन है निशिको स्वपनो अपनो ह्यां कौन बतावरे । तोहिं पांच पचीसने घेरलियो लखचौरासी भरमावरे ॥ बीति गई सो बीति गई अजहूं मनको समुझावरे । मोह लोभ सों भागिकै त्याग विषय काम क्रोधको धोय बहावरे ॥ शुकदेव कहैं सबही तजिकै मनमोहन सों लवलावरे । चरणदास पुकारि चितायदियो मत चूकै ऐसे दावँरे ॥ १ ॥ चलाआवै चलावै का ध्योस कछू करिले भाई । ह्यांसे चलनाहोय अचानकही फिरि पाछे रहै अफ्सोस ॥ पीकै विषयकी मदिरा मतवारा होय रहा बेहोस । बाटमाहिं तौ शूल बबूल घने अरु जानाहै कइ कोस ॥ दमहीं दमहीं दम छीजत है पल पल घटै तनु-जोस । माया मोह कुटुँबका सुख ऐसे जैसे दीखै मोती ओस ॥ शुकदेवदियो कृपाकरिकै रामरसका प्याला नोश । चरणदास कहैं यहबात भली सुनिलीजै दोनों गोश ॥

राग सोरठ ॥ कछु मन तुम सुधिराखो वा दिनकी । जादिन तेरी देह छुटैगी ठौर बसौगे वनकी ॥ जिनके संग बहुत सुख कीन्हें मुख ढकि होयहैं न्यारे । यमको त्रास होय बहुभाँती कौन छुटावन हारे ॥ देहरीलौं तेरी नारि चलैगी बड़ी पौं-रिलौं माई । मरघटलौं सबवीर भतीजे हंस अकेलो जाई ॥ द्रव्य गड़े अरु महल खड़ेही पूतरहैं घरमाहीं । जिनके काज पचे दिनराती सो सँग चालत नाहीं ॥ देव पितर तेरे काम न आवैं जिनकी सेवालावैं । चरणदास शुकदेव कहतहैं हरि बिन मुक्ति न पावैं॥१॥मोको भय अति वाही दिनको । जब वह पक्षी माया

लोभी त्यागै पिंजरा तनको ॥ सुत दाराके मोह फँसो है लोभ लगो है धनको। काम क्रोधको कांपा खायो भयो अधीन सबनको ॥ पांच पहर धन्धेमें खोया नाम न लेत भजनको। तीनि पहर नारी सँग मातो मानत सुख इन्द्रिनको ॥ आपनको ऊंचो करि जानै करि अभिमान बरनको। सतसंगतिके निकट न आवे जो हैं ठाट तरनको ॥ यमकिंकर जब आनि गहैंगे तब ना धीर धरनको। गुरु शुकदेव सहायकरैंगे आसरो दास चरणको ॥ २ ॥

राग केदारा ॥ सो मेरो कहो मानरे भाई। ज्ञान गुरूको राखहियेमें बंध कटि जाई॥ बालपनते खेलि खोयो गई तरुणाई। चेत अजहूं भलीबरहै जराहू आई ॥ जिनके कारण विमुख हरिते फिरत भटकाई। कुटुम्ब संबही सुखके लोभी तेरे दुखदाई ॥ साधु पदवी धारणा धर छाँडु कुटिलाई। वासना तजि भोग जगके होय मुकताई ॥ बहुरि योनी नाहिं आवै परमपद पाई। चरणदास शुकदेवके घर आनँद अधिकाई ॥ १ ॥ भाईरे अवधि बीतीजात। अँजुली जल घटत जैसे तारे ज्यों परभात ॥ श्वास पूंजी गांठि तेरे सो घटत दिन रात। साधु संगत पैंठ लागी लेलगै सोइ हाथ ॥ बड़ो सौदा हरि सँभारो सुमिरि लीजैप्रात। काम क्रोध दलाल ठगिया बणिज मत इन साथ ॥ लोभ मोह बजाज छलिया लगै हैं तेरि घात। शब्द गुरुको राखि हिरदय तौ दगा नहिं खात ॥ अपनी चतुराई बुधि पर मति फिरै इतरात ॥ चरणदास शुकदेव चरणन परश तजि कुल जात ॥ २ ॥

राग सोरठ ॥ भाई रे स्वप्न यह संसार । देह स्वप्ना जन्म स्वप्ना स्वप्न कुल व्यवहार ॥ माय स्वप्ना बाप स्वप्न स्वप्न सुत अरु नारि । लाज स्वप्ना जाति स्वप्ना स्वप्न प्रस्तुति गारि ॥ योग स्वप्ना भोग स्वप्ना किये वेदनि-खेद । स्वप्न सो जो होय मिटि है स्वप्न सुख अरु खेद ॥ बन्ध स्वप्ना मुक्ति स्वप्ना स्वप्न ज्ञान विचार । स्वप्नहै सो विनशिजैहै रहेगाततसार ॥ चरणदास स्वप्ना ब्रह्म सांचो एक रस नित जान । सत्य स्वप्ना झूंठ स्वप्ना कह कहूं निर्वान ॥ १ ॥ भाई रे तजो जग जंजाल । संग तेरे नाहिं चालै महल वाहन माल ॥ मात पितु सुत और नारी बोल मीठे बैन । डारिफांसी मोहकी तोहिं ठगतहैं दिनरैन ॥ छल-धतूरो दियो सब मिलि लाज लड्डू माहिं । जान अपने कह भुलानो चेतता क्यों नाहिं ॥ बाज जैसे चिंड़ी ऊपर भँवत तोपर काल । मारते गहि लै चलैंगे यम सरीखे साल ॥ सदा सँघाती हरि बिसारो जन्म दीन्होहार । चरणदास शुक-देव कहिया समझमूढ़ गवाँर ॥२॥ भाई रे समझ जगव्यवहार। जबताईं तेरे धन पराक्रम करैं सबहीप्यार ॥ अपने सुखको सबहि चाहैं मित्र सुत अरु नारि । इन्हौं तौ अपवश कियो है मोह बेड़ी डारि ॥ सबन तोको भय दिखायो लाज लकुटी मार । बाजगिरके बांदरा ज्यों फिरत घर घर द्वार ॥ जबै तोको विपति आवै जरा कोर विकार । तब तोसूं लाजमानैं करैं ना तेरि सार ॥ इनकि संगति सदा दुख है समझ मूढ़ गवाँर । हरि प्रियतमको सुमिरि ले कहैं चरणदास पुकार ॥ ३ ॥

राग विहाग ॥ ये सब निज स्वारथ के गरजी । जगमें हेत न कीजै काहूसों अपने मनको वरजी ॥ रोंपैं फन्द घात वहुडारैं इनते तू डरयेजी । हृदय कपट बाहर मिठबोलैं यह छल हैगो कहाजी ॥ सौगँद खाय झूंठ वहु बोले भवसागर कैसे तरजी । दुख सुख दर्द दया नहिं बूझैं इनसे छुटावो हरिजी ॥ वैरी मित्र सबै चुनिदेखे दिलके महरम कहजी । इनको दोप कहा कह दीजै यह कलियुगकी झरजी ॥ दुनिया भगल कुटिल वहु खोटी देखि छाती मेरी लरजी । चरणदास इनको तजि दीजै चलवस अपने घरजी ॥

राग आसावरी ॥ साधो रामभजेते सुखिया । राजा परजा नेमी दाता सबही देखे दुखिया ॥ जो कोई धनवंत जगतमें राखत लाख हजारा । उनको तौ संशयहै निशिदिन घटत वढ़त व्यवहारा ॥ जिनके वहुसुत नाती कहिये और कुटुंब परिवारा । वेतौ जीवन मरणके काजे भरतरहैं दुखभारा ॥ नेमी नेम करत दुखपावे कर स्नान सवेरा । दाताको देवेका दुखहै जब मँगतों ने घेरा ॥ चारि वर्णमें कोउ न देखा जाको चिन्ता नाहीं । हरि की भक्ति विना सव दुख है समझ देख मनमाहीं ॥ सतसंगति अरु हरि सुमिरण करि शुकदेवा गुरु कहिया । चरणदास विपता सब तजिकै आनँद में नित रहिया ॥

राग सारंग ॥ नर रामभजे सुखपायहै । दुखभाजैं अरु पातक नाशैं जैरा निकट न आयहै ॥ चेत सबेरे कहूं पुकारे नातरु तू पछितायहै । जगत ठाट सब झांकी शोभा संग न

कोई जायहै । विन गोपाल तुम्हारो कोहै हमको देहु वतायहै । पकरि बांधि यम मारनलागें जवको होय सहायहै ॥ देखु विचारि समुझु मनमाहीं तो वुधि जो अधिकाय है । तौतू आव उलटि हरि सौंहीं चालो जनम सिरायहै ॥ चरणदास शुकदेव कहतहैं अव यही अधिक सयानहै । गुरुकी शरण साधुकी संगति प्रभुको कीजे ध्यान है ॥

राग भैरव ॥ चेतौरे नर करौ विचार । छलरूपी है यह संसार ॥ स्वप्ना मात पिता सुत वंधू । स्वप्ना है सवही सम्बन्धू ॥ देखै कहै सुनै सो स्वपना । या जगमें नाहीं कोइ अपना ॥ स्वप्ना धरती और अकाशा । स्वप्ना चन्द्र सूर्य परकाशा ॥ स्वप्ना जल थल पावक पौन । स्वप्ना योग भोग अरु मौन ॥ स्वप्ना मायाको व्यवहार । स्वप्ना कुल नाता परिवार ॥ स्वप्ना देश नाम अरु भेश । स्वप्ना उत्पति परलय शेश ॥ स्वप्ना राजा रानाराव । स्वप्ने वानिक वन्यो वनाव ॥ स्वप्ने लरै मरै अरु भागै । स्वप्ने सोवै स्वप्ने जागै ॥ स्वप्नाहै यह सवही ठाट । उठी पैंठ जव मुँदिगइ हाट ॥ जो कछुहै सा सवही स्वप्ना । सांचा हरि हरि हरि हरि जपना ॥ क्यों भूला मूरख मस्तान । अजहूं समुझि लेहि गुरुज्ञान ॥ गफलत छांड़ि भजो हरिनाम । जो चाहै तू निश्चल धाम ॥ ज्यों सोवत स्वप्नो दरशाय । आंखिखुलै जवहीं मिटिजाय ॥ ऐसे ही सव स्वप्ना जान । अचल अखण्ड रहै भगवान ॥ सवठां ब्रह्म रह्यो भरिपूर । ना अति निकट नहीं वहुदूर ॥ जो कोइ खोजै सोई पावै । ततदरशी यह भेद वतावै ॥ गुरु शुकदेव

पुकारि चितावै । झूंठ सांचको न्यावचुकावै ॥ चरणदास सब स्वप्ना जान । सदा एकरस ब्रह्म पिछान ॥

राग मलार ॥ सतगुरु भवसागर डरभारी । काम क्रोध मद लोभ भँवर जित लरजत नाव हमारी ॥ तृष्णा लहर उठत दिनराती लागत अति झकझोरा । ममता पवन अधिक डर पावै कांपतहैं मनमोरा ॥ और महाडर नानाविधिके क्षण क्षणमें दुखपाऊं । अन्तर्यामी विनती सुनिये यह मैं अरज सुनाऊं ॥ गुरु शुकदेव सहाय करौ अब धीरज रहा न कोई । चरणदास को पारउतारो शरण तुम्हारी सोई ॥

राग बिलावल ॥ भक्ति गरीबी लीजिये तजिये अभिमाना । दोदिन जगमें जीवना आखिर मरिजाना ॥ पाप पुण्य लेखालिखैं यम बैठे थाना । कह हिसाब तुम देहुगे जब जाहि देवाना ॥ मातपिता कोइ ह्वां नहीं सबही बेगाना । द्रव्य जहाँ पहुँचै नहीं नाहिं मीत पिछाना ॥ एकसों एकहि होयगी ह्वां सांच तुलाना । काहूकी चालै नहीं छनै दूधरु पाना ॥ साहिबकी करि बन्दगी दे भूखे दाना । समझावैं शुकदेवजी चरणदास अयाना ॥

राग काफी ॥ घरी दोमें मेला बिछुरै साधो देखि तमाशा चलना । जेह्वां आकर हुये इकठ्ठे तिनसों बहुदिन मिलना ॥ जैसे नाव नदीके ऊपर बाट बटेऊ आवैं । मिलि मिलि जुदे होयँ पलमाहीं आप आपको जावैं ॥ या वारी बिच फूल घनेरे रंग सुगन्ध सुहावैं । लागैं खिलैं फेरि कुम्हिलावैं झरैं टूटि विनशावैं ॥ दारा सुत सम्पति को सुख ज्यों मोती ओस

बिलावैं । ह्यांई मिलैं और ह्यां नाशैं ताको क्यों पछितावैं ॥ दै कुछ लै कुछ करिले करणी रहनी गहनी भारी । हरिसों नेह लगाय आपनो सो तेरो हितकारी ॥ सतसंगति को लाभवड़ो है साध भक्त समुझावैं । चरणदास हो रामसुमिरिले गुरु शुकदेव बतावैं ॥ १ ॥ वह मेला सोइ भलाहै साधो जहँ सन्तोंका भेला । जिनके रहैं सदा हरिचर्चा सुमिरैं राम सुहेला ॥ कथा कहैं अरु करैं कीर्त्तन ज्ञान ध्यान समुझावैं । सोवत जागत वैठे चलते गोविंदके गुणगावैं ॥ बोलैं अमृतबाणी सबसों कुमति कुबुद्धि छुटावैं । हरिकी भक्ति साधुकी संगति यह उपदेश बतावैं ॥ माला तिलक रामको बाना सुन्दर वेष बनावैं । घर घरहोय आरती मङ्गल नवधासों चितलावैं ॥ निशि दिन आनँद रूप दिवाली सदा वसन्त सुहायो । प्रेम महोत्सव नितही उत्सव सबै ठाट मनभायो ॥ या विधि सों मन मगनहोय करि भजन करैं अतिभारी । चरणदास शुकदेव कहतहैं घटमें होय उज्यारी ॥ २ ॥

राग पर्ज ॥ राम धन जो कोइ पावैहो । राज बड़ाई इन्द्र पदवी सुरति न लावै हो ॥ आठ सिद्धि नौनिद्धि के लालच नहिं लागै हो । तीनिलोक तुच्छ जानिके तामें नहिं पागै हो ॥ अर्थ धर्म काम मोक्षको करणी नहिं ठानै हो । चारि मुक्त वैकुण्ठ लौं कछु वस्तु न जानैहो ॥ सबसे नीचा ह्वै चलै मुख झूठ न भाखैहो । हिंसा अकस वासना कोइ नेक न राखैहो ॥ साधुनकी करि चाकरी जब वह धन आवै हो । चरणदाससे रंकको शुकदेव बतावैहो ॥ १ ॥ जिन्हैं हरिभक्ति पियारी हो । मात पिता सहजै छुटैं छुटैं सुत अरु नारी हो ॥ लोक

भोग फीके लगैं सम अस्तुति गारीहो । हानि लाभ नहिं चाहिये सब आशा हारी हो ॥ जगसों मुख मोरे रहैं करैं ध्यान मुरारीहो । जित मनुवाँ लागोरहै भइ घट उजियारी हो ॥ गुरुशुकदेव बताइया प्रेमी गति भारीहो । चरणदास चारों वेदसों औरै कछु न्यारीहो ॥ २ ॥

रेखता राग भय्यार ॥ तजिकै जगतकी रीतिको करु आपनी तदवीर । इस जग भरोसे ख्वारहो सुन यारमन पारस्नगये शाह अमीर ॥ इकदम करारी है नहीं क्षण क्षणमें फेरैं रंग ॥ कबहूं तौ हैरां सुखगना सुन समझ यारमन । यारमन चलविचल वेढंग ॥ हशमत वसौकतै थिर नहीं मत देखिहो मगरूर । ठहराव ताको है नहीं सुन यारमन भग्गल बड़ाई धूर ॥ जाहिं श्वासा सवचले ज्यों आवद्र गिरवाल । याद साहवकी करौ सुन यारमन यारमन सुमिर हरि हरि हाल ॥ शुकदेव सतगुरुने मुझे कायम बतायो राम । चरण हिंदासा चित धरो सुन यारमन यारमन जपौ आठौयाम ॥

रेखता ॥ दोदिनका जगमें जीवना करता है क्यों गुमान । ऐवेशहूरगीदीटुक रामको पिछान ॥ दावा खुदीका दूरकर अपने तू दिलसेती । चलताहै अकड़ अकड़ जवानीका जोश आन ॥ मुरसदका ज्ञान समझकै हुशियार हो सितांव । गफलतको छांड़ि सोहवत साधोंकी खूबजान ॥ दौलतका जौकँ ऐसे ज्यों आव काहुवान । जातारहैगा क्षणमें पछितायगा निदान ॥ दिन रात खोवताहै दुनियाके कारवार । इकपल-

१ ऐश्वर्य्य २ प्रभाव ३ संगति ४ लालसा, तृष्णा ।

भी याद साईं कि करता नहीं अजानं ॥ शुकदेव गुरूज्ञान चरणदासको कहैं । भजु राम नाम सांचापद मुक्तका निधान ॥

हेला ॥ जगको आवन जानि हेला याको शोक न कीजिये । यह संसार असार हैरे अरे हेला हरिसों कर पहिचान ॥ कुटुंब संग आयो नहींरे अरेहेला ना कोइ संगको जाय । ह्यांई मिलैं ह्यांईं बीछुरैं ताको झुरै बलाय । महल द्रव्य किस कामरे अरे हेला चलैं न काहूसाथ । रामतजे इनसों पगे हारो अपने हाथ ॥ जीवत काया धोवतेरे अरे तेल फुलेल लगाय । मजलिस करिकै बैठते मूये काग न खाय॥ लाभभये हरषै नहींरे अरे हेला हानि भये दुखनाहिं । ज्ञानीजन वहि जानिये सब पुरुषनके माहिं ॥ गुरु शुकदेव चितावईरे अरे हेला चरणदास हिय राखि । मनुष जन्म दुर्लभ मिलै वेदकहतहैं साखि ॥ १ ॥ झूंठी जगकी प्रीति है नहीं छांडूं हरिसों मीतहेला । रंग कुसुम संसारकोरे अरे हेला प्रभुको रंग मजीठ ॥ धन यौवन थिरनारहैरे अरे हेला मतकर गर्व गुमान । क्षणक्षण औसर जातहै हरिसोंकर पहिचान ॥ अन्तसमय पछितायगोरे हेला जब यमघेरैं आय । जिनके सँग तू मिल रहो कोइ न छुटावै जाय ॥ बीतिगई सो जानदेरे अरे हेला अजहूंसमझ गवाँर । शरणगहो सत्संगकी गुरुके वचन सँभार ॥ श्रीशुकदेव बताइयारे अरे हेला रामनाम ततसार । चरणदास यों कहतहै लैलै उतरो पार ॥ २ ॥ बोलत टेढ़ी बात हेला माया मदमातो रहै । सबहीसों ऐंठो फिरैरे अरेहेला क्षणमें वेग रिसात ॥ ब्याजबढ़ा दुगुने करैरे अरेहेला करै चौगुने दाम ।

नानारसके स्वादले खाय फुलावै चाम ॥ करसों कबहुँ न दान देरे अरेहेला शीश नवावै साध । जिह्वासों हरि ना जपै बहुत करै बकवाद ॥ पगसों तीरथ नारमैरे अरेहेला सुनै न श्रीभागौत । अकड़ अकड़ मनमाहिं यों जानि बड़ो कुलगोत ॥ परछाहीं देखे चलेरे अरेहेला बांकी बांधैपाग । सोदेही किसकामकी खैहैं श्वान न काग ॥ पुत्र कलत्रहैं घनेरे अरेहेला सुखमें करत कलोल । हरिभक्तन सों नेह ना कहै क्रोधके बोल ॥ धर्म कर्म कछु ना करै अरेहेला नाहिं सतगुरुसों प्रीति । हरिचरचा सों जरिमरै यह डूबनकी रीति ॥ जगको सांचो जानिकैरे अरेहेला हरिको दियो बिसार । अन्तसमय यम त्रासदै डारै नरक मँझार ॥ श्रीशुकदेव ऐसे कहीरे अरेहेला छांड़ विषय जंजाल । चरणदास भजु राम को सोई उतारै पार ॥ ३ ॥

हेली ॥ यह अवसर फिरि नाहिं हेली राम भजन करिलीजिये । यह तन क्षण क्षण जात हैरी अरी हेली ज्यों तरुवरकी छांह ॥ पिछिले दिन सब खोदियेरी अरीहेली कियो न हरिसोंसीर । रहे सो ऐसो जानिले ज्यों अंज़लिको नीर ॥ बचै सो लाहा लीजियेरी अरीहेली सतसंगतिके माहिं । हिलमिल हरियश गाइये दृढ़ताजीकी बाहिं ॥ जन्मसफल जब होयगोरी अरीहेली कुल पारायण होय।एकरु सौपीढ़ी तरैं रसना हरिगुण पोय॥यही स्मृति यहि वेद हैरी अरीहेली यहि साधन को भेव । चरणदास हियमें धरौ कहिया गुरु शुकदेव ॥ १ ॥ और न मीता कोय हेली समुझि सँभारो रामजी । जीवतकी रक्षा करैं अरीहेली मुये मुक्त करैं तोहिं ॥ अरु सब स्वारथके

सगेरी अरीहेली अन्त न कोई साथ । सुखमें सबही रल मिलैं दुखमें सुनै न बात ॥ छलकरि मनकी बूझलेरी अरीहेली पाछे डारै घात । तिनको तू अपनो कहै सो दोपी ह्वै जात ॥ भेद न अपनो दीजियेरी अरीहेली कोऊ कैसो होय। हिरदय की हिरदय रहै हरिही जानै सोय ॥ कै गुरु अपनो जानियेरी अरीहेली कै सतसंगत वास । गुरु शुकदेव बतावई देख चरणहीं दास ॥२॥ यह नाहिं अपना देश हेली ह्यांनहिं मनको दीजिये । अपने घरको चालियेरी अरीहेली करि योगिनिको वेप ॥ कानन मुद्रा योगकीरी अरीहेली ज्ञान जटा शिर-धारि । चोला भक्ति सोहावनो धीरज आसन मारि ॥ सेली सतवैरागकीरी अरीहेली शील विभूति रमाय । यतकी सींगी कीजिये बारम्बार बजाय ॥ कर्म जलाय धुनीकरोरी अरी-हली झूसौ दशवेंद्वार । अमल सुधारस पीजिये बाढ़ै रंग अपार ॥ इस बाने पियको मिलैरी अरीहेली सदा सुहा-गिनि होय । गुरु शुकदेव बतावई चरणदास वन सोय ॥३॥

अथ ज्ञान अंग ।

राग करषा ॥ साधो गुरु दया आपको यों विचारा । झूंठ अरु सांचको समुझिकरि मूलसों माया अरु ब्रह्मको किया न्यारा ॥ पांच अरु तीन गुण देहको ठाट है तासुको लगतहै सब विकारा । ब्रह्म अडोल अबोल अतोल है और निर्लिप्त हरि निर्विकारा ॥ जाके रूप नहिं रेख अरु नाम सूरत नहीं सोई निज तत्त्व है निराकारा । सुरति अरु निरति दोऊ जहां थकिरहैं तहां विन भान अतिहै उज्यारा ॥ बिना गुरुमुखी कोउ पहुँचि ह्वां ना सकै कनक अरु कामिनी घेरि मारा ।

चलै सोइ सन्त निर्वाण ह्वै शूरमा ज्ञान अरु ध्यानको कर अहारा ॥ आवा अरु गमनकी टूटि फांसी गई पाय गुरु भेद गयो तिमिर सारा। चरणदास शुकदेव मिले भर्म सब दलि मले होय रणजीत अविगति निहारा ॥१॥ साधो ब्रह्म दरियाव नाहिं वारपारा। आदि अरु मध्य कहुँ अन्त सूझै नहीं नेतिही नेति वेदन पुकारा ॥ मूल परकिर्त्ति सी बहुत लहरैं उठैं सकैको पाय गुण हैं अपारा। विरंचि महादेवसे मीन बहुतै जहां होय परगट कभी गोत मारा ॥ तासुमें बुदबुदे अण्ड उपजैं मिटैं गुरु दई दृष्टि जासों निहारा। छका छवि देखिकै अतिथिका वेपकरि जगे जब भाग निरखी बहारा ॥ मरजिया पैठिया थाह पाई नहीं थका ह्वांईरहा फिर न आया। गयाथा लाभको मूल खोया सबै भया आश्चर्य आपन गवाँयां ॥ पाल विन सिद्धि अरु निरा आनंदहै आपही आपहो निराधारा। चरणदास शुकदेव दोऊ तहां रलमिले तुरतहीं मिटिगया खोजसारा ॥ २ ॥

राग धनाश्री ॥ सहजगति ज्ञान समाधि लगाई। रूप नाम जहँ किरिया छूटी हू मैं रहन न पाई ॥ विन आसन विन संयम साधन परमातम सुधि पाई। शिव शक्ती मिलि एक भये हैं मन माया न हिराई ॥ मगनरहौं दुख सुख दोउ मेटै चाह अचाह मिटाई। जीवन मरण एक सों लागै तबते आप गवांई ॥ मैं नाहीं नख शिख हरि राजैं आदि अन्त मध्याई। शङ्का कर्म कौनको लागै काकी होय मुकताई ॥ सकल आपदा व्याधि टरी सब दुई कहां मो माहीं। सब हमहीं रामा नहिं पइये सब रामा हम नाहीं ॥ नित

आनंद कालभय नाहीं गुरु शुकदेव समाधी । चरणदास निज रूप समाने यह तौ समझ अगाधी ॥ १ ॥ निरन्तर अटल समाधि लगाई । ऐसी लगी टरै नहिं कबहूं करणी आश छुटाई ॥ काको जप तप ध्यान कौन को कौन करै अब पूजा । कियो विचार नेक नहिं निकसै हरि विन और न दूजा ॥ मुद्रा पांच सहजगति साधी आलस आसन सोई । सब रस भूल ब्रह्म जब शोधा आप विसर्जन होई ॥ भूलो बन्ध मुक्तिगति साधन ज्ञान विवेक भुलाना । आतम अरु परमातम भूला मन भयो तत गलताना ॥ अचल समाधि अन्त नहिं ताको गुरु शुकदेव बताई । चरणदासको खोज न पइये सागर लहरि समाई ॥ २ ॥

राग सोरठ ॥ हो अविगति जो जानै सोइ जानै । सबकी दृष्टि परे अविनाशी कोइ कोइ जन पहिंचानै ॥ रेख जहां नहिं खिंचि सकैरे ठहरै ना ह्वाँ राई । चीत चितेरा नासकैरे पुस्तक लिखा न जाई ॥ श्वेत श्याम नहिं राता पीरा हरी भाँति नहिं होई । अति असूंघ अदृष्ट अकथ है कहि सुनि सकै न कोई ॥ सर्वस में अरु सब देशनमें सर्व अंग सब-माहीं । कटै जलै भीजै नहिं छीजै हलै चलै वहनाहीं ॥ नहिं गाढ़ा नहिं झीना कहिये नहिं सूक्षम नहिं भारी । बाला तरुणा बूढ़ा नाहीं ना वह पुरुष न नारी ॥ नहीं दूर नहिं निकट हमारे नहीं प्रकट नहिं गूझै । ज्ञान आंखकी पलक उघारौ जब देखैरे सूझै ॥ वासों उत्पति परलय होई वह दोऊते न्यारा । चरणदास शुकदेव दया सों सोई तत्त्व निहारा ॥

राग मलार ॥ साधौ समुझौ अलख अरूपा। गुप्त सों गुप्त प्रकटसों परगट ऐसो है निजरूपा ॥ भीजै नहीं नीरसों वह तत ताहि शस्त्रनाहिं काटै। छोटा मोटा होय न कबहूं नहीं घटै नाहिं बाढ़ै ॥ पवन कभी नहिं सोखै ताको पावक तेज न जारै। शीत उष्ण दुख सुख नाहिं पहुँचै ना वह मरै न मारै ॥ इकरस चेतन अचरज दरशै जा सम तुल नहिं कोई। ता पटतर कोइ दृष्टि न आवै वही वही पुनि वोई ॥ भीतर बाहर पूरि रह्यो है अण्ड पिण्ड सों न्यारा। शुकदेवा गुरु भेद बतायो चरणहिंदासा वारा ॥

राग पर्ज ॥ गुरू हमारे अलख लखाया हो। देखतही ऐसे गये जल नोन घुलाया हो ॥ नखशिख ढूंढूं आप को कहिं आप न पाया हो। रामहिं रामा ह्वै रहा हम मूल गवाँया हो ॥ वरत करैं हम होय तौ सब नेम भुलायाहो। फल चाहनवारो गयो हारि हेरि हिराया हो। ज्ञाता मिटि ज्ञान मिटै अरु ज्ञेय मिटायाहो। शोच समझ सबहीगई चरणदास नशायाहो ॥

राग धनाश्री व बिलावल व सोरठ।

साधोभाई यह जग योंसत नाहीं। मीनपहार समुदबिच मिरगा खेत अकाशेमाहीं ॥ जलकी पोट कोट धूवाँको अखिल ब्रह्मको तीरं। बांझको पूत शींग शश्शा को मृगतृष्णा को नीरं ॥ स्वप्नको भूप द्रव्य स्वप्नेको अरु जंगलको द्वारं ॥ गणिका शील नाच भूतनको नारि सों ब्याहत नारं ॥ मावसको शशि रैनि को सूरज दूध नरन की छाती। यह सब कहनि कहावनि देखी चींटी लेभागी हाथी ॥ ऐसहि

झूंठ जगतसच नाहीं भेद विचारो पायो । चरणदास शुकदेव दया सों सांचहि सांच मिलायो ॥

राग रामकली ॥ सतगुरु अक्षर मोहिं पढ़ायो । लेखन लिखा न स्याही सेती ना वह कागज मध्य चढ़ायो ॥ ना लगमात न माथे विन्दी अरुण पीत नहिं काला । एँड़ा वेंड़ा टेढ़ा नाहीं ना वह आल जँजाला ॥ ताको देखि थकी सव करणी सवही साधन आगे । सिद्धैंभई भोरके तारे मुक्ति न दीखै आगे । जाके पढ़ पढ़न सव छूटे आशा पोथी फारी । मैंतो भया कर्म का हीना कहै सरस्वति ठाढ़ी ॥ गुरु शुकदेव पढ़ायो अक्षर अगम देश चटशाला । चरणदास जव पण्डित हूये धारि तिलक अरु माला ॥ १ ॥ वह अक्षर कोइ विरला पावै । जा अक्षरके लाग न विन्दी सतगुरुसे नहिं सैन वतावै ॥ क्षरही नाद वेद अरु पण्डित क्षरज्ञानी अज्ञानी । वांचन अक्षर क्षरही जानौ क्षरही चारौंवानी ॥ ब्रह्मा शेष महेश्वर क्षरही क्षरही त्रयगुणमाया । क्षरही सहित लिये अवतारा क्षर हांतक जहँ माया ॥ पांचौ मुद्रा योग युक्ति क्षर क्षरही लगै समाधा । आठौंसिद्धि मुक्तिफल क्षरही क्षरही तन मन साधा ॥ रवि शशि तारामंडल क्षरही क्षरही धरणि अकासा । क्षरही नीर पवन अरु पावक नरक स्वर्ग क्षर वासा ॥ क्षरही उत्पति परलय क्षरही क्षरही जाननहारा । चरणदास शुकदेव वतावैं निअक्षर है सवसों न्यारा ॥ २ ॥

राग भैरव ॥ सकल निरंतरपाया हरिको सकल निरंतर पाया । माटी भाँड़े खाँड़ खिलौने ज्यों तरुवरमें छाया ॥ ज्यों कंचन में भूषणराजे सूरत दर्पण माहीं । पुतली खम्भ

खम्भमें पुतली दुतिया तौ कछु नाहीं ॥ ज्यों लोहेमें जौहर परगट सूतहि तानेवाने । ऐसे राम सकल घटमाहीं विन सतगुरु नहिंजानै ॥ मेहँदी में रँग गन्ध फुलन में ऐसे ब्रह्मरु माया । जलमें पाला पालेमें जल चरणदास दरशाया ॥

राग ईमन ॥ सखीरी हिलमिल रहिया पीव । पुष्प मध्य ज्यों गंध विराजे पिंड माहिं ज्योंजीव ॥ जैसे अग्नि काठके अंतर लाली है मेहँदीव । माटी में भाँड़े हैं तैसे दूधमध्य ज्यों घीव ॥ शुकदेवा गुरु तिमिर नशायो ज्ञानदियो कर दीव । चरणदास कहैं परगट दरशो अमर अखंडितसीव ॥१॥ साधो अचरज निर्गुण रामका । नामर्य्याद ठिकाना नाहीं नाहीं द्वारा धामका ॥ मात पिता कुल गोत न वाके वेप नपुरुषा वामका । रूप न रेख नहीं कछु किरिया लेशनहीं ह्वां नामका ॥ शरवन लोचन रसनहिं नासा त्वचा न चोला चामका । आदि न अन्त न अरधै उरधै नाहिं ठिंगना नाहिं लाँवका ॥ देखा सुना कहा नहिंजाई नहिं धौला नाहिं श्यामका चरणदास शुकदेव सुझावै नहिं विनशै नहियामका ॥ २ ॥

राग सारंग ॥ घटघट में रमता रमिरह्यो । चेतन तजै भजै जल पाहन मूरख भ्रममें भ्रमिरह्यो ॥ एक अखण्ड रह्यो सब व्यापक लख चौरासी समरह्यो । प्रगट भानु ऐसे हरि दरशै संपुटमें नहिं खमरह्यो ॥ आपाजानि भूल फिर आपन नख शिखसों नाहिं हमरह्यो । चरणदास शुकदेवहि रलगयो वचन विलास न गमरह्यो ॥

राग मालश्री ॥ तेरीगति अपरम्पार पार कैसे पइयेहो ॥ योग युक्ति करि थुगताहारे उनहूँ सुधि नहिं पाई । चित बुधि

मनकी गमि जहँ नाहीं सुरति थकै थकि जाई ॥ नेति नेति कहि निगम पुकारैं कहु कोउ कैसे पावै । ध्यान न लागै ज्ञान न सूझै अनभयहू फिरिआवै ॥ निर्गुणरूप निरालंभ आसन केहि विधि लखि है कोऊ । ब्रह्मा शेश महेश्वर थाके सकल शिरोमणि सोऊ ॥ वाणी शब्द रहित तुरियापद गुरु शुकदेव सुनायो । चरणहिंदास समझ सब विसरी खोजत खोज हिरा-यो॥१॥ वा विन और न कोय वही गुलजारीरे॥ जग फुलवारी फूलि रही है नाना रंग अनंत । आदि वृक्ष ताकी सब लीला नितही रहत वसंत ॥ पांच डार पँचरंग हैं रे शाखा बहुत विचार । अद्भुत गति कछु कहत न आवै फूले पुष्प अपार ॥ पात फूल फल सोहनेरे ह्वै ह्वै छिपि छिपि जाहिं । निश्चल द्रुम इक रस रहैरे उत्पति परलय नाहिं ॥ विन सींचे विन मूल कोरे अचरज अधिक सुवास । जित तित खिलो शुकदेव हैरे नहीं चरणहींदास ॥ २ ॥

राग विहागरा ॥ तेरे बहुत रूप बहु वानी । तूही एक अनेक भयो है जिन जानी जिन वानी ॥ रवि शशि विष्णु महेश्वर तूही तूही चतुर विनानी । ऋषि मुनि देवत सिद्ध तुही है तूही ब्रह्मज्ञानी॥ तुमविन दूजो और न पइये गावत वेद पुरानी । कोउ कहै मायाहै दूजी तौ वह कितसों आनी ॥ तू आकाश पवन अरु पावक तू धरती तू पानी । तीनौगुण तूही सों निकसे तोही माँहिं समानी ॥ देश और तूही घर आयो तू इष्टी तू ध्यानी । तूही रास तुहि रास खिलइया तू ठाकुर ठकुरानी ॥ तूही गुरु शुकदेव विराजै चरणदास सिख मानी ।

गुप्त प्रकट सब तूही तू है अद्भुत लीला ठानी ॥ १ ॥ यह सब एक एकही होई । जाके ऐसी निश्चय आवै जीवनमुक्ता सोई ॥ जैसे मनका डोर गुहे है काहू माला पोई । एकहि श्वास सकल घट व्यापक भूलो कहै जुदोई ॥ हमहूं वही वही जग सारा शिव ब्रह्मादिक वोई । एकहि ब्रह्म अचल अविनाशी और न दुतिया कोई ॥ जिन समझा तिन आनँद पाया विन समझे दिया रोई । चरणदास नाहिं हरिही हरि हैं सब मैं मैं मैं खोई ॥२॥ जबतें एक एक करि माना । कौन कथै को सुननेहारा कोहै किन पहिंचाना ॥ तब को ज्ञानी ज्ञान कहाँ है ज्ञेय कहां ठहराना । ध्यानी ध्येय जहां नहिं पइये तहां न पइये ध्याना ॥ जब कहँ वंध मुक्त भुगतइया काको आवन जाना । को सेवक अरु कौन सहायक कहां लाभ कित हाना ॥ जब को उपजै कौन मरत है कौनकरै पछिताना । को है जगत जगत को कर्त्ता त्रयगुणको अस्थाना ॥ तू तू तू अरु मैं मैं नाहीं सबही दे विसराना । चरणदास शुकदेव कहां है जो है सो भगवाना ॥ ३ ॥

राग केदारा व सोरठ ॥ सो लखि हम निर्गुण झरि ताई । जहां न वेद कितेब पहुँचै नहीं ठकुराई ॥ चारवर्ण आश्रम नहीं नहीं कर्मना काई । नरक अरु वैकुंठ नाहीं नहीं तन ताई ॥ प्रेम अरु जहँ नेम नाहीं लगन ना लाई । आठ अँग जहँ योग नाहीं नहीं सिद्धाई ॥ आदि अरु जहँ अन्त नाहीं नहीं मध्याई । एक ब्रह्म अखण्ड अविचल माया ना राई ॥ ज्ञान अरु अज्ञान नाहीं नहीं मुक्ताई । चरणदास शुकदेव सम तहँ दुई जरिजाई ॥

राग सोरठ व नट व बिलावल ।

सोनैना मोरे तुरिया ततपद अटके । सुरति निरतिकी गमनहिं सजनी जहां मिलन को लटके ॥ भूलो जगत वकत कछु औरै वेद पुराणन ठटके । प्रीति रीतिकीसार न जानै डोलत भटके भटके ॥ किरिया कर्म भर्म उरझेरे एमायाके झटके । ज्ञान ध्यान दोउ पहुँचत नांहीं राम रहीमा फटके ॥ जग कुलरीति लोक मर्य्यादा मानत नाहीं हटके । चरणदास शुकदेव दयासों त्रैगुण ताजिकै सटके ॥

राग सोरठ ॥ है कोइ जानै भेद हमारा । हम सबमें हम सब माहीं मैं व्यापक मैं न्यारा ॥ हम अडोल हम डोलत निशिदिन हम सूक्षम हमभारा । हमहीं निर्गुण हमहीं सरगुण हमहीं दश अवतारा ॥ हमहीं एक बहुत हो खेले हमहीं सकल पसारा । हमहीं ज्ञान ध्यान पुनि हमहीं हमहीं धारण हारा ॥ हमहीं आदि अन्त पुनि हमहीं हमहीं रूप अपारा । महाराज हम वार पारहैं हमहीं जग उजियारा ॥ हमहीं गुरु शुकदेव विराजैं हमहिं तरैं हम तारा । चरणदास घट हमहीं बोलैं समझै समझनहारा ॥

राग काफी—मैं कोइ अजब हूं मेरा अजब तमाशा जोर । मेरेहि पिण्ड खण्ड ब्रह्मण्डा मैं पूरण सब ठौर ॥ मैं ब्रह्मा मैं विष्णु महादेव मैं कमला मैं गौर । मैं रवि चन्द्र इन्द्र इंद्राणी मैं गर्जत घनघोर ॥ मैं गुण तीनि पांच तत्त्व मैंहीं मैं दश दिशि चहुँओर । मैं निहरूप धरे नानाविधि निशिदिन करत किलोर ॥ मैं गुप्ता मैं मुक्ता परगट मैंहीं भर्म झकोर । चरणदास मो विन नहिं रंचक दूजा कोई और ॥

राग विहागरा ॥ गुप्तमतेकी वातरी जानै सोइजानै । पशू ज्ञान अजमतको देखो अनभुस एकै सानै ॥ चलनीकी गति सबकी मतिहै मनमें अधिक सयानै । गहि असार सारको डारै निश्चल बुधि नहिं आनै ॥ हूं गूँगो जग को नहिं सूझै सैन नहीं कोइ मानै । कासों कहौं अरु को सुनै सजनी कहूं तौको पहिंचानै ॥ सत्य ब्रह्मको जानत नाहीं मूरख मुग्ध अयानै । चरणदास समुझत नहिं भोंदू फिरि फिरि झगरो ठानै ॥ १ ॥ सुनिहो मुक्त मुक्त कहूं तेरी । वेद पुराण जँजीर जरी है सवहीगत मारग मिलि घेरी ॥ तैंतौ मुक्ति बहुतकी कीन्हीं जिन पापन उरझेरी । बन्धन सकल छुटाय काटूं जो आधीन होय तू मेरी ॥ स्वर्ग पताल ठौर नहिं तोको डोलत पेरी पेरी । अचल पुरुष सों जाय मिलाऊं तोहिं जानिं साधनकी चेरी ॥ शुकदेव गुरु जब किरपा कीन्ही तू नाहीं कहुं हँरी । चरणहिंदास वासना तजिकै आपहि आप करी है निवेरी ॥ २ ॥

राग विहागरा व विलावल ॥ अब हम ज्ञान गुरूसे पाया । दुविधा खोय एकता दरशी निश्चल ह्वै घर आया ॥ हिरदा शुद्ध हुआ बुधि निर्मल चाह रही नहिं कोई । ना कछु सुनौं न परशूं बूझूं उलटि पलटि सब खोई ॥ समझ भई जब आनँद पाये आतम आतम सूझा । सूधाभया सकल मन मेरो नेक न कहूं अरूझा ॥ मैं सबहुनमें सब मोहूंमें सांच यही करि जाना । यही वही है वही यही है दूजा भाव मिटाना ॥ शुकदेवाने सब सुख दीन्हें तिरपत होय अघायो । चरणदास निकसा नाहिं रंचक परमातम दरशायो ॥

राग बिलारविहागरा—गुरु बिन कौन डुबोवन हारा। ब्रह्मसमुद्में जो कोइ बूड़ो छुटिगये सकल विकारा ॥ सिन्धु अथाह अगाध अचल है जाको वार न पारा। वाकी लहरि मिटत वाहीमें कौन तरै को तारा ॥ त्रयगुण रहत सदाही चेतन ना काहूं उनहारा। निराकार आकार न कोई निर्मल अति निर्धारा ॥ अकरी अलख अरूप अनादी तिमिर नहीं उजियारा। तामें अण्ड दिपत ऐसे करि ज्यों जल मध्ये तारा ॥ काल जालभय भूती नाहीं तहां नहीं भ्रमभारा। चरणदास शुकदेव दयासों बूड़िगयेही पारा ॥

राग सोरठ व आसावरी॥ सतगुरु निजपुर धाम बसाये। जितके गये अमर ह्वै बैठे भवजल बहुरि न आये ॥ योगी योग युक्ति करि हारे ध्यानी ध्यान लगावें। हरिजन गुरुकी दया बिना यों दृष्टि नहीं दरशावें ॥ पण्डित मुण्डित चुंडित ढूंढें पढि सुनि वेद पुराने। जासों वै सब पायो चाहैं सो वै नेति बखाने॥ जंगम यती तपी संन्यासी सबही वह दिशि धावें। सुरति निरतिकी गम जहँ नाहीं वे कहो कैसे पावें॥ देश अटपटा बेगम नगरी निगुरे राह न पाया। चरणदास शुक-देव गुरूने किरपा करि पहुँचाया॥

राग सोरठ॥ हमारे गुरु हरि नगर दिखायाहो। उलटी बाट घाट जहँ नाहीं निजपुर वास बसायाहो। चन्द्र न सूर गगन नहिं तारे राति दिवस नहिं पायाहो। नहीं तिमिर जहँ चांदनि नाहीं नहीं धूप नहिं छायाहो ॥ मनसों अगम सुगम नहिं बुधि सों अनभय अन्त न लायाहो। और कहो

कैसे करि पावै निगम नेति जेहि गायाहो ॥ है प्रत्यक्ष उदय सूरज ज्यों संपुट नाहिं छिपायाहो । विन गुरु गमके अंजन आँजे दृष्टि नहीं दरशाया हो ॥ जनक जहाँ शुकदेव विराजैं चरणदास मिलि धायाहो । जगकी व्याधि लगन नहिं पाई किरपा करि पहुँचायाहो ॥ १ ॥ हमारे गुरु मारग बतलाया हो । आनदेवकी सेवा त्यागी अज अविनाशी ध्याया हो ॥ हरि पूरण परशो निश्चय सों छांड़ो झूंठी मायाहो । इकरस आतम नितही जानौ क्षणभंगी है कायाहो ॥ चाहौ मुक्तकरै तन किरिया भर्म अधिक भर्मायाहो । बोकरि पेड़ बबूल शूलके आँव कहो किन पायाहो ॥ अपना खोज किया नहिं कबहूं जल पाहन भटकाया हो । जैसे फल सेवत सेमरको कीर अधिक पछिताया हो ॥ ज्ञानपदारथ कठिन महानिधि विन भेदी किन पायाहो । चरणदास घट सोहं सोहं तामें उलटि समायाहो ॥ २ ॥

राग काफी ॥ इन नैनन निराकार लहा । कहन सुननकी कौन पतीजै जान अजान है सहज रहा ॥ जित देखो तित अलख निरंजन अमर अडोल अबोल महा । ज्योति जगत विच झिलमिल झलकै अगम अगोचर पूरिरहा ॥ अलखलखा जब वेगमहूवा भर्मकोट जब तुतंढहा । सर्वमयी सब ऊपर राजै शून्य स्वरूपी ठोसठहा ॥ जीवनमुक्तभया मनमेरा निर्भय निर्गुण ज्ञानमहा । गुरु शुकदेव करी जब किरपा चरणदास सुखसिंधु वहा ॥

राग आसावरी ॥ जबसों मन चंचल घर आया । निर्मल

भया मैल गये सगरे तीरथ ध्यान जुन्हाया ॥ निर्वासीहै आनँद पाये या जगसों मुखमोड़ा । पांचो भईं सहज वश मेरे जब इनका रस छोड़ा ॥ भय सब छूटे अबको लूटै दूजी आश न कोई । सिमिटि सिमिटि रहा अपने माहीं सकल विकल नहिं होई ॥ निजमनहूवा मिटिगा दूवाको वैरीको मीता । बंधमुक्तका संशय नाहीं जन्म मरणकी चीता ॥ गुरुशुकदेव भेव मोहिं दीयो जबसों यहगति साधी । चरणदाससों ठाकुर हूये बुटिगये वादविवादी ॥ १ ॥ हमतौ आतम पूजाधारी । समझि समझि करि निश्चय कीन्हीं और सबन परभारी ॥ और देवल जहँ धुँधली पूजा देवत दृष्टि न आवै । हमरा देवत परगट दीखै बोलै चालै खावै ॥ जित देखौं तित ठाकुरद्वार करौं जहां नितसेवा । पूजा की विधिनीके जानौं जासों पर-सनदेवा ॥ करि सन्मान स्नान कराऊं चन्दन नेह लगाऊं । मीठे वचन पुष्प सोइ जानों ह्वैकरि दीन चढ़ाऊं ॥ परसन्न करिकरि दर्शन पाऊं बारबार बलिजाऊं । चरणदास शुकदेव बतावैं आठपहर सुख पाऊं ॥ २ ॥ ये मन आतम पूजाकीजे जितनी पूजा जगके माहीं सबहुनको फल लीजे ॥ जो जो देही ठाकुरद्वारे तिनमें आप विराजैं । देवलमें देवतहै परगट आछी विधिसों राजैं ॥ त्रयगुण भवन सँभारि पूजिये अनरस होननपावे । जैसेको तैसाही परसो प्रेम अधिक उपजावे ॥ और देवता दृष्टि न आवै धोखे को शिरनावै । आदि सनातन रूप सदाही मूरख ताहि न ध्यावै ॥ घट घट सूझै कोइ यक बूझै गुरु शुकदेव बतावैं । चरणदास यह सेवन कीन्हें जिवन्मुक्त फल पावैं ॥ ३ ॥

राग विहागरा ॥ सब जग पांचतत्त्वका उपासी । तुरिया तीत सबनसों न्यारा अविनाशी निर्वासी ॥ कोई पूजै देवल मूरति सो पृथ्वीतत्त्व जानौं । कोई न्हावै पूजै तीरथ सो जलको तत्त्व मानौं ॥ अग्निहोत्र अरु सूरज पूजा सो पावक तत्त्व देखा । पवन खैंचि कुंभकको राखैं वायुतत्त्वको लेखा ॥ कोई तत्त्वाकाशको पूजै ताको ब्रह्म बतावै । जो सबके देखनमें आवै सो क्यों अलख कहावै ॥ परमतत्त्व पांचौंसे आगे गुरु शुकदेव बखानै । चरणदास निश्चय मन आनौं विरला जन कोइ जानै ॥

राग जयकरी ॥ ब्रह्म अरूप धरे वहुरूप कहौ कोउ कैसो स्वरूपक है । सबमें है सबसे है न्यारा कोई भेद अनूपल है ॥ कहुँ कहुँ मूरख गुंगभयो है कहुँ कहुँ वक्ता वेदपढ़ै । कहुँ कहुँ राव रंक दुख सुखहै कहुँ कहुँ भोगी भोग करै ॥ कहुँ कहुँ राधेरूप बनावै कहुँ कहुँ मोहन रास रचै । मुड़ि मुड़ि जावै फेरि मनावै प्यार प्रीतिके चावचहै ॥ कहुँ कहुँ सूरति मोहनि मूरति कहुँ कहुँ लालन फंदपरे । कहुँ कहुँ मधुवा कहुँ कहुँ प्याला कहुँ कहुँ पीवत प्रेमभरे ॥ कहुँ कहुँ ज्ञानी नानावानी कहूं भरम में भूलिरहे । शुकदेवा गुरुहो समझावैं चरणहिंदासा चरणगहे ॥

राग मंगलवासु व बिलावल ॥

कर्म करि निष्कर्म होवै फेरि कर्म न कीजिये । भूलिकै कोइ कर्म्म साधै उलटि कर्म न दीजिये ॥ कर्म त्यागै जगै आतम यह निश्चय करि जानिये । जब निर्भय पद सुलभ पावै सांच

हियमें आनिये ॥ सांचहियमें राखि अवधू नाम निर्गुण नित-जपौ । अग्नि इन्द्रिय कर्म लकडी पंच अग्नी अस तपौ ॥ जैसे टूट गहनो खोज मेटै होय सोना अतिसुखी । ऐसे योग भक्ति वैरागसेती कर्म काटै गुरुमुखी ॥ जासों मिटै आपा आप स-हजै ब्रह्मविद्या ठानिये । गुरू शुकदेव युक्ति भाषै चरणदास पिछानिये ॥

राग सोरठ ॥ साधो भर्मो यह संसारा । गतमति लोक बड़ाई उरझे कैसे हो छुटकारा ॥ भर्म पड़े नानाविधि सेती तीरथ बर्त्त अचारा । देह कर्म अभिमानी भूले छूँछपकरि तत-डारा ॥ योगीयोग युक्तिकरि हारे पण्डित वेद पुराना । षट दर्शन पग आप पुजावैं पहिरि पहिरि रँगवाना ॥ जानत नाहिं आप हम कोहैं कोहै वह भगवाना । को यह जगत कौनं गति लागै समझै ना अज्ञाना ॥ जाकारण तुम इत उत डोलौ ताको पावत नाहीं । चरणदास शुकदेव बतायो हरि नारायण माहीं ॥

हेली ॥ यह अचरजकी बात हेली कौन सुनै कासों कहूं । दूर हुतो जब चाव थोरी अरी हेली अब नाहिं छोड़ै साथ ॥ जहँ देखौं तहँ सांवरोरी अरी हेली तन मन रहो समाय । अन्त-र्यामी एक है द्वितिया ना ठहराय ॥ मत भटकै भय भर्म मेरी अरी हेली उलटि आपको देख । तोहीमें हरि बसत हैं गावत वेद विशेख ॥ जब तू मोसी होयगीरी अरी हेली तब समझैगी बात । गूंगेको स्वप्नो भयो यह सुख कहो न जात ॥ जो चाहै हरिसों मिलोरी अरी हेली गुरु शुकदेव मनाव । चरणदास सखीने कह्यो आप आपमें पाव ॥ १ ॥ हरि पाये फल देख

हेली पावतही खोई गई । जात अटक कुल खोय गयेरी अरी हेली खोये वरण अरु वेष ॥ जन्म मरण सब खोगयेरी अरीहेली बंध मुक्त गये खोय । ज्ञान अज्ञान न पाइये नेम धर्म नहिं होय ॥ लाज गई अरु भय गयेरी अरी हेली अरु साथहि गई उपाधि । आशा अरु करणी गई खोये वाद विवाद ॥ मैं नाहीं हरिही रहेरी अरी हेली तू दौरत हरि ओट । पावैगी जब जानिहै हरि पावनके खोट ॥ गुरु शुकदेव सुनाइयारी अरी हेली चरणदास मन शोच । सब बातनसों जायगी रहै न तेरा खोज ॥ २ ॥ वह घर कैसा होय हेली जितके गये न बाहुरे । अमरपुरी जासों कहैरी अरी हेली मुक्तधाम है सोय ॥ विकट घाट वा ठौरकोरी अरी हेली शठ नहिं पावैपंथ । गुरुमुख ज्ञानी जाहिं हैं हरिसों सन्मुख संत ॥ त्रयगुण मत पहुँचै नहीं री अरी हेली छहौ ऋतु ह्वाँ नाहिं । रवि शशि दोऊ ह्वाँ नहीं नहीं धूप नाहिं छाहिं ॥ अवधि नहीं काया नहींरी अरी हेली कलह कलेश न काल । संशय शोक न पाइये नहिं मायाको जाल ॥ गुरु शुकदेव दया करैरी अरी हेली चरण-दास लहै देश । विन सतगुरु नहिं पावई जो नानाकर भेश ॥

हेला ॥ दृष्टि उठाकर देख हेला ब्रह्म अनादि अरूप है । आदि नहीं अन्तौ नहींरे हेला आप सनातन एक ॥ नहिं धौला काला नहींरे हेला हरा पीत नाहिं लाल । तीनों गुणसे है परे नहीं पुरुष नहिं बाल ॥ शस्तर छेदि सकै न रे अरे हेला पावक सकै न जारि । नीर भिजोय सकै नहीं ताहि न व्यापै वारि ॥ रेख जहाँ नहिं खिंचि सकैरे अरे हेला राई ना ठह-

राय । लेप जहाँ नहिं चढ़ि सकै सकै नहीं कोइ पाय ॥ नहीं दूर निकटौ नहीं रे अरे हेला नहीं प्रगट न है गूप । गुरु किरपासों पाइये सुन्दर बहुत अनूप ॥ है अडोल डोलै नहीं रे अरे हेला है अबोल नहिं बोल । देश कालसों रहित है और कहा कहुँ खोल ॥ जैसा था सोइ आज है रे अरे हेला नया पुराना नाहिं । जासों यह जग है भरो जग वाहीके माहिं ॥ शक्ति घनी लीला घनी रे अरे हेला घने नाम बहुरूप । त्रयदेवासे बहुत हैं इन्दरसे बहुभूप ॥ चन्द्र घने सूरज घनेरे अरे हेला घने पिण्ड ब्रह्मण्ड । सब कुछ आपहि है रह्यो निर्मल अचल अखण्ड ॥ जनक दियो शुकदेवको रे अरे हेला उन मोको कहिदीन । दरश भयो चरणदासको सदा रहौं लवलीन ॥ १ ॥ अचरज अलख अपार हेला वाकी गति नहिं पाइये । बहुनिखेद जोपै करे रे अरे हेला तौ जावैगा हार ॥ वाणी थकि बुधिहू थकैरे अरे हेला अनभय थकि थकि जाय । ब्रह्मादिक सनकादिकहू नारद थकि गुण गाय ॥ वेद थके अरु व्यासहूरे अरे हेला ज्ञानी थके अरु ज्ञान । शंकरसे योगी थके करि करि निर्मल ध्यान ॥ बहुतक कथि कथिही गये रे अरे हेला नेक न लिपटी बुद्धि । वाचक ज्ञानी कहत हैं हमने पायो शुद्धि ॥ पांचौ इन्द्रियनसों लखैरे अरे हेला ताको सांच न मानि । जो जो इन सों देखिये तिनकी निश्चय हानि ॥ गुरु शुकदेव सुनावईरे अरे हेला समझ चरणहींदास । अपनेही परकाशमें आप रहा परकास ॥ २ ॥

राग हिंडोलना ॥ झूलत गुरुमुखसंत अलख हिंडोलने ॥

नाभि भ्रुकुटीखंभ रोपे सोहं डोरी लाय । सुरति पटरी बैठि सजनी क्षण आवै क्षण जाय ॥ मन मनसा दोउ लगे झूलन धारणा लै संग । ध्यान झोके देत सजनी भलो लागो रंग ॥ सखिसहेली सिमिटि आई पींग पींगन नेह । बूंद आनँद सब भिगोई सघन बरसै मेह ॥ चार वाणी खड़ीगावें महा रँगीली नार । मुक्तिचारौ मालिनी जहँ गुहि गुहि लावैं हार ॥ त्रिगुण बकुला उड़न लागे देखि बादल लै । संग पियके सदाझूलैं ताते लागै न भै ॥ चरणदासको नित झुलावैं ईश झुलैं शुक-देव । शिव सनकादिक नारद झूलैं करि करि गुरुकी सेव ॥

अथ सर्वअंग ।

राग मंगल ॥ मन रोगी भयो पिंग कि कुबुधि विकारसों । बाढ़ी व्यथा अपार लोभके भारसों ॥ कर्म्म भरो मतिहीन छीन छलसों छयो । पांच पचीसौ घेरि मोह मदने दह्यो ॥ कैसे यह दुखजाय कि पूँछन को चल्यो । तब पूरण गुण-वन्त वेद सतगुरु मिल्यो ॥ करगहि कियो विचार कह्यो समझायकै । जो कछु तेरे रोग सो देहुँ बतायकै ॥ महापाप की ताप चढ़ी तोहिं धायकै । संशयको सनिपात मिल्यो है जायकै ॥ विषय विषम ज्वर रह्यो जु हिये समायकै । तृ-ष्णाकी वहु प्यास रही मन भायकै ॥ सतसंगतिको पक्ष कबौं नाहीं कियो । इन्द्रिनके रस रोग बिगारि सबही गयो ॥ कुसतसंग संग्रहणी जियमाहीं भई । ममताको मल बढ़ो भूख ताते गई ॥ काम क्रोधको कुष्ठ सकल तनु छायकै । शोक शूलको मूल करेजे आयकै ॥ माया पवन झकोरसों सूजन

बहुत है । त्रयगुणके त्रयदोप बात वह को कहै ॥ चिन्ताही की चीस उठै दिन रातही । अति निन्दासे नींद गई ता साथही ॥ शीश गुमान पिराय दरद हिंसा घनो । कलह कल्पना भर्मसों रहतो उनमनो । औरौ बड़ी उपाधि बढ़ै तेरी देहमें । भीजि रह्यो है शरीर पसेव सनेह में ॥ इन रोगनकी औषध देहुँ सुनायकै । भिन्न भिन्न मैं कहौं तोहिं समुझायकै॥ कर्म्म करेजवा तोड़िकै सत्य गिलोयले । जतही की अजवायन आनि मिलोयदे ॥ चित्त चिरैता न्याय पीत पीपर भली । नेम नोन सैंधेकी नीकीसी डली ॥ हितके बर्तन माहीं तिन्हैं भिजोयके । परमप्रेम जल तामें डारि समोयदे ॥ शील शिलापर पीसो छानि उमंगसों । पीवतही सब रोग नशैंगे अंगसों ॥ शुद्ध सुदर्शन चूरण हैगो स्वादही । ताके पाये जाय जगतकी व्याधही ॥ दया क्षमा सन्तोष यही माजून है । होय अधिक आनंद तत्त्व पदको लहै ॥ गुरु शुकदेव बतावैं औषध सार है । चरणदास जो खाय कष्ट कोइ ना रहै ॥

राग धनाश्री ॥ मनमें दीरघ भये विकारा । सतगुरु साहब बैद मिले बिनु कटै न रोग अपारा ॥ त्रयगुणके त्रयदोष पगो है काम क्रोध ज्वर जारा । तृष्णा वायु उठी उर अन्तर डोलत द्वारहि द्वारा ॥ विषय वासना पित कफ लागो इन्द्रिनके सुख सारा । सत्संगति रस करवा लागे करत न अंगीकारा ॥ सत पुरुषनको कहा न मानैं शील क्षमा नहिं धारा । रसना स्वाद तजो नहिं मूरख आपनपौ न सँभारा ॥ चरणदास शुकदेव मिले जब औषध ज्ञान विचारा । तनमनको सब रोग मिटायो आवागमन निवारा ॥

राग केदारा—भाईरे विषमज्वर जग व्याधि। गुरू हमारे दई औषध खाय रहनी साधि॥ शुद्ध चूरण है सुदरशन निबल लखि मोहिं दीन। खात तन के कष्ट नाशैं रोग मन ह्वै क्षीण॥ ज्ञान योगरु भक्ति त्रिफला धारणा नैपाल। रहै सतसंगति भवनमें आश लगै न ब्याल॥ कनक कामिनि पथ बतायो भूलि कर न अहार। अति अजीरण होत इनते बढ़त विकट बिकार॥ चरणदास शुकदेव कहिया ओषधी निज सोय। विषम वेदन होय भारी जाहि क्षण में खोय॥

गीत सावनके गावनेका॥ सखी सजनी हे तेरो पिया तेरे पास। अरी बौरी इत उत भटकी क्यों फिरैजी सखी स-जनी हे सुरति निरति कर देख॥ अरी बौरी अपने महल रंग मानिये जी सखी सजनी हे मान अहं सब खोय। अरी बौरी यह यौवन थिर ना रहै जी सखी सजनी हे बालम सन्मुख होय। अरी बौरी पिछली अरु सब खोइये जी॥ सखी सजनी हे पिया मिलन को री साज। अरी बौरी न्हाय शिंगार बना-इये जी सखी सजनी हे चित चौकी धराय॥ अरी बौरी ना-यन सुमति बोलाइये जी। सखी सजनी हे सचरचा अग्नि ज-राव॥ अरी बौरी नीर गरम करि न्हाइये जी सखी सजनी हे योग उबटनो लगाव। अरी बौरी कर्मको मैल उतारियेजी सखी सजनी हे करणी कँगही बहाव॥ अरी बौरी वेणी मुक्ति गुधाँइयेजी सखी सजनी हे गुरूके चरण चित लाव। अरी बौरी सतसंगति पग लागियेजी॥ सखी सजनी लाज सिंदूर निकासि। अरी बौरी खोलि शृंगार बनाइयेजी सखी सजनी

हे नवधा भूषण धार ॥ अरी बौरी जासों पिया रिझाइयेजी । सखी सजनी हे प्रीति को काजल आँज ॥ अरी बौरी प्रेम की मांग सँवारि येजी । सखी सजनी हे बुधि बेसारि साजि-लेहि । अरी बौरी पान विचारि चवाइये जी सखी सजनी द-याकी मेहँदी लगाव ॥ अरी बौरी साञ्चो रंग न उतरैजी स-खी सजनी हे धीरज चूनरि लाल । अरी बौरी नख शिख शील शृंगारिये जी सखी सजनी हे काम क्रोध तजि लोभ ॥ अरी बौरी मोह पीहरसों जिन करौजी सखी सजनी हे पांच सहेली साथ । अरी बौरी इनको संग न लीजियेजी सखी सजनी हे चालौ पियाके रे पास ॥ अरी बौरी सुखमन बाट सोहावनी जी सखी सजनी हे गगन मण्डल पगधार ॥ अरी बौरी पीय मिलैं दुख सब हरैं सखी सजनी हे निर्गुण सेज बिछाव । अरी हिलि मिलि कैं रँग मानिये जी सखी स-जनी हे पावैगी अटल सुहाग । अरी बौरी अजर अमर घर निर्मलेजी । सखी सजनी हे गुरु शुकदेव अशीश अरी बौरी चरणदास मनसा फलै जी ॥ १ ॥ भागीसाथन हे इह झूलैरी मतझूल ॥ अरी हेली भर्म भूमि या देशकीजी भागीसाथनहे । बदला माया कोरीरूप अरी हेली कुमति बूँद जित तित परैंजी भागीसाथनहे ॥ कर्म वृक्षकी वेलि अरी हेली वारीफल लगि विष भरेजी भागीसाथनहे । दुर्मति हरी हरी दूब अरी हेली छलरूपी फूले फूल हैं जी भागीसाथनहे॥त्रयगुण बोलत मोर अरी हेली दम्भ कपट बकुला फिरैंजी भागीसाथनहे । पाप पुण्य दोउ खम्भ अरी हेली नाक स्वर्ग झोटा लगैजी भागीसाथनहे ॥ मैं मेरी बँधी डोर अरी हेली तृष्णा पटरा

जित धरीजी भागीसाथ नेहे । झूलत चावहि चाव अरी हेली नरनारी सब झुलईजी भागीसाथनहे ॥ तपसी योगी गये झूल अरी हेली फल चाहत अरु कामनाजी भागीसाथनहे । आशा झुलावत नारि अरी हेली पांच पचीस मिलि गावईजी भागी-साथनहे ॥ या जगमें ऐसी झूल अरी हेली चरणदास झूलत बचेजी भागीसाथनहे । इत ताजि उत कोरी चाल अरी हेली अमर नगर शुकदेवकेजी ॥ २ ॥

राग बरवा ॥ साधौंरी संगत भवँरा दुर्लभ पइयेलीजेजी तनमन बेंचि भौंराजी । जी मानै साधौंरी संगत भवँरा प्यारीही लागै । आदि अनादी भवँरा कौने लखावे अपने सद्गुरुजी संतोष भवँराजी ॥ जी मानै नरक निवारण सत-गुरु प्यारीही लागै । आपसकी चर्चा भवँरा कौने सुनावे अपने गुरु भाई जी संतोष भवँराजी । जी मानै गुरुका तौ छौना भई या प्यारोही लागै ॥ आछे आछे लक्षण भवँरा कौने जुलावे अपने रहनीजी सन्तोष भवँराजी ॥ जी मानै कर्म छुटावन रहनी प्यारीही लागै । आछे आछे परचा भवँरा कौने दिखावे अपनी मुक्ति सन्तोष भवँराजी ॥ जी मानै काया जीतावन करणी प्यारीही लागै । आछी आछी वाणी भवँरा कौने उठावे अपने अनमैजी सन्तोष भवँराजी ॥ जी मानै बुधिकी तौ मांजन अनभै प्यारीही लागै । चरणदास को तुरिया भवँरा कौने बसावै ॥ अपने शुकदेवजी सन्तोष भवँराजी । जी मानै सिरका तौ छत्तर शुकदेव प्या-रोही लागै ॥

राग विलावल ॥ अजव फकीरी साहवी भागनसों पइये । प्रेम लगा जगदीशका कछु और न चहिये ॥ राव रंकको सम गिनै कछु आशा नाहीं । आठपहर सिमटेरहैं अपनेही माहीं ॥ वैर प्रीति उनके नहीं नहिं वाद विवादा । रूठेसे जगमें रहैं सुनैं अनहद नादा॥जो वोलैं तौ हरिकथा नहिं मौनैराखैं । मिथ्या करुवा दुर्वचन कवहूं नहिं भाखैं ॥ जीव दया अरु शीलता नखशिखसों धारैं । पांचो चेले वश करैं मनसों नहिं हारैं ॥ दुख सुख दोनोंके परे आनँद दरशावै । जहां जाय अस्थल करैं माया पवन न जावै ॥ हरिजन हरिके लाड़िले कोइ लहै न भेवा । शुकदेव कही चरणदाससों करि तिनकी सेवा ॥१॥ ऐसाहो दरवेशही जगको विसरावै ।ईमान सवूरी सांचसों सोई वकसा जावै ॥ जन ज़र और ज़मीनको दिलमें नहिं लावै । फिक्र फकीरीको वुरा वह फिक्र छुटावै ॥ फेफाकेका गुण यही राज़क करै याद । काफ कैनायत सुख घना आनन्द अगाधा ॥ रेरयज़ात वलवान् है हरिको अपनावै । आखिरको दीदारही निश्चय करि पावै ॥ एज़िदको धारे रहै रहै सब सों नीचा । शुकदेव कही चरणदास सों पावै पद ऊंचा ॥२॥ वह वैरागी जानिये जाके राग न दोष । निर्बंध ह्वै जग में फिरै चाहै सिद्ध न मोक्ष ॥ पांचनको एकै करै आनँद में रोक । त्रयगुणते ऊपर वसै जहां हर्ष न शोक ॥ मन मूड़ै तन साधकै वाधा सव डार । तत्त्व तिलक माथे दिये शोभा अपरम्पार ॥ माला श्वास उसाँसकी हिरदय अस्थान । अ-

१ संतोष ।

लख पुरुषसों नेहरा त्रिकुटी मध्ये ध्यान ॥ काम क्रोध मोह लोभना यही नेम अचार । शुकदेव कही चरणदास सों करै ब्रह्म विचार ॥ ३ ॥

राग सोरठ व बिलावल ॥ जो नर इतके भये न उतके । उतको प्रेम भक्ति नहिं उपजी इत नहिं नारी सुतके ॥ घरसों निकसि कहा उन कीन्हों घर घर भिक्षा मांगी । बाना सिंह चाल भेंड़नकी साधु भये अकि स्वांगी ॥ तन मूड़ा पै मन नहिं मूड़ा अनहद चित नांहिं दीन्हा । इन्द्रिय स्वाद मिले विषयनसों बक बक बक बक कीन्हा ॥ माला करमें सुरति न हरिमें यह सुमिरण कहु कैसा । बाहर वेष धारके बैठे अन्तर पैसा पैसा ॥ हिंसा अकस कुबुधि नहिं छोड़ी हिरदय सांँच न आया । चरणदास शुकदेव कहत हैं बाना पहिरि लजाया ॥

राग सोरठ ॥ समझ रस कोइक पावे हो । गुरुबिन तपन बुझै नहीं प्यासानर जावैहो ॥ बहुत मनुप ढूँढ़त फिरैं अँधरे गुरु सेवैहो । उनहूं को सूझैनहीं औरन कहँ देवैहो ॥ अँधरेको अँधरा मिला नारीको नारीहो । ह्वांफल कैसे होयगा समझैं न अनारीहो ॥ गुरू शिष्य दोउ एकसे एकै व्यवहाराहो । गये भरोसे डूबिकै वे नरक मँझाराहो ॥ शुकदेव कहै चरणदास सों इनका मत कूराहो । ज्ञानमुक्ति जब पाइये मिलै सद्गुरु पूराहो ॥ २७८ ॥

राग जैजैवन्ती ॥ गुरुबिन ज्ञान नाहीं तिमिर नशावै । भाई भरमत फिरै लोई जल और पाहन सोई बातनहीं

बूझै कोई तिनको वहधावै । देवी और देवपूजै जहां कछुनाहीं सूझै फेरि फेरि जावै दूजे तहां नहीं पावै ॥ वैदकको भेद ठानै ज्योतिष विचार जानै काहूकी कही नाहिं मानै करै मनभावै । भूत टोना जादूसेवै प्रभुका न नामलेवै भक्तिमें न चितदेवै गुण नहिंगावै ॥ श्रीशुकदेव कहै चरणदास होयरहै सोई मुक्तिधाम लहै आपा जो उठावै ॥

राग गौरी ॥ सब जगभर्म भुलाना ऐसे । ऊंटकि पूंछसों ऊंट बँध्यो ज्यों भेड़ चालहै जैसे ॥ खरका शोक भूंस कूकुरकी देखादेखी चाली । तैसे कलुआ जाहिर भैरौं सेढ़ मशानी काली ॥ गावँभूमि या हितकारि धावै जाय वाही-दौरे । सद्दो सरवर इष्ट धरतहैं लोग लोगाई बौरे ॥ राखै भावश्वान गर्दभ को उनको ल्याय जिमावें । ढेढ चमारन को शिरनावें ऊंची जांति कहावें ॥ दूध पूत पाथरसों मांगैं जाके मुख नहिंनासा । लपसी पपड़ी ढेर करतहैं वह नहिं खावैमासा ॥ वाके आगे बकरा मारैं ताहि न हत्या जानैं । लै लोहू माथेसों लावैं ऐसे मूढ़ अयानैं ॥ कहैं कि हमरे बालक जियावो बड़ी आयुर्बेल दीजै । उनके आगे विनती करतैं अँशुवन हिरदय भीजै ॥ भोये भरड़े के पग लागैं साधुसन्तकी निन्दा । चेतन को तजि पाहन पूजैं ऐसा यह जग अन्धा ॥ सत्संगतिकी ओर न झाँक भक्ति करत सकुचावैं । चरणदास शुकदेव कहतहैं क्यों न नरक को जावैं ॥ १ ॥ अरे नर क्या भूतन की सेवा । दृष्टि न आवै मुख नाहिं बोलै ना लेवा ना देवा ॥ ज्यहि कारण घी ज्योति

जलावैं बहु पकवान बनावैं । सो खचैं तू अधिक चावसों वह स्वप्ने नाहिं खावैं ॥ राति जगावैं भोपा गावैं झूंठे मूड़ हलावैं । कुटुँब सहित तोहिं पैर परावैं मिथ्या वचन सुनावैं ॥ ताहि भरोसे जन्मगवाँवैं जीवत मरत न साथा । वड़भागन नर देही पाई खोवैं अपने हाथा ॥ चारि वरणमें मैली बुधिका ऊंच नीच किनहोई । जो कोइ झूंठी आशाराखै अगत जायगा सोई ॥ ताते सत विश्वास टेकगहु भक्तिकरौ हरिकेरी । चरणदास शुकदेव कहतहैं होय मुक्तिगति तेरी ॥ २ ॥

राग विलावल ॥ सब सुखदायकहैं हरी मूरख नाहिंजानै । मनमें धरि धरि कामना औरनको मानै ॥ जो चाहै सन्तान को जप लालविहारी । सुन्दर बालक होहिंगे घरके उजियारी ॥ जो चाहै तू धनघना सेव कृष्ण मुरारी । साखि सुदामाकी सुनौ दइ विभव अपारी ॥ जगत बड़ाई जो चहै सुमिरौ यदुनाथा । नीच बहुत ऊंचेभये जगनायो माथा ॥ जो सिधहू वोहीचहै करिहरि हियध्याना । सिद्धि परापत होहिगी चढ़िहै परमाना ॥ चरणदास हूवोचहै भजिले भगवाना । कहैं गुरू शुकदेवजी होय मुक्त निदाना ॥

राग विहागरा ॥ साधो निन्दक मित्र हमारा । निन्दकको निकटेहीराखौं होन न देऊं न्यारा ॥ पाछे निन्दाकरि अघधोवै सुनिमन मिटै विकारा । जैसे सोना तापि अग्निमें निर्मलकरै सोनारा ॥ घन अहरन कसहीरा निवटै क़ीमत लक्षहजारा ॥ ऐसे यांचत दुष्टसन्तको करन जगत उजियारा ॥ योग यज्ञ जप पाप कटनहित करै सकल संसारा । विन करणी मम

कर्म्म कठिन सब मेटै निन्दक प्यारा ॥ सुखीरहौ निन्दक जगमाहीं रोग न हो तनुसारा । हमरी निन्दा करनेवाला उतरै भवनिधि पारा ॥ निन्दकके चरणोंकी अस्तुति भाषौं वारम्वारा । चरणदास कहैं सुनियो साधौ निन्दक साधकभारा ॥

राग सारंग ॥ अरे नर कहाकियो तुमज्ञान । गई न हिंसा कुवुधि वड़ाई राग द्वेषकी आन ॥ प्रभुताईको क्षण क्षण दौरें प्रभुकोना क्षणएक । अन्तरभोग जगतके प्यारे वाहर साधूवेष ॥ जैसे सिंह गऊतन धारो कपटरूप प्रगटायो । धोखाखाय पशूवा निकसो पंजातांहि चलायो ॥ सुन्दररूप महा वगलेको एक टांग जल ध्यान । मनमें आशा मीन गहनकी कहां मिलैं भगवान ॥ गुरु शुकदेव वतायो मोको भीतर वाहर शुद्धि । चरणदास वा हरि जन जानौ ताकी है ब्रह्म वुद्धि ॥

रांग केदार ॥ छले सब कनक कामिनि रूप । सुर असुर अरु यक्ष गंध्रव इन्द्र आदिक भूप ॥ सावित्री वश कियो ब्रह्मा पार्व्वती त्रिपुरारि । लीला कारण लक्ष्मी सँग हरि लियो अवतार ॥ रावणसे अति वली मारे मौत जिन वश कीन । पशु नरनकीको चलावे एतौ अति आधीन ॥ रूप रस में दे धतूरा मोह फाँसी डार । तप कि पूजी छीनिकै कियो शृंगीऋषि को ख्वार ॥ माया ठगिनी ठगे सवही वचे गुरु शुकदेव । रणजिता कोइ ऊवरो करिदास चरणन सेव ॥

रार सोरठ ॥ साधो होनहारकी बात । होत सोई जो

होनहारहै कापै मेटी जात ॥ कोटि सयानप वहुविधि कीन्हें वहुत तके कुशलात । होनहारने उलटी कीन्हीं जलमें आगि लगात ॥ जो कछु होय होतव्यता भोंड़ी जैसी उपजै बुद्धि । होनहार हिरदय मुख बोलै विसारि जाय सब शुद्धि ॥ गुरु शुकदेव दयासों होनी धारि लई मन माहिं । चरणदास शोचे दुख उपजै समझेसों दुख जाहिं ॥

राग सीठना ॥ टुक रँग महलमें आवकि निर्गुण सेज बिछी । जहँ पवन गवन नहिं होय जहां जाय सुरति वसी ॥ जहँ त्रय गुण विन निर्वाण जहां नहिं सूर शशी । जहँ हिलि मिलिकै सुखमान मुक्तिकी होय हँसी ॥ जहँ पिय प्यारी मिलि एक कि आशा दुई नशी । जहँ चरणदास गलतान कि शोभा अधिक लसी ॥ १ ॥ सुनु सुरत रँगीली हे कि हरिसा यार करौ । जब छूटै विघ्न विकार कि भव जल तुरत तरौ ॥ तुम त्रयगुण छैल निसारि गगनमें ध्यान धरौ । रस अमृत पीवो हे कि विषया सकल हरौ ॥ करि शील संतोष शृंगार क्षमाकी मांग भरौ । अब पांचौ तजि लगवार अमर घर पुरुष वरौ ॥ कहै चरणदास गुरु देखि पियाके पावँ परौ ॥२॥ जिव आतम विगड़ी हे पुरुषको भूलि रही । जब पिय विसराई हे जने जन बाँह गही ॥ तैं लाज गवांई हे कि पांचन पकड़ि लई । तेरे तीन लगे लगवार पचीसौ संग भई ॥ तैं जन्म ज-न्म रहि चूकि कि यमकी मार सही । कहैं चरणदास बिन लालकि भव जल जात वही ॥३॥ टुक निर्गुण छैला सों कि नेह लगावरी । जाको अजर अमरहै देश महल बेगम पुररी ॥

जहँ सदा सोहागिनि होय पिया सों मिलि रहुरी । जहँ आ-वागमन न होय मुक्ति चेरी तेरी ॥ कहैं चरणदास गुरु मिले सोई ह्वां रहु बौरी । तब सुखसागरके बीच कलहरी ह्वै रहुरी ॥ ४ ॥ तूसुन हे लंगर बौरी । तू पांचौ घेरि पचीसौ घेरी विषय वासना की है चेरी बारी बारी दौरी । तैं पिय भूली चौ-रासी डोली अंग अंग के सुखमें फूली माया लाई डौरी ॥ तैं काम क्रोध सों नेह लगायो मनमाना सब जग भर्मायो मोह यार बांकोरी । चरणदास शुकदेव बतावैं निर्गुण छैला तोहिं मिलावैं जो टुक चेतन होरी ॥५॥ पर आशाहै दुखदाई । जिन धीरज सों पति रसिया छाँडौ बांको मोह यार कियो गाढ़ो क्रोध सों प्रीति लगाई ॥ जिन जतसत देवर सों सुख मोड़ा दया बहिन सों नातातोड़ा सुमति सौझ बिसराई । जो धर्म पिताके घरसों छूटी क्षमा माय सों योंहीं रूठी कुमति परोसिनि पाई ॥ सन्तोष चचाको कहा न माना चची दीनता सों रिसठाना माया मधि बौराई । चरणदास कहै जब निजप-तिपावै श्रीशुकदेव शरण सो आवै शील शृंगार बनाई ॥६॥

राग सीठना ॥ टुक दर्शन दे हरि प्यारे । बिन देखे मोहिं कल न परति यह देह जरति है व्याकुल प्राण हमारे ॥ तेरी भौंहँ मटक और प्रेम लटक हिय अटकी नन्ददुलारे । तेरी सुन्दर सूरति मोहनि मूरति नैना अति मतवारे ॥ तुम सो को छैला सदा नवेला अलबेला बांकारे । मैंहूं चरणदासा तुम सुखरासा आशा पुरवो आरे ॥ १ ॥ कह बाजत करत गुमान मुरलिया रंग भरी । तैं मोहे मोहन छैलक बाँके कृष्णहरी ॥

सुन बाँस सुता वड भाग तनकसी वन लकरी । कछु टोना कीन्हों है बिचित्तर सुघर खरी ॥ निशिवासर लगी रहै पिया के अधर धरी । ब्रज सगरो दियो नचाय हाथ भर की वँसरी ॥ तेरी तान मधुर सुर हे वरषावत प्रेम भरी । सुनिकै सुर ऋषि मुनि देव महेश समाधि टरी ॥ चरणदासभई सखि हे तुही शुकदेव बरी ॥२॥ तुम देखौ हरिकी लीला साधो कहन सुनन गम नाहीं । वह आप सकल विस्तारै अरु आपकैर प्रति-पारै जब चाहे तबहीं मारै या जगमें धूम मचाई ॥ वह अद्भुत कौतुक लावै रंकहिको राज्य दिलावै राजाको रंक करावै यह गति किनहुँ न पाई । वह अचरज खेल मचावै पाप पुण्यके न्याव चुकावै आप देखै और दिखावै इक इक सों देइ भिराई॥ जब पाप बढ़नको आवै हरि आपहि धोय बहावै दुष्टनको मारि भगावै सन्तनकी करै सहाई । चरणदास कहै जो चाहो शुकदेव शरण अब आवो तुम साईं सों लवलावो वै देहैं दुःखमिटाई ॥ ३ ॥ तेरी क्षण क्षण छीजत आयु समझ अजहूं भाई । दिनदोका जीवन जानि छाँड़ि दे गुमराई ॥ सुन मूरख नरअज्ञान चेत क्या क्योंन रही ॥ कह फूला फिरत गवाँर जगत झूंठे माहीं ॥ कियो काम क्रोध सों नेह गही है अक-ड़ाई । मतवारा मायामाहिं करत है कुटिलाई ॥ तेरोसंगी कोई नाहिं गहै जब यम बाहीं । शुकदेव चेतावै तोहिं त्यागरे मचलाई ॥ चरणदास कहैं भजु राम यही है सुखदाई ॥ ४ ॥

अथ वसन्त होरी प्रारम्भः ।

राग वसंत ॥ ऐसे कृष्ण कुवँर खेलवसन्त । जाको सुर

नर मुनि पावत न अन्त ॥ संग लिये वहु ग्वाल वाल । अरु फेंटनमें भरिभरि गुलाल ॥ सब वस्तर पहिरे लाललाल । गल सोहत सुन्दर गुंजमाल ॥ कोउ ताल वजावत है मृदंग । कोउ ढोल तँबूरा बीण चंग ॥ कोउ डफ रवाव मोहरि मुचंग । कोउ गावत स्वर दे दे उमंग ॥ जब आई राधिका सखिन साथ । गहि छिरके तवहीं गोपिनाथ ॥ कोउ केशरि गागरि लिये हाथ । काहूबेंदी दई हरिजूकेमाथ ॥ इककाजर नैनन आंजो आय । मुख चोवा चंदन अवीर लाय ॥ नीलांवरप्रभु-को दियो ओढ़ाय । हँसि करत परस्पर मनकेभाय ॥ यह कौतुक ब्रज बाढ़ो अपार । मिलि नाचत कूदत गोपी ग्वार ॥ लखि मोहि रहीं बहुदेव नारि । ऐसो अद्भुत अचरज रस बिहारि ॥ यहसुख अब कापै कहो जाय । सनकादिक नारद रहे लोभाय ॥ शुकदेव गुरूने दियो दिखाय । चरणदास ध्यान में रहो समाय ॥ १ ॥ ऐसे पारब्रह्म खेलत वसंत । कवहूं एक कवहूं अनंत ॥ जैसे हाट एक भूषण अनेक । वरण वरणके धरत वेष ॥ टूटै गहना गलजो जाय । फिरि चाहै तौ फेरि बनाय ॥ आपही विष्णु ब्रह्मा महेश । आपहि धरती आपहि शेश ॥ आपहि सुरनरमुनिहिं जान । आपधरत अवतार आन ॥ आपहि रावण आपहिराम । आपहि कंसा आपहि श्याम ॥ आपनको चढ़ि मारै आप । आप अपनको जापतजाप ॥ चरणदास इकाकी आया देख । हरि कहियतहैं तेरे भेख ॥ शुकदेव दया ते पायो भेव । ताते आप अपन की लागो सेव ॥२॥ वह वसंतरे वह वसंत कोइ विरला पावै वह वसंत । जाकी अद्भुत लीलारँग अनन्त ॥ जहँ झिलमिल झिलमिलहै

अपार। जहँ मोती बरषै निराधार ॥ जहँ फूलनकी लागी फोहार । जहँ अनहद बाजे बहुप्रकार ॥ जहँ तालजुबाजै विना हाथ । जहँ शंख पखावज एकसाथ ॥ जहँ विन पगघुँघुरू की टकोर । जहँ विन मुख मुरली घनाघोर ॥ जहँ अजरज बाजे और और । जहँ चन्द सूर नहिं सांझ भोर ॥ जहँ अमृत दरवै काम धेनु । जहँ मान क्रोध नहिं मोह मैन ॥ जहँ पांचौइन्द्रिय एक रूप । जहँ थकित भये हैं मनुषभूप ॥ शुकदेव बतावैं ऐसोखेल । चरणदास करौ क्योंन वासों मेल॥३॥ खेलो राम नाम लैलै बसंत । भक्ति करौ मिलि साधुसंत ॥ मात पिता सुत दारा जान । सब स्वारथके संगी पिछान॥ त्वहिं जन्मत सबहिन घरो आय । तैं आप अपनपौ दियौ बँधाय ॥ श्वास निकसि रहिजाय देह । सब कुटुंब संघाती भरोगेह ॥ जब सबही मिलिकै तजैंनेह । कहैं वेगि निकासो रही खेह ॥ कहैं खाटबिछौना द्यो निकास । अरु जारि देहु मुखलै हुतास ॥ ऐसे झूठे संगकी कौन आस । ताते हरि भजले तू उसास ॥ इनसों पगो तजो हरिसों मीत । अपने भलेकी न करीचीत ॥ शुकदेव कहैं नर अजहुँ चेत । चरणदास तजो क्यों न जगसों हेत ॥ ४ ॥ मेरे सतगुरु खेलत निज वसंत । जाकी महिमा गावत साधुसन्त ॥ ज्ञान विवेकके फूले फूल । जहँ शाखा योग अरु भक्ति मूल ॥ प्रेमलता जहँरही झूल । सत संगति सागरके कूल ॥ जहँ भर्म उड़त है ज्यों गुलाल । अरु चोवा चरचै निश्चय बाल ॥ शील क्षमाको बरषैरंग । काम क्रोधको मानभंग ॥ हरि चर्चा जितहै अनंत । सुनि मुक्तहोत सबजीवजंत ॥ आन धर्म सब जाहिं खोय । राम नामकी जैजै

होय ॥ जहँ अपने पिय को ढूँढ़िलेव । अरु चरण कमल में सुरतिदेव ॥ कहैं चरणदास दुख द्वंद्रजाहिं । जब प्रियतम शुकदेव गहैं बाहिं ॥५॥ खेलौ नित बसन्त खेलौ नित बसंत। मिलि साधु संग में नित बसन्त॥ जहँ फूल जु फूले चारि रंग । भक्ति ज्ञान अरु योग अंग ॥ रंग जु चौथाहै विराग । विषय वासना देहु त्याग ॥ भवँर होय सूँघै जु कोय । जीवनमुक्ता कहिये सोय ॥ भय अरु भ्रमसब छूटि जाय । आनँद पदमें रहै समाय ॥ चन्दन चरचा अति सुवास । महकरही ह्वां आस पास ॥ जिहि सुगन्ध शीतलता होय । ताप तपन सब जाहिं खोय॥चरणदास हरिचरण माहिं । शीश दिये बहु पाप जाहिं ॥ प्रीतम शुकदेवै अनंद । अरु काट निवारै सकल फंद ॥ ६ ॥ वह देश अटपटा विकट पन्थ । कोइ गुरुमुख पहुँचै होय सन्त ॥ बहुतचले मग चाव चाव । औरन सों कहि आव आव ॥ हमहूँ पहुँच तुम्हें दे बसाय । ऐसो जान्यो सुलभ दाय ॥ बहुतक तपसी कष्ट साध । बहुतक पण्डित पोथी लाद ॥ बहुत चुण्डित जटा धारि । चहुँ ओर पावक जारि जारि ॥ बहुतक मुण्डित पूजाराखि । बहुतक भक्त पिछली शाखि ॥ बहुतक योगी पवन जीति । हरि मिलबेकी करैं रीति ॥ कायरथाके बाट माहिं । कछु इक आगे चले जाहिं ॥ द्वै कनक कामिनीलिये घेरि । सोभी उनके पड़े फेरि ॥ कोइ उनसे छुटकरि आगे जाय ।जहँ ऋद्धि सिद्धि लेवै लगाय ॥ शुकदेव कहैं सब डारि आस । ह्वां प्रेमी पहुँचै चरणदास ॥७॥ साधो आतम पूजाकरै कोय । जोई करै सोइ मुक्ता होय ॥ नेह नगरमें बसै जाय । भवन सँवारै हित लगाय ॥ तामें सेवा धारै

धार । आठ पहर करैं वार ॥ तन मन वचन सँभारि लेव । सम्मुख देखो अपना देव ॥ दया पुष्प माला बनाव । क्षमाशील चन्दन चढ़ाव ॥ लिये दीनता हाथ जोरि । सांचे रँग मनको बोरि ॥ घट घट प्रीतम राख मान । रस भंग न होवै सावधान ॥ प्रसन्नता सोइ धूप दीप । शुकदेव कहैं यों रहु समीप ॥ चरणदासहो सँग न छोर । कृष्णमयी लखु चहूँ ओर ॥ ८ ॥

होरी राग धमारि ॥ मोहन चतुर सुजान मेरे घर होरी खेलन आयोहो । पीत वसन पियरे आभूषण पीरो तिलक बनायो हो ॥ लालहि लाल गुलाल उड़ावत ग्वाल बाल सँग लायोहो । सबके करन कनक पिचकारी गावत नाचत धायोहो ॥ आनि अचानक हरिने मेरे मुख चोवा लपटायो हो । केशरि माहीं घोरि अरगजा मोतनपै ढरकायोहो ॥ अपने हाथ सवांरिपानदै हार हिये पहिरायोहो । रीझ रिझा अरु भीज भिजाकर उन आनन्द बढ़ायोहो ॥ मैंहूं वाके जाय अचानक काजरनैन लगायोहो । मुरली गहि पीताम्बर लैकै नीलाम्बर जो उढ़ायोहो ॥ जासुखको ब्रह्मादिक तरसैं शेष पार नहिं पायोहो । गोपी कहैं चरणदास श्यामकी सो सुख हमैं दिखायोहो ॥१॥ साध चलौ तुम संभारी । जग होरी मचि रही है भारी ॥ दंभ पखण्ड गहे करमें डफ हूबड़ हूबड़की तारी ॥ त्रयगुण तार तँबूरा साजे आशा तृष्णा गति धारी । पाप पुण्य दोउ लै पिचकारी छूटतैहैं बारी बारी ॥ सम्मुखह्वै करि जो नर खेलौ ताकी चोट लगी कारी । लोभ मोह अ-

भिमान भरो है ले माया गागरि डारी ॥ राजा परजा भोगी तपसी भीजि रहे हैं संसारी । कुबुधि गुलाल डारि मुख मींजो काम कला पुटली मारी । युग युग खेलत यों चलि आई काहू ते नाहीं हारी । जड़ चेतन दोउरूप सवँ।रे एक कनक दूजो नारी ॥ पांच पचीस लिये सँग अवला हँसि हँसि मिलि गावत गारी । चतुरा फगुवा दैदै छूटे मूरखको लागी प्यारी । चरणदास शुकदेव बतावैं निर्गुण ज्ञान गली न्यारी ॥ २ ॥

होरी राग काफी ॥ ज्ञानरंग हो हो हो होरी । निहरूपी बहुरूप धरे हैं नाना वेष करोरी ॥ देखन निकसी अपने पियाको समझ भवनकी पौंरी । बुद्धि विचार शृंगार सजो है निश्चय माथे रोरी ॥ जीवन्मुक्त हुलास बढ़ो है परगट खेलमचोरी । खेलत खेलत आपन बिसरो लागी कौन ठगोरी ॥ आपा खोजि रामहीं पाये मैं नाहीं निकसोरी । चरणदास सब हरिही हरिहै आपहि आप रहोरी ॥ उपजै कौन कौन अब विनशै बंध मुक्त केहिठौरी ॥

होरी राग धनाश्री ॥साधो घुंघुट भर्म उठाय होरी खेलिये । वेद पुराण लाज तजिबेरी इन में ना उरझैये ॥ शिरसों सकुच उतारि चदरिया पिय सों रंग बढ़इये । रूप न रेख सूरति मूरति ताके बलि बलि जइये ॥ अचल अजर अविनाशी सोई सम्मुख दर्शन पइये । सत चेतन आनन्द सदाही निर्भय ताल बजइये ॥ पाप पुण्यकी शंका त्यागौ जहँ मर्याद न पइये । ओला नीर विचारौ जैसे यों आपन बिसरइये ॥ चरणदास वासना तजिकै सागर बूँद समइये ॥

राग सोरठ ॥ हिलिमिलि होरी खेलि लईहो वालमाघर पाइया । पांच सखी पच्चीस सहेली आनंद मंगल गाइया ॥ समझ बूझका चोवा चरचा भर्मगुलाल उड़ाइया । हुई गई जब इच्छा कैसी खेलन सकल वहाइया ॥ चरणदास वासना तजिकै सागर लहर समाइया ॥

होरी राग सोरठ ॥ कासूं खेलै को होरीया हो वालम नाहीं मैं नहीं । अविर गुलाल अरगजा नाहीं रंग नहीं गागरनहीं ॥ ताल मृदंग झाँझ डफ नाहीं राग नहीं रागिनि नहीं । फाग महीना वा घर नाहीं कन्थ नहीं कामिनि नहीं ॥ चरणदास नहीं तव हरि कहु कैसो सवकुछहै और कुछ नहीं ॥

होरी राग धमारि ॥ आदिपुरुष अविगत अविनाशी नाना कौतुक लावैरे । आपहि आप और नहिं कोई बहुतक रूप बनावैरे ॥ आपहि मोहनलाल ग्वालहो मुरली आनि बजावैरे । आपहि व्रजकी वनिता होकर वनको दौरी आवैरे ॥ आपहि गोपी कान्ह विराजै आपहि रास रचावैरे । अन्तर्द्धान होय फिर आपहि आपहि ढूँढ़न धावैरे ॥ आपहि व्याकुल अपदेखनकूं लीला प्रेम बनावैरे । परगट होय सवन सुखदेवै आ हि रंग वढ़ावैरे ॥ भोरभये जव खेल मचावै आप आप रहजावैरे । कवहूँ एक अनेक कभी हैं विधि निषेध गतिभावैरे ॥ सतचितआनँद रूप सदाही शुकदेवहो समुझावैरे । चरणदासहो समझि समझिकरि आपहि आनँद पावैरे ॥

होरी राग धनाश्री ॥ साधौ बुद्धि विवेक सँभारि होरी खेलिये । सांख्ययोगकी युक्तिसों कीजै नित्यअनित्य विचार । माया सकल निवारि कैरे आतम रूप निहार ॥ पांचतत्त्व तीनोंगुण परगट इनको दोदिन फाग । इकरस सत पद जानि लेरे ताहीसों मन पाग ॥ निश्चय चोवा लाइयेरे भर्म गुलाल उड़ाय । देह कर्मके रंगकीरे गागर दे ढरकाय ॥ जीवन मुक्तती फगुवा पइये. गुरुके चरणन लाग । जो कोई ऐसी होरी खेलै जाके ऊंचे भाग ॥ चरणदास कहैं शुकदेव बताई हमहूं खेले जाग । प्रियतम प्रियतम जित तित देखो द्वेष गयो अरु राग ॥ १ ॥ सखीरी ततमतले संग खेलिये रस होरीहो । निर्गुण नित निर्धार सरस रस होरी हो ॥ सखीरी शील शृङ्गार सवाँरी हो । दुबिधा मानि निवार सरस रस होरी हो ॥ बहुरि न ऐसो बार सरस रस होरी हो । सखिरी रहनी केसर घोरिये रस होरी हो ॥ सखीरी सतगुण करि पिचकारि ले रस होरी हो । तमरजके भर मार सरस रस होरीहो ॥ सखीरी गर्व गुलाल उड़ाइये रस होरी हो । मोह मटुकिया डारि सरस रस होरी हो ॥ सखीरी झिल मिल रंग लगाइये रस होरी हो । चंदन चरच विचार सरस रस होरीहो ॥ सखीरी निश्चल सिद्ध समाइये रस होरीहो । रिमझिम झमक फुहार सरस रस होरी हो ॥ सखीरी शून्य नगरमें नृत्तिये रस होरी हो । अनहद झनक झिंगार सरस रस होरी हो ॥ सखीरी सैन सुरति सों समझिये रस होरी हो । सोहं ब्रह्म खिलार सरस रस होरी हो ॥ सखीरी पांच पचीसौ रल मिले रस होरी हो । मंगल शब्द उचार सरस

रस होरी हो ॥ सखीरी अलख पुरुष फगुवा लहो रस होरी हो । चरणदास रमइया रमि रह्यो रस होरीहो ॥ दरशोहै फाग अपार सरस रस होरी हो ॥ २ ॥ गुरु दूती बिना सखी पीव न देखो जाय । भावै तुम जप तप करि देखो भावै तीरथ न्हाय ॥ पांच सखी पच्चीस सहेली अति चातुर अधिकाय । मोहिं अयानी जानिकै मेरो बालम लियो लुकाय ॥ वेद पुराण सबै जो ढूँढे सुरति स्मृति सब धाय । आन धर्म और क्रिया कर्ममें दीन्हो मोहिं भर्माय ॥ भटकत भटकत जन्मै हारी चरण सखी गहे आय । शुकदेव साहब किरपा करिकै दीन्हो अलख लखाय ॥ देखतही सब भ्रम भय भागे शिरसूं गई बलाय । चरणदास जब प्रीतम पायो दर्शन किये अघाय ॥३॥ हरि पीव पाइया सखी पूरण मेरे भाग । सुख सागर आनन्दमें मैं नित उठि खेलूं फाग ॥ चोवा चन्दन प्रीतिकै सखी केशरि ज्ञान घसाय । पुष्प वाससूं जो वह झीनो ताके अंग लगाय ॥ बैरंगी के रंगसूं सखी गागर लई भराय । शून्य महलमें जाय कै सखी पियपर दई ढरकाय ॥ भरम गुलाल जब करलियो सखी बालम गयो दुराय । सतगुरुने अञ्जन दियो तब सम्मुख दरशे आय ॥ ताली लाई प्रेमकी सखी अनहद नाद बजाय । सर्वमयी पिय पायकै हम आनँद मंगल गाय ॥ रलमिल प्रियतम ह्वै गये सखी दुई गई सब भाग । चरणदास शुकदेव दयासूं पायो अचल सुहाग ॥ ४ ॥ मैंतो ह्वां खेलूंगी जाय जित मेरो पिया बसै । व्याधि उपाधि न संशय कोई आनन्दहि आनँद लसै ॥ नितही फागन इकरस होरी खण्डित कबहुँ न होय । मुक्ति पदारथ फगुवा पइये

आपा सरबसखोय ॥ जिनके रसिया शिव ब्रह्मादिक खेलत चावहिचाव । ऋषि मुनि देवत खेलत निशि दिन करि करि बहुतक भाव ॥ भाग्य बड़े उनहींके जानो वा पदलागे धाय । ज्ञान ध्यानके रँगमें डूबे सोई पहुँचे जाय ॥ गुरुशुकदेव बताई हमको जबसों बाढ़ी प्रीति । चरणदासहू अति ललचाये सुनि सुनि ह्वांकी रीति ॥ ५ ॥ साधो प्रेम नगरकें माहिं होरी होय रही । जबसूं खेली हमहूं चित दे आपनहूंको खोयरही ॥ बहुतन कुल अरु लाज गवांई रहो न कोई काम । नाचि उठैं कभी गावन लागें भूले तन धन धाम ॥ बहुतनकी मति रंग रँगीहै जिनको लागो प्रेम । बहुतनको अपनी सुधि नाहीं कौन करै ऐसो नेम ॥ बहुतनको गद्गदही वाणी नैनन नीर ढराय । बहुतनको बौरापन लागो ह्वांकी कही न जाय ॥ प्रेमीकी गति प्रेमी जानै जाके लागी होय । चरणदास उस नेहनगरकी शुकदेवा कहि सोय ॥६॥ कोई जानै सन्त सुजान उलटे भेदकूं । वृक्ष चढो मालीके ऊपर धरती चढ़ी अकास । नारि पुरुष विपरीत भये हैं देखत आवै हास ॥ बैल चढ़ो शंकरके ऊपर हंस ब्रह्मके शीश । सिंह चढ़ा देवी के ऊपर गुरु हीकी बखशीश ॥ नाव चढ़ी केवटके ऊपर सुतकी गोदी माय । जो तू भेदी अमर नगरको तौ तू अर्थ बताय ॥ चरणदास शुकदेव सहाई अब कह करि है काल । बाँबी उलटि सर्पमें पैठी जबसूं भये निहाल ॥ ७ ॥

इति श्रीस्वामीचरणदासकृतशब्दसम्पूर्णम् ।

श्रीक्षीरसागरनिवासिने नमः ।

अथ भक्तिसागरप्रारम्भः ।

छप्पय ।

श्रीव्यासको पुत्र तासुको दास कहाऊं । सदा रहूं हरि शरण और ना शीश नवाऊं ॥ साधनसूं यह चहूं मोहिं यह बात दृढ़ावो । माया जाल संसार तासुसों वेगि छुटावो ॥ अहो श्रीब्रजनाथ विनय सुनि लीजिये । चरणदासको भक्ति कृपा-करि दीजिये ॥ १ ॥ गुरु ईश्वर गुरु ईशरीझ गुरु राम बतावैं । गुरु काटैं यमफाँस विपति सब अघै नशावैं ॥ गुरुदेवनके देव भेव ब्रह्मादि लखावैं । गुरु भवसागर तार पार वह लोक बसावैं ॥ चरणदास यह जानिकै सत्संगति हरिको भजो । शुकदेव चरण चित लायकै सो झूठकानि दुविधा तजो ॥ २ ॥ पग तव होवैं शुद्ध साधुके पगको ध्यावै । हस्त शुद्ध तब होयँ दोऊ कर शीश नवावै ॥ नैन शुद्ध जब होयँ साधुके दर्शन पावै । रसन शुद्ध तब होयँ रामगुण मुखसों गावै ॥ भनै चरण दास सब शुद्ध हो जब चरण परस गुरुदेवके । वै आतम तत्त्व विचार देखकर दर्शन अलख अभेवके ॥ ३ ॥

दोहा—दुखमेटन सुखके करन, चरणदास वे साध ॥
दाता ज्ञान विज्ञान के, देवैं मता अगाध ॥

साध मुक्ति नहिं चहत हैं, सिद्ध नच,हत साध ॥
स्वर्गलोक नहिं चहत हैं, जिनका मता अगाध ॥

चौ०—इड़ा पिंगला सुखमन धारो । आसन वज्र नागिनी टारो ॥ द्वादशअंगुल होय बांधि षटचक्करलीजै । जब बाजे अनहद तूर जहां मन निज करदीजे ॥ खेचरी मुद्रा त्रिकुटी आवे । अमृत पिये परम सुखपावे ॥ मेरुदण्डको प्राण चलावे । शून्य शिखर जब नगरी पावे ॥ जा नगरीमें चन्द्र न भान । पहुँचे साधू चतुरसुजान ॥ जाति पाँति जहँ नाम न नाता । श्वेत श्याम पीता नहिं राता ॥ योग यज्ञ तप जहां न दाना । तीरथ वर्त्त जहां नहिं न्हाना ॥ किरिया कर्म जहां नहिं पूजा । मैं तूहै नहि एक न दूजा ॥ जहां न सांझ द्यौस नहिं राता । एकैब्रह्म अखण्ड विधाता ॥ चरणदास रामकी घाटी पहुँचै गुरुमत शूरा । ओछी बुद्धि बाद बहुठानै करणी करै सो पूरा ॥

छप्पय ॥ बैठ गुफाके मध्य योगकी युक्ति विचारै । आप अकेलो रहै और ना मनुष निहारै ॥ चारिवारि नितकरै जाप ॐकार अराधै । सूक्ष्मकरै आहार ओगरो पतलो साधै ॥ आसन पद्म लगायकै सीधो राखै मेर । ठोढ़ीहिये लगाइये पलक झाँपकरि हेर ॥

दोहा—कुंभक आठ प्रकारके, तिनमें उत्तम एक ॥
केवल कुंभक जानिये, साधै ताहि विशेख ॥
त्रिकुटीमें तीरथ अगम, तिरवेणी जेहि नाम ॥
न्हाय योगकी युक्ति सूं, पूरण हो सब काम ॥

रणजीत कहैं जहँ न्हाइये, त्रिकुटी तीरथ धाम ॥
नित परवी जहँ होतहै, भजनकरो निष्काम ॥

चौ०–जा तीरथको पवन न लागै। जा तीरथमें जन अनुरागै ॥
जा तीरथमें पवन अनेका। पूरे गुरुसों मिलमिल देखा ॥
वा तीरथमें जो कोइ न्हावै। भवसागरमें बहुरि न आवै ॥
जहाँ न चन्द्र सूर नहिं तारे। गुरुगम पहुँचैं अति मतवारे ॥
जा तीरथका बँधा जो नीर। उज्ज्वल निर्मल गहिर गँभीर ॥
ब्रह्मा विष्णु जहाँ त्रयदेवा। योग युक्तिमें लावैं सेवा ॥
बारह मास दामिनी दमकै। सोन पटीला जुगनू झमकै ॥
रणजित मीत वास जहँ कीजै। नित अस्नान महासुख लीजै ॥

छप्पय ॥ अमरी वजरी साध वायु सरने नहिं पावै। द्वादश अंगुल प्राण सुरतदे ताहि घटावै ॥ मौन गहे नितरहै अल्प सूक्षम सो बोलै। एकवार आहार जँभाई कबहुँ न खोलै ॥ बांधै सो जाय दृढ़ छीकको अनहद धुनि अति गाजई। भन चरण दास शुकदेव बल सुयोग युक्ति इमि साजई ॥

दोहा–मन पवना वश कीजिये, ज्ञान युक्तिसों रोक ॥
सुरति बांधि भीतर धसै, सूझै काया लोक ॥
मन हिरदेमें रहत है, पवन नाभिके माहिं ॥
इन्द्रीयरोकै ये रुकैं, और कछू विधि नाहिं ॥

छप्पय ॥ सूक्ष्मकरै आहार जीति धरणी जबलेई। नीरजीति जबलेय बिन्द जाने नहिं देई ॥ मोह लोभ जबतजै अग्निको जीति मिलावै। पवन जीत जब लेय गगनको वाध चलावै ॥

अरु हर्ष शोक समकारि गनै पांच जीत एकैकरै । भन चरण दास साधुन गहै ह्वै प्रकाश कारजसरै ॥

दोहा—गगन मध्य जो कमलहै, बाजत अनहद तूर ॥
दलहजारको कमलहै, पहुँचै गुरु मत शूर ॥
गगन मँडलके कमलमें, सतगुरु ध्यान निहार ॥
चरणदास शुकदेवपरशै, मिटैं सकल विकार ॥
सहस्रदलके कमल में, रूप अगम आपार ॥
सोहं सोहं जाप सहजे, होत एक हजार ॥

छप्पय ॥ नौ नाड़ीकी खैंच पवनलै उरमें दीजै । बज्जर ताला लाय द्वार नौबन्ध करीजै ॥ तीनौं बन्ध लगाय अस्थिर अनहद आराधै । सुरति निरतिका काम राह चल गगन अगाधै ॥ शून्य शिखर चढ़िरहै दृढ़ जहां आसनकरै । भन चरणदास नाड़ीलगै सो राम दरश कलिमल हरै ॥१॥ चौथा पद निर्वाण धाम वेगमपुर कहिये । गुण अतीत जहँ राम निरखि नैनन सुख लहिये ॥ अद्रै रूप अखण्ड मण्ड मण्डल बहुबंका । जहां काल नहिं ज्वाल शब्द अति उठत निशंका ॥ निज पारब्रह्म चौरी रची तहँ शिव सहित फेरी करैं । भन चरणदास चारौं मुक्ति सों हाथ जोरि पायँनपरैं ॥२॥ मूल कमलमें खेलि पिया कूं देखन चलिये । उलटि वेद षटचक्र जाइ सतवैसे मिलिये ॥ प्राण अपान मिलाय राह पश्चिमकी लीजै । बंक लाल कारि शुद्ध प्राणलै तामें दीजै ॥ मेरु दण्ड चढ़िजाय जब लोक लोकको गम परै । भन चरणदास ब्रह्मण्डमें ब्रह्मदर्शी दर्शन करै ॥३॥

दोहा—चरणदास यहि विधिकही, चढ़िबेको आकाश ॥
शोधि साधि साधन अगम, पूरण ब्रह्म विलाश ॥

छप्पय ॥ दल असंख्यको कमलरूप जहँ सत्तविराजै । अनंतभानुपरकाश जहां अनहद धुनि गाजै ॥ सुन्दर छवि अति हंस संत जन आगे ठाढ़े । जहँ पहुँचै कोइ शूरवीर नीशान जो गाड़े ॥ कमल मध्यजो तख्त है शोभा अपार वरणूं कहा । कहैं चरणदास उसतख्तपर आदिपुरुष अद्भुत महा ॥१॥ छत्र फिरत नित रहत चँवर ढोरत जहँ हंसा । जहँ दर्शन कर शिष्य मिटै युग युगका संसा ॥ आवागमन ह्वै रहत मरण जीवन नहिं होई । आनि मिले जब चार मुक्ति कहियत हैं सोई ॥ जहँ अमर लोक लीला अमर फल अनेक तहँ पावई। भन चरणदास शुकदेव बल सु चौथापद इमि गावई॥२॥ जहां चन्द्र नहिं सूर जहां नहिं जगमग तारे । जहां नहीं त्रयदेव त्रिगुण माया नहिं लारे ॥ जहाँ वेद नहिं भेद जहाँ नहिं योग यज्ञ तप । जहाँ पवन नहिं धरणि अग्नि नहिं जहां गगन अप ॥ अरु जहाँ रात नहिं दिवस है पाप पुण्य नहिं व्यापई । आदि अन्त अरु मध्यहै कहैं चरणदास ब्रह्म आपही॥३॥जहाँ काल नहिं ज्वाल भर्म नहिं तिमिर उजारा। जहाँ राग नहिं द्वेष जहाँ नाहिं कर्म अचारा ॥ जहाँ काम नहिं क्रोध लोभ नहिं मोह नरेशा। जहाँ मित्र नहिं शत्रु जहाँ नहिं देश विदेशा ॥ अरु चरणदास इक ब्रह्महै और न दूजा कोई तहाँ । भया जीव सों ब्रह्म जब योग युक्ति पहुँचे जहाँ ॥४॥ जहँ आतम देव अभेव सेव कबहूं न करावै । इच्छा दुई न

द्रोह कर्म नहिं भर्म सतावै ॥ जहँ जाप थाप नहिं आप तहाँ नहिं रूप न रेखा । जासु जाति नाहि पाँति नारि नहिं पुरुष विशेखा ॥ अरु पारब्रह्म पूरणसदा है अखण्ड नहिं खण्डिता । भन चरणदास ताड़ी लगै सो शून्य शिखर में मण्डिता ॥८॥

चौ०–ब्राह्मण सो जो ब्रह्म पिछानै । बाहर जाता भीतर आनै ॥ पांचौ वशकरि झूठ न भाखै । दया जनेऊ हिरदयराखै ॥ आतम विद्या पढ़ै पढ़ावै । परमातमका ध्यानलगावै ॥ काम क्रोध मद लोभ न होई । चरणदास कहैं ब्राह्मण सोई॥

छप्पय ॥ हुतो आपमें आप सृष्टि नहिं देत देखाई । ज्यों पाला जलमाहिं धरणिपर लीक लिखाई । भाँड़े माटीमाहिं कनकमें भूषण राजैं ॥ तरुवर बीरजमाहिं यथा फल फूल बिराजैं ॥ गुण रूप नाम सब ब्रह्म में ॐकार तासूं भई । चरणदास शुकदेव सो वही ब्रह्म माया वही ॥ १ ॥ पांचतत्त्व तेहि माहिं तीनिगुण जुदे न होई । चित बुधि इन्द्रिय तहाँ पाप अरु पुण्य समोई ॥ विष अमृत तेहि माहिं भूत अरु देव मुनी-श्वर । फूल शूल तेहि माहिं यमन अवतार ऋषीश्वर ॥ चरणदास शुकदेव भज ये सब दरशैं दृष्टिअब । निराकार निर्गुण कहत भूले भटक लोग सब ॥ २ ॥

सवैया ॥ जैसे जलमें जल कुंभ बसै जल भीतर बाहर पूरिरह्यो है । तैसे जलमें जल पाला बँध्यो जल फूटिगयो जल आप भयो है ॥ ऐसे जगमें वह व्यापिरह्यो किनहूं कर लोचन नाहिं गह्यो है । चरणदास कहैं दुइ दूरि करो सगरो जग एकहि डोरी गुह्यो है ॥१॥ जैसे पट मैलको संग कियो

जुगयो सब श्वेत भयो तनुकारो । श्यामस्वरूप अकाश भयो जब धूम धुवाँ जो भयो भौ भारो ॥ माया पिशाचको संग कियो जब नीचभयो करता करतारो । शुकदेवकहैं दुई दूरकरो चरणदास सभी इकसूत निहारो ॥ २ ॥

कवित्त ॥ दीसत रह्यो न वारपार पूरि रह्यो जगतसार ऐसोही अटल नेक टारो न टरतहै । ताको तौ नहिं नाश ठौर ठौर रह्योभाश जैसे रहत पुष्पवास पासही रहतहै ॥ लोचन रह्यो समाय वेदहू सकै न गाय पुस्तक लिखो न जाय जारो ना जरतहै । शुकदेवजी की दया चरणदास को प्रकाश भयो जैसे मैं खोजि पायो पायोंना परतहै ॥१॥ कई कोटि दुर्गा जहां हाथ जोरे रहैं कई कोटि शम्भू जहां ध्यान लावैं । कई कोटि ब्रह्मां जहां अस्तुतिकरैं शेष नारद नहीं पारपावैं ॥ वेद यशही कहैं भेद कछु ना लहैं पंथकी वात वेभी वतावैं । चरण हीदासकी आश जितहीरहो कोटि तेंतीसहू शीश नावैं ॥२॥ रामहीदेव अरु राम देवल भयो रामही रामकी करै पूजा । रामही धर्म अरु भर्म भे रामही रामही ज्ञान अज्ञान सूझा ॥ रामही एक अनेकहैं रामही राम परगट भयो रामगूझा । चरणदास शुकदेव सबरामही रामहैं शोधि निश्चय किया नाहि दूजा ॥ ३ ॥ रामही बीज अरु रामही पेड़हैं रामही फूल अरु राम पाती । रामही भोगिया रामही योगिया राम जप तप करै दिवस राती ॥ रामही नारि अरु रामही पुरुषहै राम मा बाप अरु पूत नाती । शुकदेव चरणदास सब रामही रामहै रामही दीवला राम बाती ॥४॥ रामही चोर अरु रामही ठग भयो राम

बटमार अरु रामघाती । रामही साधुयत सतभयो रामही राम रक्षाकरैं रामसाती ॥ रामही देह इंद्रिय भयो रामही मन भयो रामही सुरतमाती । गुरु शुकदेव चरणदास चेलाभयो रामही सीप अरु राम स्वाती ॥५॥ आपही वेद अरु आप पंडित भयो आपकित्तेब अरु आपकाजी । आप काशी भयो आप जाती भयो आप मक्का भयो आपहाजी ॥ आपही बाँग अरु आप मुल्ला भयो आप पण्डा भयो घण्टबाजी । चरणदास शुकदेव हरि मुरीद मुरसिद भयो मुक्ति औ बंध सब आप साजी ॥६॥ ब्रह्मही आदि अरु ब्रह्मही मध्यहै ब्रह्मही अन्तकूं वेदगावै । ब्रह्मही एकअनेकहै ब्रह्मही आपनी दृष्टिमें आपआवै ॥ होय दूजा कोई नाहिं ऐसी भई आपही आप आनँद बढ़ावै । ब्रह्म शुकदेव चरणदास भी ब्रह्महै ब्रह्मही ब्रह्मका ध्यानलावै ॥७॥

राग अरिल्ल ॥ आतम ज्ञान विनानाहिं मुक्ता वेद भेद करि देखा जोय । ब्रह्मा शेश महेश पूजकरि बसै वहलोक रहतनहिं सोय ॥ जल पाहन अरु भूत भवानी पूज पूज भर्मा सबकोय । चरणदास ततविरला जाने आवागमन दुख बहुरि न होय ॥

सवैया ॥ न उर्ध्वबाहु न अंगविभूति न धूनीलगाय जटा-शिरडारूं । न मूड़ मुड़ाय फिरूं वनही वन तीरथ बर्त्तनहीं तनगारूं ॥ उलट लखों घटमें प्रतिबिम्बसों दीपकज्ञान चहूं दिशिजारूं । चरणदास कहैं मनहीं मनमें अब तूही तुही करि तोहिं पुकारूं ॥

कवित्त ॥ तारी जो लगाय देखो वेद अर्थ पायदेखो भक्ति विना अखिल ईशकोहूं नाहिं पायोहै । दशौदिशाधाय देखो

तीरथ अन्हाय देखो भटको सब प्रेम बिना अमृत जो गायो है ॥ हिवारे तनुगार देखो करवटसी मारदेखो ऐसी ऐसी बातन चौरासी भर्मायो है । भाषै चरणदास शुकदेवके प्रताप सेती आदि पुरुष भक्तहेतु नन्दगेह आयो है ॥१॥ मूड़हू मुड़ाय देखो जटाहू रखाय देखो सेवरा कहाय देखो भेदहू न पायो है । श्रवण चिराय देखो नादहू बजाय देखो धूरहू लगाय देखो भर्म सबै छायो है ॥ धूम्रपान झूल देखो कोई भर्मभूल देखो मोकूं हरिनाम नीको गुरू जो बतायोहै । भाषै चरणदास शुकदेवके प्रतापसेती आदिपुरुष भक्तिहेतु नंदगेह आयोहै ॥ २ ॥

सवैया ॥ भूतल भर्मेत कूर फिरै इन बातनमें कहकाज सरैगो । बैठिरहो हरिमारगमें करता जो करै सोइ होय रहैगो ॥ अपने हितसों जिन तोहिं सृज्यो है अलेख विलोकि कै सोचकरैगो ॥ चरणदास विचारि कहा भटकै हरिनाम बिना दुख कौन हरैगो ॥१॥वहीराम वहि श्याम विधाता वही विश्वंभर पतिततरै । वही विष्णु वहि कृष्णमुरारी वही निरंजन ज्योतिधरै ॥ दीनानाथ हरि वह कहियतुहै जो चाहै सो वही करै । चरणदास क्यों भटकै मूरख रामबिना दुख कौनहरै ॥ २ ॥

कवित्त॥वही राम मेरो जिन रावण विनाइयो जाय वाही राम मेरो जिन लंकपुर जारी है । वही राम मेरो जिन कंसको पछारचो जाय वही राम मेरो जिन नाथ्यो नागकारी है ॥ वही राम मेरो सो डार पात रमिरह्यो वही राम मेरो जाकी

जगमें उज्यारी है। चरणदास कूर सब संतनको चेरो कहै वही राम मेरो प्रहलाद पैज पारी है ॥

कुण्डलिया ॥ वेद पुराणनमें सुनो, संकट मेटननावँ। चरणदासके काजको, अब क्यों थाके पावँ ॥ अब क्यों थाके पावँ धाममें हो अकनाही। और हमारो कौन गहै या दुखमें वाहीं ॥ सकल सृष्टि विसराय खैंचि मन तुमसों लायो। इन पांचन को काट करो मेरो मनभायो॥ १॥ भीरपरी जब दासपर, जित तित धारो वेष। अगिले पिछले कर्मकी, अब क्यों न मेटो रेष ॥ अब क्यों न मेटो रेख कर्मकोई दुर कीन्हों। हम कुछ जानत नाहिं तुम्हीं काहे नहिं चीन्हों ॥ अब तुम करो सहाय इन्हेंसे मोहिं छुटावो। काम क्रोध मोह लोभ चक्रसों वेगिनलावो ॥ २ ॥

कवित्त ॥ सबही दुख पावैं बेर बेर पछितावैं अब तोहींको ध्यावैं दुख वही काटि दीजिये। अन्नके दुखारी सब भये हैं भिखारी सृष्टि काहे को विसारी प्रभु वेगि जो पसीजिये ॥ जक्त गुणागार करि देखो है विचार अब ना करो अवार बंदि छोड़ि जो कहीजिये । दिल्लीकी अर्ज चरणदास कहैं लर्ज शाह नादरको वर्ज अर्ज मेरी सुनि लीजिये ॥ १ ॥ यशो-दाको लाल देखि मोहन ब्रजबाल देखि गोपी अरु ग्वाल देखि प्राण वारि दीजिये। माथेपर मुकुट देखि कुण्डलकी झलक देखि घूँघर वारी अलक देखि ललकाही कीजिये ॥ बाँकीसी मरोर देखि मुरलीकी घोर देखि पैंजनी टँकोर देखि देखाही कीजिये। चरणदास कूरदेखि नैननको मूँद देखि नैननके बीच

देखि यही ध्यान कीजिये ॥ २ ॥ पीरा सुधार फेंट तुर्रा छवि अधिक बनी करहू में मुरली गहि अधरनपै धारीजू । घेरदार नीमो पारो प्यारो अंग चुभिरहो एक पावँ ठाढ़ सो प्रेमके अहारीजू ॥ सबही शृंगार किये राधेजू वायें अंग ठाढ़ी मुसक्यात प्राणपिया संग प्यारीजू । नवल किशोर मोर साँवरो सुजान प्यारो पार चरणदास कीन्हों अटल विहारीजू ॥ २ ॥

दोहा—मनदानिस्तम् हिज्रने, दीगर वस्ल न कोय ॥
चरणदास गफ़लतउठ, वाहिद वाहिद होय ॥
हिज्र वस्ल दोनों नहीं, नहिं दरिया नहिं मौज ॥
चरणदास ज़र्रा नहीं, जो कर देखा खोज ॥
दरिया वाहिद लामका, बाजत अनहद बीन ॥
सकल चरण फरज़ंदना, नहीं संग ताबीन ॥
दीद शुनीद जहां नहीं, तहां न काल न हाल ॥
जौहर जिसम इसम नहीं, चरणदास नहिं खाल ॥
बुरी शिफ़ारस यामिनी, और सगाई होय ॥
चरणदास यों कहतहैं, भूलकरो मतिकोय ॥

कवित्त ॥ काहेको भक्तपै समान हैं बगलेको ध्यान तो लगायो है मीनके पचावनको । भीतर और विषय वास चरण दास बाहर तिलक छापेकिये जक्तके दिखावनको ॥ हरिके गुण गावनको रसनारिसात अधिक मनतौ हुलसात बाद निन्दाके बढ़ावनको । बहुत सीख राखीलोक और बड़ाई को काया

नाहिं शोधी एक रामजीके पावनको ॥ १ ॥ यह है काल तामें महाविकराल जहां चरचा गोपाल जाकी निन्दाकरैं जानिकै। जोई करै भक्त जाकूं दुष्ट बहुनामधरैं वचन कुवचनकहैं क्रोध-मन आनिकै॥ देखैं अब जायगो तू परम वैकुण्ठहीकूं बड़ोभयो साधु मालाधारि तिलक ठानिकै। ऐसे दुष्ट नीचन की बातनहीं मानिये जू कहैं चरणदास सबै पापी नरक खानिकै ॥ २ ॥ आप बड़े नीच करतूत करैं नीचनकी नीचनको संग जिन्हैं भावै उतपात है । रामनाम सुनि हिये लागत है आगि जान कोऊकरै भजन ताहि देख जर-जातहै ॥ खोंटे भये आपकहैं औरनकूं खोंटे वै तो महामोटे पापी थोरे माहिं इतरातहै। साधनके निंदक सुतौ परैंगे नरक मांझ कहैं चरणदास दुख पावैं बहुभाँति है ॥ ३ ॥

दोहा—चरणदास हितसों कियो, ग्रन्थ अनेक प्रकार ॥
अष्टादश अरु चारको, काढ़िलियो ततसार ॥

चौ०—संवत सत्रहसै इक्यासी। चैत सुदी तिथि पूरणमासी ॥
शुक्लपक्ष दिन सोमहिवारा । रच्यो ग्रन्थ यों कियो विचारा ॥
तबहीं सूं स्थापन धरिया । कछुइकवाणी वादि न करिया॥
ऐसेहि पांचहजार बनाई । नाम गुरू के गंग बहाई ॥
फिरि भइ वाणी पांचहजारा । हरिको नाम अग्निमें जारा ॥
तीजे गुरुआज्ञा सो कीन्हीं । सो अपने साधनको दीन्हीं ॥
अद्भुतग्रंथ महासुखदाई । ताकी शोभा कही न जाई ॥
तामें ज्ञान योग वैरागा। प्रेमभक्ति जामें अनुरागा ॥
निर्गुण सर्गुण सबही कहिया । फिर गुरुचरण कमलमें रहिया

जो कोइ पढ़ि पढ़ि अर्थ विचारै। आप तरै औरनको तारै॥
ना मैं कियो न करने हारा। गुरु हिरदेमें आय उचारा॥
चरणदास मुखसूँ शुकदेवा। आन कहे चारोंही भेवा॥

इति श्रीस्वामीचरणदासजीकृतग्रंथभक्तिसागरसम्पूर्णम्।

दोहा-जल घृतसूं रक्षा करौ, मूरख हाथ न देव॥
ढीलौ कर नहिं बाँधिये, ग्रंथ कहत यह भेव॥

इति श्रीस्वामीचरणदासजीकृतवाणीसंग्रह स्वामी-
युगलानन्दकबीरपंथी भारतपथिकद्वारासं-
शोधितंसमाप्तम्।

॥ ॐ शांतिः शांतिः शांतिः॥
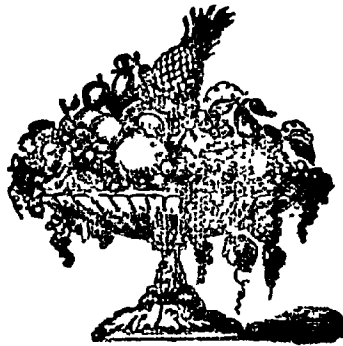
पुस्तक मिलनेका ठिकाना-
खेमराज श्रीकृष्णदास,
"श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम् प्रेस, खेतवाडी—बंबई.

श्री राधेश्यामायनमः ।

अथ श्रीगुरुभक्ति प्रकाशका परिशिष्टभाग ।

पद्राग खमाच ।

नमो नमो शुकमुनि चरणदासा । कलिके कुटिलजीव तिनके हित संत अवतार धरचो हरित्रासा ॥ १ ॥ श्रीपुरुषोत्तम वचन मानिकै मुरलीधर घर कीन्ह निवासा ॥ च्यवनऋषीश्वर दूसर कुलको परकट कीन्हों जगत्उजासा ॥ २ ॥ श्रीशुकदेव कृपा जब कीन्हीं सकल मनोरथहू भये तासा ॥ श्रीराधा कृष्ण पीतांबर वस्तर श्रीतिलक दीन्हों शुत व्यासा ॥ ३ ॥ परमधर्म भागवत कथन करि आनधर्म सब कियो जुनासा ॥ युगयुगभक्ति करो हरिजूकी यह वर दियो है उमंग हुलासा ॥ ४ ॥ करि परणाम प्रदक्षिणा कीनी इंद्रप्रस्थ निज कियो जु वासा ॥ सतगुरु कह्यो सोइ पुनि कीन्हों स्वामिभक्ति करी प्रेमकी रासा ॥ ५ ॥ अनुभव शब्द उठा घनघोरा स्वयंरूप निज अंतर भासा ॥ मन वच कर्म शरण जो आये तिनहूंकी मेटी यमफांसा ॥ ६ ॥ त्रिविधताप मेटनको समरथ मानो पूरण चंद्रप्रकासा ॥ तत्पर टहल महल वृंदावन निजस्वरूप नित दंपतिपासा ॥ ७ ॥ परमपवित्र चरित्र यह गावै ध्यानधरै करिकै विश्वासा ॥ निश्चयहोय अमरपुर वासी जन्ममरणकी छूटै गांसा ॥ ८ ॥ अष्टसिद्धि जिन चरणनलागी सकल पदारथ करैं जुआसा ॥ लक्षिदास उभय पाणि जोरिकै युगलभक्ति दीजै निजदासा ॥ ९ ॥ इति ।

श्रीगुरुचेलेकासंवादश्रीशुकदेवजीकीजन्मलीला श्रीस्वामीरामरूपजीकृत प्रारम्भः ।

दोहा—जैजै श्रीरणजीतगुरु, विनयकरूं शिरनाय ॥
जनमहोन शुकदेवकी, लीलामोहिं सुनाय ॥ १ ॥

चौ०—श्रीव्यासके सुत शुक सूंचे। भक्तीज्ञान योगमें ऊँचे ॥
शुभ कर्मनको नीके जाने । नीके अपना रूप पिछाने ॥
विचरत पृथ्वीपर नितरहै । तृष्णाजारी आनँद लहै ॥
सर्वशास्त्रन नीके जाने । सबके अर्थनको पहँचाने ॥
जिनके वचन जगत छुटजावै । करनी करै अभयपद पावै ॥
श्रीविष्णुसम है अवतारी । सकल ऋषिनसे पदवी भारी ॥
ऐसेहैं शुकदेव गुसाँईं । सदा विराजो ममहियठाँईं ॥
कैसे जन्म भयो जगमाहीं । याको भेद सुनो मैं नाहीं ॥
उनकी कथा जुलागे प्यारी । सुनिआनँद हो हिये मँझारी ॥
ज्योंसंतुष्टहो अमृत पीये । मैंतिरपतहूं सरवन कीये ॥
चरणदास गुरु वचन तुम्हारे ।भरम मिटावन करन उज्यारे॥२॥

दोहा—रामरूपगुरुजीप्रभो, और कहो इक भेव ॥
कैसे तप कियो व्यासने, वरदीनो महादेव ॥ ३ ॥

गुरुवचन ।

रामरूप पूछन करी, तुमने जो यह बात ॥
मेरे मनको भावती, कहतैं बहुत सुहात ॥ ४ ॥

चौ०—चरणदास कह सुन शिष सोई।तपबिन पूरण काज नहोई॥
तपसों बहुत बड़ाई पावै । सबमें मुखिया वही कहावै ॥
बड़ाभयेनहिं धनके आये । बड़ा नहोय राजके पाये ॥

तुच्छ बड़ाई इनकी जानों। बड़ी बडाई पायों ध्यानौ ॥
सबका मूल तपस्या लीजै। तपसों इन्द्रियनिग्रह कीजै ॥
पापहोय सो इंद्रिन काजै। इंद्रियरोंके सब दुख भाजै ॥
परमारथका मारग सूझै। कारज सिद्ध होहि जो गूझै ॥
इन्द्रियवश मन जीताजावै। रामरूप निहचल पर आवै॥५॥
दोहा—अब सुन शिष तोसूं कहूं, अद्भुत कथापुनीत ॥
जोभीषमजीनेकहा, युधिष्ठिरसूं करिप्रीत ॥ ६ ॥
चौ०—एकहिसमयव्यासमुनिराई। पुत्रकामना मनमें आई ॥
यही जु धरिके मनमें आसा। चलिके गए महादेव पासा ॥
सुमेरु शिखरपै शिवजी राजै। पार्वती लिये संग विराजैं ॥
अरु उनके सेवकथे सारे। बैठेथे आनँदमें भारे ॥
वहीठाँव जो व्यास गुसाँई। पुत्रहेत लगे तपकेमाहीं ॥
कठिन तपस्या करने लागे। ऐसा पुत्र सु मनमें मांगे ॥ ७ ॥
दोहा—पृथ्वीसा धीरज धरै, जलसा निर्मल होय ॥
तेज अग्निसा तासमें, वायुसा व्यापक होय ॥ ८ ॥
अरु ऐसाही चाहिये, जैसा बडा अकाश ॥
करी तपस्या सौ बरस, मनमें धारि यह आश ॥ ९ ॥
जल फल फूल पात नहिंलीन्हा। जबलगपवनअहारहिकीन्हा ॥
जहां तपस्या करते होथे। तहां ब्रह्मऋषि अरुराजऋषीथे॥
यम अरु इंद्र वरुण को जानौ। वायु कुबेर अग्नि असथानौ ॥
वसु पिरथी अरु सूरज चन्दा। अरुहांईथे सातौ सिंधा ॥
अरु पर्वतथे नरतनु धारे। जहां अप्सरा गंधर्व सारे ॥
अरु चौरासी सिद्ध जहांई। अरु नारदमुनि हुते तहांई ॥ १० ॥

दोहा–पीत पुष्पमाला पहर, ललित गौरजा कंत ॥
मानौ फूली सांझही, हिम शशिशोभावंत ॥ ११ ॥
व्यास तपस्या जो करी, वडा कष्टही धारि ।
सावधान तामेंरहे, गए न मनमेंहारि ॥ १२ ॥
चौ०-अरु बलछीनहुवा नहिंवाका।तीनलोकमोंअचरजताका॥
धन धन कहा ऋषी मुनि सारे। जोहांथे सो सबै पुकारे ॥
तेज तपस्या जटा जुचमकैं। मानौ अग्नि भाँतिसी दमकैं ॥
देखतपस्या ऐसी शंकर । परसनभए बहुतही मनकर ॥
वरदेनेकी मनमें आई। व्यास ओर देखा मुसकयाई ॥
कहा मनोरथ पूरा कीना । पुत्तरचाहा जैसा दीना ॥ १३ ॥
दोहा–पूरी करी जुकामना, मैं तोको सुतदीन ॥
रामभजनमें रहैगा, ध्यानमाहिं लवलीन ॥ १४ ॥
चौ०–महादेवसूं यह वरपाया। व्यास विदाहो मारग धाया ॥
आपहुँचेस्थलके मांही ।फुल्लतभए बहुत हरषाई ॥
सदामगन आनँदमें पागे। निशिदिन रहैं ध्यान लवलागे ॥
व्यासदेवके तपकी बूझी । सो हम कही वातथी गूझी ॥१५॥

शिष्यवचन ।

दोहा–तपकी कही सुमैं सुनी, तिरपत भये जुकान ॥
रामरूप इक औरभी, पूछे कृपानिधान ॥ १६ ॥
कौनमहीना कौन तिथि, कौन हुता जो वार ॥
व्यासगेह कैसे भया, शुकजीका अवतार ॥ १७ ॥

गुरुवचन ।

वैशाख महीना मध्यमें, मावसतिथिदिन सोम ॥
जन्म लियौ शुकदेवजी गौरिसुमेरकी भौम ॥१८॥

डेढपहर दिन चढाथा, जब हूवा वीचार ॥
वेदव्यासके उरविषे, उपजा हर्ष अपार ॥ १९ ॥
चौ०–तपपाछे केतिक दिन माहीं। होमठटा श्री व्यास गुसांई॥
मावस तिथि दिन सोमहि वारा। परवी लख यह किया विचारा ॥
होमकरनकी मनमें आई। ताकी सौज सबै मँगवाई ॥
सावधानहो बैठे नीके। लागे मथन अग्निअरनीके ॥
ताही समय अप्सरा आई। सहजमाहिं सुंदर अधिकाई ॥
नाव घृताची रूपअपारा। व्यासदेव वा ओर निहारा ॥
मोहित भए देख वा नारी। होनहारकी गतिही न्यारी ॥
लखा अप्सरा मनमें जवहीं। तोती रूप धरा उन तवहीं ॥
पलक कटाक्ष काम वश भया। वीजखसा थाँभा नहीं गया ॥
विंदुपडा अरनीके मांही। ईश्वरगति जानीनाहिंजाही ॥ २० ॥
दोहा–फिर अरनी मथनेलगे, प्रगटे अग्नि स्वरूप ॥
मूरत श्रीशुकदेवकी, नख शिख व्यासहिरूप ॥ २१ ॥
किशोर अवस्था होगये, तुरतहि ले अवतार ॥
अतिसुंदर तनु साँवरे, मानो कृष्णमुरार ॥ २२ ॥
चौ०–गंगापहींप्रकट होआई। रूपनारिके अति छविछाई ॥
वामेंशुकजी आनि न्हवाए। फूल स्वर्गके पवन ब्रपाए ॥
दण्ड एक दूजी मृगछाला। नभसे उतरीही ततकाला ॥
आय अप्सरा निरतन लागी। गंधरव गावनलागे सुभागी ॥
जहाँ दुंदुभीबाजन लागे। लगी शंखध्वनि होने आगे ॥
जितने बाजनथे सो सारे। बाजनलगे सु न्यारे न्यारे ॥
पित्रदेवनारदसे मुनी। हाहाहूहू स्तुतिभनी ॥
मगनभए थिर चरजगसवहीं। रामरूप शुक जनमेंजवहीं॥ २३॥

दोहा—रीतिजन्मनेकी करी, पार्वती त्रिपुरार ॥
करी बधाई भवन अप, बांधी बंदनवार ॥ २४ ॥
वासवने बस्तर दिए, शुकदेवजीको आय ।
फटैं न जीरणहोयना, मैल नहीं लगजाय ॥ २५ ॥
और कमंडलु, काठका, दिया जु उनके हाथ ॥
धन्यसमयधनिदिवसथा,रामरूप धनिनाथ ॥ २६ ॥
जिनका दरशन शुभअहै, सो पक्षी नभ माहिं ॥
दिए दिखाई आयकै, चहूँओर मंडराहि ॥ २७ ॥
तोता हरियल हंसही, सारस अरु पिकरोर ॥
भांति भांतिके और खग, नीलकंठ अरु मोर॥२८॥
जन्मदेख शुकदेवको, सभी भए परसन्न ॥
आपसमेंपक्षी कहैं, जै जै धनिधनिधन्न ॥ २९ ॥

चौ०—जन्मत तप ओरैमनलाए । जगमेंपगन नेकनहिंपाए ॥
स्वतःसिद्धभेश्रीशुकदेवा । जानतहुते चारहौ भेवा ॥
सर्वशास्त्रनअर्थ पिछानै । जैसे व्यासदेव मुनि जानै ॥
बिनापढे सबही कुछ जाना । तौभी बृहस्पतिको गुरुमाना ॥
जो विद्या गुरु किया सनेही । बिनगुरु विद्या फलनहिं देही ॥
नाहिंतो चाह कहाथी उनको । विद्याही पढनेका तिनको ॥
याते मर्यादा गुरुचीन्हा । सकल शास्त्र पाठ जू कीन्हा ॥
चारवेद उनसों पढ लीन्हा। मीमांसामें अतिमन दीन्हा ॥३०॥

दोहा—राजनीत अरुकाव्य सब, पढगए स्हेजितेक ॥
गुरुपूजे दई भेटही, स्तुतिकरी अनेक ॥ ३१ ॥
फेर तपस्याको लगे, पांचो इंद्रिय रोक ॥

मनदीना भगवानको, रहा नहर्ष नशोक ॥ ३२ ॥
करतेथे दण्डवतही, सकल देवता ताहि ॥
ऋषिमुनिहू करतेहुते, बडा जानकारि चाहि ॥ ३३ ॥
जो कारज होता कछू, करते इनसूंबूझ ।
अधिकीथे तप ज्ञानमें, बुद्धिबड़ीथी सूझ ॥ ३४ ॥
चौ०—और जगतकारजके माहीं । कबहूंचित्त लगायो नाहीं ॥
हरिके सुमिरणमें नित रहते । मोक्ष धर्मका मारग चहते ॥
एक दिना शुकदेव सुभागे । आय पितासूं कहने लागे ॥
मोक्षधर्ममोको समझावो । मेरे मनका भर्ममिटावो ॥
तुम सम और नदीखे कोई । मोक्षधर्मको जानै सोई ॥
ताते कृपा वेगही कीजे । मोक्षधर्मको मारग दीजे ॥
सीखनको हियरो हुलसावे । वारवार मनमें यहि आवे ॥
ज्ञानअरूपी समझो चाहूं । तातेपरमातमको पाऊं ॥ ३५ ॥
दोहा—पुत्तरकी अभिलापही, सुना व्यासहीदेव ॥
जब समझावनही लगे, मोक्षधर्मको भेव ॥ ३६ ॥
चौ०—पहलेशास्त्रयोगसिखायो । बहुरि सांख्ययोग समझायो ॥
मतवेदांत दियो समझाई । जिज्ञासीहूए अधिकाई ॥
जभी व्यासमुनि ऐसी जानी । श्रीशुकदेव भए ब्रह्मज्ञानी ॥
जैसे व्यास ब्रह्मको जानै । ऐसेही शुकदेव पिछानै ॥
जबकही पुत्तर आवो आगे । ढिग बैठाय कहन यों लागे ॥
मिथिलानगर जनक जहँराजा । ह्वां तुम जाव मुक्तिके काजा ॥
मोक्षधर्म वे नीकेजानै । ब्रह्मदरशी ब्रह्मरूप विधानै ॥
सोइ समज सब तोकूं देहै । कृपाकरिसंदेह मिटै है ॥ ३७ ॥

दोहा—यह सुनिकरि ठाढेभये, आज्ञा शिरधर लीन।
गिरिसुमेरुते उतरकै, गवन नगरकूं कीन ॥ ३८ ॥

चौ०—जापहुँचे नगरीके माहीं। राजा जनक रहे जाठाहीं ॥
राजद्वारपै ठाढो भयो। द्वारपालने ह्वां जा कह्यो ॥
व्यासपुत्र चल द्वारेआयो। ठाढोहै यों जाय सुनायो ॥
जनकविदेह समझयों भाषो। कही कि ह्वांई ठाढो राषो ॥
सातदिवस शुकदेव गुसांई। ठाढेरहे पवँरिके ठाई ॥
राजाजनक नही सुधलीनी। बडीपरीक्षा गाढी कीनी ॥
अठयें दिन मंदिरको ल्यावौ। ठाढरहैं तौ ना बैठावौ ॥
सात दिवस फिर पूछानाहीं। शुकजीके मनकछूनआई॥ ३९

दोहा—चौदह दिनगये बीतके, हुवा पंद्रवां द्योस ॥
बुलवाये रनिवासमें, देखनको जगहौस ॥ ४० ॥

चौ०—नाचनको पातुर पठवाई।कह्यो कटाक्ष करो तुमजाई ॥
हेतुभाव करि वशमें ल्यावो। नानाविधिके भोजन खवावो ॥
सातदिनालौं यौंही कीन्हो। मन शुकदेवको नहिं लीन्हौ ॥
मोहत भए न काहू नारी। हेतुभाव करि वहु पचिहारी॥
अरुभोजन दीयो सोइ खायो। अपनी इच्छा नाहिमँगायो ॥
चौदह दिन ठाढे जो वितई। ताको बुरो न मानौ चितई ॥
अस राजा मिहमानी करई। जाकोलोभन मनमें धरई ॥
स्थिरचितदुखसुखनहिव्यापो।पवनलगै ज्यौं गिरिनहिं कांपो॥

दोहा—दुख सुख कुछ व्यापै नहीं, चितस्थिरहै जौन ॥
राम रूप गिरिना हलै, आये गये जुपौन ॥ ४२ ॥

जब राजा शुकदेवको, देखाबहुत हलाय ॥
पाछे दिन इक्कीसवें, लीनोनिकट बुलाय ॥ ४३ ॥

चौ०—नमस्कार पूजाकरि हेती। समाचार पूछा हित सेती ॥
कौन कामना मनधर आये। सो अब हमसूं कहो सुनाये ॥
जत सत शील क्षमामें पूरे। ज्ञान ध्यान अरु तपके शूरे॥
अपने कारज सब तुम कीने। मगनरूप आनँदलवलीने ॥
बड़ो अचंभो मोकूं आयो। कौन मनोरथ मनमें लायो ॥
तब बोले शुकदेव विज्ञानी। लज्जालिये मधुरसी बानी ॥
कछू कछू पूछनकूं चाऊं। मनमें जो संदेह मिटाऊं ॥
यह संसार भयो काहीते। कबलग रहै कहौ ढाईते॥४४॥

दोहा—यह जग कैसे बनतहै, और समापत होय ॥
दुखसुखमन या जीवकू, मोहिं बतावो सोय ॥ ४५ ॥

चौ०—जबकह जनक सुनौशुकदेवा। एक आतमा स्थिरभेवा ॥
नित सत जानो भेद जु वाको। काहूविधकरि नाश नजाको ॥
अरु वा छूटि सभी भ्रम जानौ। भ्रमहीतें थे जग प्रगटानौ ॥
जबलग भरम तभीलौं भासै। भर्ममिटेसे सबही नासै ॥
अरु संसारिनके मन आंधे। भ्रम आपने दुःखसुखबांधे ॥
शुकजी कही ये आगेजानो। ग्रंथनमाहिं लिखीपहँचानो ॥
मेरेभ्रमसूं जग उपजतहै। मेरे भ्रमहीसूं जु खपतहै ॥
सो कहुयहै जगतकबलौंहै। मोहिंबतावो यह जबलौंहै॥४६

दोहा—जनककही मैं जानिया, मतवेदांत निहार ॥
ज्ञानीके सतसंगसूं, अंतरकियो विचार ॥ ४७ ॥

भांतिभांतिकी सृष्टिही, दीखतहै जो एह ॥
सुभाव अंवस्था एकही, एक वस्त्रलखलेह ॥ ४८ ॥
चौ०—एककु देखतहै जुअनेका । तेरेही भ्रम तोहिंविशेषा ॥
याजगकूं तुम यही विचारो । तेरोही भ्रम दिखावनवारो ॥
जो तोको यह देत दिखाई । अपनो भरम जान ले याई॥
जो यामें संदेह कराई । भरमबंध में जानौं वाही ॥
व्यासपुत्र तुमहो बुधवानै । तुतो जानशो सो तू जानै ॥
सब इंद्रिनके रहे न स्वादा । दुखसुखव्यापेनाहिंन बाधा ॥
जिसको ऐसा होवे प्राप्त । मुक्तिभयो वाकूं जानो संत ॥
मेरो यह भ्रमहै अकिनाहीं ।यह द्विविधा मत रख मनमाहीं॥
दोहा—निहचैकरिकै जानतू, यही बातहै ठीक ॥
यह जग मेरोही भरम, यह विचारले सीख ॥ ५० ॥
तो मन निहचै होय जब, भरम जायगो नास ॥
जगतनेकहूं नारहै, खुलै तिमिरकी गांस ॥ ५१ ॥
थिरही केवल आत्मा, सत चित आँनंदरूप ॥
यही जानिकै मौनगहु, होरहु ज्ञानस्वरूप ॥ ५२ ॥
कियो जु राजाजनकने, इहिभांती उपदेश ॥
रामरूप शुकदेवके, मनको गयो अँदेश ॥ ५३ ॥
जभी आत्मारूपमें, मगनभए शुकदेव ॥
भरमतिमिर अज्ञानको, रह्यो नेक नहिंलेव ॥ ५४ ॥
भई अवस्था और ही, रोम रोम आनंद ॥
जीवनमुक्ता होगए, रही न दुबधा संध ॥ ५५ ॥
भूले सब व्यवहारही, आपनकूं गएभूल ॥

अहंकारनाश्यो सबै, ताको रहो नमूल ॥ ५६ ॥
श्रीजनकके वचन सुनि, लियउपदेशअघाय ॥
जान मोक्षसिद्धांतकूं, नीके समझाआय ॥ ५७ ॥
थेतोपूरणपहलही, सबविध सबही भाय ॥
सतगुरु इसकारणकिए, निहचै कीना आय ॥ ५८ ॥
बिन सतगुरु निश्चयनहीं, कैसहु चातुर होय ॥
केतीही विद्यापढो, भूल मिटैना कोय ॥ ५९ ॥
मुदितहोय दण्डवत करि, उठचाले भयेभोर ॥
पवनभांति उत्तरदिशा, चलेपर्वतोओर ॥ ६० ॥

चौ०—ह्वांसू उठे पवन ज्यों धाए। वेगहिपर्वत ऊपर आए ॥
व्यास तपस्या करते पाए। दरशन करिकै अंगनवाए ॥
व्यास उठाय दृष्टि जब देखा। आवत अपनापुत्र विशेषा ॥
सूरज अग्नि तेज ज्यों धरई। वेगहि धावत मानौ सरई॥६१॥

दोहा—वाको तेज न रुकसके, गिरिवरतरुके ओट ॥
आय पिताके पासही, चरणनमें रहेलोट ॥६२॥

चौ०—पिता उठाय हिएसूंलाए। दोनोंमिल बहुतै सुखपाए ॥
व्यास प्यारकरि पूछनलागे। समझा सो सब कहु मोआगे ॥
जब शुकदेव सभी कुछ कहिया। देखासुना जनकसूं लहिया॥
भांति सिखनकी रहन विचारा। तपसेवा करने प्रणधारा ॥
ऐसेही महाभारतमाहीं । विनासुने जानै कोइनाहीं ॥
बाजे मूरखवाद बढावैं । विनजाने कुछकी कुछ गावैं ॥
अबके द्वापरकी यह काथा । महाभारतमें है विख्याता ॥
भारतमें हैं पर्व अठारा । तामें शांतिपर्व विस्तारा ॥

शांतिपर्वमें मोक्षधर्मजो । तामाहीं यह कथा परमसो ॥
वेदव्यासके सुत शुकदेवा । तिनको तो कारण इह भेवा ॥
सोई मोकू मिले जुआई । जिनकी लीला तोहिं सुनाई ॥
ऐसेही है रामदुहाई । ज्योंकी त्यों तोकूं समझाई ॥
रामरूप यह निहचै कीजो । सांचीबात हिये धरिलीजो ॥
दंतकथा झूठी जगछाई । कहैंकि गर्भवसे शुकआई ॥
और कहैं बारह वर्षताहीं । रहे शुकदेव उदरके माहीं ॥
ऐसी चूक करी क्या भारी । सहादुःख जो अधिक अपारी ॥
मूरखकहते नाहिं लजावैं । ईश्वरकूं जो दोष लगावैं ॥
उनकी बात सुनो मत प्यारे । वेतो हैं अपराधी भारे ॥ ६३ ॥

दोहा–मोहिं मिले शुकदेवजी, तिनकी तो यह बात ॥
गर्भयोनि आएनहीं, निहचै जानो तात ॥ ६४ ॥
चरणदास यों कहतहैं, रामरूप उरधार ॥
यह लीला गावै सदा, उतरै भव जल पार ॥ ६५ ॥

शिष्यवचन।

धन सतगुरु परमारथी, चरणदास महाराज ॥
अद्भुत कथा सुनायकै, पुरवे मोमन काज ॥ ६६ ॥
सबविध कियो निहालमुहिं, कथा सुनाई गूप ॥
बारबारबलिहारहूं, कहै रामही रूप ॥ ६७ ॥
निहचै जानी सांच मैं, तुम्हरे वचन प्रसाद ॥
सो लेकरि हिरदे धरी, नाशी भूलअगाद ॥ ६८ ॥

इति श्रीगुरुचेलेकेसंवादविषे श्रीस्वामीरामरूपजीकृत शुकदेवजीकी–जन्मलीला संपूर्णसमाप्तशुभम्

"श्रीवेङ्कटेश्वर" (स्टीम्) यन्त्रालय-बंबई.

श्रीः ।

श्रीभक्तिसागरग्रंथकी आरतीका पद ।

आरती ग्रंथराजकी कीजे । जीत जनम यह लाभ जो लीजे ॥ ग्रंथको ध्यान धरें चरनदास । ग्रंथ है संतनको सुखरास ॥ अष्टादश पट चारों वेद । ग्रंथमाहिं सबहीको भेद ॥ जो नर ग्रंथको सुनें सुनावें । सोनर भक्ति कृष्णकी पावें ॥ अमरलोक निश्चय कर जावें । या जगमांही बहुरि नआवें ॥ पियप्यारी के निकट रहावें । सेवा कर मनमें हरषावें ॥ श्री-ठाकुरदास गुरुभेद बतावे । बलदेवदास हरष गुण गावे ॥१॥

पुनः आरतीपद ।

आरती ग्रंथ भक्तिसागरकी नितही हुलस सकलजनकीजे । पूरण प्रेम घिरत हित वाती चित चौमुखमें जोय सुदीजे ॥ होय प्रकाश वासना नाशैं घटते तिमिर अविद्या छीजे । दरशै श्यामा श्याम हियेमें नैनन निरख रूपरस पीजे ॥ परा-भक्तिको पाय परम रस भजन भावनामें मन भीजे । युगलध्यान धुनि सहज समाधी हरिगुरुकृपासु पाय पतीजे ॥ श्रीठाकुर बलदेव दास गुरु सरस माधुरी सुन गुनलीजे । भजन प्रताप पहुँच चौथे पद अजर अमर हो युग युग जीजे ॥ २ ॥